Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

४८८४

No. ४८८ क

Title भागवतदशमस्कन्ध भाषा

Author

Extent ४१६ पत्र Age

Subject भक्ति काव्य (पौराणिक)

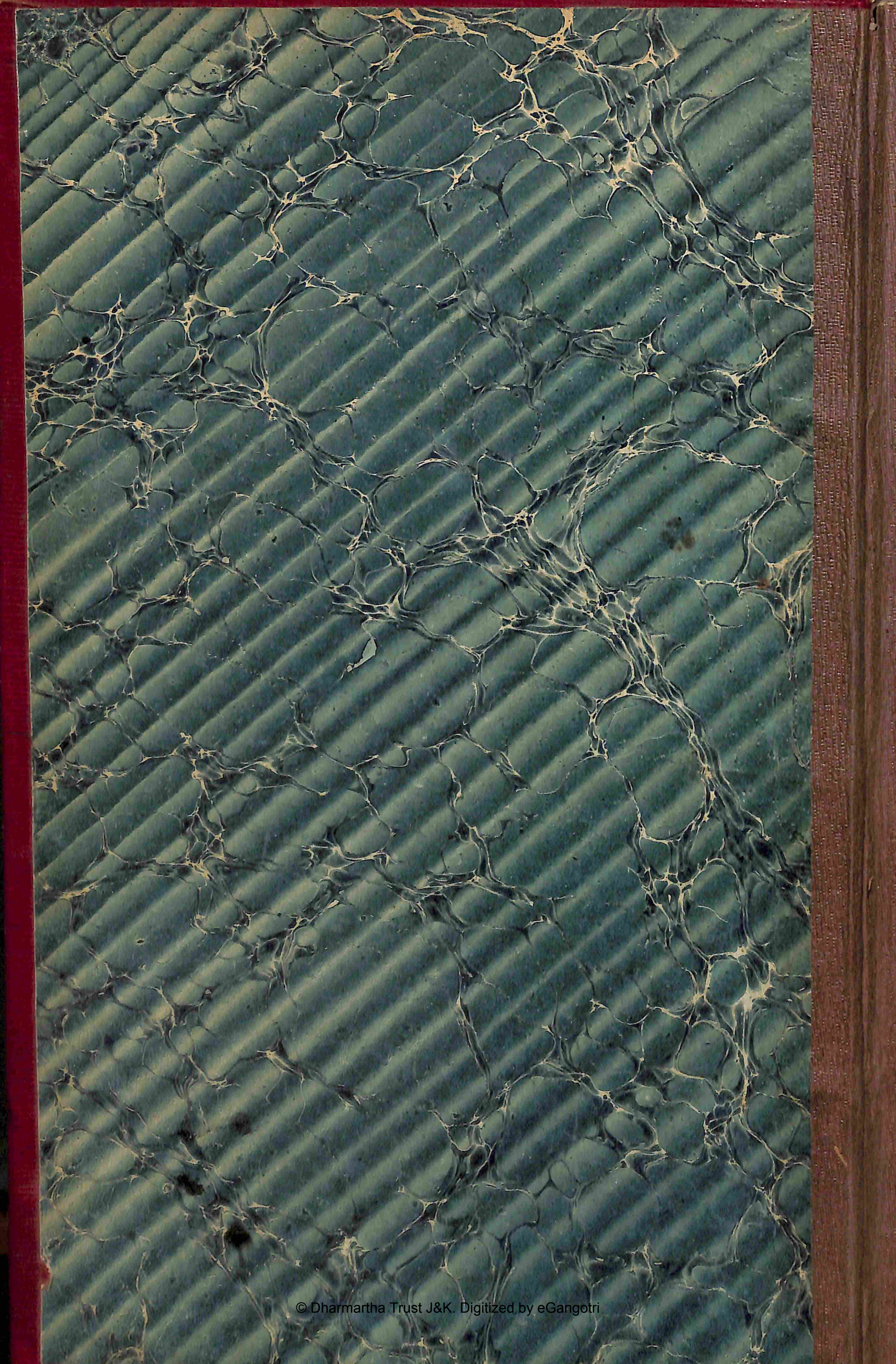
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दशमस्कंद

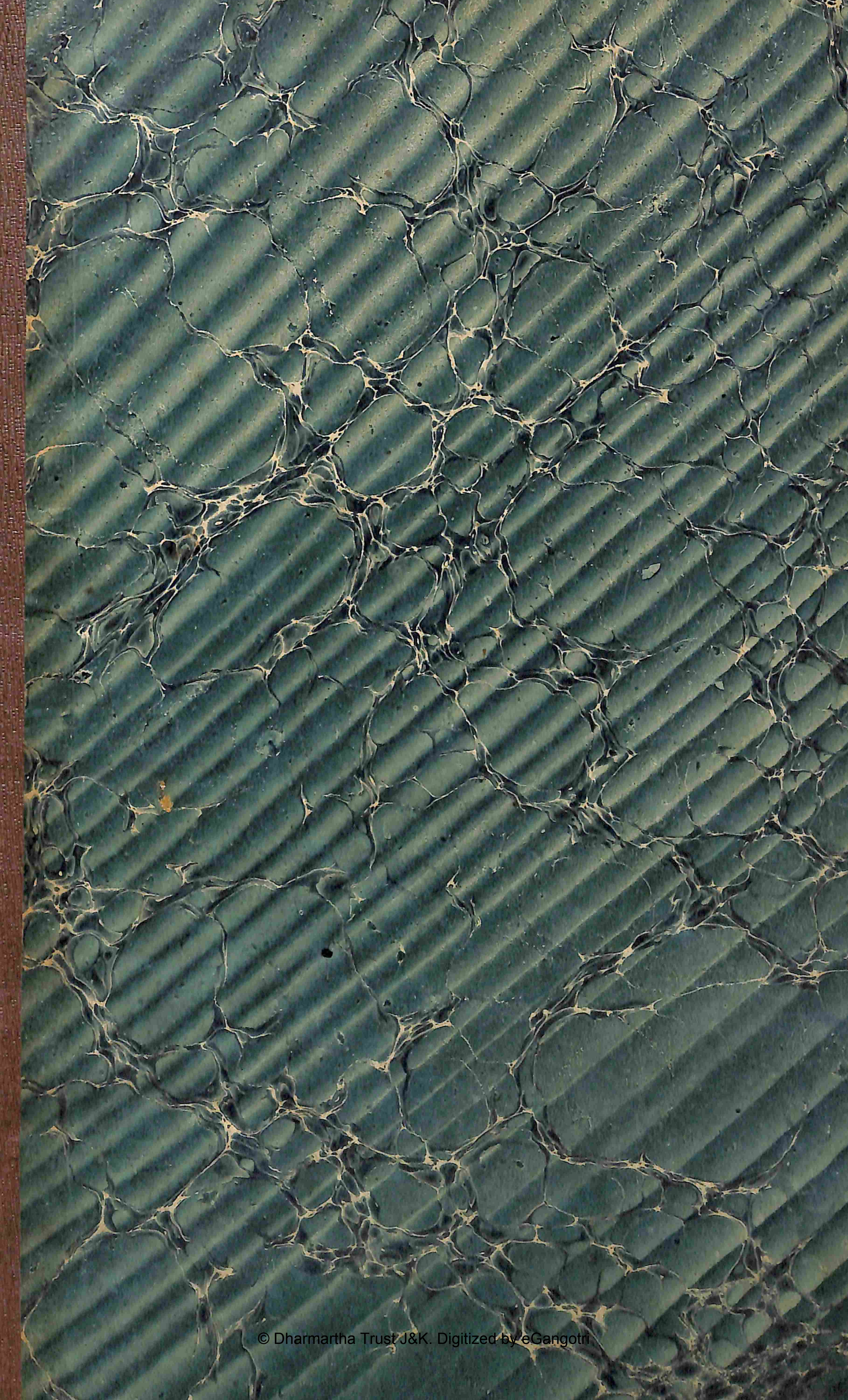
भागवत

भाषा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं० ९-८६-क
भागवत दशम स्कन्ध भाषा
४१६ पत्राणि
पौराणिक मति काव्य

5484
Missing Page # 370 – 379
395
F – 416
Complete

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



ॐनमोभगवतेवासुदेवाय

ॐअथश्रीभागवतदशम

स्कंधभाषालिषते ॥दशम॥ दोपतिचा
रिमहिपरसपरिबोलतिएकसमानि ॥
इकिगावैगुणिसिग्रामकेइकबैसैबरि
तान ॥सुनोसखीमनजसुकरहिचुपा
कराजाहिनबोल ॥निपरिदीननतुउवरी
वक्रप्रभषरेअनोल ॥कवनकीइमति
हीनहैछिनछिनभलनहारि ॥सिषन
पावहिपारिकैजाकेवरनहजारि ॥चा
रिवेदिब्रह्मारटेपकोनपायोअंत ॥अवर

द॰शा॰
म॰
१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वेवेकीयकपेश्रुतिश्रपारभगवेंत॥ सा।
गीतिनेचीटीकहेकिहिविधिउनरेपारि।
श्रुतिश्रसंकलहरीउठैफूलैप्रबलविश्रा
रि॥ तेऊचीरीहरिजनसमितकिनतनपाये
पारि॥ जपुतिसदेनहरिनामकोईहिवि।
धिहिरिदैधारि॥ हरिमतिवोलीनवैसनो
मषीईकवाति॥ रहोनहरिजसकहोगी।
रिदैनप्रेमसमाति॥ जघासकिहरिजस।
कहोध्यावेश्रीभगवानि॥ हरिजसगावै
दीषरीदेवहिगेहरिदानि॥ सनमोषीह
रिदानि॥ सनमोषीहरिकिरपाकोनमप
हिकरेविधिध्यानिव्रसादिकश्ररुकंक
जनमभकेपेकसमानि॥ देतितिसावर
रिछुकपिवैसमूउचंउलि॥ तेउघरेहरि
किरपानेगापेगुनगोपालि॥ वंषीमगप
सघरुचीध्यावरहीनजननजेति॥ जि।
नोकहेगुनिकसलकेसभिनारेभगावेति॥
गजिपतिगनिकासेलहरमजिनकेमउस
भाई॥ गापेजनपसलेकसनारेकेशवगाई॥
वऊहिसनोहरिकिरपाकोकैसहेभगवेंति॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जो जो हरि सरनी परे तारे संत अनंति ॥ पाप
रकीन बकाकेर मेले वी विप हारि ॥ ध्या
वै क्रपानिधान को उनै मागरि पारि ॥ पे
गुन पै जगदीस को हरि दै ध्यान लगाई ॥
कंचन के गिरि मेर पर सिषर पहु वैजाई ॥
जन्म अंधु ध्यावै हरि दै पंकजि पादि रसाल
तीन लोक मूफ हि तिसे किरपा करहि।
गोपालि ॥ जन्म रोग निह वार हिन ध्यावै
श्री नारानि ॥ कमल नाभि की किरपा ते उ
बरै वेद पुरानि ॥ सो नर रहित ओराम ह्रा।
ध्यावै पुरष पुरानि ॥ सभ सम कै सभ ही
स्तै ने जो कोउ करै विषिआनि ॥ जुगति उ
कति मन तिनेर हित ध्यावै पुरष अनंति ॥ वि
स करमा सी मति लहै किरपा करहि भग
वंति ॥ सक्रीरहत तिउ रवल महा जो ध्यावै क
रतारि ॥ तीन लोक के भारि के नष परिग
घेथारि ॥ उजी मति उपकरि गई वे हित उम
ओसर जानि ॥ धं निधं निमति ई हिव ओ नि
नगा पे भगवानि ॥ हरिजन सकी आसा बढी
कुमति उवसी दीनि ॥ आपि आपि को हसि

2

द॰ प्रा॰
प॰
९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परेकुसलदासमतिहीनि ॥ सरनिजोगज
गदीसहरिसेषसैनसषरासि ॥ अमि
तमरान्नमयवलप्रभुपरजनकी ।
आसितुमतिदोषीदुष्टचितिकपटी
कुटिलकठोरि ॥ नीचकरमविनवतिर
है ॥ अरुजामतिसिभोरि ॥ कामीक्रोधी
मूडजडलीनेमतिअभिमानि ॥ जगम
हिपनतिनहसरोहुप्रभुकेसमानि ॥
परदाराहितसिउभजीपरधनलीपेत्रुग
ई ॥ पतितनसिधामतिनीवमतिहोकैस ।
भेरुभाईजववैसोपैकेनमहिमनवि
कारकोजाई ॥ जवकोउवैसोउकेनम ।
हिमनविकारकोजाई ॥ जवकोउवैसति
निकहिजनतषोध्यानलगाई ॥ लोगक
हतिअहरिसेंतहैअतिअघकरोउराई ॥ है
प्रभुश्रेसेपतितनकोपतितराषहुकेशव
राई ॥ वारनसरनअवहरनप्रभुअकार
नकरमसुरारि ॥ कोमलकरसिउभुजाग
हिकुसलदासकोनारि ॥ दईदानसिंधुकल्लउ
प्रभुतमसभविधिपरवीनि ॥ हरिजनलगावै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उधारि पतिकुलदासम्य निदीनि ॥ जिह वि
मितिकीनो प्रभ श्री कमलभ्रवनारि ॥ मंगल
रूपी अघ हरन कीने करम अपारि ॥ कृपा
निधान कृपाकर रूसभ हीदेइ वना ३ ॥
नमरे गुन हि नकरि पउ गावो प्रव फाई ॥
प्रेरकु प्रभ सालती हिरिदै करै निवास ॥
निर्मल हरिजन कहनि कोउपजैव डोउ
लास ॥ जोइ नतीमे वकिकरी सभु समफो
भगवानि ॥ लीलादसमस कंथ की के स
वकी नीदानि ॥ भले कृपानिधान निधि
ज्ञान जोगि निधि सिधासि ॥ कुलदास
को कृपाकार प्रनकी कासि ॥ आसा पूर
न आनपति परमे सरपहिचानि ॥ अतिउनी
तिगुनि कुल के की जहि प्रगट विधिआ
नि ॥ नमो पुरष परमान मानुरषोत्तम ज
गदीसि ॥ नारायन नर को नमे समभ इसन
के इसि ॥ देवी नमो सरस्वती नमो वेदस्वी।
विआसि ॥ बालमीक रिषकोनमो पदुह।
विपरमपलासि ॥ नमो संतनम कदेवको।
विश्रामसतन अवधूति ॥ रिष पाराशर को नमो

र. श्रा.
स.
१
3

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमोनमोरिषय्मुनि॥ नमोनमोतुरदेवको।
जिनसमकायोज्ञान॥ जिहकिपातेजाति
उसतिरूउभगवान॥ नहीगंगजमुनान
हीकलिमलिकारनिहारि॥ जहांसवुतुनय
णागाईस्रहिनिरमलपरमउदारि॥ नहास
रखुनीसिंधुस्रहगोदावरिनिहयानि॥ ज
हांप्रेमकरिगाईस्रतिगणनिधानभगवं
ति॥ करैउपद्रुवपापसमिपिपरैभगतिकी
रेषि॥ काईकवाचकमानसीसभस्रवमि
रहिस्रसेषि॥ लीलादसमसकंधकीकहि
प्रीतिविनुलाई॥ कमलवललभकमर
रिकेसवकरहिसहाई॥ जोजोलीलाहरिक
रीजुउकुलिधरिस्रवतारि॥ उहुसंवारेसंन
हितभुमिउनारेभारि॥ स्रविगतिकसस्र
नेनप्रभस्रतुनस्रलषस्रभेद॥ पारुनतिम
कोतेलहहिजोदेवनिकेदेव॥ कवनकी
उमतिहीनहउकलिमलिभरिउसरीरु॥
कठनसगमहोईनिमहिक्रपाकरहिवली
वीरि॥ १ नरायची ॥ उस्राग्रिरिजगकेस्रंतमहि
वेउदंनवलिवानि॥ धरनीभारुनसहिम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कैकरहिणावअज्ञानि ॥१॥ चौपाई ॥ द्वापु
रिजुगकाउउक्तआईया ॥ दिनक्रमाराज
गनद्रुघाईया ॥ वसुधानिपरिणावभाइंआ
री

जगमहिणाउकरहिअहंकारी ॥ जरासिं
धुलोअरअज्ञाना ॥ कंसाईमधुरायमहि
थाना ॥ अवरिउ छवद्रुतेजज्ञाह्ली ॥ कर
हिणावसकाकक्रुनाह्ली ॥ वसुधानिपरि
कसढ्रुषिआउ ॥ अतिदारुणउभ्रमहि
आनजाउ ॥१॥ साखी ॥ पापी भारनसहि
सकैकरहिंदनअनचारि ॥ नवचनरान
नपहिगउद्रुपगउकंधारि ॥१॥ चौपाई ॥
पंथीभाहनधरिआजावै ॥ कृभैत्रआसिभ
रूपक्रुनावै ॥ वसुधारूपगउकाकीया ॥ दि
नकुतेउविधाअतिहीया ॥ नवब्रह्माकीस
रनिसिधारी ॥ ब्रहमसभामहिप्रगटिप्रकारी

दश॰
म॰
४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कांपैग्रहग्रसमूर्जाभरिडारै ॥ त्राहित्राहिका
हिप्रगारिपुकारै ॥ धीरजुधरोनमनकुवि
धाता ॥ धसौरसातलिसाचीवाता ॥ अवि
मुक्तिथिरहहानानहीजावै ॥ अतिदुखम
थिनेकहन्ननआवै ॥ विगसेउदुहसंतनविल
षाने ॥ जगतेमिठिगपेपमेउरतने ॥ जगि
होतिनहीवेदउचारा ॥ नाहरिगाइअप्रान
धियारा ॥ हरिकेसंतविनानरिहूये ॥ निह
चैकीहरिजनहरिरूपे ॥ तिनकादुखम
फिनिपठिडुलावै ॥ संतनकुकाजसहगोविंउ
गावै ॥ संतनवरनिलगिनिपरिसघारी ॥ वि
लषेजनहउभइदुखारी ॥ जगतनपिनाउ
नकरककछूदीजै ॥ वेगिउपाउहमारीकीजै ॥ २
साखी ॥ नवब्रह्मसाउनरुदीउचलङसरनिज
गदीसि ॥ वसहिसमंदरिखीरमहिप्रभइ ।
सनकेइसि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तवब्रह्मसाउनरु
पहिदीपा ॥ मननसोचऊमतिकेपङहीपा
चलऊसरनिपुरखोतमप्रभकी ॥ रखि
याकैनाघप्रभसभकी ॥ वसहिखीरस
मुंदरमयामी ॥ सर्वघटाकेअंतरजामी ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निर्मलनामअनूपउजीआरे॥संतनकादुः
खकारनहारे॥मछिद्रघुहोईवेदिउधा
रे॥करमहोईजनरतनिनिकारे॥सकर
होइजिननहीउधारी॥सोअंननगतिपमे
हमारी॥नाहरिहोईजिनअसरसंचारे॥सं
कटिनेअहिलाउउभारे॥वामनिहोईवलि
नलैपठाईया॥करिकपोसरिदुःखमिटा
ईया॥परसरामहुहोईखत्रीमारे॥भिसविसी
दिजसकलउधारे॥दशरथंग्रहिप्रगटेरघु
राईया॥वालिरूपुकरिअपरिखोईया॥राम
वेउपूरनप्रभमोरे॥लछमणनिजसेवक
हरिकेरे॥भरथिणत्रुघनअरुभाई॥तीनभ
वनिकीविपतिमिटाई॥सिंधुसनासीना।
ननिधारी॥पमेउरूषवनिमाहिसिधारी
रावनिहरनसीताकाकीया॥तानहीन
पाथरिसोहीया॥नवराघवकपिसैनवा।
लाये॥अविगतिनिलीलालखीनजाये॥सा
गतिनीरामकुनिआपे॥जलथलअगासिपरि
सैलनराये॥सभमैनालेउतरेपारा॥ताउ
अहिप्रभकाबामसवारा॥रावणसैनास

रा॰मा॰
म॰
५
5

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इतिसमवोरे ॥ ३ ॥ तबिनेतातबिदेवविचारे ॥ नि
रभैराजुबभीषनिपाइया ॥ देवऊमि
लिप्रभकाजसगाइया ॥ जैजैरामसराम
सविगावहि ॥ गृहगृहकामिलिमेचप्र
सावहि ॥ सीताकेरिप्रजोध्याआइ ॥ बीर
भर्थिकेनाप्रमिटाइ ॥ कउ॒लियाकीचा
नीलागे ॥ देषहिदर्शनलोकिवडिभागे
सकललोकिकेधामसिधारे ॥ जिनोने
नभरिरामनिहारे ॥ ऐसाप्रभमोजेटह
मारी ॥ ३ ॥ साषी ॥ ब्रह्मापरिसरिसकलमि

लिआपेसरनिअनेति ॥ षीरसिंधुकेनी
रिपरिसभिठाटेइरिसंति ॥ ४ ॥ चौपाई ॥
नवब्रह्मासरिसकलितुलाये ॥ लेवसधा
हरिसरनिसिधाये ॥ षीरसिंधुसवह्नीमि
लिआपे ॥ सभनोहितकरिमसतनकिनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वोपे॥ नमस्कारहउँउतिहमारी॥ दइपा।
सिंदुजी धरतिनमारी॥ नमस्कारहक्रतिगा
वतिलागे॥ हाथिजोरिसभिसारिवडिभागे
जोतिरूपअभ्रुनाथअविनासी॥ ज्ञानसिंधु
सुखसहरितिनिवासी॥ परमतिदपरम
सरज्ञानी॥ चारोमुषपासिवेदसीवानी॥ आ
दिनअंतनुअनंतअपारि॥ खेलहेतिकीने
संसारि॥ कमलाचरतिपलोवैपियारी॥
हरिमंदरिमहिदीनविचारी॥ संषचक्रके
धारतिहारे॥ ज्ञानगदाधरिदेतिसंघारे॥
कमलपातिमहिकमलसुहावै॥ ती
नभवतिकोनाथमिटावै॥ कालरूपका
लेतेनिवारे॥ करवारिसरिरषतिवारे॥ वी
नवसनवैजेतीमालि॥ कानकुंडउलि।
परमरसालि॥ सरतिसियामसभेरेहरि
देऊ॥ रिदैसंतजनकरहिसनेऊ॥ [illegible]जल
मणिकेधारतिहारे॥ माथेमुकुटपरम
उजीयारे॥ गरुडगामीअंतरिजामी॥ अष
लभवनकैपेकेसुयामी॥ यमंपवित्रचा
रिव्रतमारे॥ सेसनागमसिसमंत्रउवारे॥

र.श्री.
म.
८

6

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेऊनपारिपरैगुलागावै ॥ अवरिदीनको
कहासुनावै ॥ बारेबेदिनिरंतरगावहि
जसुअघाऊकहुकाऊनपावहि ॥ सिंम्रि
तिशास्त्रसकलपुराना ॥ सभनौमनिका
रिनाथबखाना ॥ बरनहितुमराउपविरा
ठ ॥ जापरितीनभवनिकोठाठ ॥ पवनस
पामिनभसीतुमसारे ॥ पगिपनालिसोभ
हितुअधारे ॥ लोकपालिसभिभुजाक
हाहि ॥ कुषिबीविसभिसिंधुसमावहि ॥ प
रबनस्पतिसभरोमफुलवारी ॥ निर्मलना
डीनदीतुमारी ॥ सबिनानेअधकालिकोभा
पे ॥ मनसीसकलरूपसभुजगतबिसापे ॥ म
षिपावककेसहस्रचनिहरि ॥ सकलबिस्व
तुमहीनारिहारि ॥ तुमनोसर्वबिसापेदेव ॥
समतेअतिनिरलेपअभेव ॥ दीनबंधुअ
रुगरबप्रहारी ॥ अतिपुनीतपारकिरतिब
धारी ॥ सभमहीकेप्रतिपालनहारे ॥ जुगनजु
गादिहरिदासउधारे ॥ ४ ॥ साखी ॥ पापभू
मभारीभईसन्तनरूननाथकेनाथि ॥ कहीकी
रपाकीजहिप्रभुअपनेसंतनसनाथि ॥ ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चौपाई॥ हे अनंत प्रभु परमदयाला॥ एकै।
सकल लोक पतिपाला॥ पापभूमि भारी
अति होई॥ अहंकारी दनुज की गोई॥ नैन
नीर कानन रहि होई सोइ॥ प्रभु के पगि विनस
रतिन कोइ॥ दुखी साथ जो नमइ पिआरे
सकल संत सवै संत मारे॥ हे अलेष इस।
वेलि भारे॥ सकल लोक अति दीनन मारे
कवन कौ रहम दीन विचारे॥ नमो कृपा
करि सकल संवारे॥ जो कछु भूले वचनि
उचारे॥ छिमा करो अपराध हमारे॥ ५॥
साखी॥ आगिआ भइ अनंत की मानव
धरो सरीर॥ [illegible] कुल महि अवनाहल
रि सकल उतारो पीर॥ २॥ चौपाई॥ आ।
गिआ नैं अनंत की होइ॥ मन महि से
ऊन कीजै कोइ॥ जदकुल महि प्रगट
ममि देवा॥ करी अनूप गरि हमारी सेवा
हम प्रगट हि गोज दुकुल माही॥ या महि
भरम भेद कछु नाही॥ वसदेव हमार पि
ताक हावै॥ मात देवकी हम मन भावै॥
विधि सिधार दूविल मन कीजे॥ आना

ह॰ प्रा॰
म॰
२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धरिसिरिरूपरिलीजै॥करउंउउनबि।
दिआहोईअगाइ॥निजमनमाहिपरम
जमगाइ॥८॥साखी॥देवचलेउंउ।
उतिकरिआज्ञाकरीअनेनति॥मोहृम
मिलिबिनेतीकरीसम्भुजीभगवंति॥१॥
चौपाई॥दैवोसुनीनाथकीबानी॥नान
कालिसिरिरूपरिमानी॥गयेमोकुल
मिसहिबिगसाने॥प्रभुकेबचनमातु।
करिमाने॥मिलिसभनोअतिमंगल।
गाईया॥मनितेसभनोमकोतुमिराया
जोप्रभुध्यानुअगोचरहोना॥नामप्र
मोलकुरिदेपरोना॥हमसितुषलैंगे
हरिपिपारे॥पंनभागिजजाहिहमारे
गावतिसभिमिलरंहीयहिआपे॥हरिदि।
आलसभिमिसोकुमिराये॥जउकुलिप्र
गटिभएसभिदेवा॥आज्ञाकीनीअल
षअभेवा॥२॥साखी॥प्रगटिभएजउ।
वेसमहिअतिवडिभागीदेव॥हरानम
रषअनेनकीकरनिपदमपदसेव॥२॥
चौपाई॥देवोमिलिजदवेसमसईया॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परतिमनिमहिमंगलगाईया ॥ निज
मंत्रचरिमाहिसुपाईया ॥ कबिदेषोब
मदेवमजाईया ॥ कबिमुक्तिपरिपगिप
दमलगावै ॥ नितिमनिकासंनाउमिटा
वै ॥ नविसभेतंहउसतिवडिभागी ॥ नाम
निरंतरसिमरतिलागी ॥ ईकटकिनेनम
हीकीहोइ ॥ प्रभअंतनमहिमोहिपरोइ ॥ ८
साषी ॥ निपदेवककीसनाहेवासदेव
कीबानि ॥ नामअमोलकुदेवकीपिआरी
स्रीभगवानि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ नपदेवककी
सुतापिआरी ॥ तीनभवनमहिप्रगटिउ
जिआरी ॥ निर्मलनामदेवकीकहीअै ॥
केशवनामहृदैमहियाहीअै ॥ वडिभागी
वसदेवहिपरानी ॥ वलिपिनाभकरीस
करनी ॥ लालिजवाहरिदानादीया ॥ ।
अतिउछाउजगिमहिजसलीया ॥ दीना
केचतिमाणिकिमोती ॥ दीवेपटंबरा ।
जगमगिजोती ॥ रूपगनिरषिदीनी
वडेनेरे ॥ दासिदासीआलेकचनेरे ॥ ग
ऊअनेकरदइपिनमाना ॥ रीकायोवसदे

दे॰भा॰
म॰
८

8

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वज्रमाता॥ हाथिजोरिकछुवचनस।
नावै॥ विनैबोलेवसदेवमनावै॥ हे।
मनेकछुनसरिजेकाजा॥ तमकोस
भैहमारीलाजा॥ विनतीग्राकरिला
गाचरनी॥ पिग्रारीसनमातमारीशरनी

साखी॥ भलामनावैवहिणिकाकंस
रथवलिवान॥ पैकाहोइरघसितुच।
लितुनजिम्रगुनाग्रभिमान॥ १॥ चौपा
ई॥ कंसवहणिकाभलामनावै॥ पाइ
कहोइरघुहोकिचलावै॥ नविम्रका।
सितेवाणीहोउ॥ म्रनतुसातुमानतुस
मुकोइ॥ रेरेकंससमातुसनिवाना॥ ऐ
हीविधिनकिकोरचीविधाता॥ रचिप
रिवुहणितजैजोपिग्रारी॥ बीजमिरति
कासहीतमारी॥ योकागरभग्राठवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

माईया ॥ कालुन्नमाराहमन्नमनाईया ॥ १०

साखी ॥ वाणीमनीआकाशिनेकीनो केसवीचारु ॥ अवहीवहणिविउरीवे चुकिपरैजेजारु ॥ चौपाई ॥ वाणीमनी जेवेअभिमानी ॥ नविहिरदेभीनीरय । हठानी ॥ अवहीनासवहणिकाकीजे नविजगमहिनिरभेहोईजीजे ॥ देवि षउगुलीनाअभिमानी ॥ गहेकेमदेव कीभैमानी ॥ नविवसदेवविनेयहिकी नी ॥ वाणीरटीदीनअतिछीनी ॥ अैसा पापगुनकरविआरे ॥ हमअहभगिनी पुजनमारे ॥ देहिअनिनसदाधिरुनाहि निहिनिमितिमनपापकमाही ॥ मने नवातिकेसअहंकारी ॥ नववसदेववे अवरुउवारी ॥ वेहिमालललेहमहिमि । लावो ॥ सारभआरउवाछेदकरावो ॥ न । वेकेमिमानीयहिवाता ॥ छाउकेसवह निकेभाता ॥ ११ ॥ साषी ॥ वडारिसोत्तुमति महीकीऊकेसराईअजान ॥ मनपहि ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लेहीं प्रान बागर भय होइ बलि बानु ॥१॥ चौ
पाई ॥ बहुरि कीसे मनि माहि बीचारी ।
जीवन लोउ मृउ बिकारी ॥ अंतगर भम ।
त्तप हिला होवै ॥ उपजी हमारी ननि को ।
वोबै ॥ षै बिषउ गुफ निली आई आने ॥ प
नि बस्न देब हि बचनि बषाने ॥ जोजन मै
लैसो ईछ्लि दाबउ ॥ मनि निसभ संको छु ।
मिटा बहु ॥ मानी के सबा नि ई है साची ॥
कलह के सघि हि भीन तरि नाची ॥ वेद मा
ल दो कुल लराषे ॥ अमी ज्ञानि बिष्नु के कु लि
बाषे ॥१२॥ साषी ॥ विदिमा लिराषे दो ऊब
उ संति सर ज्ञानि ॥ अति प्रनीत श्री देवकी
श्रह बसु देव महानि ॥१॥ चौपाई ॥ वेद ।
मा लि ले दो करषा पे ॥ चरन ऊ भा रि निग
डि मिलापे ऊपरि बकु राषे रघवा पे ॥ कि
ननारि दो कु दीन बिचारे ॥ हो ल्का मार रू
कि मिबला ई आ ॥ महा मोह मा ई या भर
मा ई या ॥ तुह भाव हरि सि उर कलागी ।
या बिधि ने अति ही बडि भागी ॥ जबि उप
जै तै बे गिमरा बो ॥ कंबिबाल कु राषो ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

महिमाको॥ धैरभावहरिसिमरनुकरता॥।
नउभीप्रभसभकलिमलिहरना॥२२॥
साषी॥ प्रथमसुतनवसदेवकैजवजनमि
उत्रिमिग्राहि। मोलेकेसिमारायोधर्मं

पछ्छानेनांहि॥ चौपाई॥ प्रथमेसुतनज
नमिउजनके॥ वउमंसानिसुधितनिम
निके॥ नविवसदेवहिगोदिउठाईया॥।
कंसराईकैनिकटिलिआईया॥ लीजे।
वालुकंसवलिभारे॥ रहहिजगतिषिर
वचनितमारे॥ कहेकंसलेजावोवाल
गारभआठवाकालहमारा॥ लेसुनवा।
लितुजनैवैमहान॥ नउफुनिसोविउकं।
सुयजांन॥ जोउलरीकरिगनीएवाल
ईहेहोनिहैहमरोकाल॥ लिषावहुवा।
लनकीजेवारा। केजैषोकाप्रानप्रहारा
नेकुकंसिमनिरदईयानआइ॥ महाउए

र॰श्रा॰
सं॰
१०
10

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रोषीदुलदाइ ॥ नवहीबालकुबेगिमराई
या ॥ अतिभारीजगिपापककमाईया ॥ इ।
सीभांतिह्वैंबालकिमारे ॥ अतिअधीन
बलिहीनविचारे ॥ हाहाकारुजगतिम
हिहूया ॥ कंससमानिदुष्टनहीरूया ॥
मारेबालिबहुहाणिकेजाये ॥ सकलसंत
दुनिअतिविलषाये ॥ १४ ॥ साषी ॥ उद
रुसमानेदेवकीसेषनागबलिवानि ॥ पे
कसीसुजगिकौधरेपियारेसिरीभगवा
नि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ देवकीउदरीसेसजीआ
ये ॥ देवकुमनितेमोकुमिटाये ॥ हरिकाम
हीपइयानाईया ॥ शेषदेवकीउदरीम
माईया ॥ चारिमासिवसियातिहठाहरि
हरिविनुमहीपइअतिकाहरि ॥ देवीको
हरिवचनिवषाने ॥ जठरीदेवकीसेस
समाने ॥ चारिमासिकाहुमरोभाई ॥ भई
आउदरीमहिजगिमषदाई ॥ जेदसिमा
सउदरिमाहिरही ॥ भूमिविचारीबाहन
सहे ॥ दुष्टकंसलोजगिमहिकइ ॥ पाप
तिनकुकेकानिभइ ॥ वसुदेवसेनकी।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

डीआपिआरी॥रोहिणीनामसेषमहिना
री॥नेंदथामिल्लिपिरहिविचारी॥अति
मरिज्ञानवेमानहमारी॥षेविषउेदेव।
कीउदरिने॥निकसिजाईजिउवीज्जवि
दरिने॥जठरिरोहिणीसेषहियरो॥वे।
गिसिधारेविलमनकरो॥आज्ञामाति
नारायणजीकी॥नीथेपादिमपाईवन
नीकी॥षेविगरभितेबालकलीया॥ईङ्क
कउनक्रुदेवीजीकीया॥मषसिउउदर।
रोहिणीधरिया॥प्रगटिभवानीकउन।
कुकरीया॥रोहिणीउदरिनागपतिए
जा॥वसेभगतजननपुरनिकाजा॥अति
अनंतनरूपीप्रभमेरे॥सेसषुनिजननीउ
रूकेरे॥जगामहिप्रगटिचलीईहिवाना
गुपनषेलनहीकिनहंजाना॥वसुदेवे
मुतिमेकिआआउ॥रोहिणीगरभकहा
भयोभाउ॥रोहिणीनेंदेविनाभउ॥पतिवि
नुगरभकहाभयोदउ॥नारदितिङ्कनि।
वारिउ॥हरिआज्ञातेकाजसवारिउ॥वे
दिमालिमहिवहणिविचारी॥विआपे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रामकी केसकाभारी ॥ अवहीगई यासा
नवावार ॥ वेगनासहोइ केसनमार ॥ ४४
साषी ॥ आज्ञादेवीकोकरी आपनिरूपा
निधानि ॥ नंदमहरिग्रहिप्रगटिहें वि
जमंडलै निजधानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हरि
आज्ञादेवीकोकीनी ॥ सुनदेवी नेंपर
मसुषीनी ॥ नंदमहरिग्रहेंप्रगटिजाइ ॥

सरूपावैपिआरीजसुमाइ ॥ वहुतना
महोवहिंगेरेते ॥ वचनमाउ निर्मलहैं
मेरे ॥ देवीमानिहरिआज्ञाआइ ॥ जसुमा
नाकेउदरिसमाइ ॥ ४६ ॥ साषी ॥ प्रथमा
ध्यानुवसुदेवकेचटिभीतरिपहिहोइ
सियामगातलोचननकमलआपिनिरं
जनुसोइ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ प्रथमध्यानुवसु
देवहिहरिको मतिमहिध्यावैभरनी ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

को॥नीलकमललननबीनउपरना॥अ
रुणिछुविकिहिमृषिवरना॥वसुदेव
हटैकैमाहिसमाइया॥परमेसोतिअति
हीसुषपाइया॥सोईनारिकेप्रगटिव
नाइया॥सननदेवकीअतिमनभाइ।
या॥देवकीसोइध्यानलगायया॥प्रभ
सतनजाईहैदेसमाया॥जगमगानिज
नीकोकाईया॥हरिकातेजनदुरेदुरा
या॥रविसहंसतेकछुअधिकाउ॥तेजस
जगमगोजगपतिमाई॥केसजैवेदय
तिकोआवै॥तेजदेषिविसमेहोइजा
वै॥भीनरियैठिनसकेविचारा॥इहिगार
भहैकालहमारा॥केसचकतिहोइथा
मेथावै॥जगननाथजीवेलिदिषावै॥
नवउसमाईहिवातिपळानी॥उदरवि
रजैस्यांरगपानी॥ब्रह्मासभिस्रासाधि
लेआया॥प्रभूपकुकामिलितेचुब्रमाई
या॥ब्रह्माशंकरमुषिमाहानि॥अहनार
दिजनुअतिसिहरिजानि॥इंद्रआदिसाव
उविवाति॥अहमीगिसेचकिकरसुजा

द॰भा॰
म॰
११
12

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नि॥हरिगुणल्लागेकरनिवषानि॥प्रम
परमानमग्रगटिपङ्कानि॥ग्रहपविस
रिमिल्लिप्रघमेकरी॥दैवङ्कीमतिग्र
महिमरी॥लागेकेशवकेगुणगावनि
संदग्रखेरपामसपावनि॥वोलेसभि
सुरिजैजगदीसि॥सतिसनाननिविस
देवीसि॥सतिनमाणवचनग्रनेति॥स
निरूपमावेभगवेनि॥सतिनेत्रमषि
पंकजिहासि॥सर्वविग्रापीमहाउदा।
सि॥ग्राहिअंतिमधिसतिग्रलेषि॥ग्रम
हूंसतिग्रमोपग्रसेषि॥विरङ्कग्रपनम।
रसिमारि॥सभुजगकनिप्रभकरनारि
सभजगभरमेविनाहारेनामि॥सोउघ
रेजोसिमरेसिग्रामि॥सभपीतरिनम
विग्रापकियेकि॥देहिसवारेकेईग्रने
किनमोरेपगिजोहरिदेपरे॥सोदल्ल
हभवसागरितरे॥सभमहिपेकपङ्का
नहीसति॥सर्वविग्रापीग्रीभगवेति॥
नमतेषमषहोनिनज्ञानि॥नमतिम
रषनिपरग्रज्ञानि॥निनोवानिसमरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विप्रीति ॥ नानाप्रहितिनेकीचेति ॥ ज्ञान
रूपतेमसदामविति ॥ अषलभवनकेन
महीषेति ॥ सचराचरसभहै भगवान ॥ स
भकोतेमहीनेकलियाति ॥ संतजनाके
पालिनिहारि ॥ गरवप्रहारीउ छविदारि
कमनैनकमलाकेकेति ॥ कमललोके
केधामानिति ॥ नमरेपरि सोउ धरे समा
रि ॥ तिश्रागहिमनितेसकलिउपारि ॥
नमरेपगि प्रभपरमपुनिति ॥ निहिप्र
मारिहोई निरमलनीति ॥ ईक्रभवसा
गरमहाअपारि ॥ जोजनसेवहिचरनि
सरारि ॥ गोपदिजिउभवसागरितरे ॥ प
तिप्रमारिकूतेजनमिनमरै ॥ माईयामे
हवढिउजगमाहि ॥ आदिअंतनकछु
दीसतिनाहि ॥ चरनिकमलकोनउका
कै ॥ नानकालउस्तरुजुगुनै ॥ मक्ति
कपैजोअवरूपप्रकारि ॥ तिनकीगति
सनीप्रकरनारि ॥ सोषज्ञानकीजानी
जुगति ॥ कोउकिईहिविधिहोएमुक्ति
मुक्तिमानीनीनोनेलोकि ॥ सकलउ

र·ज्ञा·
म·
२३

13

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तारेप्रभुमकेमोक्ति॥तुमरेपगीज्ञाहृदैन
धरै॥तुक्तिभयेतिहवेगारिपरै॥आव
हिमूढवक्रारिसंसारि॥जिनेनकरेतुमो
स्तिउपियारि॥पेकिभयेजोतुमरेसंति॥
पियारेलागेश्रीभगविंति॥नेतुमरेतुम
तिनकेभये॥यामितुमारेतेजनिगये॥
सदातुमारेसंगिसुसंति॥नमोकृपानि
धिश्रीभगवंति॥ईहितनतुमरासुधि
आलि॥कौनाप्रगटिप्रभुकिरपालि॥हे
प्रभुजगकेषमनसिति॥उपजीदईआ
तुमरैविति॥वेदिजगेनप्रकआसमा
धि॥ईननेकाटैमहाउपाधि॥जोईक्रन
मरादर्शीतुकरै॥नानकालिविषियाको
नेरै॥हेप्रभुतुमरेनामनजाति॥नाको
वंधुनधितानमाति॥जनमकरमगुा
ोरहतिमुरारि॥अगमअगोचरअल
षअपारि॥मनअरुवचनअगोचरहसि
आमि॥कियाकहिवरनैहेतिहकामि॥
नामरूपमंगलअवतारि॥तितिप्रति
गाउअहिवरैपियारि॥सखीयेगुणीये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न्हमारेनामि॥ चिंतवनिसिमरनिहारिच।
तिमियामि॥ चरनकमलकीकीजैसेव॥
जपीश्रीहरिहीरिदेवनकेदेव॥ चरणकम
लसिउलावैचीति॥ नेननहोतिन्हमारे
मीति॥ नेकछुटैफुतिजनमिनमरै॥ धंन।
संतहरिसिमरनकरै॥ भुमिभारघवही
मिटिगईया॥ दयासिंधुजीकीनीदईया
धरनीपरिजरैनुमपगिधरे॥ नानावि
धिकीलीलाकरो॥ चरनिविहरनिजवा
पावैमही॥ उवहीआपदानैकुनरही॥
मक्तिकक्तिवाराहअनंनेति॥ नेजनरूपनर
हरिभगवंति॥ मरहरिसमरनिविक्तावि
संतिरूपसिरीनरनारायनि॥ कहूंकहू।
नमरराजाभये॥ कहूंकहूंननिउसनि।
लये॥ कहूंकिधारेदेवपारीर॥ हरिकरनि
संतनकीपीर॥ अवधरनीकेभारनिमि
ति॥ पमरीदएपानमारेविनि॥ वलिवलि
जाहिचारनिपरिदेव॥ सभहीदेवनमारी
सेव जगमनाथउत्थाहैनाथि॥ सभअ
धिनजगउतमारेहाथि॥ आनआनउआ

ह॰ भा॰
म॰
१४

14

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न्नसुषुहोया ॥ आजसकलजगिकाउ।
षुषोया ॥ बोलेदेवदन्नमसुनजदेव।
की ॥ उमरङ्ककीगतिजगतेवकी ॥ न
मरीकुषिसिरीभगवानि ॥ सेषसहित
आवेनाराति ॥ केसउष्टकेहतेनेपरा
नि ॥ अनिसुषुपावहिसभैमहानि ॥ स
भिजउकुलिकीरषियाकरै ॥ पापप
थिजगतेपाहरै ॥ न्नमरोपरनसपन
अनेनि ॥ कमलनेनकमलाकेकेति
हरिजनसकहिउउउनाकरी ॥ हरिसू
रतिहिहदैमहिधरी ॥ बलेदेवसभि।
अपनेलोकि ॥ केशवकमसिरापेमो
कि ॥ जैजैसंदरिसिआमसरूपि ॥ जैज
दनंदनमहाअनूपा ॥ कमरामपरि
करुणाकरा ॥ कोमलकरमसुकिपरि

धरो ॥ ९ ॥ साषी ॥ हरिजननीकेचरिव
सेहदातेनीनोलोकि ॥ प्रभअनाथिके।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नाथजीसकलउनारेसोकि ।१। चौपाई
जबजननीकेउदरिसमाइया ॥ परमते
जसउमेदरुछाइया ॥ जगमगिकरेमा
इकीकाइया ॥ धरतीपरममनोरथपा
इया ॥ सकुथानीदेनकुतेउरतीस । क
लेसोकविसारीधरती ॥ सभोभारुति
ह्रिकालिमिरइया ॥ धरतीकाहिरदा
विगसाइया ॥ विगसेसिधुमैलखहस
लता ॥ इसोरदिमाहोइनिर्मलता ॥ ह
रषेदेवसिधिधियारे ॥ हरषेवणि त्रिण ।
हाति विचारे ॥ संतनकेनिर्मलमति
होये ॥ सियामनामप्रमनिमाहिपरोये ॥
तिनलोकिवधिरहिउमनेउ ॥ प्रगटि ।
भयोपुरषेतनमवेतु ॥ ११ ॥ साषी ॥ भाद्रो
वदिथितिअष्टमीप्रगटेश्रीभरविति
अतिआपारपूरनपुरषअविगतिअ
लषअनेति ॥ १ ॥ चौपाई ॥ भाद्ववतिना
अतिप्रीसहावे ॥ तीननउमनननदेहि
उछावे ॥ कसपतिग्राठेतिथिनीकी
अतिप्रिआरंभ नलकेजीकी ॥ आपो

र॰ग॰
म॰
१४

15

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निवीतीवउभागी ॥ अगटेमधुसूदनि
अनुरागी ॥ कउनवुधिलेकहोध्यान
अतिमलीनमतिहीनअज्ञान ॥ जैसी
मतिदीनीभगवानि ॥ सोलेअभकोक
होध्यानि ॥ सध्यानिसियामसुंदरिन।
निसोहे ॥ कोटिमैनमैनऊकोमोहे ॥ रत
नषचतिसिरिमुकुटसुहावै ॥ तीनभ
वनकोतिमरुमिटावै ॥ सिरपरिसि
षामकेसिउजयारे ॥ मचनमुकेचनि
अतिसुंदरयारे ॥ कमलफूलनेहोन
नेनिआरे ॥ मानोअलिउरफेमतिवारे
श्रवणपरमसुंदरिअतिदोऊ ॥ पटन
रिकोग्रहरिनहीकोऊ ॥ जगमगाति
कुंडलिईहिभाती ॥ दोईचंदसोभैजि
उराती ॥ भागिवानमस्तकुहरिजीका।
अतिसुरंगमाथेमधिटीका ॥ [illegible]
सरदिकमलदललोचनि ॥ करुणा
सागरिअघदामोचनि ॥ मोहकमल
परिभुमरसहाने ॥ कुसदासहरिहा
थिविकाने ॥ हरिकपोलसुंदरिसषदा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

२॥ छुविश्रपारिकछुकहीनजाइ॥ना
माकीरिचैचोविनेनीकी॥श्रनिपिश्रारीस
नेनकीजीकी॥भंदमंदमाथवमुसका
वै॥दसनावलिमुषिवीचिमहावै॥कि
श्रानीकैपटउरिकोईगावै॥उरिदाम।
निचनिचमकिदिषावै॥श्रधरिलाल
श्रंमृतरसभीनै॥गाइश्रहिश्रभउर
नपरवीनै॥कमलकलीसीविचकिम
हानी॥इउकहिश्रीमुकदेववषानी॥।
सडरिकरिरिषेवनी॥हारीभरदनवा
रिश्रमनी॥गीवामृसकधोतिसोमोहै
तीनलोकिकेमावमोहै॥भुजाचारि
ऊजलिविगसावहि॥चारेश्रायुधि।
हाथिमहावहि॥शंखचक्रपंकजक
रिधारे॥संदीगदादैतिजिनमारे॥कं।
दसीसमभिंश्रगुरीमहिसोहै॥देषरेष
हरिकेजनमोहै॥भुजवाजूरेनिपटि।
महाने॥हरिश्रनेनहरिजनकुपका
ने॥पीनवसनऊपरीकहरावै॥धन
घंईदचनिकीविमहावै॥मनिउदारि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुदाहरिध्यानी॥प्रेममगनसंतनरंगि
राती॥मणिरस्मालिजगमगजगमग
ली॥ध्यानीपरिसोभाग्रतिलगनी॥दृ
ष्टिविष्टकमलामनमोहै॥निकटि
नांकेभिगुलनामोहै॥कोमलिउदरि
नीनवलियरने॥कोटिबारिजाउछैब।
लिहारने॥नाभिसिंधुतिउघ्रमरिचेरी॥उ
नपतिकूरतिप्राजापतिकेरी॥कटित
टिक्षुद्रघंटाकावाजै॥नानिभवनरूप
रिधुनिगाजै॥ग्रतिग्रनूपकाछनीस
हानी॥दीनबंधुगावहिजिनबानी॥जं
घनग्रहजानूउजीग्रारे॥पिंडरीगुल
फजिनोकेपियारे॥कोमलकमलफ
लसेचरना॥ग्रतिग्रनूपक्कविकिहि।
विधिवरना॥उरफीवैजंतीहरिकरि
ने॥परमेवरनिग्रभैकेकारने॥नूपरि।
ध्वनितक्ष्मापिमहावहि॥कृष्णनाम
जनहूंसमनावहि॥नखमणिजगमगा
तिउजीग्रारे॥जिउचमकेनिसमनो।
भतारे॥जन [illegible] विहरनिचर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निमै ॥ वज्राकमलनिहिपादिसर निमै
तेऊजसफलेकरिलेषै ॥ नीर्थिमेहरि
केपगिदेषै ॥ निजमनुपुजगदीसदि
खोदिया ॥ नीतिभवनिकोनाउसिद
ईया ॥ २८ ॥ साषी ॥ चक्रतिभपेरहैस्र ।
निकोतिरषिवडिभागीपितुमाति ॥
गदिगदिवाणीइविवलीहृदैनप्रेम
समाति ॥ २ ॥ चौपाई ॥ मातपितादेषि
उमत्तिस्यारा ॥ नंदरिस्यासिपरमउमी
यारे ॥ प्रभप्रनेतनदरनपहिह्माने ॥ के
तनादिदोनोविगसाने ॥ वारिवारिव
रनञ्जलपटावहि ॥ प्रेममगनगोविंद
गुणगावहि ॥ गदिगदिकेरिनैनजल
ऊरहि ॥ ननमनप्राननापपरिवारहि
उमत्तिकरहि प्रेमनहीमावै ॥ प्रिथमे
कल्कवसदेवसनावै ॥ २० ॥ साषी ॥ वसु
देवउवाच ॥ नमोनमोजगदीसको ।
जगतिस्रपालिस्रपति ॥ सकिपहिह्माने
तमप्रभुजीनभवनकरनाति ॥ १ ॥ चौ
पाई ॥ नमोनमोसंभुभगवाति प्रकत

द॰ श॰
म॰
१२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रहृषनेपरेत्रणानि ॥ प्रभुकेवलस्थाने
दसद्रूप ॥ प्रभुकेदृष्टानाथस्वरूप ॥ स
भ्रतेपहिलानुमनारानि ॥ त्रिगुणरह
तिनिर्मलभवानि ॥ ईक्षानेमाइस्थाप
गटाइ ॥ सभुजंगकीनोत्रिभवनराइ
पहिलाप्ररनतुमकरनारि ॥ प्ररनही
कीनीसंसारि ॥ पाछेंप्ररनहीकरै ॥ तु
मेगुनकछुजानिनकहे ॥ जगकेबी
जरूपजगदीसि ॥ सतिसनाननिविस
वेबीसि ॥ नानाविधिकेकरोशरीर ॥ स
भुकोदेवोभोजनचीरि ॥ स्थापउपजा
वहुपालहुस्थापि ॥ आपिसंवारहुशं
ननपापि ॥ षेदरहतितुमशांतिसरूपि
ज्ञानसिंधुचतिस्यामस्वरूपि ॥ तीनभव
नकेपालनहारि ॥ प्रभुअविनाशीज
गतिस्वधारि ॥ भुक्तिपहिलानेतुमभ
गवंति ॥ शंषचक्रधरिप्रभुस्वनेति ॥
जगतिनाथदेवहुकेस्वादि ॥ तुमरेच
रनविनासभुवादि ॥ जिहतिमितिप्रग
टेतुमदेव ॥ नाकेभफेपक्षानेभेव ॥ दै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिभयेराजाअवतारि। तिनोदुखपायेस
भसंसारि॥ तिनकेनाससनिमितअवतेति
कृपासिंधुप्रगटेभगवंति॥ अलखभ
वतिथेमानानेहारि॥ अभैअविनआ
मअपारि॥ वसुदैनराजाजगाभये॥ वरि
जगिसभैकुपिजगनेगये॥ नमरेपगि
प्रसादिहरिगये॥ माधिविहरिजगुसभ।
सवपाये॥ अपदासिरीवढिउअनंडं
प्रगटिभयेपुरखोत्तमचेद॥२॥ साषी
श्रीदेवकीयउवाच॥ वक्रूरोबोलीहरि
मयारिदेनप्रेमसमाई॥ नमोनमोजी
वनिजगतिजगपतिकेसवराई॥२॥

चौपाई॥ वक्रूरोबोलीहरिकोमाई॥ ग
द्गदिकींनप्रेमसमाई॥ देषिरूपवि
सभैकंडेरही॥ पेप्रानपुरखोत्तमसही
सषिजोरिलागीगुनिगाति॥ नमोनमः

दे॰प्रा॰
म॰
१८

18

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सतेप्रभुभगवानि ॥ गुणस्वरूपप्रभुआदि
जुगादि ॥ अषैअगोचरअभैअनादि ॥ ब्र
ह्मस्वरूपतुमजोतिस्वरूप ॥ निरंविकार।
गुणिपैअनूप ॥ सनामाभजगतिमहि
धरी ॥ तिनसत्तावतुलीलाकरी ॥ कृपार
हितिप्रभुविसरिपालि ॥ संदासामग्र।
मोलकिवालि ॥ आदिअंतमदीपका।
मलसेवानि ॥ सभमहिकोमलिपगि।
कीशरनि ॥ जविईउजगतिनमटिहोई
जाई ॥ पंचभूतनमहिजाईसमाई ॥ पंचभू
तमाईआमहिलीनि ॥ वहुमाईआहरि
ताईअधीनि ॥ सभहीलोकिविआपीका
लि ॥ तुमभक्तकुंदरकालतुकेकालि ॥ का
लिमिरतुतेभागेकोई ॥ तुमरेपगिविनु
अभैनहोई ॥ जवहीपासेतुमरेपाई ॥ का
लुमिरतुताभेभजजाई ॥ ब्रह्मलोकल
गिविआपेकालि ॥ तुमरैधामिनकाा
लकपालि ॥ पहिकीवाचारभजीअहि
भगवंति ॥ कमलनैनकमलाकेकं
ति ॥ वडुभागीमाउमनिउपजदेईआ ॥ हि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रदामोहिस्यामसबनिलईया॥ठेबालकि
मोरैहैकेसि॥कोमलिहनेहमारेवेसि॥म
नजामैपेठुतिगवारि॥नूपठुपावकप्र
भुमतारि॥सषेचक्रगादिपंकजिगषि
तमस्रलेषविभवतिकेनाथि॥अवि
ललोकितमममहिममावहि॥कहवारि
आवहिअहजावहि॥रेमरैमग्रस्तंइ
अनेकि।सकललोककोतमरोरेकि
पेनवउअनंतअपारि॥हमरीकुषिय
सेकरनारि॥अनिअवरनकछुकही
नजाई।कहाकहोहेकेसवराई॥स
कललोकिपांभेउतमस्वामी॥सकल
घटाकेअंतरिजामी॥ध्यानअगोवरु
तेअनेति॥हमरेयहिप्रगटेभगवेति॥
प्ररनवप्रकरिकपादिपाईया॥सकल
कवनजहमकुकमाईया॥२२॥श्रीभग
वानवाच॥साषी॥नवाहरिजीतिनको
कहिउवचनमाछुसवसमाह॥तमरेय
हिहमतीमसरअविलीनोअवनाह॥१॥
चौपाई॥नविरहरितिनकोप्रगटितना

द॰षा॰
म॰
४९

19

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ईया ॥ तीजीवातितुमरे ग्रहिआईया ॥ प्र
थमेतुप्रकीनातुमभारी ॥ यषमधुत।
सहीदुखिपारी ॥ सिरिपरिसहीमेघकी
धारा ॥ सीनकालिसिरिसहीतुषारा ॥
बारहमहंसवरषितुप्रकीया ॥ दिबि
रषिश्रैसाउवेलीया ॥ अनिग्रसंनभया
हमरोहीया ॥ आईजेहमनवैदरसनु।
दीया ॥ तुमनविहमरीचरनिलागे ॥ के
तुनारिदैनौवडिभागे ॥ वरुमांगउतु
मकउहमकहिया ॥ संनकुकाउखुजाई
नसहिया ॥ मोहेहमरीसंदरिनाइ ॥ हम
रीतनिकीवडीवडाइ ॥ तविनुमपहि।
विनतीउचारी ॥ तुमसोपूतुहोईवनिवा
री ॥ मुकिसमानिजगमाहिनहोइया
तुमरासुततविहउहोइया ॥ सुतपाप्र
सनीनामुतुमारा ॥ प्रसमगरभईहनाम
हमारा ॥ प्रस्नाकामुतेषावापि ॥ तुमरे
सुतिहमहुएआपि ॥ घहिजविनुमउके
लेवरनिआगे ॥ कसपप्रादितुमपेवडि।
भागे ॥ तविहमतुमरेवावनिहोई ॥ हमरे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परिमतिमाहिपरोई॥वसुदेवदेवकीय
वितुजीयारे॥हमसमप्रतपघनस्यामतुम्हा
रे॥तीनजन्मकहिप्रगटिसुनाई॥मातपि
ताअतिहीविसमाई॥मनिमहिराषउ
पिआनहमारा॥अविनेआगेमुक्तिउधा
रा॥२२॥साषी॥माईआमोहपसारिजेअ
भयंनेतनिहकामि॥नेवैजननीविहव
लभईरूपछुपावउसियामि॥२॥चौपा
ई॥तविहरिमाईआमोहपसारिजो॥मात
पिताकेउपरिडारिजो॥मोहेमहाराज
कीमाईया॥प्रगटिवचनदेवकीसनाई
या॥मतजागहिदोषीरषवारे॥रूपछु
पावउआनपिआरे॥नवमाधवदेसंभा
जतनिधारे॥संतजनउकेप्रानधारे॥।
नवसुलेषईउवचनिउचारे॥सुनउमा
नवसुदेवपियारे॥लेउगोदहमवाल
तुमारे॥छुटेवंधनभिपारिउचारे॥गये
मोईसभहीरषवारे॥हमरीमाईआसभ
हीप्रहारे॥मुकेकाडिपरिनेदमहरिके
वमातुमारेनिकरिमहरिके॥लेआवउ

२.श्रा.
म.
२.
20

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जसुधाकीजाई॥प्रगटिवातिजगदीस
नाई॥२४॥साषी॥गोटिदुठापेस्यामघ।
रिपिताश्रनेदिसतिनेदिघरजानि॥हर्षे
होइनहैकोइश्रीवसुदेवसमानी॥२॥
चौपाई॥जैवश्रनेनइहिवचनसुना
ई॥नवहितातिसुचोदिउठाई॥श्रषल
लोकिसुषिमाहिरूपाई॥गोटिवीवि
चितेप्रभुसमाई॥किश्राकथीश्रेकछु
श्रषकहानी॥वाकीगतिवाहेवलजा
नी॥छुलेपाठिसभउश्रारिउचारे॥ग
पैमोइसमहीरषवारे॥चलेतानहरि
कोलेपंथा॥जपहिनामजाकेसभिग्रं
था॥मचनमेचउमडेतिहिवेरा॥देषि
उप्रगटिरूपहरिकेरा॥मीटंमेदिगार
जहिमधुवानी॥नैनीवूंदउरतिसैपा
नी॥स्यामसूजिवादरिप्रजारे॥लागेघ।
जानदीनविचारे॥नवैसेषश्रापेफणी
धारी॥बिनस्याममतिनेकुननिधारी
फुनिधमारिकीनीरिछाउँया॥निरषि
नाघश्रनिहीसुषपाइया॥पारेनचेदि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नैकुहरिजीकेकमलनैनधरणीध२
हीके॥नवरिआलजमुनानरिआइ
जलुअपारितुमदेवउराइ॥कालिंद्री
सनमषिहोइपावै॥निरषिस्यामसुनि
हरषितमावै॥सषनिधानपरसेपगि
है॥ईहैनाथुजोवेदिकहाहै॥उछलि
नीरिऊपरिसोआवै॥अधिकन्नासवसु
देवउरावै॥नविसकुंदईहवचनिउचा
रे॥ब्रासक्याउहेपिनाहमारे॥इहिअ
धिनचरनकुंकोचाहै॥पगिक्कुहाइअ
विद्धीलिकहाहै॥जवहिनातिहरिवि
रनिक्कुहावे॥नविजमुनामनिमेंगलु
पावे॥आदिसमानिरीगाह्उहोइ॥मि
टैनाथुइतिवरहिउनकोइ॥हरषिमा
थिमारगुनविदीया॥नानकालिकि
कुवियोलमुनकीया॥२५॥साषी॥स
तिअनंतकोपिनाजीलिआवेगोका
लिमाहि॥तीनभवनिव्रजभूमिसोअ
वरठउरकोनाहि॥१॥चौपाई॥जवहि
नातिहरिगोवुलिलिआये॥मिलिदेवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहा िकेउ त्रिगाये ॥ जसमाना केति ।
आनविजाई ॥ गइसोईकछुस्हर ति
नपाइ ॥ धरेताननिइस्यामसजाये
लेकेनिआवसदेसिधाये ॥ वेदिसा
लमेंदिसिमहिआये ॥ ऊलिचारनऊले
लिगाइमीलाये ॥ सवकणारिमिलि ।
गयेकुआरे ॥ भलेनाघजीषेलनमारे ॥
जविकेनिश्रमंदरिमहिरोइ ॥ जागेइ
तिष्वारिनविहोइ ॥ नवहीसभिजा ।
गेरषवारे ॥ दउरिकेसकेनिकरिसिधा
रे ॥ वछुमंहिवसदेवेकेजाईआ ॥ राजे
कोजाईसोगुसनाईआ ॥ सननिकेम
मनिमाहिउराईआ ॥ घरहराईभेसिउ
श्रनिकाईआ ॥ ङलिकसिउठिवेगि ।
सिधाईआ ॥ नगनहाथिडेडावमका
ईआ ॥ कालकालकहिमुषोसनावे ॥
आधिकन्नासवडजोश्रमहिआवे ॥ वे
दिसालमंदरोमहिआईआ ॥ दीनव
चनदेवकीसनाईआ ॥ सनकुवीरके ।
निआमुझिजाइ ॥ याकेपाननमारकभार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मनैनबानिकेसब्रहंकारी॥बेटीनके
बीरनैपिग्रारी॥मारकुबेगिकहिग्राज
ड़िगजै॥ज्ञानहीनमतिचोरनिलाजै॥
लैनैसिलामाथिपकुराउ॥पगिक्काउ
इनभिजाइसमाउ॥ग्रष्टभ्रजाधारीन
विदेवी॥गावहिसरिसुनिग्रलषग्रभेवी
ग्रपसरिनावहितानिबनाई॥गावहि।
किंनरिजैजगमाई॥नविदेवीइंकुब
वनिउचारे॥रेकेसबबसग्रंधियारे॥स
कैमारिकछुहाथिनग्राइया॥निकं।
रिकालिनकितिनिभ्रमाइया॥नरेग्र
नग्रहारनिहारा॥ग्रवरहउरिग्रगटि
उहोइवारा॥पामहिभासकेउककु
नाहि॥प्रभग्रनेनप्रगटेजगमाहि॥२८

द्०शा०
म०
२२

22

माषी॥नैबैकंसबिसमैभइउविनेवडी
ग्रमेषि सिरैनमोजोकिछुलिषीग्रभलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लाटमहिहेषि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ नवैकंसवि
समैअतिहोया ॥ वढिउसोक्रुचहिमी
नतिरोया ॥ लानकालिभगिनीपहिआ
ईया ॥ विनेवोलिवसदेवमनाईया ॥ उ
नतेपेचरनक्रुनेपंथा ॥ लागाकषनिला
नअतिअंथा ॥ हेभगिनीकुउअतिअला
नी ॥ जाकेमनिअेसीमतिठानी ॥ वाल
किविनअपराधहमारे ॥ विमाकरे
अपराधुहमारे ॥ अविनोषहिहमरेम
रवासा ॥ महानरकमहिहोईगोवासा
नमकीमनीहमोजविवानी ॥ मोसनि
मात्रुहहैहिमानी ॥ वोलहिदेवकीफ
रुकिआकीजै ॥ अवरकवनिकोकहे।
निलगीजे ॥ नुममहानिदोनमरज्ञा।
नि ॥ हमगवारमतिहीनअज्ञानि ॥ स
नवसटेवकवनकहिआमारे ॥ अहंतु
धिमतेहोईतुमारे ॥ हममारेनहीतुमे
मरापे ॥ ईहिअउधलेजगिमाहिआपे
नाकोवधपूनपितमाता ॥ नारिकेन
कछुनामनजाना ॥ समोविलपरपंच

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बनाया॥ मोहमेलिसंसारभरमाईया
कहाकैहोनमध्याप्रिस्वेना॥ समके।
कोकहनाबसिपेना॥ नविबोलेमिलि
देउमहाति॥ सपविनिनिरमलमति
ज्ञानि॥ भईसोइजोहोवनिहारी॥ हम।
मनितेसभिबिंनबिसारी॥ सनकेस
सभिसोऊमिटावऊ॥ हरषहोईसवि
माहिसिधावऊ॥ चरनिलागिश्रवर
पुषिमाईया॥ केसराईफनिधामिसि
धाईया॥२२॥ साषी॥ प्रगटिभेपरहि।
नेदकीप्रभमप्रनेनहोघालि॥ जोनि।
वीजिजोनीरहनिमहाकालकेका।
लि॥१॥ चौपाई॥ श्रषलभवनकोस
जनिहारा॥ सोप्रनेनप्रगटिउहोईबार
मंगलपरमनेनग्रहिगाये॥ देसिदेसि
नेमनिजनप्राये॥ वजहिबीनसबी
नउनारे॥ जसिश्रनेकगुनजनउचारे॥
वजहिमृदंगनालग्ररुननारे॥ मधुरिगी
नजानकिपुनिपरे॥ वजहिफंकीकै
नावऊंगा॥ श्रहरवावमांरगीउपंगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वज हि मे तिनवुलिमर नावे । उढी:
वोरिच नहरकी नि शावे ॥ वज्र हि दे
लिमिरदं गिनगारे ॥ व्रज स्नहा नाग्नि भ
वनितेनि शारे ॥ जेजे बोल हिम खुरी
वाजी । भलेने दस भक्ष्न ने दानी ॥ ईक
मनं गनिकरिनाचु दिषावहि ॥ ईकव
विधिश्च मिलिमा ज्ञवजावहि ॥ पेके श्र
नेक्लि वावाज मगावहि ॥ पेवे दी जन
कहिजनमननावहि । कीपे नेदवावा ।
वज्र दाना ॥ वडो महरु जगमने ही ह्ला
ना ॥ दीपे ज्ञ बरन माणि कश्ररु मानी
दीवेप टंवरि जशं मगि जोती ॥ दोई
लाष नवि दोनी गाई ॥ माल्ला केवनि ।
कीपहि नड्रे ॥ महाणा टंवरि ऊपरि या
ई ॥ स्वरन सिउत्र पेके पाई ॥ त्रिलके
परवनि दीपेश्र नेकि ॥ वेदि केहतकी
वेवि वक्लि ॥ पूजे विपपितर स्वरु देव ॥
करै नंदसभक्ष्न की सेव ॥ वज्रारि सभै ।
गुनीजन पहिराये ॥ दानदेई हो ई वि
नैमनाये ॥ जो किक्कुमांगि सोइ सदी ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आ॥ खतिप्रमाणफलतिहीयआ॥सक
लकलोकिहोईहरषितिधावे॥बिर।
मीवङजनमधाकेजावे॥२८॥साषी॥

नरबिआइब्रिजनारिमिलिकीनेस
भिसिंगार।कुहिकहिकोकलिका।
रिसिउमहरिनेदवेउआरि॥१॥चौ
पाई॥नबिआउब्रजकीमिलिनारी
ग्रतिप्रनीतिबिभवनिउजीआरी॥न
तिकोसभिसिंसीगारुबनावे॥मुनिमे
लकरिलालदिषावे।केठिजोरिहरि
केगुनिगावहि।प्रेमभगानसभवनि
धनावहि।कुहिकहिकोकलिको।
हिपियारी॥छविविग्रहपबिभवननेपि
आरी॥नागीसभैसिरलीआदैनि।
बोलहिमुषितेप्रेमनवेनि॥सरलीआ
धंननंदाभागिनपारि।जाकेयहिगो।

२पा॰
म॰
२४

24

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बिंद भारे ॥ त्रिनि लोक सभै निसतारे
धरनी के भार हउ तारे ॥ धंनु है नेत्र भा
गनु मारे ॥ जाके ठाकुर हथ आपे ॥ रिषभ
निधान अगोचर हो ना बाल सरूप
दिखाये ॥ नंद आसमस लोना इ ॥ पे ता
निमनि का दिउ नाइ ॥ हरि सभि मा हिम
माईं पाइ ॥ बाल भस दा आचा ईं आइ ॥
धंनु जसो धा रणी पेडु के भागि नमारे
सेवु नपु बाल भजा ईं आजु गिज्ञ गिसे
नउ धारे ॥ बाल कुआरि दि त्रिंज नइ ॥ पे
संना दा दुख भंज नइ ॥ बाल कुआ हउ
मा भी ही ॥ पेस भिश्रंन रिजा मी ही ॥ पा
निकुषि सेरी जसस माई या ॥ जाके यहे ।
स्याम जी जाई या ॥ जिस देगुणि वेदा गा
ईं या ॥ संसा के रूत मि ढाईं या ॥ बाल क
नंदा घरा मि आ णा ठ रुष स्त्राणा पे हो ॥
धरनी भार हउ ना रणि आ ईं आस भै गसी
सा दे हो ॥ बाल कु त्रिभवन स आमी है ॥
ईं हरन निहिं का मी है ॥ पे प्र हि लाइ ।
उरधा मी ही ॥ पे हाना घस मारणु ही ॥ पे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रघुपुरनाथउजी आराढ़ी ॥ ऐसेलीलाहरि
आराही ॥ ऐसभकेप्रानअधाराही ॥ त्रिभ
वनिपालनहाराही ॥ रावणिकुलसि
उघापणही ॥ लंकिकिविभीखनथापन
ही ॥ ऐहैवेदप्रकाशनही ॥ ईसदाअ
वबलआसणही ॥ विहजीवेनेरावाल
जितिकीनेलोकिनिहाल ॥ घनिस्याम
सलोनालाल ॥ मनिमोहनमदनगोपा
ल ॥ पारब्रह्मपूरनपरमेस्वर ऐसभैको
पितमाता ॥ वेदरिचाथगिरैही आईअ
गोकलिमाहिपधाना ॥ बालकृष्ण
भगतनतउ ॥ अघअलेखमनातनही ॥ क
लकमलदललोचनउ ॥ त्रिभवनिअ
पदामोचनउ ॥ २४ ॥ साखी ॥ मिलिआवे
ग्रहतंदकेसभैगोपपरधानि ॥ केसरि
वाचहिमहरिकोमविमहिअरपहिपा
नि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ सभैगोपवावाकेआवे ॥
अतिअनंतउकछुकहीनजावे ॥ कछुवा
रकेसंचिमिलिआवे ॥ नंदपानिपरिलेअ
रकावे ॥ भूहपरकेगलिहारिमिलावे ॥

र॰ श॰
स॰
२५

25

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जैजैबोलहिसबहिसहाये॥ नेदसा।
थिबङ्कलिलाकरही॥ उहपहकेगेह
लेलरही॥ हरिसपनबाबाकेजाये॥
निरषिस्यामअचीरामीआचाये॥ चारि
पहरिईहिभांतिबिताये॥ भईरैनिजा
बकिवैठाये॥ निनबजंत्रबङ्कभीतिबा।
जाये॥ कोठिजोरिहरिकेगुणगाये॥ स
भैंनरवाबपेहनाये॥ हाथिसाथलेवि
हिआसिपाये॥ बङ्करिगोपथैलेदधिका
दो॥ गोपङ्कसिउकिउहोवैजादो॥ दधि
हलधीकेसाथिमिलावहि॥ सभेपर
सोलेहुटकावहि॥ अतिअनंदकारने
मनिभाने॥ कमलजातुसबंरीविगसाने
गोपङ्केसखकहैनजाये॥ जिनके
नाथस्यामसोआये॥ ३०॥ साखी॥ नंद।
वलिमेनविभेटिलैकसराईकैउआरि
बडेमहरूबडिनेबडेजांकेसकरनारि
चौपाई॥ भेटानंदकेसिकैलिआईया॥।
बङ्कनमेटिदकेसिमनाईया॥ राजाने
लेविहिआसिपाईया॥ वसदवैनबहि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सतिपाईया॥ मिलिउआईअतिसुहा
छुबदाईया॥ मिलेकंठअतिप्रेमदि
षाईया॥ नतिमतिकासंनापमिटा
ईया॥ नाकासुखकहुकहिनजाई॥ म
धुरबचनिबसुदेवउचारै॥ कहोनंदअ
तिकृपालनमारै॥ सुतिउ सुतनमारै अ
हजाईआ॥ कमलफूलजिउमनबिग
साईआ॥ हमरासुखसैमाकरजानो॥ अ
तिसपनमेराहैमानो॥ हमनमभेउन
नेकुपिआरे॥ नमप्रधानअतिप्रानह
मारे॥ नवैनंदयहिबचनेबषाने॥ सुन
प्रसादिहमभीबिगसाने॥ बिरधिबै
सिकिरपाहरिकीनी॥ होईकृपालप्र
भसैननिदीनी॥ नविवसुदेवहिबचनि
उचारे॥ सनकुमारनिकारिनंदपिआरे॥
गोकुलअतिश्रीरिसटहैहोने॥ बचनि
मात्रचारिमाहिपरोने॥ चलकमीनिव
रिजारिसबैरे॥ नविसंनोषहोईतिमरे॥ न
वैनंदयहिबातिउचारी॥ भलोमीनजैक
सहमारी॥ बिरिधपाहोईबाबाजीआवै॥

द॰पा॰
म॰
२९

26

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ल्लग्रनेंलग्रंगिश्रेगिसमाये ॥१॥ सा
खी ॥ केसितुलाईसुननाकहिऊपा
गुभपाति ॥ बालसुजाईआदेसितो।
तोजनमेसोमारि ॥२॥ चौपाई ॥ केस
गईसुननाऊलाइ ॥ प्रगटिबातिविश्री
तिसनाइ ॥ बालशत्रुहमाराकरूगा
ईया ॥ नाहिंग्रामसहोतिकरिउराइया
मारिग्राउजगिकेसभिवारे ॥ चलरू
वेगिकरूकाजिहमारे ॥ ईनहंमाहिंहे
इगोथोउ ॥ कालहमाराकहीअतिलोइ
बोलेवकीवचनतिश्रंनीआरे ॥ सुनरा।
जाजीवचनहमारे ॥ तुमबालककीसो
चनकरनी ॥ मानुवांतिचटभीनरियर
नी ॥ लिआवोमारिवेगिवकुवारा ॥ सभु
मेरेसंतापहमारा ॥ विष्णुचसाईघति
ऊपरिलावो ॥ जवैबालमुखिमाहिलि
आवो ॥ कीयेपानितवहीमरिजावे ॥
कहाबालचिंनाकिहिंआवे ॥ बकीवे
गिवीउआईकुलीया ॥ करिसीगारुउद
सुतविकीया ॥३॥ साखी ॥ चलीस्याम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पहिरनना षेउसकीपेसिंगारि ॥ अ
तिवडिभागनिडहविनिगइनंदकी
उआरि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ नवेवकोसंदरि
ननिधारे ॥ पहिरेवसनऊचउजीयारे ॥
अतिसरीषसभिअंगीलगाइ ॥ कोउ
रूपअतिहीसुखदाइ ॥ वलेचालिग
जिराजसमाना ॥ सकललोकअति
हिविसमाना ॥ पेकिहाथिलेकमल
सुमावे ॥ मंदिमंदिमुषिमोसुखका
वे ॥ अलिचहुंउरिगुंजहिपरवीने ॥
लेसुगंधनषसिषरसिभीने ॥ वकी
सोभवरनीनहीजाइ ॥ मानोअीवेु ।
कुरटेनेआइ ॥ नेदग्राममैपेठीपांषउति
आगेसभिजानहिजगिमेउनि ॥ रहे
वक्रनिस कलेबजवासी ॥ ननिस ।
तीधनषसिषपरगासी ॥ नेदधामके
भीनरिआइ ॥ अतिआदरकीनोमहरि
माइ ॥ देआदरकरिप्रीतिवेठाइ ॥ म
धुरवचनिकरिवकीमनाइ ॥ मधुरव
चनिकुनिवकीउचारे ॥ सुनमहरीजी

द॰भा॰
म॰
२२

27

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ववतिहमारे॥ सतिउपजतनमरैपहि
जाईया॥ नतिमतिप्रानपरमसष
पाईया॥ हमरेगोदिदेकु नंदनंदन
संतनुधारनदुष्टनिकेंदन॥ गोदिमा
हिदीयोनंदरानी॥ सभैयानिचनिसा
मपद्मानी॥ अस्पनिदिजेसामसुषि
मानी। वकीभागिवरनीनहीजांहि॥
दुहेंहाथिअस्पनिहरिलीया॥ सक
लप्रानविषसेतीपीया॥ कुडिलाउ
अविलालकनाइ। जाकुगादिअप्रुनी
उसधामाइ॥ रहीउकारिउकारिवि
चारी॥ अवेप्रानभगवानमुरारी॥ २२

साषी॥ नवेप्राणतिअगेवकीनेकु
मलागीवारि। भउसतिहरिकोपर
सिमहरिनंदकेडुआरि॥ १॥ चौपाई॥
नवेप्रानजववकीविचारी। कपासिं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रभुभगवानिउधारी॥ बहुकोसपरि।
देहबिषारा॥ भूमिमाहिजनुगिरिउ
धाहारा॥ भूमिकेधजगिभीतरयाइ
स्रा॥ दंननालककुषेलिरिषाइंया
वकीदेहबिकरालभयाना॥ उदरि
तालजबलबिनाप्रराना॥ भूजाता
लिकोरिसहिकलारे॥ अथ्यनिजा
नुपरवउनसिभारे॥ सीसषंउपाव
निमोमोरे॥ अचीवकीछिनमाहिस
नरोहे॥ गिरिसमानिकेदरिसीनासा
प्रथमनाघजीकोस्रानमामा॥ स्रुषि
भेस्रानिकेरिकोउस्रारा॥ लेबजा।
तिजिउवउदिस्रारा॥ सकलिदहि
दीरचउवदाइ॥ पनिभागिहरिमि
लेममाइ॥ अथ्यनिदेउपरिषेलेहरि
पिस्रारे॥ सभिरदउरेबिजलोकिविवा
रे॥ लीजोउठाइवेगिननेदवारा॥ भा
लेनाथिजीषेलनमारा॥ जसमाना
हरिकोउकलावे॥ ननुमनवारिउारि
पहुतावे॥ वाकीगोरिमलिकारिरी

ह० श्रा० मं० २२

28

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

या॥ कपटिन्नूपयापनकाहीया॥ का
हिकारिननपरयतिकोया॥ नवही
क्रकीवैसेतरुदीया॥ चलीमरीघिट
हिनेरुवी॥ हरिपरसेवैक्रें रुपहवी॥
नवैनंरुणावलिमहिश्रापे॥ लेमहीथ
अतिहीविसमापे॥ ईहिमुंगेधकाकी।
अतिश्रावै॥ अतिश्रपारिक्रिबुकहीन।
जावै॥ कहिवितेनमजजनकुसनाई।
या॥ मननितिनंरुमनिमाहिडराई या॥ अ
तिप्रवीनवसदेवमहाना॥ सोईभई।
आजेमीलवधाना॥ पूनमीमेलदा
मकुहापे॥ नंदलालनतेदानकरापे॥ ग
रुयादीनीकरइहजाति॥ हरिनेसर्वसवा
हिंडाति॥ अतिप्रनीतसवअमतेनका
पे॥ निरषिप्नअतिहीविसमापे॥ व
कीमृक्रीपहिलेईहिषेली॥ स्यामचा।
लअतिहीअलिवेली॥ वालनूपमावे
कानाहि॥ कसमहासपानिपारिवलि।
हारि॥ २४॥ साषी॥ वसदेवै[illegible]रउगुला
ईडोचलननंदकेधामि॥ दोऊपतिक्र
मैजहाताषिप्राउमनामि॥ १॥ चौ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाई ॥ बसदेवैनविगारगुतुलाइया ॥
नमस्कारहकरि विगुमनाइया ॥ स
नविननीगुरदेवहमारी ॥ स्वमने नि
रमलगुथिनमारी ॥ नेटथामहै सेन
तिमेरी ॥ हमसुधीनहैबाउीनेरी ॥ जा
कैनेटकैपामिपिआरे ॥ दोकहतिन
होवमिहिहमारे ॥ नामकरनतिनका
करिआवङ ॥ मोनिधारिमनकिसम
नावङ ॥ प्राहिननीकीजैविधिसोइ ॥
हमनमविनजानैनहीकोइ ॥ माजी
बातिपाहिनजीनीकी ॥ वूझीवानि
मोहनिसमिजीकी ॥ लैविधिआउठि
वेगिसिधाइआ ॥ नसुरसालिसकदे
वसनाइया ॥ ३५ ॥ साषी ॥ गरगुगइउ
गिहिनेटकैप्राहिनवडोप्रधान नेट
वङनआदरकीयोदीपाविप्रकोमा
नु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ गरगुनेटकैदुआरेआ
इया ॥ वेगिनेटनीवेदपाइया ॥ पगि
बारिआसनिवैठाया ॥ मारगिकाश्र
मसकलमिटाइया ॥ नवैनेटविननीय
हिकीनी ॥ तुमरीमतिसभनेपरवीनी ॥

२. प्रा.
म.
२२

29

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नामकरनबालककाकीजै॥होइकपा।
लिहमकोसुषदीजै॥वऊतभलाशे
हितिजीकहिया॥हरिकाअंतनकि
नहेंलहिया॥२६॥साषी॥गरगुविप्र

विसमैभयालगनमहूरतिलाई॥वा
लकपुरषअनंतहैजाकेथापनमांई

चौपाई॥तवेगरगजीलगनलगाई।
पा॥करिवीचारअतिहीविसमाई।
या॥ईकऊअनादिअंतितनिआरा॥की
नापरगटरिखिपुनिनवारा॥नंदमहरि
कोयातिसनाई॥भीतरविलोनेदसष
दाऊ॥गुरहजउठउरखरिकारजिकीजै॥
ववनमातुहिहदेथरिलीजै॥भीतरवि
प्रोहितिकोलेआईया॥गुहिवउरप्रो
हितवैठाया॥वोलेगरगप्रीतिअति
लागी॥सुनउनंदसभनेवड़िभागी॥
कहांकहेंकछुकहेनआवै॥हमपर
मनअतिहीविसमावे॥यहिअनंना।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बालकश्रविनासी ॥ सिंध्रुसुतनाजाकी।
है निजदासी ॥ सकलिवरति सतिजुग
महिधारे ॥ होइकपालुनारैसंमारे ॥ र
कतिवरतित्रेतामहिकतो ॥ तीनभव
निकोउरमतिहतो ॥ पीतवचतिउ।
अपरिमैहोवै ॥ धरै ध्यानचमअप
दाषोवै ॥ वरनुस्यामकीनाश्रविवारे
पेहरिसकलसंतनकोपियारे ॥ कवहू
यहिवसुदेवहिजाईया ॥ सभनेतिश्र
रामसकलसमाईया ॥ कुलवेउईह
नामवषानो ॥ धोनेवउनकोउप
छ्छानो ॥ वासुदेवहैयाकोकहीयो ॥ यो
केचरनहृदैमहिगहीयो ॥ वहनषेल
करनेहेवारे ॥ अतिउनीनचिभवनिउ
जीयारे ॥ इहलोकछिनमाहिविडारे ॥
संतजनाकेकाजिसवारे ॥ याकोसव
किपरमपिआरे ॥ परमउपाषपेनाथि।
हमारे ॥ कहांकहोकछुअकथिकहा
नी ॥ याकीगतिवेदहूनहीजानी ॥ नार
यणसोईभगवंन ॥ उरउरानन्तअल
षअनेनन ॥ जोगनपाभिउपीनिलगाव

ह॰पु॰
स॰
३॰ 20

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हि॥ दोनो लोकि परमसुष पावहि॥
पुन रे हि ली उजल नाईया॥ परम दे
ह वईकुंस दा सुषाईया॥ बलिभद्र से
करषण ती जाराम॥ अनिउनीतंई
पेसके काम॥ दोनो वीर राम घनस्याम
परम पुरुष पूरण नहि काम॥ सदा से
करने ह्री रही यो॥ ईन प्रसादि मांगे फ
लि लही यो॥ नेदन मोदा अति विसमा
ने॥ गारगु वाली श्रति दृव वषाने॥ नाम
करन की वाहरि आये॥ कृस्न नाम म
नि माहि समाये॥ २७॥ साषी॥ सीधा दी
नै गारगि को कमलापति की माई॥ निम
हो ई बिनती करी दिज की पूजे पाई॥ २८॥
चौपाई॥ सीधा गारगु विप्र को दीया
रूप चीउ देआ उह की ईया॥ वहुन षंउ
अरु आछे चावल॥ गारगि विप्र मनिम
पे विलावलि॥ चउ काले दिज की पा
जे पपा त्रिसभि धोई॥ आपि हाथि दिज
करी रसोई॥ ध्याली वी विपरो सउ जवै
की ये ध्यान ई श्यारि को तवै॥ नैनमुदि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैठोहरीसंति॥मतिमहिधावैउरुषा।
अनेति॥अचीश्रेदेउरुषोनमेरव॥स
फलीकरहूरमारीसेव॥नवेदउरिआ।
येनेदलालि॥लागेअवतिभोगिगोपा
लि॥सद्गतिसाधिहरिभोजनकरे॥ज
येनामसभआपदाहरे॥जवेध्यानदृं
डिउदिजराई॥देषिसतनेदकोषाई॥री
जसधादेषद्गकिआभयो॥हमराअ
विरथासभुगयो॥बउकामेरिउनरेवा
लि॥षेरमनोषेजाईलालि॥आईधाई
कलकीमाई॥लीवेस्यामचनिगोदिउ
ठाई॥विनेवोलिवंदेदिजपाई॥विमाक
रोवरनोवेराई॥पेकेसतआउमनदेई
मीधाअवरुचउउनालेई॥कीजेकिया
वालकवैसाथि॥समझहिकहाहमा
रेहाथि॥अवरिअनेलेकरोरसोई॥हरि
केषलिनजानेकोई॥वऊविरसोउकरी
गुरदेव॥वहरोअरपेउरषअमेव॥आ
नंपरोसिधिआनफनिधरिउ॥वडुरि।
लालजीकउनकिकरिउ॥लागेअ[illegible]लि

द.पा.
मं.
३१

31

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्वामफुनि भोगि ॥ निद्दनिमिलिमनि
करतेजोगि ॥ जागेव ब्रुरिगरगपरथा
नि ॥ तिसी भीतिदेषे भगवानि ॥ नवै।
नंदरानी कोकहिउ ॥ हरिकाश्रेनन
किनहूलहिउ ॥ रजीवारि विगारिउ।
काज ॥ भारीश्रमपाइउ हैश्रान्नु ॥ फुनि
जसु धाजी श्राइधाइं ॥ निमूहोइं वेदरि
जनाइ ॥ खिमाकरे प्रोहिनिपरधानि ॥
सुनिहमरोहै निपरिव्रैनामेहिप्रजा।
नि ॥ श्रवरिश्रनलेकरुक्तरमोइ ॥ खिमा
करोजीश्रवगुणियोइ ॥ तीजीवारिपा
कुक्रपाकरिउ ॥ थ्यालीमेलिध्यानकु
निधरिउ ॥ नवैदउरिश्रापेहरिराइं ॥ ग
तिश्रलेषकक्कलषीनजाइं ॥ लागेश्र
चनिभोगिगोपालि ॥ नेनषोलिदिजक
रीसमालि ॥ कक्कककोधुउपजिउमनि
माहि ॥ हरिकेषलवरनेजाहि ॥ क्रोधि
माधिश्राइहरिमाइं ॥ लीपेलालजीवे
गिउठाइं ॥ रेसपतितनुश्रैमातूंभइंउ ॥
नीनिवारिदिजकाश्रमगइंउ ॥ नविम।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कुंदइंदिवानितउचारी। सनकुमातुहेमा
तिहमारी॥ न किहीकोअरपेकिआक
रै निभैअचोनैकुनहीउरै॥ हमही
प्रखोतमभगवानि॥ अवहनउजा
इमकुसमानि॥ आपेअरपेआपेकवे॥
निभैअठापेतिसैनलषे॥ सुउवानि
मोहनिकीजैवे॥ षुलेकपाटिगिरगके
तेव॥ हाथिजोरिलागउतिगानि॥ नमो
नमस्तेप्रुरुषुपुरानि॥ ३८॥ साषी॥ गउ
वाच॥ नमउविप्रउस्ततनिकैरेपरिक्रा
नेभगवंति॥ नमोनमोनिरमलनिरगु
नअरनअरषुअनंति॥ ३९॥ चौपाई॥ गउग
विप्रहरिकीरतिकैरे। कमलनामुसभि
कलिमलिहरै। हाथिजोरिगावैगुण
स्याम। नमोनमस्तेपूरनकाम। नमोन
मस्तभगवंतिअनंति। नमोनमस्तेक
मलाकंति॥ नमोनमोवैकुंठिनिवासि
शिवविरंचिसभिनेरेदासि॥ नमोनमो
दारुकीषाणि॥ गुरउआगामीउरषउण
णि। कमलापतित्रिभवणकेनाथि॥ नी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वुजोति सभनौ के माथि ॥ सभने लिखा
ते सभ कै माहि ॥ तु मरे बेलि नवरने स्रा
हि ॥ सेषु सेन माध व सुषरालि ॥ नवि कैं
सरजि कोटि प्रकासि ॥ संषचक्र गदि
वक जिपालि ॥ सावित्र पनि रमलना
लिलि ॥ जगति नाथ जगि के प्रतिपालि
संतन सहाइ दीन दइआलि ॥ जगति
वीजि जग के आधारि ॥ वलि बलि जा
उ मुकुंद मुरारि ॥ ऊजल मणि के धारति
हारि ॥ कौन उपर नामु करता हारि ॥ सु
कटि सीस जगमगनी जोति ॥ ग्रिहि मा
हि परमुकत तहल होति ॥ सामगान पे
कड़ेसे नैन ॥ नतिम नित सदा तुमारे वे
नि ॥ प्रभु वैराठि रूपे अविनासि ॥ ने
रगाउ सभ की या निहालि ॥ पेन नेर
जसु धाके भागि ॥ उपरै तुमरै दरस
नि लागि ॥ पेनि गोपगोपी अरु गाइ
निनि प्रति पराम्रि नमरे पाइ ॥ परमधी
नि इहि मा कलि गाउ ॥ कलि मलि का
टे या का नाउ ॥ अपना कहि मानो अवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मोहि।सरनितुमारीलजानोहि।बहुत
बरषियाकोकरिध्यान॥प्रगटिनकबु
मिलेभगवान॥सफलिआजुनपरसि
श्रीभउ॥तुमपरमारिष्यबिदिआगय
सफलेतीर्थध्यानुघुरति।सफलिय
ंध्यानअरुदानि॥अबिहउश्रीपति
सरनितुमारी॥जगनेरषिआकरोह
मारी।बोलेकेशवकृपानिधानि।सु
नीश्रेश्रेहिनपरमसुजानि॥नरुउपरि
मुकिकरुणाकरी॥हमकोजपीअउ।
क्तिनुपलचरी॥चलनेबैससोपनाम
कलउचारिहचिनिस्पामु।हरेराम।
हमारेध्यान॥दीनुहोईनविकलि।
कोमानु॥हाथिजोरिलागाहरिपाई॥ह
दैकेमवलीपेसमाई॥हरषमाथिदिज
भोजनुकरिजे॥रोमरोमआनंदहिय
रिजे।कमलजुडिपाइदिजराइ।सभैअ
विदिआगरविलाई॥केसेवनेविदिआ
लेगइया॥नानिमाथिईकउतकुअ
ईया॥पहिलीलाकोईसनेसनाई॥

द॰पा॰
म॰
३३

33

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रेमभगतिमाधवकीपाई।किष्याग्र।
निवरनोप्रउरषिषुरानि।कृस्नदासको
जीवनिप्रानि२९॥साखी॥पलनेंझू
लहिस्यामसचनिकाञ्जसवारेमाई॥झी
माउडलठाकीयोकामलिवचनकुला
ई॥२॥चौपाई॥पलनेंमाहिंझूलावैबा
ल।सकलभागिनिधिप्रानिपिआरा
लागीभूषपेटअतिआकै।जननीकेम
स्यनिकोवाकै।जसमातागिरिहिकाति
मवारै।हरदेवीविचनिस्यामसमारै।ल
गीवारिचनिस्यामुरसाये॥नविगाडेसि
उचरनिकुहाये॥परिउऊलहिगाउ
छिनिमाहि॥अमिनषेलवारनेनछी
आहि।वृडेपाविनामरिरिसिमरे।घी
अनाजिमिउभागरेयरे॥लिनसमेति
गाउगिरिपरईया॥नेरधामिरंडक
उनकमंईया॥तरिदउरेअजलोकि
विचारे॥अतिउनीनकेशवकेपिया
रे॥समैपासपरिवचनसनावहि।
विसमभपेककुपाहवहि॥भक्ति।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कैंधुनहीजगमहिंआईया॥कवनभां।
तिगाउउलठाईया॥नविबोलेव्रजके
सविचारे॥ईहिचरित्रहमनैननिहारे॥
नंदलालगाउउलठाईया॥पेकूचारि
लैनेकूकुहाईया॥गाउनेबासनिगिर
परे॥सभैमप्रीमाखनिसिउभरे॥तबबो
लेसभहीव्रजवासी॥लागीकरनितिं
नकूमोहासी॥कहैबालिलागितिनेबा
अविनाएपलाचनिस्यामउभारे॥नवा
जननीलेकेठिलगाईया॥करिसनेऊ
अमखतिपीलाईया॥मिलिगोपीसभ
सवउचारे॥ननमनप्रानस्यामपरिवा
रे॥रषिआपउजलिसिंचनकरही॥केर
किसभैस्यामकोहरही॥लेलेहरिको
नामधुनीति॥गोपीजनकनिरमल।
वीति॥नखसिखलौपरमहिहरिअंगि॥
नामउचारप्रेमकेसंगि॥नंदगाईबहु
दानकराए॥लेमकेदकेसीसछुहाए
रिजनबुलाईकेबेदिपडाए॥अतिधुनीन
लमनेनकराए॥नकूआदीनीकहुरजा।

द॰प्रा॰
प॰
३५

34

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

षरवारि॥ कंचनिकेदीनेवडभारि॥
वडीकुल[illegible]लकरिजानीनंदि॥ देषिदे
षिविगसेसषिकेरि॥ तीजीवारिषिल
रिषराइया॥ सहीनाघुसभिमाहिस।
माइया॥ यहिलीलाकोइसनैसना
ई॥ प्रेमिभगतिमाधवकीपाई॥ गा।

गाभंजनहीनदईयालि॥ कसदास
वलिवलिनंदलालि॥ ४०॥ साषी॥ कं
सपठाइंउत्रिणावरतदैनवउवलि
वान॥ श्रंतरिजामीमहाप्रभुश्रागेघर
घुरान॥ १॥ चौपाई॥ त्रिनावरतफा
निकेसिपराइया॥ निकरिकालनिन
हीमरमाइया॥ नविमकेरिजीकरी
समारि॥ श्रंतरिजामीप्रभुकरतारि॥
जसदाकीगोदीहरिराइ॥ सुषबहुमैपि
आरीजससमाइं॥ गोदिवीविभारीहरिभये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कउकिकरहिदिनोरिनुनपे। गिरिसमा
निजानेओस्लमाति॥ जसुधाचरिभीता
रिविसमाति॥ प्रवैवालभारीग्रतिभा
इओ॥ मोदिवीविप्ररावतिसेपइओ। प
ह्रिग्रनेनवालकनोनाहि॥ याकेषेलि
नवरनेजाहि। कष्टमाथिधरनीपरिध
रिजे॥ जसुदाकामनग्रतिहीउरिजे॥
ग्राइओत्रिणावरनमतिहीनु॥ ग्रायेस
भविधिनाथप्रवीनु॥ ब्रजमहिग्राइ
ओह्रोइवचूला॥ वेसेउहुम्रषमतिभ
ला॥ निकटिजाइग्रतिझारउबाउ। ग्रा
धीउठीटहिउषराइ॥ उठहिकोकरिक
रतिकहोरि॥ पवनपरसिकरनेडमिमो
रि॥ ग्रंथकाहउब्रजमंडलमंइया॥ सुरनि
कारषुक्षपिढ्ढीगइया॥ निकटिदेनुमो
हतिकेग्राइया॥ त्रिणावरनगोपालउ
ठाइया॥ लेग्राकाहिचडिओभगवेतु॥
कमलनेनकमलाकेकेनु॥ केठिमाथि
नपटानेस्याम॥ गरुडागामीपरनिकामि
भारेभपेकस्मतिह्रिप्यानि॥ ग्रषेग्रगोचर

द॰ ग्रा॰
म॰
३५

35

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुरषग्वालनि॥ थीभिनसकैदेतबलि।
हीनु॥ गाइउइहोइहरिश्वागोदीनु॥ कं
ठिदेविकाढेषुभिग्वालनि॥ षेलदिषा
वहिग्वरग्वुग्वालनि॥ गिरिउमुभिपरि।
देतगवाह॥ कउतकिकैश्वनेनश्वपा
हउकालिपरिषेलहिहरिपिश्वारा॥ भ
लेनेदजीभागिनमारा॥ मिलेकमा।
वैकरमिपारा॥ भयेगेश्वबानअति
भितरिभाइ॥ प्रानदेहिहरिपदपउ
वाइया॥ श्रीधीमिरीचोरवनभइओं॥ म
हरिकहीओमामकहंगइओ॥ मुकैगो
दिनेश्रंढनीधरिओ॥ श्रंधकाहब्रजा।
मेउलपरिओ॥ मुकिसुधीनिकोपकै
वालि॥ किनहरिओमनमोनिलालि
हाइहाइमरैचतिमामि॥ उखिमिउ।
रोवेलेलेनामि॥ गाऊवक्षाजेसेमरि।
जाइ॥ श्रारितवैदहदिमिकोपाइ॥ ने
सेउखिमइहहरिमाइ॥ पेहिउखिमा।
षिनेकहिउनजाइ॥ जुसदाजीके।
पेवपाइ॥ गोपीसनीरोतिहरिमाइ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यह्रिग्रह्रिनेआईसवधाई ॥ कह्योकहाम।
हरीजीभईजे ॥ जसधाकहिजेस्यामक
ह्रैगईजे ॥ ऐसीवातितिनेजविसूनी ॥ नै
नझरिजलमेंडीपनी ॥ सभनेकाहिर
दाफरिगईया ॥ अतिविजोगमोहनिका
भईया ॥ दसोदिसाधाईव्रजनारि ॥ त्रिभ
वनिविनुनेदलालउजारि ॥ नैननीरि
वाटरिसोवहै ॥ हरिदेषविथोकोकहै ॥
आउनिकरिपेकगोपालि ॥ देषतिने
नसोधालालि ॥ क्कानीतेहरिलीजेउ।
ठाई लेआइसुधिमोगलगाई ॥ नीज
हिमहरीजीचनिस्पामि ॥ भरनभपेन
मारेकामि ॥ गोहिवीविजननीहरिल
वे ॥ भरनसकलमनोरथभपे ॥ चूमत्र
कलेकेहिलगावे ॥ बढिजेप्रमेन ग्रंगि
समावै ॥ आनेदिनैनिवहेनिहिकालि
परमिसिश्रामस्तभइनिहालि ॥ त्रि।
णावरनवधुकीयावषानि ॥ जपीश्र
हिसैमेकृपानिधानि ॥ ईक्रलीलाकोर
सनैसनाई ॥ प्रेमिभगतिमाधवकीपाई

द० श्री०
म०
३६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केशव कस्मल मञ्जु क्रोध मुरारि ॥ कस्मल राम।
कृ निकृ निवलि निहारि ॥४१॥ साखी ॥ प
कस मै हरि को मयात्र स्वनि पा निक
राई ॥ पुनि हि षाइ विस्व मु षिलीलाल
षीन जाई ॥२॥ चौपाई ॥ पेक समै पि
आरी जन मु माई ॥ सुनि को अस्व निपा
निक राई ॥ पुनि को पानिक रहि चति
स्याम ॥ मंद मंद मु मकान अकामि ॥ ज
नम दामु षिपरि लावै हाथि ॥ वालकी
रूपे छवि भव विनाथि ॥ नव ही लाल जभा
उलऊ ॥ नैदि नारि विस मैहो इगई ॥ देषि
सकल विस्व मुषि माहि ॥ पहि अनेत हे।
मतेसु तनाहि ॥ परहराई कंपी हरिमारं
अति अगा धि गति लषी न जाई ॥ वेदनि
मूदं मु छली उग्र नंनि ॥ वाल कि रूपी स्त्री
भगवंति ॥ चक्र तिहोई मरी जीरि रहि
समैवा तिभरता पहि कही ॥ सनी नंद
जविसे सिवा नि ॥ पेना हो हि नरम रोना
नि ॥ गाय गुवत उपरधा नूमहान ॥ वाल
कि कहि स्याम्या नाराने ॥ मातपिना वि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

समैहेरहे । हरिउनस्त्रीप्रभुकेदेवलि
कहे । तिम्हरूपकेषेलीभइ ॥ पउसेसुए
सभिश्रापरागइ ॥ इहलीलाकोइसनै
सनाई ॥ प्रेमिभगतिमाधवकीपाई ॥
बालकिरुपीत्रिभवनिराई । कसमदा
सपतिपरिवलिजाई ॥ ५२ ॥ साषी ॥
सुरनिचलेप्रभुकेदरहरिबालकित्रि
भवनेराइ । करिनरिवानहिकेकली
मुनिसुषुपावैमाई ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुर
रनिचलमिनिषेभगवानि ॥ कउनकि
करहिप्रभुनारानि ॥ कुडचेरकाकर
हिमहाई ॥ मुनिसुषुपावहिअमोपामा
ई ॥ पाउपावैरवजहिरमालि ॥ प्रभुनिषु
षदाईकदीनरइंआल ॥ दोनोवीरि
रामचनिसमान ॥ भगतिहेतिप्रगटेनि
इकामि । दोनोचलहिहरषिकेभाति ।
लपटावैननिब्रिजकीछाति ॥ बारहरि ।
जावहिग्रिहकोनिआगि ॥ वउभूमि ।
ब्रजकेप्रतिभागि । कौतिमायलप
टाहिअलिपि । अभैप्रगोवरिबालकि

द॰ग॰
प॰
३२

32

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेघि ॥ सभि पाछैं ब्रजनारि सिधारि
वैठे श्यामनैं ऊनकौं गिसमाहि ॥ सुणछ
णाउ वृचहलूकाकोई ॥ ब्रजसमानि
नहीनीनोलोकि ॥ किजसमानिनैं
नीनोलोकि ॥ ब्रजनारीमनिवैठेश्यामने
उ ॥ देषहिनैदनसुषिकेउ ॥ गोपीवो
लहिहारिसिउवाति ॥ हाहृत्यावेगस
मतिनाति ॥ उरतिवानिसनिदेनोवीर
हैलधरश्रसहरिष्याससरिर ॥ भउर
भंगनेउरपैकाल ॥ हाकनेउरकैंगो
पाल ॥ वीकरिसिउलपरानेणावहि ॥
दोनोवीहिमयापहिजावहि ॥ भजा
पमाहिलेनिगलिलाई ॥ वउिभागनि
दोनोकोषाई ॥ गोदिवीविश्यावहिस
निजवे ॥ सोसचीपिसिउसजैनवे ॥ वरू।
नवेनकरिकेंहिलगावहि ॥ कुविले।
ग्रस्यनियानिकरावहि ॥ जिहिनिमि
नमनिकरतेजोगि ॥ छाउहिसकल
लोककेभोगि ॥ सहहिसीनजनिया
राथामि ॥ किमीसमेनिनकोसुषदेई ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नैकुदेइवकुरोकछिनिलेइ ॥ सोसग्र
मस्थापासोठावती ॥ गोरिषिलावैश्री
नाहिरी ॥ सोकोजनीकहैभगवाति
श्रमकरहिनाकोइकसंति ॥ पकि
कहतिस्रवनभगवंति ॥ पेकेकरहति
समकेपतिप्राति ॥ पेकिकरतितिर
मलनाशति ॥ वडीश्रुधिलेपापहिदे
व ॥ दीनसोइसभिकरनीसेव ॥ दिष
नपैवषानैनाम ॥ सोजमथाकेमनच
नसाम ॥ वडेभागेवरनेनहीजाइ ॥ जा
कैछिहिहरिषेलदिषाइ ॥ पहिलीलै
कोइसनेसनाइ ॥ श्रेमिभगतिमाथ
वकीपाइ ॥ बालषेलवरनेचिनलाइ ॥
कलदासपभिपरिवलिहार ॥ ४२ ॥
साषी ॥ चरनकमलागेहरिषलनिवि
गसा वैजसमाइ ॥ ग्रिहिग्रिहिसोमाष
नहरैश्ररभनषेलिदेषाहिरे ॥ चौपाई ॥
चरनकचलेजसोधानेद ॥ नंदनंदनदमूरति
श्रानंद ॥ माषनिचोरभयेनेदलालि ॥ ल
रिलरकहिसेदरिमालि ॥ ग्रिहिग्रिहि

द. ग्रा.
स.
३५

38

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेदध्याखनघाई॥नखासभेनिजगनि॥
केनाई॥गोचीषिकेंकनहिमिलिमेनि॥
जमस्तघानेदनअनिवलिवंन॥आरम
भैउलहनेदेनि॥हिनसिउवोलहि।
अंमिनिवैनि॥महरीजीमनीषोचा।
क्रिवानि॥षरेअनोषनमरेनानि॥थि
क्रियहिनेध्याषनहरे॥वसिमहिपेस।
नेक्कनउरे॥वेनारिसंगिअवारिसभि
गुआरि॥हमनोरूधदहीआधारि॥ऊ
वीरउरियरेहमजवे॥अवरिउधिईरु
करत्तानवे॥म्हरपहिलेऊषलधरे॥ता
उवरिमनमोहनचरे॥करेक्किदमान।
नकेमाहि॥याकेकमनवरनेजाहि॥म
षाषभाजनिकेनले॥षाईषलावेभीन
हमले॥हमहिअरिवंनरिउरानहि॥क
रिचोरीहमरोउधुषाहि॥भीनरिहमज
सियरहिक्कुपाउ॥वडोवोरूभीनरिहीजा
ई॥मनिअउनेकावांदनकरे॥गुहजिउ
उरेनेमाषनहरे॥जाथ्रिहिनेपहिकच
नवाई॥लिनकोगारीदेहिमनाई॥गु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आरकुनेकरवावहिमोह॥ हरिजीईव
वरिपतीअकुचोरु॥ इमघरिकोलावा
गाआगि॥ हरिजी इंतचारिलवीश्रेका
गि॥ हमरेसुतिपतिजागेजवै॥ यांके
निकटिसिपारहिनवै॥ तेहिवकसि
मुकावकुनोहि॥ ठाराभईउगाउको
माहि॥ पहिकुवालिमनकरुगोपा
लि॥ वउतातिकेनमहेलालि॥ तिन
नैनेकुनउपैचेरि॥ आगैउ ठिकर।
तामोह॥ सभचरिमेरेहेउपरपाति॥ रे
गोपकुकियाकरकुउमाति॥ अवही
तोरिलेउसभगाउ॥ छमीउनातेग्रा
मीवसाउ॥ कहिकहिहेसेकनुहलि
कैरे॥ आविह्नाथिसुषवतरि भरे॥ अ
वरुसनकुपाकेअतिआईं॥ जविधिहि
आवहिहमतीगाइ॥ बोलिरदईवकुनाद
सबीसि॥ करेचेरनहीपाकीतासि॥
त्वारथिविनाविगारेकाजु॥ चकुनउ
पीनविकहिगेआजु॥ लागेमलाआ।
वैजेआथि॥ वकुनैवसीलेजावैकावि

द.स.
प.
३९

39

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

खबेपाउपेखोवैवना ॥ षरासनेषानेंस
तजना ॥ थानेक हासनावहिसाषि ॥
लीजैसप्रनागोकलराषि ॥ सुनहुसा
ध्रजसथाहरिमाई ॥ नितप्रतिलूरहि
महीनहीजाई ॥ आपेतवैजसोथानेदि
नेदनंदमूरतिस्यानेद ॥ चरिमहिदेषी
सवजनारि ॥ नविजननीपहिकीपे
उचारि ॥ पहिहमरैकिउआईमाउ ॥ प
हिवनंतमुफिवेगिसनाउ ॥ जसमति
सनमतिउचरीवैनि ॥ थारपतिउलरे
नेदैनि ॥ काहेसनिलगाईकरौ ॥ सोति
बुधिचरिभीनरिपरै ॥ नविमुकंदजो
उचरैवैनि ॥ उलटीआईउलहनेदैनि ॥
वेकवेकिजोमफैषिजावै ॥ नोपहिको।
हुनिलाजिमफिआवै ॥ कोमफिराषैको।
ठिलगाई ॥ कोऊकहैदुकनाचदिषाई
कोहिमुकटिईकलेतिउनारि ॥ देवहिमा
उवहनिकीगारि ॥ पहिग्रतिलेगरिमफै
फिफावहि ॥ वडरीउलाहनेदेवनिआ।
वहि ॥ वेकमनीनिकरूकापहिकरीवै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ननीअवरगाउजारीअै॥जसदा।
सनेकन्हहलिप्रति॥मगनिभइजिउ
प्रतिअवप्रति॥प्रेममगनिलोचनि।
जलवहिऊ॥दीनहोइगोपीकोउक
हिऊ॥मेराकहिश्याम न मानक्रुरा
हउवडिभागनिमोहननूरा॥जाकाेस
रविगारैदही॥अनभरिदैवैमाची
कही॥मोहनिकोमन न देहु दमीसि
कनकैरोनमारीरीसि॥मुषिकउ
षिमाकराहसभि नाति॥प्रतिभोरैदै
हमरे नाति॥मुषिनेषाइ नरहैमना
ई॥भरीकोमाषन न जिजाई॥नमव
डिभागीनि होव्रजनारी॥जिनकेग्र
हिनेग्रचेनमुरारि॥सवमुसकानी।
हरषवढाई॥जसधाजीकेवदेषा
ई॥दीनिहोइजनुआपहिकहै॥के
प्रनअवमारिवुझरोलहै॥मितिमम
मोविननीयहिकही॥वडेभागिहम
रहैमही॥प्रतिमनमोहनननमोका

द.शा.
प.
४.

40

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ति हमरे प्रानन हूके प्रानि ॥ सर्वे सषा
नै उतर दियौ तरि ॥ समझ जणाके दरसि
ग्र धारि ॥ याहूने लगराई करे ॥ यहि य
हिमहि येकसि पगि धरे ॥ धंनि कृषि
नमनी अतिभली ॥ जाय दहिमाधवमा
नहि रली ॥ मनि विवि हमरी यही असी
सि ॥ मोहनि जी कलाष वरी सि ॥ हरष
सति नफिरि आइ धामि ॥ हटे रहै वसि
मंदरी स्यामि ॥ बालष लमोहनि केक
हे ॥ पैंडे सर्वे सभिसंदरिकिरहे ॥ यहि
लीला को रस नै सनाई ॥ प्रेमि भगति
माधव की पाई ॥ लाल करूप अनेन नउ
रनि ॥ कृस्नदासके जीवनि प्रानि ॥ ४४ ॥
साषी ॥ येक दिन सिमारी श्रीची मोह ।
नि उरषि उरानि ॥ देषै सनै रे रे किल ।
धनि नै नि स्रुषि कानि ॥ २ ॥ चौपाई ॥
येक दिवसि मारी हरिपाइ ॥ अमिय ।
गाधि गनिलाषीन जाइ ॥ नवै द उ सि स्रा
येव्रजवारे ॥ सन्तम हरीजी वचन हूमा
रे ॥ मारी श्रीचीक स्नहजी प्यारे ॥ वचन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वनचरनमापाहिउचारे। कीजैकोपुरुषा
नितिनकीबाता॥ गहीभुजामोहति
कीमाता॥ छूटीमाषिमभिश्रेतिगुरा
रे॥ दिवसदिवसकौषोरनिकारे॥ है
जैकुलाविमकिनाहिमहानी॥ दिन
सिरैनिनैजारीचैक्षानी॥ छूटीहाथि
लीनीजविएनी॥ क्रोधिमाथिइहिवा
तिबषानी॥ उरेलालजननीनेभारी॥ १
हौरंस्रपीनइहिवातिउचारी। सभैकू
किवोलतिहैमाइ॥ मारीमसैनेकुन
हीषाउ॥ मधुदिषाइंजसधाकूनिक
हिया॥ हरिकाश्रंतनकिनहलहिश्रा
नविश्वनंतिमषुकमलपसारे। अषल
भवनमुषिमाहिदिषारे॥ देषेसातिलो।
किउपरीके॥ आठोलोकपालिनरिहरि
के॥ देषोतहिसुरिससिकेत॥ ग्रहिनिछ
त्रिश्राकासिसमेत॥ देषेदेवदंनिगंध
रवि॥ मुरतिवनेमेचहैसरवि॥ सिववि
रिंचसाप्रसुरुसिधि॥ अष्टसिधिदेषेन।
वनिधि॥ देषेमहीपतिमुषिमाहि॥ अ

द॰ग्रा॰
म॰
८२ 41

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिथ्य नें नष्ट न कहै न जाहि ॥ देषे सतिप
मालिग्र हलनागि ॥ बले नें दरानी के भागि
देषे सतिसमद्र जलिमाषि ॥ प्रभस्त्रनें
तना घट्ट के नाषि ॥ देषी नदी सकलि
जलवहै ॥ श्री शुकदेव कलजलकहै ॥
देषे गिरि समेर समेति ॥ देषे स्वनें वन
ऊके षेति ॥ देषे नगरि देस ग्रहगाउ ॥ वि
नु म कुंद कोई नें क्रुन घाउ ॥ देषे स भिनी
रषस भयानि ॥ विस्वरूप बालक भगवा
नि ॥ देषिउ समभ्रो क्रुलग्रहगुथ्यारि ॥ जी
जीव जोनि सभ स्यामग्र धारि ॥ देषिउ नें
दधाम ग्रहगाई ॥ विसमानी मोहनिकी ।
माई ॥ देषिउ आपु ष तिम षिमाहि ॥ हरि
के षेलनव रनें जाहि ॥ जसुधा तवै व सु
कसि जानिउ ॥ बाल क्रुना हि मेरा मनु मा
निउ ॥ हाथि जोरि हरि कौ रनिकरै ॥ स्याम
नाम सभि कलिमलि हरै ॥ ४५ ॥ साषी ॥
जसमाता हरि जस करै जानें प्रतस्वनेंत
नमो नमो जग के पिता प्रभ पूरन भगवंत
चौपाई ॥ जसमा जाउ तिनामि उचारै ॥ कस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नामदैनाचिनिवारै ॥ हाथिजोरिहरिकोर
निकै । स्तकरिजानिउंमनिमहिउरै ॥ ।
नमअविंनअछुनिनिरवाणि ॥ नमहीनेउ
पजीमतिबाणि ॥ नमसभिअंनरिवाहरी
आपि ॥ आपिसंघरेष्ठनेनपापि ॥ परंब्रह्म
माईआनेपरे ॥ नमनेवेमुषजनमेमरै ॥ स
तिरूपअविनासीदेव ॥ सिवविरंचिसभि
नमरीसेव ॥ ओऐसकलजीवनमसाषि
अविनासीनाथइकेनाथि ॥ नारायणनि
लेपअलेषि ॥ सवराचरिसभिनमहीअले
षि ॥ स्वप्रकाशसंनमभगवान ॥ नमही
नेहोवतिहैज्ञान ॥ सभकेसाषीसभुकेमी
ति ॥ पुरषपुरातननपरमपुनीति ॥ आदि
नअंतअनेनोअनादि ॥ अगारिमपेनमा
नेसभिमसआदि । नआसिनमारैचारेविद
सेतिरूपनमप्रभअभेदि । कवनउपिले
जसिकौकहै ॥ आदिनअंतनमालहै
वंधनिनेमुक्तिकौछुटिकाई ॥ होउवैठी
पीनमरीमाई ॥ नेरधामकेवड्डप्रथानि
कायेपहिरमरेअनानि ॥ सपुनेकरिना

द॰शा॰
ष॰
४२

42

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नोग्रहिगाई॥मुकिकोअविंद्रनतेकुरका
ई॥ग्राहिग्राहिपरनभगावंति॥रषिआकी
जैगुरषअनेति॥जविजाजननीजानी
निहकामि॥मषिअनेनमूदेचनिस्वामि
नवकेसवपहिवचनिउचारे।गुधिआ
लागीउनरिहमारे।कछुजननीअचने।
कीलैआवै॥विसमानीमोहनकीमावै
सपनाथाकेयासीसही॥हरिकीअवि
गतिकिनूनलही।माधवकीमाईआसि
सिरपुर॥सभैवानिजसथामलिगर॥
जानीजेपूतभइफनिमाई।५दधिकोरी।
लेहाथिषिलाई।कविकेभूषेहोब्रजए
त्रि॥हउलागीथीग्रिहिकेकाजि॥भोज।
निअचरविस्मकेइंसि॥कवनककरैजस
धाकीरीसि।बालकिरूपीप्रभकरनारि
कूलदासवगिपरिवलिहारि॥इंकुली
लाकोइसनेसनाई॥प्रेमभगतिमाध।
वकीपाई॥५८॥साषी॥आपिविरोलनि
कैउरीदधिकोकेशवमाई॥मषिने।
गावैरुनिगुणिमहिमाकहीनजाई॥१५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चौपाई॥ रेकिदिवसिजसुधासिजराजि॥
दासीसभिजोउठीग्रिहिकाजि॥ लागीम
घनीदहीकोआपि॥ जाकैनामिमिट।
हिसभिपापि॥ ऊपरिकापङ्कठसिउ
कसिउ। रोसैरोममनिमोहनिवसिउ॥
तापरिछुद्रघटकाकसी॥ इनिपिआरे
कैरसिरसी॥ लागीमथनिदहीइहिभांति
ससिनेऊजलिमुषकीकांति॥ कंकनि।
भनाकरनिछिनिकारि॥ कीउटपरमछु
विमुकनाहारि॥ कानऊकेउलिजेउज
डाई। भरनिकरीछूनरोसीकाई॥ श्रमस्व।
नियरहुरानितिह्कालि॥ जोधिआरेसि
रीहैगोपालि॥ होनिमथनीपेकछवि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कारि॥ मनिमोवढिउ श्रनसिउपीआरि
लागीरहनिकसाउ निनामि॥ वकीविउ
रनिसुं रहिसामि॥ सकलभंजनमेराह
नि॥ मारेकसराईकेउनि॥ त्रिगावरनके
यानिग्रानि॥ प्रेमपदारथनिधिकीषा
नि॥ कंकणावजहिमथानीफिरै॥ पानिउ
हपकीसिरनेगिरै॥ श्रमनिउमडिवले।
हरिपियाई॥ सोपेजागेनेदकुमारि॥ ग
ह्रीजिवरीमोहनिजाई॥ मथननिदेव।
हिकेशवराई॥ जसथाप्रेमनमावेदेहि
नषिसिषपूरनकसमनेहि॥ मथनछा
डिगोदिहरिलिये॥ पूरनसकलमनोर
थिभये॥ श्रमनिपानकरावेमया॥ श्री
माशनदीनोकरिदया॥ हरिअगनिके
रुपरिधरिउं॥ उरुलिचलिउवलपावकि
करिउं॥ अनहेवालिश्रचानेनषो॥ हरि
गुनिषीणुकदेवकिकरिउंथे॥ हरि।
रुाडिहपदिसिगउ॥ तिहिश्रवसरिश्रा
निभउरीभउ॥ षरेरिसानेवालमकुंदि
त्रिभवनेनाईकगोकलिचंद॥ दनकुमि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उगहिंगेद्धिपावि ॥ सकेक्नलाइनकोम
लिगावि ॥ लेणयुहकीनोद्सिषंडि ॥ जा
करतेउरपहिअसंडि ॥ कक्कुअचिंउकक्कु
वहिहोचलिउे ॥ आउनिकीरजिसनीर
लिउे ॥ गिहभीनरिक्जनिपेहोजाइ ॥ कपि
अहवालकिलीपेवुलाइ ॥ वडेपाइुदपि
माषनिभरे ॥ भैभंजनिसभिउलटेकरे ॥
वंनरिअवहिअचहिसभिगुआरि ॥ आपि
षडेरिवीचिडुआरि ॥ मनुआवेजननी
गहिलेइ ॥ कोपचपेरामुषिपरिदेइ ॥ आ
आइउलटिजवैहरिमाइ ॥ फेडपावि ॥ कि
निदीपेवराइ ॥ देषिमोहनिवीचिडुआरि
भीतरिदेषिवंनरिगुआरि ॥ इनहैसभिल
गराइकरी ॥ कक्कुकक्कोपुकक्कुपेमहिम
री ॥ वंशमपूनभइंजेचरिमाहि ॥ हमरीस
खीसवंतरिषाहि ॥ जापेकहानजानापाउ
अविनोमुकिनेकिहिविधिजाउ ॥ नपेभा
गिकेमवनरिहरी ॥ पाइंजसोधापाछे
परी ॥ पाछेजसुधाआगेस्यामि ॥ कुह
ननपावैअरषअकामि ॥ जाकोमुनिगहि

ह॰श्रा॰
म॰
५५

44

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सकहिनथिप्रानि ॥ तंकोगहनिलगी
सरजानि ॥ गहिउनजाईमांईषकिपर
ठाढीह्वोईबिचारीभइ ॥ नवहीकरला।
गह्योप्राण ॥ जाकोमगिप्रनिकरले।
जाण ॥ उघलिमांथेबलैलगी ॥ प्राणने
सतीकीमाईश्रठगी ॥ मेलीउदरिजिवडी
जवै ॥ करिमोप्रनह्वोउनतवै ॥ सभसे
पाईमोवीजेवरे ॥ निसदिनईनदधिमा
थनकरै ॥ सभिजोरेगोकुलिकेरसे ॥ मो
हनिजीकेकरमिउकसे ॥ प्रनह्वोईव
रहीबिचारी ॥ बिसमैभइसभहीब्रजा।
नारी ॥ जसुदामनिमहिकरतिविचारु ॥
ईहुबालकुमायाकरतारु ॥ मुषिमहि
बिस्वदिषाईदई ॥ सभैवातिघोकीसति
उई ॥ प्रगिकीरहीनबोलैबानि ॥ पेनो
होहिनहमरेनानि ॥ संतकुकेवसिप्रभी
भगवंत ॥ ग्वाग्वग्वाननुकमलाकंत
श्रेनवंतह्वोवैगो प्राज ॥ मुकिकोबांधि
सवारैकाज ॥ उदरिजिवकीपरनिभ
इ ॥ जसधाम्गारिप्रीतिकरिदइ ॥ उघलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेतीबांधेस्वामि॥तहीदमोदरकृपाऐनामि
लागीकरनिग्रिह्किकारजिजाई॥वडभा
गनिमोहनिकीमाई॥जाकैसिमरतिन
रहिफेधि॥कलनामकीनेसनवंधि॥न
प्रभवांधेऊषालिमाषि॥प्रभुविकावहि
सेनकहाषि॥ऊषलिकोलेचलेगोपालि
सभिडलसोचनदीनदईआलि॥जमा
लाअहजुनदोऊभिवेउ॥भूमिमाहिवकु
हिनकेगउ॥निनोवीचिनिकसेसिभरे
हीसीऊषलनांवकरे॥षेचिनेकवल
करसिओ॥तिनकेननिमनिकाउधर
रिओ॥जडिसमेनिउलरेऊभिभये॥पाउवि
नोकेकसेप्रभुसजानि॥दोनोकैननि
मैनसमानि॥देषप्रानपुरषिप्रानि॥स
सभिडमोचनिकपानिधानि॥भूधन
मकरमुकनाहलिमालिननमनहरि
परिउारहिवारि॥नलिकुवरमणिग्रीव
सवीर॥सनिकुमेरिकेदेवसरीरि॥केचाव
केवानकुउठिगिरे॥रजिसिउलेरेजकु
टिलिफिरे॥तादिनभयेप्रेमनिधिभौरे॥घल

द.भा.
स.
४५

45

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कतितेमनैनिजलुटै ॥ हाथिजोतिला
गेगुनिगालि ॥ ज्ञानेकेशवग्रघेयणनि ॥ ४८
साषी ॥ लागेगावनिकलसगुणिदेनाबां
तिसरज्ञानि ॥ नमोनमःसनेकेशवैन
मपूरनिभगवानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कल
कुलजोगेश्वरिदेव । समपहीदेवनमारे
सेव । आदिपुरुषपूरशानभगवंनि । क
मलनाभप्रभपरमसुवंनि । प्रगटिकी
पानमहीसंसारु । दिषमनिहृदेकोवी
चारु । जिनिइहजगिकीरचनारची ॥ नि
सकरनिसिवलेलिवपची । सोतुमस
यामीजगकेनाथि । जीवजौनिसभह
केसाथि ॥ एकापेकीपरमउदासि ॥ हृदे
तुमारेपरमप्रकासि ॥ कालहूकालतुं
तेपरे ॥ प्रभअविनासीजननमिनमरे । बि
गुनमइमायाप्रगटाइ । तिनिमायास
भिविस्वसभरमाइ । नाचैजगतनचावै
माया ॥ दृषैमाधवसकलसमाया ॥ जो
जतिगाइतुमारीउटि । सोसभकैमाया
केओटि ॥ समकिज्ञानहरिसिमरनकै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नानकालिभवसागरितेरै ॥ परमगुरु हरि
श्रीहरि जैसि स्वामि ॥ जनहित उगारे श्री
ष स्वकामि ॥ नमो नमो भगवंत अनंति
वासुदेव कमलाकेकंति ॥ ब्रह्म परमा
नम हरि भगवानि ॥ पारब्रह्म स्वयंजुति।
निरवानि ॥ जो जो तुम लीने अवतारि ॥
किसी न जाने हो करतारि ॥ अद्वैतौ अस
भद्दनैऊव ॥ सकल विश्वापि कुनपावे
नूच ॥ अवितुनम प्रगटे हो भगवानि ॥ नी
नभवनि महि भइ कलि आनि ॥ रामसर
नि दिषगाई ज रूप ॥ कोरि मैन नैम हा।
अनूप ॥ नमो परम कलिआन सुभाई
मंगलरूप जगति केराई ॥ वासुदेव हा।
रि परमानंदि ॥ नमो नमस्तेजदुकुलिचं
दि ॥ तुह्यावसकुजहांचंदनसरि ॥ स्वप्रा।
काशि सविलसितु मारहरि ॥ सदा अलेपी
सभ के माहि ॥ तुमरे षेल न वरने जाहि
ज्ञान रूप विज्ञानहि भरे । सब के हितु है
भीनरे षरे ॥ सभ ते निआरे हो जगदी सि
सतिसनातन निवि सवे वीसि ॥ सभ तां।

द·प्रा·
म·
५८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऊहीतेतुमसभरउर॥ बलिबलिनंद
जसोधाकउरि॥ ग्रसरूपबालेग्रभवदे
जगामहिचरनिदिषारेनपे॥ हमकिग्रा
कपहिबिचारेदीनि॥ पालनपावहिजो
परवीनि॥ क्रपाकरङ्कजमदाकेरंनंद
नमसिउश्रीनिवकेसषिकेहि॥ बाणी
रैकसतुणिनाम॥ ग्रैसीक्रपाकरोघ
नस्याम॥ स्त्रबनितमारेजसिकोसनै॥ प्र
ममगनिहोईमसलकिपनै॥ रहसिक
मावहिदोनोहाथि॥ ग्रैसीक्रपावरङ्क
जनाथि॥ मनवितवेनमकीकोसदा॥ ब
लिजिहकारिपरिसोभोगदा॥ मीषनिन
रतितमग्रागेकरी॥ साधसंगितिबिनकव
हूनपरी॥ देषहितमानैनसनूपु॥ नी
लकमलसोपरमग्रनूपु॥ कसनाम।
कोप्राणीकहै॥ सनैनामलेघनिज।
नुवहै॥ सगीहमारेहोवहिकोई॥ तिन
कोभीमतिग्रैसीहोई॥ कीकिरपाईऊ
दीजैदान॥ रापुक्रपानिधिहमरोमान
हमकोनारहिदीयामसराप॥ संतमिले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

काईरूपरताउ॥ नारउहमरासतिउहा
सही॥ जिहप्रभादिपेसीमतिलही॥ ध्या
नधरगोचरिप्रभूमुरारि॥ होममोहेषैनेन
निहारि भलेभलेनारदिउरदेव॥ निस
दिनकीजैतमरीसेव॥ प्रभजीकहिउ
दईधारहमकरी॥ मतिकोजपीश्रइहि
नपलचउी॥ प्रभकीकृपाजननकूपरि
भई॥ प्रेमभगतिसेकूकोदई॥ कहिउउ
उतिहरषअतिभये॥ हरिगुनगावतिगि
हिकोभये॥ ईहलीलाकोइसुनैसुनाई॥
प्रेमभगतिमाधवकीपाई॥ किपाउ
णिवरनेनेदकुमारि॥ कसदासुपगिप
रिबलिहारि॥ ४८॥ साषि॥ कृषिउषाउह
रिजवैससिवउउहरिसेति॥ कवनभी
तिनरवसिरेकरहिमापिसहिमेत॥ १॥
चौपाई॥ कृषिउषारेजविनेदलालि॥ स
भसुतिकेपेव्रजगोपालि॥ आपेपाईक
लकैपाहि॥ हारदेलागीहरिसिउचाहि॥
विसमेउपदेषिलसिवउ॥ पेगोषनेदिल
डकेगउ॥ भमिकेपनहीजगमिमहिमंद

ग्री.
म.
५.

57

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रा नाम्रनिपवनफलागादइंग्रा॥ कवन
भांतिनृमउलरैभये॥ सकललोकवि
समैम्हाइंगये॥ कउनकिदैषैयेब्रजवा
लि॥ तिनोकहिजैतोउनेदलालि॥ ईन
नेनिकसेबरषेश्रनूप॥ देनकुंकेतनिप
रमसनूप॥ यांकेपांवालगिउसननिक
री॥ कहूनिलगेयाकोननिहरी॥ याकेप
गिलगिउउँग्राकासि॥ उपेनिदियासउ
केदासि॥ तिनकीबातिनमानेकोई॥ ऐसी
भइनग्रागेहोई॥ तिनकीकोउनमानेबा
ति॥ बडिभागनिमोहनकीमाति॥ बबेला
लनीकेग्रतिभइ॥ क्रपाकरीकरुणानि
धिदइ॥ बेगिनंदजोघोलेधामि॥ गोदिउ
ठायेसुंदरिस्यामि॥ बडुननंदजीकेनद
नि॥ हमरेपुतिरषेनागनि॥ दीयानेललति
[illegible]गउग्राभली॥ हमग्रिहमोहलिमानउ
रली॥ कंबनिदीनोसीसछुहाई॥ बेदिपउ
पेविप्रबुलाई॥ महरीकोबाबाजीकहि
उ॥ हुहिग्रपनाधनमानासहि॥ बउरिला
लकोमनकछुकहै॥ नानरिमफनेकी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्वालहै।करिविलापजसमधापहुंनाई
लजतिभईकमलकीमाई।लेगुलिलावे
पंकजिनैन॥तनिमनितउपजेनउनवि
वैनि।दधिभाजनलैकैनैकहै।केश
वाईरिहमहिगहै।धामिदमोदरऋषिउ
ठाणि।वालकिउपश्रनेनश्रपारे॥हमरा
मनुश्रप्रनाकोरिलेउ।कमलदासकोपति
रजिरेहु॥ईहलीलाकोश्रवनैसनाई॥।
प्रभिभगतिमाधवकीपाई।धामदमो
दरदीनदईश्राल।कमलदासकोकरहुति
हालि॥४८॥साखी॥समेगोपश्रावेनवै
महानंदकेश्रानि॥विंद्रावननिचलीवे
प्रभुलेहमरेपरिवारि॥१॥चौपाई॥सबै
गोपवावाकेश्रावे।नंदमहरिकोवचन
सनावे।मनहुनंदहमारेपरधानि॥श्रा
तिकुमारहैनमोकानि।गोकुलतजो
नकोजैवारि॥हमसभनेमिलिकरी
वीचारि॥ईहांहोतिउपद्रवघने॥जबि
केकमलजनमोधाजने।एतनतमारतविज
केप्रानि॥सेकारणगवनदेवश्रमानि॥

द॰म॰
म॰
५८

48

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विङ्गावनिजाईकेजैवास॥ गऊउकोग्र
त्तिकोमलचाम्ल॥ गिरगोवरधनपर।
मगुनीत्त॥ देषतिसगुपावैवीन॥ उर
नीऊरहिविनारजिनीरी॥ वनिमहि।
कोकहिकोकलिकीरि॥ नहांकपाक
रिचलीश्रेनेदि॥ लेचलसतिब्रजगो
कलिचेदि॥ मानीनेदितिनोकोवाति
समैवलाउंग्रागुनीजाति॥ सोउरषि
सभमोतिहिकालि॥ गऊवछासमिली
पेसमालि॥ रषिपरिवैवीहरिकीमाई
गोदिलीचेसहरिड्रिभवतिराई॥ गोहि
एीमोदिलीवेवलिरामि॥ पानकिभा
जहितुवरैनामि॥ गावतचलेकसगुएि
नामि॥ त्रिभवनिकामएीहरिचनिस्या
मि॥ रामस्यामसिसिरस्त्रवनरनछहाई॥
उारनिचलीडहूंकीमाई॥ चोलेनिगऊ।
भ्रारषिचीकाति॥ बोलहिवालकिसव
दिरसालि॥ मंगतजनसभिकुरहिग्र
सीसि॥ मोहनिजीवोलाषवरीसि॥ विं
द्राबनिआपेकीआजेनिवास॥ हरिगु।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लगावैजन्नहरिदास॥ दीजैदान्नप्रभुम
१हरि॥ नेदधामकोमातपुरि॥ इंद्रलिला
कोइंसनैमनाइं॥ प्रेमभगतिमाधवकी
पाइं॥ बालकन्नपेष्यतेनम्रतारि॥ कलप
ब्रपतिपरिवलिहारि॥ ५॥ साषी॥ वडे
भयेनंदनंदजीलागेवक्षाचरानि॥
वैकुंठेनाइंकमहाप्रभुपुराषुत्तरानि॥ २
चौपाई॥ नविसिसपालमोहनकेभये
सषाउआरसीगहलपरिलपे॥ वनिमा
हिकेशवकाहिकलोलि॥ प्रतिउत्तमन
मुषिवोलहिवोलि॥ मुषिपरिवीनवजा
वहिपाति॥ नाचहिपूरपरसपरिकङ्कु
ब्रलाहि॥ केशवकोइहिसेनावनी॥ वा
लकिरूपीत्रिभवनिधनी॥ दनवक्षास
रआइंगेजवे॥ जलपानदपक्षानिगेनवे
करिईक्षावक्षुराहीभये॥ वछिडसेमि
वेतिमिलिगये॥ माधववोलेसनुवलि
वीरी॥ नमसिभिजगतिमिदायनिपी
रि॥ नममभजानदुकहासनाहि॥ नया
वक्षापैठाकोग्राहि॥ मोहतिनाकेपा॥

ह॰प्रा॰
म॰
५९

49

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह्लेरापे ॥ शं ह्निपाइंदेनोगह्निलपे ॥ फरि
शीसपरिकाद्देप्रानि ॥ नहोप्रम्भहरि।
श्रीभगवानि ॥ पटक्रितउउषसितक्रेप
पहिसाथि ॥ भलेकणानिधिनिभवनि
नाथि ॥ वङ्गनङ्घिनांसिउसिरिपपे ॥ मो
हनषेलहिषावहिनवे ॥ जैजैकाहक
रहिनभिदेव ॥ वरषहिप्रहपकणवा।
ह्निसेव ॥ कोपोमक्निवङ्गाहरस्यामि ॥
सारिसिराइप्रमभप्रकामि ॥ किसीभा।
निहरिसनमषिजाइं ॥ नाकोमापवले
निमिलाइं ॥ श्रीसेप्रभपरिवलिवलिजा
इं ॥ गाइं श्रीप्याउप्रारिदेलउाइश्रे ॥ भङ्ग।

ल्लीलाकोइंसनैमनाइं ॥ प्रेमभगतिमाध
वकीयाइं ॥ जसधानंदननंदकुमार ॥ क

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदासपतिपरिवलिहारि॥ ५२॥ साषी॥
रामकसवनमहिप्रभुवक्त्रावरावहि।
नाथि॥ देनवकासहरुहारिहृलिजेकेश
वकोमलहाथि॥ १॥ चौपाई॥ वनिमहि
वक्षावरावहिलालि संगिविराजहि
वालगोपालि॥ सभिमिलिआपेजमुना
नीरि॥ हिनकरिवछुरासववहिनीरि॥
श्रविजेउथारहिरिपानीजैवे॥ देनवका
सरुआईगतवे॥ वगुलाभईआमइउ।
मतिमेद॥ मषिमहिमेलिलीपेनंदनंद
केठिवीविनानेहारमेपे॥ मषितेउरि
कासरिदपे॥ आईउनिकरिवक्रीया।
सान॥ आगेभरनभ्रष्टभ्रान॥ पक
डिबंचकीनोउईषडि॥ छिनमहिसा।
जैलषिब्रसमंडि॥ जैसेवालकिवीरै
यास॥ निउहरिवकिकोकीजेविनास॥
भईजेमनिकिकेशवघरसाहि॥ सोहरि
गाईश्रेआदिनगारि॥ मक्रिवकासरि
कीयहिकरी॥ हरिपगिप्रसंनउपर।
नमही॥ किमाउणिविरनोकसकुमारि
रिषीकेपाकरुगाभयारि॥ ईउलीला।

द.गा.
म.
पं.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोईसनैसनाई॥ प्रेमभगतिमाधवकी॥
पाई॥ जसुधानंदनप्रवलिजाउ॥ कल्ला।
दासकोजीवनिनाउ॥ ५२ ॥ साषी ॥ सा
किपरीग्रहिकोचलेलामकुलसुग्रहतु।
पारि॥ वैनवजावहिसुपरिपरिकल्ल
दासवलिहारि॥ १ ॥ चौपाई ॥ वल्लभव।
देवलेनंदनंदि॥ केशवकलसमाति।
करि॥ सूरजउतरिउलागोसाधि॥ मा
धवआएगोकलिमाधि॥ वोलेनवैन
सोपानाति॥ सनोसपासभिहमरीवा
ति॥ प्रानहिभोजननवलिमहिकरै॥ को
उनआवीपाअएनेचवरै॥ मानीतिनो
प्रनंदहिमाधि॥ नीकीकहीहमारेना
धि॥ सभिग्रिहिवसेविहानीरैनि॥ उरे
प्रातिसभिहिहरदेचैनि॥ मोहनिवैन।
वजाइजवै॥ वल्लानिकारेसभनोतवै
एकएककेवल्लाहजारि॥ मोहनिजी
केवल्लाअपारि॥ हाथिकिसीकेवरी
सहाई॥ कोउआधपरिधसिउवजाई॥
कोउवजावहिवेनरसालि॥ सभिग्रति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

संदेरी सषा गोपालि ॥ पेक्षि वजाव हि कुम
केपाति ॥ पेकि परसि परि बोले हि वाति ॥ स्त्री
कै मेलि ली पेस भिंत्र नि । बों वि वि रा ज ।
हि हरि त्रसं नि ॥ चले वजाव हि श्रुत्र ने सा
जि ॥ नी केवने डाने ग्रजराजि ॥ गोरी केत
नि विमल गाई ॥ मोरवंड कामी सब हाथं ॥
श्रह हरि नाल लगाव हि दे हि ॥ नष सि ष ।
पुरन कसस ने हि ॥ फल कुंके गुछु सि प
रे ॥ नष कुंके पलि मेल हि गाले ॥ पुंपची कान
कुसा थि वना व हि ॥ मषि ने मोह नि केउ नि ।
गाव हि ॥ सखि को कलि स बोल हि वे नि वक
जि उमंगु रि रहे दोउ मै नि ॥ हंस चालि च कि लो
भापाव हि ॥ मोरकु काम नाच दिरहे दोउ नै
नि ॥ मोरकु कामा नाच दिमाव हि ॥ वंत रि को
कीपार हि ख्यालि ॥ कउन किरे षघ हि हरि नै
दलालि ॥ वेंत रि प्रज्ञ गहे है किजाई ॥ वदे
विर ज्ञपरि वारही पाई ॥ मल ज्ञ ध्या परि
म करै ॥ पेकि सषा मि लि मकी लरै ॥ कस्म
नीर भरि या मे जाई ॥ मारी संगति पाछे पा
ई ॥ मे हुहि आपहि लेने दलालि ॥ प्रानपि

द-स्व-
म-
५५

51

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्रात मदन भोपालि ॥ सभ महीस षाय।
नेदहि भरे ॥ केशव जी सिउ कउन किकै
यहि लीलाको इस नैसनाइ ॥ प्रेमिभा
निमाधवकी पाइ ॥ बालक रूपी श्रुरश्रु
नेति ॥ कसयासबलि कमलाकेति ॥ ध्य
दोधी ॥ दंन अघासरु आइ आजो जनन
नविस्याह ॥ बैठो मारगि रोकि करि मा।
मानो बडो पहारु ॥ २ ॥ चौपाई ॥ दैन अघा
सरु आइ योतनहा [illegible]ाह निजी कामारउ
जसु ॥ बारिको सकारदृ विस्यार ॥ सो
पसरूपी इम मइगवाह । बीरवकासह।
मारे जिसै ॥ हउ तोस्राजु नछाउ तिसै ॥
भाइ बहनि हमारे प्रानि ॥ नंदनंदन।
मारे सरजानि ॥ वेक्र अघसरु धरतीपरि
परि जो ॥ ऊपरि काजा इस बहि आरिअ
सूषि नेतानी कठि विश्रारि ॥ जसे कुर
रिग्रं धाम सवारि ॥ बोले बाल किय हि कि
आसषा ॥ ऐसा ठाडो रहन कव कूलषा
पे किकर निति कुमा ग्रभांइ आनु ॥ म

गिमहिवेठोकोरिअभिमान ॥ पेकिकह
तिपहिलागीदाउ ॥ पेकिकहतिगिरिके
दरिवाउ ॥ पेकिकहतिमिलिअहेवैनि ॥ हे
सौठउरितेउपजीरेनि ॥ पेकेकहतमषि
तेउरवारा ॥ जीवकुकाकरिआईजेनाम
मषितेनातेकहे विआरि ॥ मानेलागी
अगतिपहारि ॥ तिहवाभयोवउरहेसोउ
छोटेजीवकुकासंताउ ॥ चलेरिषामषि
पेठहिजाई ॥ पेकिकहतिमषिलेतिपि
लाई ॥ लेवहितेहरिवेगिाकुठाई ॥ तेक्क
नहमराहूदाउराई ॥ देनवकामरमाहिजे
जिने ॥ हरिसंगिहोनेचिंताकिने ॥ हरि
मषिदेषिजाईहरिपरि ॥ संगिहीसक
ललेवकुरेषारि ॥ मषिकोदेनपमारेर
हिजे ॥ अउनेमनिमहिअसेकहिजे ॥
जविमषिआवहिकुराउनिस्पामि ॥ हर
नहोतिहमारेकामि ॥ इकिरकिध्यानल
गावेरहिजे ॥ कोरिजनमकापातकुरहि
जे ॥ मषिमहिआपेत्रिभवतिराई ॥ जाको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभिजनिजीवहिगाइं ॥ सुदिलीयेमंड
कलीनवारि ॥ सखिमहिपैठेप्रभुअपा
रि । हाहाकारहसरोनैकीतेउ ॥ हमरो
जीवनिसुखिमहिपरिउ ॥ सखिमहि
देहिवधाइहरी ॥ इंद्रनेदलालनिसो
लाकरी ॥ रोकिगलालीनारौंपालि ॥ नि
कसिउपवन्नविदारिकपालि ॥ महाकि
इभयेसिरिदीवि ॥ ऐसेकसउधारेनी
वि निसोपंथिनिकसेसभिगुआरि ॥ स
भैनिकालेवछुसमालि । जोनिदेतको
नभिकोचली ॥ ऐसेप्रभुविदारेवली ॥
सखिमुगिवाहरिनिकसेसालि ॥ जोनि
देतकीकरीसमालि ॥ आइजोनिप्रभु
कीगेरि ॥ जाकोवोदिहदेनिसिभोरि ॥ ह
रिसुखिनीनरीलइंमिलाइं ॥ कोमलका
परजरुवलिजाइं ॥ साजुजपदवीप्रभने
लही ॥ लीलाश्रीसुकदेवहिकही ॥ देव
पुहुपकीवरषाकरी ॥ गावहिकिनरिजे
नारिहरी ॥ अपसरिनाचलिमानिवनाइं
प्रजासभैकरहिचितलाइं ॥ लीलाटिवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वेलेसभपानि॥ जैजैउचरहिसंदहिस्वा
मि॥ असलोकिललागिगईआजैकाह॥ सो
प्रभुगावहिमहाउदार॥ अबकीमकि।
कहौचितलाई॥ कंसदासबलिबलिप
निजाई॥ वैरिभावनारिउंअबमूडा॥ जा।
पीअहिसेसेईसुरगूडा॥ हितकरिजोज
नजपहिगोपालि॥ तिनकेसंगीसभे।
निहालि॥ इहलीलाकोइसनैसुनाई॥ प्रे
मिभगतिमाधवकीपाई॥ बिनतीसुनो
प्रभुनंदननंदि॥ हमबकोरतमप्रबंधि
गमधानंदनंकुमारि। कंसदासबुपगिप
रिबलिहारि॥ ५४॥ साषी॥ कालिंद्रीकेश
कूंपेसभसेगिवालसुहीरि॥ प्रभजग।
दीसरिजोगपतिमानसुषधरेसरीरि॥ ५॥ चौ
पाई॥ चमनाजलिसभिवालनउलाये॥
कोमलबालपरिवैठाये॥ हरिकहिआ
सभुभोजनकरो॥ हाथउपरिलेछुकीकैधरो
सभनोआगिआलीनीमानि॥ बालिबहु
रिछिमथिनाराणि॥ कमलगारभजिऊर
रिजीभपे॥ भोरिससानिसषाबहिगये॥

द.पा.
म:
५३

53

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मभकाविनो वहि निजध्यानु ॥ बालि
किन्नपी ग्रष्ठ ग्रानु ॥ राषिजेवेन्नति
उगीमास्थि ॥ निकरिमहाने त्रिभवनि
नाथ्यि ॥ पेककञ्ज लेधरे वषागि ॥ ना
घनिरंजनप्रभनिरवालि ॥ ख्रीपेकि
कञ्ज म हि धरी ॥ गुश्चारज मिउमिलिली
लाकरी ॥ लीनेवावेहाथिगिराम ॥ नि
ली भी ति सभि हरिकेदासि ॥ फलिसभि
अंगुली भीनरिधरै ॥ केशवकसकन्
हलिकरै ॥ भोजनकिनपचिपरिधरेजे
किनरूहुलीकाश्चागेकरिजे ॥ इंकिफल
रूपरिल्लागेषानि ॥ सभहीपिश्चारेग्रु
षिग्रानि ॥ रुषिनचापरषावहिपेकि ॥
हरिमिउकउनकिकरहिश्चनेकि ॥
कोऊकहेपहिमीठाईश्याम ॥ यहिश्चत्र
हमरेपराहिकाम ॥ कोऊकहेयालीजेश्या
म हउश्चतिनिपरिनमातेदाम ॥ कोऊ
गुश्चारजुराकारिरेइं ॥ प्रेमसहलिश्चत्र
नश्चविलेइं ॥ कोऊकहेह्निरिवहूनपमा।
रि ॥ नमिउवडिजेहमातेपिश्चारू ॥ षी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रभलीमीठीसृतिघरी॥ त्रलिनुषकम
लपमारेहरी॥ हरिकेठौरेस्राविघ्रविले
ई॥ भलेकपातिधावलस्रभेई॥ ईसो।
भांतिहीलिउमितिलिगपे॥ कुसउपस
भुवालकिभपे॥ सभैवालिविहूवल।
बेभपे॥ वछाहरिवातिभीनरिगपे॥ ह
रिकहिस्रालनीसुरूसभिमीन॥ मोज।
नस्रबोकरोख्यिहवीलि॥ हउसभिवछा
लिस्रावोमाई॥ मनमोवकुमनतिराउला
ई॥ उठेसभिवछालि॥ उठेस्राप्रिविभव
तिकाराई॥ कमलउरूपेनकोमतिण
ई॥ बोजनिफिरहिवछानीहरी॥ कछु।
वनराईस्रसाकरी॰ वछुरेवालिसभैल
गईया॰ स्रसानिपरिईस्रानाभईया॥ के
शवसभैपछानीवाति॥ हासीकरीहम
रैनाति॥ ५५॥ साषी॥ नवहीसभिमासेस्र
वरिवछावालिमोपालि॥ वहीवहिक्र
मवहीननिभलेनेरकेलालि॥ १॥ चौपाई॥
पेकरिनमिवछुरालेरापे॥ निकरिगोवर
धनिकैसभिपाई॥ देषिरिपेरी॥ केशवकी

ह॰ श्री॰
म॰
५०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नैष्ठवरिगुआरि॥ वामदेवकोलगीनुवा।
रि॥ वृहीवहिकमवहीसवरूप॥ लीलाग
इवैपरमअनूप॥ वहीवसशिवकुला
कुरीहाथि॥ नैसेसवरिहमारेनाथि॥ व
हीचालिसभवहीसभाई॥ अभिगनि।
कीगतिलषीनजाइ॥ नैसेवछुासवा।
रेहरी॥ प्रभुविसंभरिलीलाकरी॥ परी
सेकिउनरिऊरविजैव॥ गोकलिआपेके
शवनैवे॥ मथुरिवीलिअरुविगवजावा।
हि॥ व्रजकेभागिनवरनेजावहि॥ कुस।
रूपसभिवछुरावालि॥ सभिव्रजवासीकी
निहालि॥ सनमषिमाइमिलीसभिधाइ
सभिमतिलीनेकेठिलगाइ॥ चूमहिम
सकिरदासनकरै॥ प्रेममगनिलोचनि।
जलढरै॥ व्रजमहिचउगनिवदिउस
नेऊ॥ मचानिचटानिउवरषैमेऊ॥ नाऊअ
द्धकीकथाकहीअै प्रीति॥ सुनसिउला
गेदसगुणीचीति॥ चूमहिवारहिकेठि
लगाइ॥ दषहिपुनिषरीविगसाइ॥ अपा
निपकिवछुासषपावहि॥ सुवानीन।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पानीबहिजातबहि।तेकिवरषिल्लगिरहिहि
विधिभवे॥ निनतिनश्रीनिवदैनिनिन
३॥ ५६॥ साखी॥ गोवरधनिकैनिकटिरी
वारहिवछाग्रलेषि॥ धाइगाइबिलंब्रुन
जिग्रथ्रुनेवछागारेषि॥ ५४॥ चौपाई॥ एका।
दिनसिवछकालेगपे॥ निकटिगोवरध
निकैसभिभवे॥ गिरिरूपरिचरनीषी।
गाइ॥ वेषरतिचलीसभिधाई॥ प्रछिफे
रितिरिरूपरिभरी॥ तेरीथीबारूचीकरी
धाइछिगिकेसभैविसारि॥ घनितेचले।
रूपकीधारि॥ आइमिलीवछराकोसभै॥
महादीनिजिउमाताकुलभै॥ ग्रमघनि
दीपेसतेमषिमाहि॥ चेवमहिवाटहिके
छिलगाहि॥ तीनपनरूतेवहिधाजा
इ॥ सभहीभइकलकीमाइ॥ गरूथाके
धाएवरिवारि॥ वालरूकोजाइकरिछि
प्रहारि॥ थानेतिकरिवछाकिउतिनो॥
रुधनवाइजेसभपत्रइनो॥ जीवतिर
हीकिमइआइ॥ सेलछिगतेरूनतीधाइ
आइनिकटिजविरषेवालि छौनकी

र·का·
म·
५५

55

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नह्रंदे हिसमालि ॥ केठिमिलेग्रतिह्र।
भ्रवछाई ॥ उमदैउग्रेमनअंगिसमाई ॥
मिटेगेकोपसभिप्रेमहिभरे ॥ दरसन।
देषितिसभिउषिरे ॥ विछ्लनसकरि।
सनऊनीवापि ॥ लागेकानिमहाविल
लापि ॥ कहसापिनऊयालेगपे ॥ नवि।
वलितमचकनिसभए ॥ ग्रेसामाऊंई
नोकिउकरिगे ॥ व्रजकोकछुरउना।
परिगे ॥ इंहमाईपाकिनिलाइदेव ॥ पाकें
कछुनपावैभेव ॥ कपिसतिजिउव्रज
वासीरगे ॥ ग्रेसेपतिध्यारेलगे ॥ मिति
नेगऊयायाउभाई ॥ ईऊलीलाकछु
लषीनजाई ॥ येकिवाषिलगिमोऊ।
वियारावाकाकछुनपाईउपाउ ग्रसा
सिऊषलेयास्याम ॥ तांदिमसंगिनपे
वलितमि ॥ वछ्ळावालिजविकलसवा
दे ॥ नामस्यामसंगिनयेमिधारे ॥ पाय्रव
कनिईहिकारनिमए ॥ केपावपेलदि
षावहिनये ॥ हलधीहिहदैलीनो।
स्याम ॥ दिवज्ञानमिमरेवलितामै ॥ नवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वहितपेषमांपानी ॥ नवशंकरषगिवा
निपखानी ॥ ईउलीलाहमरेप्रभकरी
जैमक्रुरतिजैनिसिहरी ॥ प्रेममगनिहो
ईहतिगुनकैहै ॥ मलकनितेमनैनिजा
लवहै ॥ ईहलीलाकोश्रकैरेउचारि ॥ कल
रामनामपविलिहरि ॥ ५४ ॥ साषी ॥ पेक
वरष्वैतरिपकिउश्रमाकरीसमारि ॥
कहाकरहिसतनेदकोदेषानेनविहा
रि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पेकवरपुजविपैतरिपागि
नविवतनननविनवनकरिजे ॥ देषा
कहाकरहिगोपालि ॥ व्रजसषदाईक
रीनदपालि ॥ देषोकहाकरहिगोपा
लि ॥ व्रजसषदाईकरीनदपालि ॥ दे
षवरीवक्षाअरुगुणारि ॥ तिसीरूपहेने
दकुमारि ॥ वेलोमसिसमपिपरेरूपाई ॥
प्रातिजेकिसेनलषिमाजाई ॥ देषउहत
हाहोधरे ॥ वेनउततिनेदनेरदनकै ॥
देपिउअवउरासभैवनिसूपाम ॥ समभीव
नरभजिसभैअकामि ॥ पीनवमानवै
जैतीमालि ॥ वारेमाईधिपरमामालि

द-गा-
म-
५८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुकरमोशिअरु केंउ लिकानि॥ सभही
भेप स्रभु भगवानि॥ सवहीकमलनै
निरुषणासि॥ सभहीपरहिसप्रकोपा
सि॥ अस्सामतिमहिकोविचारु॥ ईनि
महिमाचाकोकरनाह॥ ईनमहिपिना
हमारेकउनि॥ सभैनिरंजनअजकेभउ
नि॥ सभैअमोचहिसभैअभेदि॥ सभनो
आगैराढैविरि॥ कोकोमनोकवनिवि
तलाउ॥ कवनिप्रभूलेहुदेवमाउ॥ वेदि
वनावहिपकेदेव॥ पेनोसभैअनेदसभे
व॥ जोकुनिदेषहिनैननिहारे॥ सोसव
साकरहुजानि॥ सउसउअसाबेदअवा
नि॥ षेलदेषनाहीसंभारि॥ पेदुअनंत
नहीअंतमुरारि॥ सउसउअस्साईकभ
गवंति॥ पेकपेककोकहतिअनेति॥ रर
हिवदअसेकउदीनि॥ भलेमहोपभण
रमणवीनि॥ विसमैभरूअवरितहिदेषि
मलेनिरंजननाथप्रलेषि॥ अहसिपि
देषीहवनिषि॥ समिहोत्मागैरापीरि
षि॥ फुनिदेषचउदहवलेउ॥ दीपलोकि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रहसागगिरिषंडि। देषीलषचउरासीजो
नि॥ लागीपापमकनेहंहलहोनि। नाचहि
पेकवजावहिनालि। नउनलिसाजेघ्री
गोपालि॥ गावहिषउहिवषाननहिनाम
भलेकपालिपिनेदीसालि॥ ब्रमानि
पटिवकनिसाभईया॥ प्रउनानेत्रभे
भेलिगिनईया॥ जिउंघेधिवारुप्रमाव।
सिपनि। आनकुहरनिहमाहिसमानि
व्रसाकीमाईयाईउरुपी॥ हरिमाईयाके
मीनहिषपी॥ चेदननिवैरनानाकरै। छ
पिजावैजवामरजुगवउं। निउब्रसाका।
मिरिजेप्रकासा॥ भईउनिपरिदासहुका
दास॥ उनरीसीब्रसाहोईगईया॥ विसमै
नेअनिविसमैभईया। ननिमनिकीप्र।
लीमसिलपि। कवुनरहीसिमानीचुधि।
हरिविभूनिप्रउनीषिविलउ। निसहीउ
पटिषाउदउ। हाथियासविवारहिंवनि।
मारि॥ प्रजहहवढाहहिपावैनाहि॥ केज
निवलुगवालकिभेषि॥ प्राहिनिरंजन
प्रभैप्रलिपि॥ ब्रसाकेमनिभईसमालि

57

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नविहरिदेषबालगोपालि ॥ द्वारिकेस
घरनीपरिपकिउे ॥ हरिपगिहिरदेभीन।
रिपरिजे ॥ चारिमुकुटसिरिमोभहिभले
बेंद्राबनिकेरलिसिउरले ॥ हरिपरि
परमेहरघहिमाषि ॥ दाद्राहावैबांचेहा
षि ॥ लोटैश्रहउंउउनाकैरे ॥ उलकनि
रेमनैनजलछै ॥ देषहुहमसीउरगो।
पालि ॥ ब्रजमघदापकहीनरदेश्गालि
हषिजोरिलागाउनिगानि ॥ नमोनम
सेउरुषउराति ॥ ५८ ॥ साषी ॥ ब्रसोवाव

कमलमूर्तिउसननिकैरेविसमैवरीउवि।
नारि। नमोश्रविनप्रलेषश्रमननमसावेक:

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मारि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ नमो अनंत प्रभु भगवं
ति ॥ नमो नमस्ते कमलाकंति ॥ अघे
मलेष अविंत अभेदि ॥ नेऽ गावधि
कोटिकि वेदि ॥ जेति ननउ अनपुष
प्रगति ॥ अत्रुननाथ श्री भगवानि ॥
नमो निरंजन नमो नाराति ॥ नमो ना
मस्ते सभकोषाति ॥ घटनी जोजनि ।
कोटिपवासि ॥ नापरि उगणा जलिकें
वासि ॥ नापरि उगणा अगनि विसवा
ह ॥ नापरि उगणी पवी विप्राह ॥ नापरि
उगणा पवि जे आकाश ॥ नापरि अहंकें
रिकोवास ॥ महानन तनिह उपरि परि ।
उ ॥ कमलनाभ जहि कउनककरि ।
उ ॥ सबके उपरि माइ पावसे ॥ मोहमे ।
लिनभरकें गसे ॥ पेक्रु पेक्रु अश्रे सभ
समेउ ॥ सभके उपरि तमरातउ ॥ नि
नमहि लषवउ गसीजाति ॥ नमहीला
जीलाना भांति ॥ जेगमपेक अजंगमक
रे ॥ ईकजलमहि ईकपातलमहि यरे ॥ ओं

रमा०
म०
५५

58

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उग्रनेतलेखाणीवारि ॥ मिननेउपजेरूप
अपारि ॥ देपदिचउपदिछेपदिकोर
सभहीअपुनेरसमहिभरे ॥ सहसपा
दिईकपगानेहीन ॥ जापिजोगसभही
परवीन ॥ ईकपरनीईकबसहिअका
सि ॥ ईकपनालमिलिकरहिउलासि ॥
दानबदेवपेकरीपावि ॥ किंनरिसिधि
नमरेसरवि ॥ रघसिपककरहिजीअचा
नि ॥ पेकविचारेमानसज्ञानि ॥ चारिबर
नअहआअमचारि ॥ नमहीभेप्रभक
रतारि ॥ एकनागईकसांपपभैआनि ॥ ई
कबलिहीनपेकबलिबानि ॥ ईकिग
यारईकिलीशेविवेक ॥ सकलिको
किकोनमरीरकि ॥ सोजनसभतेअति
सज्ञान ॥ सदाअराधहिश्रीभगवान ॥
नमरेखेलिनबानेजाहि ॥ तिसमेहोइर
रहिअमनिमाहि ॥ तिउगूलिरकेफलि
महिजंत ॥ पेकपेकमहिबसहिअनंत
सभमहिअंनरिमिलिआनकोइ ॥ फ
लभोगतसभपरीपरोई ॥ ईकईकजा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेपैकेबसै॥ अपनेरसितनिसबासरिरै
कोंइनलहै किसीकोसारि॥ फलकैभी
तोरिजंतनअपारि॥ तिउअंधेरगोहमहिय
ने॥ मनकोफिरैतिनसोजेनै॥ जगतिवी।
तिसभहकोधारि॥ प्रगटिभयेसभिनि
मैतसमारि॥ जगतिनाथजगकेधा।
धारि॥ अबैयचोबाप्रभकरतारि॥ व
जेतेउपजैसभसंसारु॥ तुमराककछुन
पारावारु॥ सभहीतुमरैहैआकारि॥ प्र
भिपालइकफुनिकारहसंघारु॥ पेकुतैने
मेरिहठहयारिओ॥ कहाभईआजेअव
गुनकरिओ॥ तुमराकछुनबिगारैना।
थि॥ जगकीलीलातुमरैहाथि॥ तुमए
सतहोहेभगवानि॥ कमलनाभतुमा।
श्रीनारानि॥ येउकहैबिअसाहरिकेए
सेमानाहिंबालहोनेरा॥ जोबालक
कछुकाजबिगारै॥ पिताहतनकोकर
नमारै॥ खिमाकरोहमरेअपराधि॥ सा
धैनमारैसाथिअसाधि॥ अबिनकियं
लेतमैप्रानि॥ पिप्रारेलागोयेभगा।

द॰ श॰
म॰
५८

59

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बानि॥ पहि निजध्यानरि देमहि परो॥ ह
रिध्यानतनै नै क्रुनररो॥ एककछिमरि
परीवषानि॥ हजै छुरी परीनारानि॥ ए
सिउबीनतिउगीमाथि॥ यामिसबक
निवावैहाथि॥ फलिरमिमभ्रेउरीथ
उमाहि॥ त्रिभवनिमहिकोईपरनीला
हि॥ मोरिमुकरिसिरिजगमगिकरै॥ थ
वलभवनिकेनमकोहरै॥ विचनितन
गरीहक्कनालि॥ सबलिंबुबचीयाभलेगा
पालि॥ पीतबमनवैजनीमालि॥ सभि
सेननिकोकरनिनिहालि॥ षोजनिव
क्षफिरहिवनिमाहि॥ पहिलीनारसि
भरीदिषाहि॥ इंहिध्याननहैचरिपरो॥
क्रपानाथप्रभकरुनाकरो॥ १॥ प्रवरछंद
नमोपरमानमसनमोनाराति॥ नमोअति
गतिनेनमोनिरवानि॥ नमोनिरलेपी
नमोसभमाहि॥ कालनगिकोभैषतू।
कालिकोषाहि॥ नमोअविनासीनमोअ
निस्पामि॥ सेषमहसमषिरटउगिनाथि १
मधुरछंद॥ हेसबनेनाभगवेतासना॥ ज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गणपतिजीवनिसमिर्जेता॥ अविगतिअले
खाहतुनेखा॥ नमोनमोकमलाकांता॥
नैनैनिर्गुणानैनैसगुणानैनैनेदनैदै
नेरी॥ वातिकमलिहृदेगहिराषैवक्षरी
नणावैजगकेरि॥ पंकनिलोचतिनैनस
धाकेसनिपिधारे॥ वकेवकालसयवहय
वालहवैरभावनेपेनारे॥ नैनेजवेसो॥ ष
नैषनिसीनलनैसषदाईकरैवहरे॥
नैवलिवीरानिरीभीरसिष्यामषना॥
नैपदिकोमलविष्यापीजलिबालवना
नैपामानमसभनेशुहरूपामपे॥ पवि
नेषालीनिषधिमानोदेवभवे॥ सव
नेमषिसवहनेसृचासभनेऊवासोसाधु
नकहीगावैनकहीध्यावैनिसैनेविष्या
पैकोविष्याधू॥ किहिमुंषगावापाहनका
वाधमिनसगोचरभावना॥ नयवंता
हृउदीसवीकारानमनीमहिमाकिष्या
जाना॥ बाहीमाहिसनैजसनमराजुह
नमकोउउतिकरे॥ महामोहविविष्या॥
कोसागहमोजनगोपदिभीतिनरे॥ जो

द॰पा॰
प॰
८॰

60

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जेनजाननहिंतुम्हगोविंदजाननहिंनेकुजा।
नहिंभगवाना॥ तिपहिंनिमानाथहराईस
ग्याहिंतुम्हमोकोकियाज्ञाना॥ हमना।
नामध्यानचरहिंभीनारिश्रमतुम्हकोउर
उतिकरो॥ पैसोहरैनश्रवहमहावैपमि
प्रसादिभवसिंधुतरो॥ १॥ चौपाई॥ हेप्र
भक्तनीश्रेविनैहमारी॥ श्रतिउदारपार
किरतितुम्हारी॥ श्रेसाईनुकृपाकी
दीजै॥ विन्द्रावनिकोकउतकुकीजै
विचरहिंजहातुम्हारेमीन॥ धूरिपरै।
सिरिपरमपुनीति॥ ईनकेवडेभागि
हैनाथि॥ तिसहिंनचेलहिकेपाव।
साथि॥ कियाईनकोदेवहिंगेहरी॥
तुम्हकोसिमरहिंछिनपलघरी॥ मा
थनहरूपतुम्हरोकोरहिं॥ पहैकेवाबि
कतुम्हहोमहिं॥ तुम्हकोजोनतुम्हसीर
लिहैहिं॥ सोजनतुम्हरीसारवसलेहि
ननधनधामाईनोकीगाई॥ तुमही
कोश्रपितुरहिंगाई॥ तुमतेईननेउर
नतुनाहिं॥ तिरहचेकरिजानिजेमनि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मोहि। नयकोमनहिंहीनोव्रजलोकि। व
नकोमिनपनवकरैमोकि॥ मकिकरो
जोग्रभभ्रलेष॥ वकीमकिभईनके
भेष॥ जोतनमकरोग्रभकलोरि॥ नारो।
गाइंनकेपरिवारि॥ वकीमक्रिकीनी
ब्रजनाथि॥ वकीपयबालरभाईसा।
थि॥ तिलीसदागोपडकेसाथि॥ मन
ग्रषग्रनेनग्रकाथि। जेग्रचषंडनगे
नेदंनेदि॥ कृपाकरोहोव्रजकेनेदि। ज
उकुलकमलकृकाणरिवाह॥ सखि
जिउनमनावेइग्रवनाह॥ हेप्रभुमेरे
सीकलणाकरो॥ हमरैहृदैपरमपउ
धरो॥ कैसैहैतमरेपमिफलि॥ सम
सेतनिकीनविनमलि॥ ग्रनिकंरहि
मषदायकणारि॥ संतनपक्षानहिप
सिकोसग्राहि॥ नीरिषिमेपनिपाराव।
उनीति॥ प्यावघरैहोरविमलवी।
ति। वेपनिइमरैहिरेरवसे॥ हउक्ष।
नमरेरमिनहिरमो॥ प्रभुनाकनिगा
नोग्रमिमोहि॥ मानिनमाथेलग्राती।

रस्था॰
प॰
६१

61

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह्रि॥ दामनुमारा हो जगिदीसि॥ सतिम
नानमी विसवेवीसि॥ व्रजके करहाव
छानोभाति॥ उधरैनुमरैहरसनिला।
ति॥ परमानेहमना ननिहेव॥ प्रन।
प्रसम विंनप्रभेव॥ श्रेसेप्रभहेनस
भकेमीनि॥ माति माति प्रविहोनवनी
न॥ वक्रूनवालिनहाहीधरै॥ वेसाह
रिकीवरनीपरै॥ मीनपराक्रमाकोनी
दीनि॥ वलिवलिजाउप्रभूपरवीनि॥
हहउउ तिकलपलगिकरो॥ विन
नममलिनेविनवनिकरो॥ वलीनेन
नेसीनलिधारि॥ पेठोप्रेमसमनुध।
पति॥ प्रेमनदीनउलाउश्राप्र॥ प्रेला
जपकमलकोजाप्र॥ मीनलवदनेन
नेढले॥ केशवजीकेपगिपरिपले॥
प्रसथानसिउधोपेहरिचारनि॥ महा
राजजीनुमरीसारनि॥ ब्राउनिसकेश्रा
नेहमह॥ प्रपनाप्रकुकरिजानेकृ१
फुनिचरिभीनीकेरेवीचारु॥ निक
रिजोप्रहरउनाहिनवाह॥ इहागोपदृकें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रविकाल॥ ईनसिउपैलैनापुष्पणाल॥ उ
नसिउहमसेदीननरहनापाहि॥ निहवै
जानिउहदैमाहि॥ लैबिदिग्राहरिजीते
वलिउ॥ मुषिभगतिनकेभीनरिरलि
गावतिवलिऊैकलगुणिनामि॥ हदै
रहैवसिसंदरीस्याम ब्रह्मासिउपहि।
लीलाकरी॥ जैपैपैतेसै सेनरिहरी॥ प
रैसनैयाकोउविवलाई॥ प्रेमिभगति
माधवकीपाई॥ हरिगोपालकरुणा भं
डारि॥ कुलदासपगिपरिवलिहारि॥ ब्र
सकीरतिवऊनीकरी॥ सोमकिसभैन
हदैधरी॥ जोकहिसकीमोकछुकही॥ पा
छैकहवऊनैरीरही॥ जोमतिनैदनन्दन
जीरउ॥ हिनकरिमोहिहदैधरिलउ॥ सो
रसनाकरिलीपैउवारि॥ कुलदासप्रभप
रिवलिहारि॥ ५४॥ साषी॥ लैग्रापैवकुर
प्रभुग्रपुनेसंतनरूपासि॥ तिसीभांतिवा
लकिसमैहाथऊपरेगिरासि॥ २॥ चौपाई॥
हरिजीग्रापउग्रारऊपासि॥ समनोहाथऊ
परेगिरासि। बोलेबालकिसभगिरसैरी

द॰भा॰
भ॰
६२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पीरचारलिआपेबछुराफेरी॥तुमबिनतु
षकछुमेलिगेनारि॥तुमबिनकहोक
वनविधिषाहि॥ज्ञानहिग्रवैसिधारे
री॥लागीनाहिनमाधीचरी॥तुमसम
ब्रह्माषरेह्रूपाई॥यानेकेभावदीपेत्र।
लाई॥ज्ञानहिबालिनकउह्रगई॥माध
वषेलदिषावहिनई॥वैठेगुआरङ्ग।
वीविगोपालि॥सभिसषदाईकदीन
दईग्वालि॥लागेग्रवनिभागिभगवा
नि॥सतिसनाउनिग्रभश्चगुरानि॥वोसी
ग्रेनवरषिकेधरिजे॥हरषिसहितह
रिभोजनकरिजे॥दीनवेधप्रभसेत।
ग्रधीनि॥सभविधिपूरनप्रभपरवीनि
वालककोवोलेगोपालि॥देषहुसषा
माधुविकरालि॥जितिमषिहमतुमली
षमिलाई॥ग्रेसाग्रजगरुतुरीवलाई॥
नाकामकैकपालविडारिजे॥कउतना
कुनमकउप्रगटिदिषारिजे॥यानेतम
गेरषिग्राकरी॥तुमग्रेसेकरणानिधि।
हरी॥देषहिवालकिनैननिहारि॥ह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मरीजीवनप्रानमघधारि ॥ यातेराषेवंद
क्रमाति नवमनयापरिजारहिधारि ॥ भ
गेतिमचहिमनेंदहिसाषि ॥ जमनाके
नलिपेपेहाथि ॥ सोझेपरीमग्नैवृतिको
चले ॥ महावलीकेसवनिरदले ॥ वेनव
नातिसघासभिमाषि ॥ वीचिविराजहि
त्रिभवनिनाथि ॥ व्रजमहिपेठेकपानि
धानि ॥ वालकरूपीप्रगटधरानि ॥ माई।
गाईकोचरिओमनेहि ॥ देहिवानिनेभई
गेविरेहि ॥ वालकिवेलेव्रजमहिवाति
माधुविउरोजनधानाति ॥ ब्रजगह
वउपहारिसमानि ॥ केघावनाकेहनेपरा
नि ॥ हमनितयासेव्रीवलाई ॥ जसधाने
रनलीपेव्रुलाई ॥ फोरिगेनाकामाघक
ल ॥ महावलीहैप्रभनंदलालि ॥ घेलैला
लकतहलिकरै । ईडलीलाकोउहिरदै
धरै ॥ कोउ भगतिजनसिमरनकरै ॥ भवसा
गरितेपारिउतरै ॥ तापरिकृपाकरिहरि
राई ॥ सचलिभगतिमायवकीपाई ॥ चउ
दहधाईंलेघरनिभपे ॥ परिसतोसभिपा

द०पा०
म०
६२

63

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नकेगए॥ केशवकस्तमुरारिमकंद॥ जै
जगदीसरित्रिभवनिबंदि॥ आदिपुरष
पूरनकरतारि॥ कृस्नदासबलिकुनि॥
वलिहारि॥ ६॥ साषी॥ बडेभएगोपालि॥
जीताजोगउबतानि॥ जोगीभोगीअतिज
तीसभविविधिपरमसुजानि॥ २॥ चौपाई॥
भडेभएकेशवभगवानि॥ माधवलागे
धेनचरानि॥ बनिकोचलेसाषिबलिबी
रि॥ श्रीनमगुआरजुकीसेगाभीरि॥ वेन
बजावतिआनेदहिभरे॥ केशवसिउ॥
मिलिकउनकिकरे॥ बनिकोकीनोकु
सप्रवेस॥ जाकोहरिमनिकरतिअदे
स॥ जलसिउपूरनिनिरमलनालि॥ षे
लहिंनहाजसेधालालि॥ सीतलमंद
सरीसबिआरि॥ अबबसहरिपरिउपरि
वारि॥ बोलेकृस्नतोबलिबीरि॥ आदि
पुरषतमधरेघारीरि॥ देवजूतेजोउत
मदेव॥ तेसभिकरतितमारीसेव॥ ईहा
लीनेतमअवतारि॥ तमतोपूरनपुरष
अपारि॥ देषउपंषीवनमहिरहै॥ नेकु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नईनकीरसनाहूहै॥ यहग्रलिगुजहिक
ऽहजारि॥ ननमननमतोऽरहिवारि॥
सभहीमनिहैसनीग्रेटेव॥ ग्राइकरनित
मारीसेव॥ पंषीग्रलिजेनेवनिमाहि॥ सभ
हीमनिहैसंमानाहि॥ सभैवृषानहित
मरैनामि॥ परमग्रुषनमग्रभवलिराम
देषङ्गविन्द्रावनिकेचषि॥ सभैनिवार॥
हिसभकीभूषि॥ फलिषिउभरेसभेक्
करहे॥ हिनफरिनमरेपगिकोगहे॥ फु॥
लिवरावहिफुलिकेभेरि॥ मनितेममता
दीनीमरि॥ षामसीनजलिभारासहै॥ र
हैमोनिगहिवातिनकहै॥ सभिउषग्रउ
नेसहहिसरीरि॥ ग्रवरिज्ञनज्ञकीमेटा
हिपीरि॥ ईनकीकाईपाजनिसुपाई॥
कोईननेमीठेफलिपाई॥ जोईनकोपा
षरिकीदेई॥ सोऊनिईननेफलहीलेई
साषाडारिफलफलनिनि॥ सभईनके
परिवारनिमिति॥ कोऊलेजावहिनघाउ
नारि॥ कोउकारिलेजावहिडालि॥ कोऊ
जाईमिरावहिसीनि॥ पेनतिवीसामि॥

रा॰
म॰
६४

64

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पंतिप्रतिति ॥ घसयिईनोकेवलेवैको
ई ॥ तिनहूतेवज्रकारजिहोई ॥ ईनको
परमप्रनीनविभूति । सीसचउवहिम
निम्रवभूति ॥ पंतिसरीरुधरिउतिना।
मेति जोनेपावहिसप्रसभजेति ॥ ति
हूवैजानकृसेसानाहि ॥ वडीषिमाहै
नृषकृमाहि ॥ पाउपकारीनृषिसमाति
कोउनहेजनधरेपराति ॥ नृषसराहेसि
रीगोपालि ॥ करुणासागरिकीपेनिहा
लि ॥ वक्रेवोलेत्रिभवतिनाथि ॥ हाथ
कृसिउनहिलीनेहाथि ॥ पीतिभईपरि
परनीश्राज्ञ ॥ जोपरिभईयाकमाराराज
लनागुलमितरुचासप्रनीति ॥ जोपरि
फिरहिनमारेमीति ॥ नाचहिमोरिगोपा
लहिसेगि ॥ हरिकोप्रेमुनमोवेषंगि ॥ ना
चहिमोरपसारहिपंष ॥ उसरलीलाक
रहिप्रसेष ॥ तेसेभजापसारहिसावि
हिलकरिनाचहिप्रभप्रकामि ॥ हंसवा
लिफ्रुतिचालहिगोपालि ॥ सुकिकोक
लिजिउवोलहिलालि ॥ धुवरीकारीमेरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गाई॥ पांडरि पीरी लैलै निवुलाई॥ हरनी मै
टि लियाव नैनि॥ बोल हि चाचिक मोम्न
वैनि॥ धांव हि साम स ला लै संगि॥ कछु
पर मेउ भिराजै अंगि॥ ऐक सषा के सष
को कहै॥ चापी कर हि प्रभु जो वहै॥ हरि
हो जस षा केनै षि॥ प्रान पिआरे गो का
लिं वै रि॥ ऐक सषा लै गो उा धरै॥ इकि
मिलि सषा प लो वहि पाउ॥ इकि सि उन
ई आव दा वहि भाउ॥ ऐक सषा लै बीज न
करै॥ ऐक सन मुषि फलि सिउ भरै॥ श्री रा
म हरि सप्रधानि॥ हरि की लागा विनै
सनानि॥ विनती सुनाजा मोधा ला लि॥
प्रान पिआरे सिरी गोपा लि॥ निकटि ता
लव नै फल सिउ भरि ओ॥ तिन सवा सिह
मरा मन हरि ओ॥ सभै वृषि फल सिउ भरी
रहै॥ प्रव नै जो ग उ तमो पहि कहै॥ इहि
वास वास नो आवै स्वामि॥ तिनो फली
को स्ह दे कामि॥ ऐनठ ऊ टेन वसै तिन मा
हि॥ प्रवरि किसी को मान तिना हि॥ गरध
पि व गुमन ष ष न यसै॥ वनि मैहि सैना सैती

द.गा.
स.
८५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बसै। सभ भूहीं सैना आपि समानि॥ बडो
बली लीने अभिमानि। ब्रुनि कैतिको।
टिन जावै कोई॥ केर कृपान सभूके।
षोई॥ ऐसा है सुनी पैगोपालि॥ इक्षा
होइ सकी जै लालि॥ निरभै कमल नवै
उठि चले॥ जिन प्रभ कालने मसे टले
आपे के पावनि हवनि माहि॥ भरे फु
लकु सिउ ऊषि फुलाहि॥ उलहलापे।
षी वलिराम॥ संन जनौ के घरनि कामि
वाषै फल जितु मेघ फुहारि॥ फलि सिउ
झके नरकु के डालि रि॥ नवही धेनकु।
आइ उधाइ॥ वडि ओक्रोधु न अंगि समाइ
उलरा होइ वल की दिस गइ आ॥ क्रोध
माथि ऋानि वडराभइ आ॥ पिछले षगि
का की गे प्रहारि॥ डरमति दोषी वडो गवा
रि॥ बोटि राम कौ हदै दउ॥ जानी राम प्रल
कीपरु आइ उलावनि रजीवारि॥ नविंत
करषणि करी समारि॥ दोनौ चानि राम।
रलिलपे॥ दिन दिन चानि दिषारि हि राम
गहिलपे॥ फेर सीसपट किउ दृसमाषि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुक्ति भयो हलधरि के हाथि ॥ वक्र रेख वि
रिरैति हकालि ॥ सैनें दनें दन मद रिषी
गोपालि ॥ थाइ सभ दैन की जाति ॥ गर।
जहि धरनी मार हिलाति ॥ दामकुसलथा
पसि महि रले ॥ तिसी भांति सभ हरी तिर
दले ॥ कैरकमा रिउ रूप जी थांति ॥ कर
न किकारहि प्रभव रूभांति ॥ देव प्रह
प की वराषा करी ॥ जैजगदी सषिरिध पद
हरी ॥ थपमरि नाचहि किंनरि गावहि ॥ रि
षमुनि हरि के नाम सुनावहि ॥ गुणारथ
वानैं सभि फलिषाई ॥ सभ नोली नीगो।
हि भराई ॥ पैनक्रमारि चलैच तिसामी ॥।
सनजना के प्रेरे कामी ॥ चरि को चलेसा।
रिस मिगाई ॥ प्रधरिस धाय रिवे नव गाई
अंज महि पैठे सैर रिकाति ॥ हरि मुख नी
ल कमलसी भांति ॥ ब्रेचरी थार के सथा।
नूप ॥ थलि वैसे करि मैरदरि रूपि ॥ तिन के
उपरि गोरजि वनी ॥ घोर महानै त्रिभवा
नि धनी ॥ तिनको ध्यान धरै सकि करी
जो ॥ कमल प्रगारि अलरूप रिपरिजो ॥

दश॰
स॰
९९

66

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभहीगोपीआइधाई॥मोहनिजीयरि
घलरूपरिसमाई॥कछकुलाजिका।
छुप्रेमहिभरी॥हटैदेवसापैषीनरिहइ।
री॥श्रीहिमहिपठैदोनैवीरी॥हलधरि
घरहरिस्यामघरारिरी॥आपैधाईउहेकी
माई॥लालनिलीलमनोरथिभई॥के
ठिलगाईकारीधरी॥रहेप्रेमजलिल।
वोनिपूरी॥मारदनकैफूलेलहिसेगि
वरणामलिउसनउकैअंगि॥नपनी।
नीरिकरिप्रमिनलावै॥नपैकछोरेष
वरूपैनावै॥बीरपरोसिलआईमाई॥।
रोऊषिलावहिहैनवछाई॥वड़ागि
रसिकवनिठीलेई॥जसधाकेशवके
मुषिदेई॥रोहिणीदेईरामसुषिमाहि॥
भागितिनोकेकहेनजाहितीनिभव।
निकोपोषनिहारि॥नेऊमयचावहिषी
रपहारि॥दोनोजेवैमचावहिषृति॥नि
नकोध्यावहिसभिमववमृति॥वऊरोम
पाविछाईकरै॥दोनोवीरिसरजिसि
उपरै॥कषाकारहिफुनिषृनऊपासि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रामस्यामससमित्रषकोरसि । प्रेमस्यामसवु
जसधाजीकैरै ॥ नामजपैससमिपानकु
रैरै ॥ नंदपिनाथ्रहजसदामाउ ॥ दिनदि
ननईश्यावछावहिभाउ ॥ ईकुलीलाको
इसनैसनाई ॥ प्रेमभक्तिमाधवकीपाई
जसधानंदननंदकुमारि ॥ कसहास
पगिपरिवलिहारि ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ जागे
जगपतिभइविहानि ॥ चलेकपानिषि
धेनचरानि ॥ साषी ॥ ऐनिविहानीसह
गिसिवजवलीभईप्रभाति ॥ धेनचराचा
निकोचलिनंदजसोधानाति ॥ ५ ॥ सभ
हीसरभीश्यागेकरी ॥ श्रेयनवेनुश्रध
रिपरिधरी ॥ वनिमहिमाधवकरहिश्र
नंदि ॥ प्रानपिश्यारेब्रजकेचंद ॥ गऊ
श्याउश्यारपिश्यासेउपै ॥ सवहीजमनाके
तटिगयै ॥ जहांवैसेकालीवलिवान ॥ त
हासभुकीनाजलिपान ॥ कीयेपानि ।
सभहीमतिगयै ॥ प्राननिश्यागिमिरतकि
सभयै ॥ देषिकेपावैनेननिहारि ॥ सभिम
रिगयेहमोरगुपाति ॥ श्रमीरिसहरिकी

द॰ शा॰
म॰
६३

67

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वरषाकरी॥ सभिजीवापेष्पीनरिहरी॥ कि
नमहिमाजैकोरट किमउनि॥ कहुनि।
वातिप्रभकोहेकउनि॥ सभहीजेवपे
गाईगुआरि॥ विसमैहोवहिवारंवारि॥
हमतोअभिसम्भहीमरिगये॥ विषकोअ
विमिरतकहुभये॥ कसजीवापेंदूस।
रिलगाई॥ सभिहरिचरनिरहेलपरा
ई॥ नविहरिजीमनिमाहिविचारा॥ ब
जवासीपरिवारिहमारा॥ कालीउघवसै
जलिमाही॥ जीवजनकोछाउनाहि॥
जोजलिकुपरिउडेविहंगा॥ सोउपरेगि
रनिअगाहिअंगा॥ याकेनिकटनितर
वरिघास॥ कालीकीविषुकरैविनास॥
काढोईसेविलंब्रुनलाउ॥ तुष्टविचार
निमेरोनाउ॥ कुद्रचेटकाकसीगोपाल
चउकदंविजसोधालाल॥ दोनोहाथि
वजावेसिखाभि॥ गारवप्रहारीप्रभनि।
हकामि॥ कंरिकेउमहिपउमकेरि॥
जगतिसिषामनिविभवनिचेदि॥ सउ
सउधनषउझालिउनीरि॥ उमडिवलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उतनिघरुनानीति॥ मलिमहिजमपति
कैरेविहारि॥ भजाऊकोरहिंत्रिभवनिसा
रि॥ कालीनागकोथहिमरा॥ कवनहमारे
मलिमहिपरा॥ ऊपरिश्राइउतनिश्रागि।
पनालि॥ देषेसेदरिस्यामभरोपालि॥ पी
नउपरनाग्ररूभिउलाति॥ सेंदरिपर।
मनमोदानाति॥ धाइउमउहीबदनि।
पसारि॥ केशवकैमतिनैकुनग्रहारि॥
मरमकुमाहिलगावहिसंति॥ क्रोधीकै
मतिनैकुशांति॥ हरिकोलीउलपेरिश्र
जाति॥ प्रभग्रविनासीपुरषपुरानि॥ ह
रिवलनैकुलमवहिनाहि॥ तिनतिन
नउतननषेलरिचाहि॥ हरिकेसषानीर
परघरे॥ इहिविधिदिछमनोहरिपरे॥
मरकहोइसमैनिरिपपे॥ गऊसमेति
मिनकमेभपे॥ व्रजमहिहोनिलगेउ
पाति॥ फुरतिनीश्राकेदखुनिगाति॥।
फुरतिपुरषिकेधावेधिनि। सभिव्रजके
मतिहोपेभेगि॥ कवनविघनदेषिहिगे
श्राज॥ विनसैगोकोइभारीकाज॥ मोहन

द. श्रा.
म.
६८

68

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विनु वलि राम सराम हि गये ॥ वनि म हि ग्रा।
नग्र के ले भये ॥ वनि म हि ग्रा जु ग्र के ले
भये ॥ हरि को हेहे तु वनी मन भीरि ॥ सभ ही
वलक्र नला वक्कु धीरि ॥ वनि म हि ग्रा ये स।
मिव जलो कि ॥ हरि दर्शनि विन मनि म।
हि सो कि ॥ चवि नि वैह नि जवै दिस इष्ट परे
सभ नक्कु पर मक्कु हलि करे ॥ ग्रो जनि ग्रा।
ये ज मना नी रि ॥ जलि महि देषे सा मधारी
रि ॥ तु ह सो पिढ पिली तु मणरि ॥ दे नक्कु के
स ठिकरे प्र हारि ॥ विहवल भये सभै अ
जसीने ॥ दे हि विधि देषे श्री भगवंने ॥ ज
सधा रो तेई तु कारि तु कारि ॥ अरे सो पन फि
डारे वारि ॥ जसधा को मिलि गोपी करै ॥
काहे नन मन तुष सितु दहे ॥ वकी विउ
री ई नगो पालि ॥ महा वली है नम रे ला।
लि ॥ अव ही आवलि सो पहि मारि ॥ धाज
घरी मनि रे तु वी चारि ॥ जसधा हहे न को
ढहि राई ॥ लि ग्राग नि लगी प्रानि हरि माई
सभ ही लागे जलि महि पउनि ॥ सूने जाने
चउदह भउनि ॥ नवे प्रगटि वोले वलि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रासि प्रभु अभिनासी है पति स्वामि ॥ म
नमथो कुम नहीं रै दे पै ॥ पासितु लाल
कन्हैया लिकै ॥ मनि महि कीनो थी भग
वेति ॥ अति उभु पावहि हमरे से ति वेगि
छुआ ई उ थहि ने पाउ ॥ ब्रजजन को सभ
मेरि उनाउ ॥ सउ कणि कालीकोध हिम
रिओ ॥ सउ ही मा घाउ बाकी रीओ ॥ लहा
लहा ति निह वा धनि कौ ॥ नैन ऊ ते म
षि ने बिषु टरै ॥ तु षि ने बिषु की गिरै फुल्ल
रि ॥ हरि कोरे षे नैन निहारि ॥ रेषी रिम
टि निहारै सो पु ॥ मारै बालमि राबो नाउ
आई उ बछरी गोपाल हि पाहि ॥ ला ना षा
वनि की मन निचाहि ॥ आवै निकटि कलभ
जि नाई ॥ नाना बिधि के षेलि दिषाई ॥ का
ली के मस्तकि है नृत्ति ॥ जो धाम मस्तकि
मध्ते ऊ चि ॥ करि कि मस्तनि ह ऊपरि चौ
वै सेना वकन्हैया लिकै ॥ निरति करे ह
रिम नि महि करी ॥ जमदानंदन प्रभु नही
हरि ॥ नभ महि बाजे लिया पै देव नाच
नि लागे प्रलय प्रभेव ॥ मस्तकि पीमलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जगिमनिकरै॥ फणिफणिऊपरिकेशवच
रै॥ नाचहिनाथअनेउवछाई॥ दिनदिन
नउतनिषेलदिषाई॥ जोफणिउचारेषा॥
हिलाल्हे॥ नाऊपरिजाइचरहिणिपालि॥
भाउवलिरतिकरेभगवानि॥ अमितअगो
चरउरुषउरानि॥ हारिउसाप्रभुईउवलि
हीन॥ सरैविधिमेंदरस्यामप्रवीन॥ ऐसे
पगिकीकीयेप्रहारि॥ मुषतेचलैरुधर॥
रुधरकीधारि॥ भलीसभैसरीरिसमालि॥
हाथिलगायेकसमुरारि॥ प्राणिमात्रदे॥
हीमहिरहे॥ असेश्रीपतितेफलिलहे॥
वाहरिआणिउसणपरिवारि॥ भलेअने
नमकुंदरअपारि॥ आउसभिकालीकीना
रि॥ सभनकुहरिपगिकरीजुहारि॥ लेवा॥
लकिहरवानरुपरि॥ जोरेहाथिविनेआ॥
तिकरी॥ वउतुसहधाहमराकेन॥ विउ
कैमददिकरिअतिमतिमंतु॥ हेप्रभतु॥
मभलीअतिकरी॥ गरवुप्रहारीहोनरि॥
हरी॥ हाथिजोरिलागीगुनिगानि॥ नमो
नमस्तेपुरषपुरानि॥ ८४ नागपतनीअ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वाच॥ साषी॥ नागनीआकीरतिकरिहिमन
मषिस्रीभगवानि॥ भरनाजोअबगुनिकरे
लागीपापषिमानि॥२॥ चौपाई॥ नमोअनं

तिअभूभगवंति॥ गुरषगुरानतिकम।
लाकेंति॥ सरीघरिगासीनाथअलेपि
प्रभपरमानमअलषमेपि॥ ज्ञानरूप।
विज्ञानहिभरे॥ मानषबपुधरिकउन
किकरे॥ मक्लिअनेननमारैनाथि॥ अक्ला
दिकमारिनमरैहाथि॥ निरगुननिरवि
कारभगवानि॥ त्रिगुणमाईआनेपारि।
नारानि॥ कालअतीनकालकेकालि।
साषीभूतअलेषदिआलि॥ विस्वबीजि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विष्वंभरस्वामि॥चंदनसूरनमारैधामि
मनतुधिंईदपाप्राणसरीरि॥तुममतेभ
पैइलाईथिवीरि॥तुमहीतेजोगीकोपर
कास॥सकलिजगतितेरोहोउदास॥मा
नुषमानतुमारेनाहि॥जीवतुधिंईहि
जीवतुमाहि॥परमगुरुसीभीरगहीरि
परमपुनितिमिटावतिपीरि॥सुषमम
हीपनंतअपारि॥परमविवेकीपरमउ
दारि॥माससवेदसराषहिस्वामि॥सक
लपुरानध्यावहिनाम॥जितेवावकिउप
रहिवानि॥तुमपासाहिजसोधानाति
शास्त्रजोतिकवीसरिदेव॥श्रीहीउद
सीअलषअभेव॥नमोनिगमकेधाम
माति॥रामकलत्रिभवनिश्रीधारि॥नमो
सनवसदेवमहाति॥प्रभप्रदुमनअविं
नसुजाति॥नमोनमलेश्रीश्रीनिहषि
जोकीसभकोजानेतुधि॥चतरभूहि
प्रभपावनिपारि॥मुनिजननजानहिप
गिकोसस्थारि॥माननकजादवतिनके
नाथि॥गुणिअसमाईपातमारैहाथि॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमरेलीलाविगुणअतीति ॥ नमोनमः।
सतनअजकोमीति ॥ रिषीकशमरवेसअ
नीसि ॥ नमोनमस्तेविस्वेवीसि ॥ मोनी।
मनिकेशोलगोपालि ॥ अविसीगंली।
नेअजकेवालि। असामहादेवमनकादि
तिनसमभक्तकीनमहिआदि ॥ नमहीरवे
मकलसेमारि ॥ पालजभीफनिकाजसे
घारि ॥ गुनीग्रहकालिमकतिलेहावि ॥
जगुरविषेलहिअनुतनाथि ॥ कामीको
धीमूरखअजानी ॥ मभैनमारेहेभगवानि
हमुहैमभनमारादास ॥ मभिद्याहिभी।
नरिनमरोवास ॥ घोतिअपभावहिभ
गवानि ॥ क्रोधीहविनगुरषगुराति ॥ क
हाकरैजोहहदेसभाउ ॥ मोमोसभनेहो
तिउपाउ ॥ नमकोमुरूपज्ञाननिनधा
मलीकरीअपराधीमघा ॥ हेप्रभहमवि
समेमतिमाहि ॥ कालीमोकोहजानाहि ॥
तिआगहिपतीमरणिमेति ॥ तिआगा।
हिपतीमरगिनमारेहेति। पगिरगिवो
कहिसभैविमारि ॥ श्रीमेनमारेसंतउदारि

ह॰शा॰
म॰
७१

71

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

याकै फणि फणि पर सेचरति ॥ पतिकी भा
गिन साक हि वरति ॥ किया ईन नपुकी न
अरु दान ॥ जी वदई या अरु ज्ञान विज्ञान
अति वडि भागी हमारा केन ॥ जाके सिरि।
पति श्री भगवंत ॥ निरविकार तिन्ह क्रोध
दिआलि ॥ सारी गिरा ही श्री गोपालि ॥ विनती
मननु हमारी पैहि ॥ हमारा केन्ह कृपा करि
देहि ॥ जो न्ह मरु चैन उआरू मारि ॥ न्ह मपरिवा
रै समि परिवारि ॥ वालक किहमरे हो ई अ
नाथि जीवन्ह मरन्ह न मारै हाथि ॥ सनिस्रु।
ख्याने दीनि दई आलि ॥ फणिनि उत्तरि पउ
गोपालि ॥ नविकालीन तिभई समाधि ॥ स्रु।
खिने चली रूधरि की धारि ॥ कूदै फणि मणि
फूटै श्रृंगि ॥ नाथ प्रहारि उचरन्ह संगि ॥ सा
वति भई आस मारी सुधि ॥ हरिपगि परासेउ
पजी वुधि ॥ दीन होई लागा हरि चरनि ॥ कृ
पासिंधु जीत मरी सरनि ॥ प्रेम मगनि प्रभु
प्रजा करी ॥ हरि मूरति हृदै महि धरी ॥ चंदन
पुहुप चउ आवै हारि ॥ वउ पटे वरि मोल अपारि
मोती वउ जवाहरि लालि ॥ घेउ हरखाने मर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गोपालि ॥ हरषिजोरि ठाढ्ठ भतिहीनि ॥ प्रभु
पहिंछानेभईंआप्रबीनि ॥ हरिकहिंआन
नकालीनागि ॥ सुभतेवडेतुमारेभागि ॥ हु
मपगिमनिहूंरै ध्यावहि ॥ प्रगटिनकबु
विचारेपावहि ॥ सोपगितुमरेफणिफणि
धरे ॥ कोटिजन्मकेकिलविषहरे ॥ कृपाउरु
ऊंडप्रभुईंडोकहिंओ ॥ तुमविसंतप्रभैपट
लहिंओ ॥ हमरेवाहनिनेमनउरो ॥ निरभै
राजुसदाहीकरो ॥ चरनिविहनिदेषैगोजवै
नमरेफणिपजहिंगोनवै ॥ रमणकिदीपि
प्रवैहीजाहु ॥ लेपरिवारिविलंडुनलाउ ॥
नजिसिउलीलायहिंमफिकरी ॥ [illegible]
मरीसभिपरिहरी ॥ जोईंकुचारितुवषानेकों
सरपजातिनेनिरभैहोई ॥ जोइतऊंडकोंरैइ
समान ॥ हमकोप्रसैनपरैध्यान ॥ कोटिजन्मको
पानकिदहै ॥ सोजनहमरीपदवीलहै ॥ का
लीलेपरिवारहिंलिओ ॥ संतजन्मकैभीतरि
रलिओ ॥ लेपरीवारुपराक्रमाकरी ॥ हृदैवसा
पेस्रीनारहरी ॥ लेविविभ्रमाहरीजीतेगईंया
हरीवाहनितेनिरभैभईंया ॥ कालीकीईंछ

वं.पा.
म.
१२

72

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लीलाकरि॥हरिपगिसिमरतिउधरुनस।
ही॥ईहूलीलाकोउस्नैसनाई॥प्रमिभग
तिमाधवकीपाई॥कालीमरदनकस्त्र
नेति॥कस्सदासबलिकमलाकेनि॥८३॥

साषी॥जमनातेनिकसेकसभिहाषेब्रज
लोकि॥केढिमिलहिजगदीसकेसकलउ
तारैसोकि॥१॥चौपाई॥जलतेबाहरिनिक
सेस्वामि॥सतजनोकेपूरिकामि॥उरीगा
ईअरुसषाउग्वारि॥छ्राजीदेषहिनैननि
हारि॥हलधरिकेढिलगाएहरी॥हरिसर।
तिहिहृदेमहिधरी॥कालीपूजेबेहीराई
बंदनफुलीतंबोलचडाई॥जसदाबेगिमि
लीतहिआई॥मोहनिलीकेढिलगाई॥गो
रिबमावेफुनिभगवानि॥सतिकरिजानेप

रघुपति । हरिमुखदेषि आपावैनाहि । लो
चनिनीरिवहेहीजाहि । हेसतिव्रजमेडल ।
माधोरि । ननुधनमनउरोवारि । मस्तकच
मैवावानेउ । देषिनेदनेदनसुवेकेउ । मो
विपकरनिईहिवांति । सनीयेमहरिमने
हरिनाति । आजतमारेउचेनाति । याजन
मारेउचेभाति । कालीसिउमननमाईउला
गि । कीजैदाननलावउवारि । नेलमाहिसि
रिऊपरिवारि । वावानेरउदाहहेसोई । जा
केसमसरिअवरूनकोई । वउनहेमअसदी
नीगाई । चेउपरापेविधुवुलाई । वउधनवा
रेकैरेअनेउ । वालितेववियोव्रजचेउ । जग
नानीरिकनहलिभपे । व्रजलोकनिकेस
भिउषुगये । सोपेजनहासभेव्रजलोकि । हरि
परमादिनविनासोकि । अतिहिदाहणीला
गीदाउ । पावकिविनानेदासेयाउ । लागेलो
किभउजविसारि । चउदिसिपावकिकीउ ।
वियारि । मारगिअवरूनपावहिउोई । हरि
विनउटनजानेकोई । जाहिजाहिकहिवो ।
लेमंनि । रषिआकीजैपुरषिअनेनि । कलस

हं.गी.
रं.म.
५२

73

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गहिमकुंदगोपालि ॥ संतनसहाइदीनदई
ली ॥ हैवलिरामसिरावनुपीरि ॥ अभिनप
रावकमउदरलाधीरि ॥ पावकिउसैन।
लावैबारि ॥ विपतिविनासनविरदुसमा
रि ॥ केसवराईनकीजैबिलंबु ॥ आनिजे
मातुनाउषीकुरंबु ॥ पावकिमुषिमहि
लइमिलाई ॥ गोपीगोपउबारीगाई ॥।
मेचजनसभिउंउउनाकरै ॥ हरिकल।
लेलेमुषिपरिधरै ॥ चलेधामकोहरष
हिसाथि ॥ केसवरामसिनउकेनाथि ॥।
गोकलिमहिआइकीजैनिवासि ॥ हरि
गुनिगावैहरिकोदासि ॥ ८४ ॥ साषी ॥
ग्रीषमहतिजगिमहिभईयाब्रजमहि
लगोबसंत ॥ सदाअनेउतहीरहैजेहरि
वैसेभगवंत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जेमहछअषा
रिभएब्रजमाहि ॥ नामहिगोविंदषेल
दिषाइहि ॥ वनिमहिआपेलेसभिगाई
गुआरक्रअंगिआनंदनमाई ॥ बीरा।
रापषेलहिवालि ॥ नाचहिगावहि
केसौनालि ॥ कंचरषेलहिकरहिक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लोलि॥ डोलहि बोलहि कोकलकोल
रूपन ड्डोघी षिलहि गुआरि॥ कारहि पा
सिपरिम सदि प्रहारि॥ बोले स्याम सनो
सवि गुआरि॥ नई षेलकी ऊ बीचारि॥ मि
कि मिकि आव ऋघ्र दोवालि॥ आगि आ
करी जसोधा लालि॥ केशवराम धएी।
ठेमपे॥ दिन दिन षेल दिषावहि नपे॥ न
वही माई ऊ दे नमले बु॥ मूफे कछु न।
कीऊ बिलेबु॥ बालक है ई बी बिमिलि
गईया॥ पक बाल सिउ जोरी भईया॥ ह
मा बालु राम दि सिंग ईया॥ दें न कसर के
बालक भईया॥ लागे षेलनि स्याप सिमा
हि॥ पेस षु त्रिभवनि भीनरि नाहि॥ बोले
केशवराई अनंनि॥ कमला बल लभक
मलाकेलि॥ सनो सषजे को उहराई॥ पी
ठि सषा को ली उचडाई॥ बरि बांडी ऊना
रोजाई॥ धाउ बांधी मिलो हराई॥ जी ले राम
हारि पे स्यामि॥ संन जनो के प्रेर कामि॥ पर
से दे न प्रभ के हाथि॥ सब कि छु जान हि
त्रिभवनि नाथि॥ हारि पारिचारहि न भ्री ब

द॰ग॰
म॰
७४

74

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लिवौरि॥ केशवकोमलस्यामशरीरि॥ श्री।
रामाहरिऊपरिचरिऊ॥ ननुमनुघर्मेआ
नेरहिमरिऊ॥ ऊपरिदनैचोरेवलिएई॥ व
लिऊरदनलेवलिकोधाई॥ वरऊलेच
मरुआगैगईआ॥ नैवैदंनपठवतिसाम
ईया॥ मतिमहिकीऊविडारोएमि॥ जो
कोजनजपिजीवहिनाम॥ केशेरेषलि
नेक्षकरैसमालि॥ पेनोदोषीदंनगवारि
रोऊमुमरिसिरिऊपरिदादी॥ निकसिनि
ऊपापीकोमाऊ॥ परिउभ्रमिपरितजेपानि
जैसीहलधरगुरषिगुरानि॥ देवगुरुपा
कौवरषाकरी॥ रामहलाईआपदाहरी
मारिउचंतप्रलेतुआजानु॥ समैसषा।
होऊरहेहैरानि॥ लागेसमेश्रमीमादेनि
नषिनेवोलेहिमोटीवैनि॥ केशवहल।
धरलीलाकरी॥ सोप्रभजपीग्रहिक्षन।
पलचरी॥ ईकलीलाकोऊसनैसुनाई॥।
प्रेमिभगतिमाधवकीपाई॥ वालकर
पीअनंतअपारि॥ कलदासुपभिपारिव।
लिहारि॥ ८५॥ साषी॥ भगतिमपेरेरिषिल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

महिहरीसिधारीगाई॥ मुइवटीमहिपतिध
रेसुषनिधिकेशवताई॥ २॥ चौपाई॥ बनतिम
पेहरिषेलेमाहि॥ नानाभांतिवरियदिषा
ई॥ मारिप्रलंबसमारीगाई॥ कहाकहो।
बोलेहरिराई॥ षोजतिबनिमहिआगेगवे
सवहीउआरसषासंगिभये॥ संवंवरीम
हिगवेअनेति॥ शरनब्रसप्रभुभगवंति
उआरविषाकरिआतरिभये॥ सुकिवद
नवालउकेगये॥ वेनबजाइश्रीभगवति
सनीमधुरिधुनिगऊअकुकानि॥ सुभिआ
ईततिसरतितिविसारि॥ देषआपेसकुंद।
मरारि॥ लेगऊआसभिवलेउआरि॥ वनि
महिलगिअगनिअपारि॥ चहुदिसफि
रिआगनिविआरि॥ अवबहरिसिपावकि।
वीविउआरि॥ सवेवालिअतिविहवल
भये॥ चरतिसरतिमाधवकोपये॥ मोहनि
जीकोबोलेवालि॥ प्रानपिआरेहैनंद।
लालि॥ जससधानेदनरषिआकरो॥ कृपा
सिंधुजीअपराहेये॥ अपुनेनतिकोची
तामाहि॥ अवरसोकुकैहदेमाहि॥ बिछु

द.मा.
प.
७५

75

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रिपड्रहिगेतुमनेस्वामि॥तुमबिनउक्रमय
निपरमश्रकामि॥बिननीसनऊप्रभुभग
वानि॥तुमबिनपलभरिकलपसमानि
गमकमलतुमदेनोवीरी॥रीनवेधश्रमउ
धरनिधीरि॥भयेकुपालकमलनेदलालि
तिनकोवोलेशिरीगोपालि॥लोचनि।
मूंदहुसभेगुआरि॥हमरेपगिलेरिदेम
फारि॥सभनेआगिआलीनीमानि॥अ
बवहीपावकिलईमाराति॥सभनेआ
गिआलीनीमानि॥अबहीपावकिलइ
नाराति॥सभहीगुआरिसखाअहगाई
वेरिभीउरउनारेजाई॥जबहीदेखहिंने
ननिहारि॥यहिकिआकीनोनेदकुमारि
सभैबालिविसमैहोउरहे॥प्रेसमगानि।
हरिपगिकोगहे॥कालेद्रीकेतीरसि।
धाई॥तिनकोवचनमकुंदसुनाई॥अ
वैसखाकालिंद्रीतीरि॥मनितेसभैवि
सारहुपीरि॥गाईवालिकीनोजलिपा
नि॥सखीभयेसभनोकेप्रानि॥सांझिपरी
गिरिहिलिआयेगाई॥गुआरहुसंजमहि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहिउसुनाई॥ दोइकमेअजकीनेस्या
म॥ देनस्रलेउविउरिउरामु॥ दावान।
लतेउवारउवारे॥ इहुजसरासुतिचा
निहिचारे॥ इहलीलाकोइसुनैसुनाई
प्रेमिभगतिमाधवकीपाई॥ किपाउ।
लिवरनोनंदकुमारि॥ कुसुदासुपगि
परिबलिहारि॥ ६६ ॥साषी॥ बरषारुति।
आब्रजबैमोहनिजारहिगाई॥ बेनब
जावतिअधरिबालकिउभवतिरोई।
चौपाई॥ बरषारुतिब्रजभीनरिआई॥ अ
तिसुषदायकसबमैसुहाई॥ बनिमाली
बनिचारहिगाई॥ अधरिसुधाधारिबेन
बजाई॥ पोउरिपीअरिलेनिउलाई॥
कालीधउरीगोरीगाई॥ सभहीगऊआ
अवरिहिधाई॥ सुनिधुनितैकुविलउ
नलाई॥ जैतैउलावहिनंदकुमारि॥ भ
रेहुथनिलागेवारि॥ गऊअउरूधारि
धारिआनजाइ॥ सुनिमनहुरघहिआव।
हिधाइ॥ इमइचरातजैबनिमाहि॥ कै
शवबछरूतनलैबजाइ॥ बिरछिमुललि

द.ग्रा.
म.
७६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उजावहिलागि॥ ऐसोबिंद्रावनिकेभा।
गि॥ कवकूलाईआसिरिपरिधरे॥ तिहि।
ऊपरिजलैतुदापरे॥ कवकूजाईगुवा
धननीरि॥ हूलधरहरिस्यामहीरि॥
चनवरषैजविराहरीधारि॥ सोभापाव
हितिपरिपारि॥ गिरिकंपरिमहिकेश
वजाई॥ सभैग्रघरिधरिवेनवजाई॥ क
वहूगावहिरागमलारि॥ स्यांगरोशेघ
नमरकारि॥ आसागउरीमाठैरागि॥ हरि
गावैचतिऊषैभागि॥ सभहीरागिमला
परिस्यामि॥ चवरिमरोमणिप्रभघर्के
सि॥ वरघ्याहहैचवेजलउरि॥ वाहरि।
निकसहिरामझुरारि॥ वानिमहिउआर।
कनहूलिकरे॥ हूरिमरतिहहैमहिधरे
गिरिहिआवहिजविहोवहिसाकि॥ केश
वरामविराजहिमांकि॥ वरबारकतिघेल
हिइहिभांति॥ सननेमतिलनिउपगे
शांति॥ इहूलीलाकोईसनेसनाई॥ पे
मिमगतिमाधवकीपाई॥ केशवकल
मुगतिमकेहि॥ कलदासबलिगेकलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वेद्र॥८॥साषि॥आईसरदनिसिपियसारदहरि।
मतिननेरेतिभ्रनेरि॥षेलहिमोहनक
सहरिप्रानगोकलिचेरि॥२॥चौपाई॥
आपेसरदकालसुषदेई॥नामरिषेल
हिअलषअभेई।साह्लीभइनीरग्रिहइ।
गाई॥ठौठौनरीभइसभिषाई॥सीति
भईसौरसंसारि॥बिंद्रावनमहिकरा।
उदारि।वंसीवटकौक्षाइआषरे॥वेन।
मधुरिअधरधरधपरनिपरिधरे।मोरमुक
रसिरिजमिमनिकरै।नीनिभवनके
नमकोहहै॥कटिवनीवेजेनीमालि
ननकरुसेदरीसिषामननमालि॥श्रव
नकनीरकैंहेफूलि।वालकदूपजग
निकेमलि।मनैवैनधुनिगोपीजवे॥
मनमथिजागिउठेननिनवे॥कुसवेन
कीकीरतिकरै।रहीम्रानिहृदेमहिप
रै॥वेनसबीवरिभागीमुहेउ॥हरिके।
अधरनिकउरसलहैउ॥मनहिवेन
धुनिपेषीगाई॥ननिकोसरनिसभे।
भूलिजाई॥वद्धुराकेमषिघनिरहि।

र॰ग॰
स॰
७७

77

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आई॥ चाखअवनिनि पाके रिगाई॥ हरनी स
न हि वनकोनारि॥ अवनि षरीकोपीव
हि सुधारि॥ सषि विहंगरहि भाव हि चोगि
वेन मोहरि भुनिसंजोगि॥ सुधावहै नज
मनानौरि॥ सनोमषीजोवनहि विहंगि॥
उनममनकूपरेहैधेगि॥ चषकूपरिवैमे
हिकरिप्रीति॥ पेसभिपंषीपरमउनिति
नेंदनंदनकोदामनकूरे॥ नीननापन
निमनिकेहरै॥ पकूपपानिफलिश्रेनेत्रपा
हि॥ तिनकउनोरहिवारिनलाहि॥ निउजा
ननि श्रागहिनेनिनिमिनि॥ चरमकसकेग
षहि विनि॥ पमेश्रधेश्ररुकामनिश्रागि॥ र
हैप्रभूकेमिमरनिलागि॥ निउपहिपंषी
वेउमहानि॥ वनमहिनिरषहि श्रीभगवानि
नाचहिमोरगोपालहिसीरी॥ ननिकेसभे
दिपावैधरी॥ येनिसषीविन्द्रावनिमाल
महाकैनंदनराज॥ श्राजपहिपतीभई
मनाषि॥ सभिवनिश्रौरवैकुंठहिमाषि॥
निरगोवरधनकेप्रतिभागि॥ उपरिजोहरि
केदरपनिलागि॥ जलसिउहरिपगिमजा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कै॥ बहु जप पाति फल मै दाधरै॥ गिरगोवर
धन वैसे सजान॥ हरि भगवान क महिन षि
महान॥ गोपी दिन कार टलि ई तिमाति॥ सा
सिते ऊजल सष की कोति॥ हरि गुन गा
वति हरि है ई जाई॥ तिन सह हरि महिं संत
हनाई॥ वेनु गीन को की रूव घाति॥ जपी म
हि मै सै श्री भगवाति॥ ई कृ लीला को इं स
नै सहनाई॥ प्रेमि भगति माम व की पाई॥ स
रली धरागिर धरी भीर॥ कमल दाम वलि मा
मशालिती ९८॥ साखी॥ मै चरि मासि गोपी वा

नी जमुना नाव हि निति॥ देवी की पजाक
रहि भरना कमल निमि ति॥ १॥ चौपाई॥ हिम
कनि श्राद्ध संवत्सर मास गोपी कै मनि वदि गो

द॰ श्री॰
भ॰
७८

78

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उल्लास ॥ उठी श्रीहरि कृष्ण ते प्रात हरि काली ॥ स
खिनै उजल संदरि भालि ॥ सखि आपसि ।
महि मज्जा मिलावहि ॥ ऊठे सरि हरि के
गुन गावहि ॥ गावहि भैरो सुवरा विभसि
कमल कुसुम पिरहे विगासि ॥ रागु वि ।
लावल लूरो उरी करै ॥ प्रेम सहित निमनि को ।
भरै ॥ सबकी पकै स्वाहो इजाइ ॥ सोमरे
महारिरहे समाई ॥ जनमि करम को सब
केकरै ॥ अति अपार सुगोपी लहै ॥ उल
कति रोम नैन जल बहै ॥ तिन की कीरति
श्री कृष्ण देव करै ॥ हरि रसि मानी फलि उ
करै ॥ मजा परसि पगरि कों धे धरै ॥ गावति
भावहि जमना नीरि ॥ हृदै समाने श्याम ।
सरीरि ॥ जमना माहि करहि उसनानु ॥ वि
वकहि इवेलम पपतन ॥ माटी को देवी
कारूप ॥ प्रतिमा सा जै परमसुरूप ॥ तिहि
प्रतिमा री की पूजा करै ॥ उह पपाति फ ।
लिश्रावै धरै ॥ मेवा पाति सुवरि पकवा नि
मेरा ताहि सिहित सपीत जानि ॥ करि उउ वि
हृदै स्यो इडीति ॥ हृदै वीत पंरमसुरीति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हे कातिआई निद्रे जोगनी ॥ हे महामाइ हे।
जोगिधनी ॥ हे देवी किरपा करिये हि ॥ नंद
नंदन भरतार न किदेहि ॥ ई मिमंत्र को कर
हि उचारि ॥ हे देवी वि केशव सिउ पियारि ॥
भोजन न करहि हू विहउनी नि ॥ चरन क।
मल केशव के चीति ॥ सखी संगी आजवय
हारि ॥ लेनि पिआरी ज्ञीआ उदारि ॥ सैनक
हि धरनी परिरैनि ॥ रिच समाने पेक कि।
नैनि ॥ इकि दिनि पेठी जमुना माहि ॥ जि हा
समा तिजन न को जगि नाहि ॥ मोह नि आवे।
तिस हि उठ उरि ॥ गुआर रूसे गिज सो धाकउ
रि ॥ तिन केव सत्रि बिसे भरि हरे ॥ कमला प
ति यह कउन कि करे ॥ लेसमभि संवरि च
रे कंद वि ॥ जा के भाइ हू ने प्रले वि ॥ गोपी को
बोले भगवा नि । आवहु संव सिले हु पछानि
हमरे वचन सति है मारि ॥ मिथिया कबहु
करो उचारि ॥ मभिमस्कानी आप समाहि ॥
केशव कै से वचने सुनाहि ॥ तिन महि वेक
सखी परधानि ॥ हरि को बोली परम सजानि
मोह नियहि संतनि आई न कउ तो ॥ नग निज्ञी।

दु.भा.
म.
४६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाकेचारिनहरो॥जगिमहितुमरीको
तिवलि॥अतिहीदुष्टनिडरैवली॥अ
तिहीदुष्टविडरेचलि॥सीलवंतितुमरे
पितुमरेपितुमाति॥अहोनेरजुसोधा।
नाति।तुमपरमगिमनोहरिलालि॥अ
सैभतितेननजोकुवालि॥तुफैलउअहि
मोधानेदि॥तिनकेनैनरूकामपिके।
दि॥हमनोसमैविरानानारि॥ईहिवनरा
इवेमिविसारे॥इकुचनुराईचारिमहि
करा॥अंवरिमातउवहतिकोहरो।ईरू
वनराईचारिमहिकरो॥अंवरिमाउवह।
निकोहरो॥महिजिमानिहरिअंवरिदेरु
हमरातुमराहेसनेऊ।नानरिसभेउका
रहिजाई।कंसवलीमपराकेराई।तउकु
निचनेनहोरेको।समकिविरानेअंव
रिहरो।वालेकसप्रेमरसिभरो॥हम
नोतुमरेअंवरिहरो।विनुआपदेवोम
नाहिनानरिपरीरहीजलिमाहि।काहे
सीनुउवारासहो।मिथियावचनिसभै
मिलिकहो।कवनुकीइमपुराकोराउ।वे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मारे तिनि विउरि सु भाउ ॥ आव बहू समैबि
लेखु तिन आगि ॥ उपरहू हमारै दरसनि ला
गि ॥ जलतनि निकसी आगि अमानि ॥ आइ
सन मुखि श्री भगवानि ॥ तिनको बालेह
रि रखि भरे ॥ तिमको कछुक किलविष व
रे ॥ नगनि परि होइ जलि कै माहि ॥ कहूं उ
उतिपाउ मिरि जाहि ॥ तमरे बलम हिहे
म्या भेउ ॥ नगनि नीरि सहि भेरि उ आगि
उं उउ तिकरे हमको जनजैबे ॥ सुरनर
महातम सिततबे ॥ तिनहरि आगि आसि
रि परि धरी ॥ समना सिलि उं उउ नाकरी
धर्मं प्रसंन भए गोपालि ॥ देने श्रंबरि
सभै समालि ॥ समनो अंबरि पहिरे अंगि
गोमतो मामि रहे सनेनि ॥ समि मसका
तिहरख बढाई ॥ देहीबी विसनेउ मा
हि बहुरो बोले श्री भगवानि ॥ सनो सखी
तुम [illegible] रमसजानी ॥ तमरा बलम विभुरान
भया ॥ हमरे दर्शनि सिभिउ उगई या ॥ आ
उ हि सरदि तहां बीततिं ॥ तम सिउ पालो
नाना भांति ॥ हमको सिमरे किसी प्रकारि

द० श्र०
म०
८०

80

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ताकोवङ्गरिनहोतिसमाति॥ उपजैवङ्गरि
नभूलेयाति॥ हमरीसेवईसीसमाति॥ ह
मसोतमोकरीकामना॥ मक्तिभइहोकउ
किवना॥ हरषसाधिविदिश्रालेचली॥ मैं
मगोमहरिमानहिरली॥ गावतिचालीक
सगुणिनामि॥ आसापूरनिजैचतिस्यामि
वस्रहरनिकीलीलाकही॥ केशवप्रभुम
भूकेमही॥ कउनकिकसकारहिवङ्ग।
भोति॥ संहरिसंगिसषाकीपोति॥ यहि
लीलाकोइसनैसनाई॥ प्रेमभगतिमा।
धवकीपाई॥ गोपीनाइकनेदक्रुमारि॥
कसदासपगिपरिवलिहारि॥ ८९॥ सा
षी॥ वतिमहिकेशवजीगयेरामसंगिग्रस
गुआरि॥ परमानंदस्रनेनप्रभवालकि
रूपमरारि॥ १॥ चौपाई॥ वतिमहिकेशव।
चारहिगाई॥ श्रघरिसपापरिवेनजाई॥।
हलधरकोवोलेचतिस्यामि॥ सनोहमारे
त्रिग्रवलिरामि॥ परिउपकारीहैयहिवृषि
महासजनग्रहमेरहिभूष॥ ईनकान।
नपरकाजिनिमिति॥ नैकुनग्रवगुनिई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ईनकै विनति । श्रीसुक रिषि आपि कहत निम वंति
पेनति भेषसभ नै संति ॥ वृषभ राइ ति आगे
गये ॥ सघा कलस के भये सभये ॥ रहे हरि त्रिहि
लागी भूषि ॥ विन हरि कवन मिरावै रुषि
सभि उधार रूको उध्या लागी । हरि के संति
वउ वउि भागी ॥ नंदलाल को बोले मीति ॥ स
नेह मारे प्रान उनीति ॥ सनी ये के सब विनै
हमारी ॥ हम तो संगति सभै न मारी । हमरे
नन को भूषि जरावै ॥ प्रभ विन वनि महि क
वन मिरावै ॥ रहे हरि त्रहि नेरे नाहि ॥ वनिम
हिं अंति कहाने पाहि ॥ त्रिहि हूं जाई सनो भ
गवानि ॥ वनिम हिं अंति कहाने पाहि ॥ त्रिहि
हूं जाई सनो भगवानि ॥ नमरे मिनन साके
हि होई ॥ विन हरि हमरा अवर न कोई ॥ क
कहने को हमरे पितमाति ॥ नहीमान अप
भारनाति ॥ जवि ईह उधार रू विनै उवा
सनी श्री आपति सिरी गिरधारी ॥ अति रि
प्राल दामोदर भईया ॥ माधव काहि द
ह विन ईया ॥ बोले श्री भगवंत अनंति ॥ स
नो सघान महनरे संति ॥ जमी करहि वह

द. का.
म.
८१

81

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निर्हेतित्रामि॥ सरागिज्ञानीकोरिदासकामि
तिनपहिंजाईजाचनाकरो॥ निरभैज्ञा
रिनमतिमहिउरो॥ जाईकहेभूषेबलि
रामि॥ अहहजगधामत्रिदेदरिधामि॥
लेआगिआसभिबालकिगये॥ परमह
रषचरिभीतरिभये॥ जगिसालिमहिआ
येगुवारि॥ करीहिंजोकेचरनिजहारि
बालकिलागेविनेसज्ञानि॥ हेसआमी
नमत्रूपनारानि॥ ब्रह्मनिकुलिधरती
केदेव॥ हमरेपागिकीकीजेसेव॥ वनिम
निभूषेहहरिअहरामि॥ हरिरहेहैतिनके
धामि॥ हमसभिसेवकितिनकेउआरि
वैहमरेप्रभरामभगारि॥ अतिकोमलमं
उरिरसिभरे॥ वचनेहषिहमरेपरिहरे॥ हि
नकरिमागहितमतेभागि॥ सोईकरहु
मोतुमकोजागि॥ तिनगुआरहुकीवाति
नमानी॥ रहेमोनिगहिमठिअभिमानी॥
विनाहिगयमहजरअज्ञानी॥ मषितेक
हुनवोलहिवानी॥ समकहिनाहिनव
उगवारि॥ जगहुकीपतिपेडमगारि॥ स

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभैगुआरहोईवलेनिरासि ॥ प्रानिपिआरे।
हरिकेसथी । उलटिसिषास्रीपतिपहिआ
पे ॥ हरिसिनमुकिआईसीसनिवापे । मध
सुदनिपहिवानिवषानी ॥ बहुतोब्रसन।
घतिअभिमानी । हमरानामजाईहमली
या । मषितेकितनतुरुठीया ॥ ८० ॥ साषी ॥
तबबोलेगोपालजोभगतिबिकिजानहि
उई । वेपेवेपकीअवरीछुदनकिहिवि
धिहोई ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बोलेनबैस्रोभगवानि
बहुतोब्रसनिवतेपजानी ॥ वांधेवेहित्रे
बरिसापि । जोगजगाकेरमहारिषि ॥ हमरी
भगतिमक्तिकिजानीहिउई ॥ बिनब्रजजन
ऊनजानेकोई ॥ सनोसषाजोउनकीनारि
हमसिउतिनकेपरमपिआरि ॥ देहिमाइ
ग्रिहिसुकिमहिप्रानि ॥ तिनपहिजावरूक
रऊवषानि ॥ हरिमुषेजाईतिनरुहनाउ
वेतिसिधारविलेउनताउ ॥ दिजपत्नि
नीपहिआवेतुमारि ॥ तमनोकीविवाति
हारि ॥ तिनपहितुआरऊवातिउवारी ॥ स
नमाताजीविनिहमारी ॥ वनिमहिविछेठे

ह॰ग॰
म॰
८२

82

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नोबीरी॥ हलधरश्रमहरि स्याम सारीति॥
भुधिश्रालागी सषा समेति॥ जो कोवरि
प्रकारहिने ति॥ नमनो भोजनि मारारि॥
स्यामि॥ हरनि कारहमारेकामि॥ नि
रीश्राईजमना नरेषउ॥ मनिहिजपन
नीलोचनिउउ॥ विसमै भउसमैहिज।
नाहि। साचोश्राईहोहिमनारि॥ मननी
चीके सबके नामि॥ जसदानंदनसंद
रिस्यामि॥ व्रजमहि जो हरि कउनकिक
रे॥ मनि सुनि तिनको तनिमनि हरे। नि
सदिन चितवै थी हरि रूप॥ कवि देष
हि गोकुल सब नृप॥ गुआर कहहि श्राये
गोपालि। वेगि उठी सभ ही नि कालि।
लीने भोजनि वहु नप्रकारि। मीठे षा
रे सश्रादसुपारि। पाविजगिकेली पेउ
ठाई। लेले हाथि चली सभि धाई। वरज
हि भरता वरजहि वेषि। सलना हकेन
भसिकोकेषि॥ जिउ गंगा के सहं प्रवा
वाहु। कहकोकवन निवारे ताहि॥ पहै
नकी नाकोटि उपाई। वेगि मिले मागरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सागरिकोसाई ॥ तिउ हरि पुहिदि जपत
नीवली ॥ सुषिभगनिनकै भीतरि रली
पञ्चीनाईतिकरिभगवानि ॥ सभनेप्र
षसषीसजाति ॥ कैसेभीतिमनोहरी ।
घरे ॥ सेमरोमआनेरिहिभरे ॥ ईझु ध्यान
केसवकाकहो ॥ चरनिकमलिचरिभी
नेरिगहो ॥ निरमलवहैकालिंद्रिनीरि
मोहनिदाढेनोकोनीरि ॥ कोमलिवि
रछिमसहावेपानि ॥ फलेफूलफलपरेऊ
लाति ॥ सीतलमंदसरीपुप्रकासि ॥ प्र
तिवडि भागनिफलैविश्वासि ॥ केशव
दाढेप्रेमसे ठउरि ॥ जसथानेंदननंद ।
किसोरि ॥ स्यामघरासोहेदरिदिहि ॥ सा
भिमतिजनसखिउकरतिसनेहि ॥ पीत
वसनिरूपरिपहराई ॥ जिऊदामनिघ
निबीचिसहाई ॥ कंठिवतिवृंतोमालि
मोरमुकुटसिरिपरमरमालि ॥ बांकी
अलकिविराजतिभालि ॥ निकरिस ।
हावहिवालगोपालि । कानरूपरिक
मलकुकैफुलि । जगतिनाथजगजी ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वनिमूलि ॥ ननिविचननगोरीहरितालि
निपरिसहानेमदनगोपालि ॥ जा।
कोसुरिमुनिकहतिसलेषि ॥ नेप्रभ
रोढ्मानषभेषि ॥ पेकिमषापरिध
रिजेहाथि ॥ त्रिभवनिनाइकरोकलि
नाथि ॥ पेकहाथिलेकमलभमाई
पेहुविमषिकरिकहीनजाई ॥ मेरि।
मेरिमुषिमेमसकाई ॥ तिउराम।
निवनिचमकिदिषाई ॥ दिजपतनी
पहिरमनकरिजे ॥ कोरिजनमका
पानकुजारिजे ॥ करीउउतिकसके
पाई ॥ भागितिनोकेकहेनजाई ॥ ठा
ढीभइसभैकाजेरि ॥ विनवैषीया
कौनिसभौरि ॥ हरिसिउराषीदिष।
लगाई ॥ नैनमेंदचारिलीवेसमाई ॥।
मिलीकेठिहिरदैकैमाहि ॥ परमप्रेम
कारिछाउहिनाहि ॥ उमउैनैनिनमा।
वैप्रेम ॥ दिजपतनीकाऊचानेम ॥ ठा
देरामसभकेमध ॥ केशवजीचारिभ
नीरलवे ॥ तिउनरीआपरिजोगीजाई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मगनि होई विसरै सुधि काई ॥ ऐसी भग
नि भइ रिसिनारि ॥ इहै समानै नै रङ्कुमा
रि ॥ मगनि होई प्रभु नि षोलै नैनि ॥ बाड़ी
दैषै मोह नि मैनि ॥ नैन पंथिक रहि म।
विथानि ॥ रमे रोम सभि श्री भगवानि ॥ दे
षहि सुंदरि स्याम अनूप ॥ सभ ही भइ।
कौतुक ॥ तिन कौ बोले श्री भगवानि ॥ आ
वहु सषी हमारे प्रानि ॥ तुम ने बहुत न भ
ली पहि सरी ॥ ऐसी माई आछि नी महि
नरी ॥ कहहु कारन मारग कि आकरे
हउ प्रभ सभ को अपचारे ॥ तुम पहि है
म ता दरशान कीजे । महा कठनि भव
सागर तरीजे ॥ सुनहु सभ षोअ्रबे पामिवि
पाहि ॥ भरता रहु को दासहि नाहि ॥ बो
ली सषी सभै करि जोरि ॥ हम रा काज
नीति तिरहि को ओरि ॥ प्रभ को आज्ञा तिन क
बहेजाई ॥ इहि निह चाहै इहै मा हि ॥ प्रभ
विन रहै बैन हम को पानि ॥ प्रानि हमारे।
श्री भगवानि ॥ हम नो आ इस तन पति उरि
लोकि बेद की निप्रागी का रि ॥ हम नो हि

दश०
स०
२४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रहिभीतरितुरै॥ऐंगीकाहनकरनकरै॥
हरिकहिआजोहमराभईया॥तिनी।
सनमसफलाकहिलईया॥कवनवि
चारब्रसनिगेई॥तमरीसमसरिकरै
नकोई॥जिनकीवडहिजिकरनेसव॥
वडहिव्रहादेसभहीदेव॥तमरादः।
शेनसमिलईकरै॥तमरेपतिनलिम
सनक्रधरै॥अवहकहोकिआजन
निमरै॥हमारिभगतिकवनिनेउरै॥र
जावडधामनलावडविलेव॥पावति
कीजेसभैकुटेव॥हिजपतनीहरिआ
गिआमानी॥जोकुछकीनीत्रिभवनि
धनी॥प्रभसनमुषिसभिभोजनधरे॥
हाथिजोरिसिहनीवेकरै॥चरनिला
गिलेषागियागई॥कलचरपहिजपत
नीमरी॥फहिचहिआहोईपुनीतिभा
ईवप्रभपुरषोतमवीतिपिं॥देषीहिजो
जवैसभिनारि॥तवहीहृदैभईसमा।
लि॥देषिमीयाकौउपजिउज्ञान॥हाथि
फारिलागेपछुतानि॥हाहाहमसमि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वडे अज्ञानि । सके पहुन्नानिन श्रीभगवाति
प्रगुपद्हिइमरेजनमउनीति । अतिकठे
रमतुपापरिवीति । करमियरमिप्रग
पासभीमेति ॥ जिनोनजाने श्रीभगवे
ति ॥ प्रगुपद्हिविरिआकोअमिआसि
हरिकेबालकिगपेनिरासि ॥ जाको ।
समामङनेसभिवेहि ॥ जमुपानेइन
नेऊपभेहि ॥ हमहोजगिमहिपरम
अज्ञानि ॥ जिनेनञ्जाने श्रीनारानि ॥ ।
श्रीमधुनेउनिउलिपहुनाहि ॥ जिने
जनमागईआनपवसहवङरेपाहि ॥
वङीरहिजोनेकीसमाई ॥ तिरीआपे
पैनेनतिहारि ॥ अपनाआउमरसति
लागे ॥ हमतोजगिमहिअतिमङिआ
गे ॥ जिनकेपिहमहिअसीनाहि ॥ सपफल
जनमहमरे समारि ॥ रेघहलीलाधरी
अपारि ॥ पंनिसोइमिनजपेमरारि ॥ श्री
आजेनिमहां अज्ञानि ॥ नाकहुजान ।
हिवेरपुरानि ॥ केहिनेइनेजनेऊपरि
उ ॥ जाहणगायत्रीनारिउचरिउ ॥ तिरीआ

रा. म. ८५

85

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

माईआरूपगवारि॥ऐसीतिरीआकसमि
उपिच्चारि॥ऊरेसभैकसविनकाजि॥
तिसदिनपीऐश्रीब्रजराजि॥चलोभया
समयासभिगोकलिजाई॥कमलनैनि
कोहमनथाई॥कपाकरदछिहमोपरि
करै॥कोटिजनमकापापनकुजरै॥मनम
तिपावैराजाकंस॥वउतुदुहैनाकावे
म॥नंदगामामहिविसिथारे॥सहीनंद
मुतिकालहमारेपहिहै॥बीचरनिहरिप
हिगवे॥कसभगतिचरहिहीमहिभवे॥र
तिकीतेसभुजगुविसथार॥कसनाम
सितुलागोयिआरु॥लागेरहनिकसगु
णनामि॥तेजसधामनितंदरिस्यामि॥
उपजीभगतिजीआपरमादि॥मनितेमिटे
सभैउदमादि॥भगतापमकोतोषीरेकुन
वारि॥हरितेवमुषिवउगवारि॥देरि
तिआगिसभआगेगई॥कसरूपरजि
पननीभई॥कसचवेनेविजतिघाई॥अव
गिअचानेश्रीवलिराई॥सभैअचानेहरि
केमीति॥आनिपिआरेपरमपुनीति॥च

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लेखाघटतितिनकौनाहि॥जसुधानंदन
नंदकुमारि॥ब्रजमहिआपेलेसभिगाई॥
ग्रहनीग्रहनीवेनबजाई॥द्विजपतनी
कीलीलाकही॥हरिपतिस्यामरतनउधर
नसहि॥ईहलीलाकोइसनैसुनाई॥प्रे
मभगतिमाधवकोपाई॥कमलनैनक
रुणाभंडार॥कलदासपतिपरिवलि
हार॥२१॥साषी॥सजाआईईदिकौब्रज
महिवढिजेअनंद॥हिनकौसुखहि
नंदकोनंदनंदसघकंद॥२॥चौपाई॥सा
पतिकासजादिनआईया॥ब्रजमहि
घिरिघिरिमंगललगाया॥भांतिभांति
नलीअपकवाति॥सभकिछुजानहि
सीभगवाति॥माधवमतिमहिकीया
ठीवाति॥इहांसमलीनाअवलाति॥मकि
विनदेवअराधेअउरि॥हमरैयामिनण
वैठउरि॥देसरपतिकौपुजाकरै॥वाति
वारिजगिजनमैमरै॥ईनसभिवलना
हमरैधामि॥सरपतिनेकोजनमैमरै॥
ईनसभिवलनाहमरैधामि॥अ्रैसेनि

८६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निरमलबचन उचारो॥ ब्रजबासी सकले
निमनारो॥ अवरदेव तेबसखिजै॥ हमरे
हीरखिब्रजजनभीजै॥ नंदपिनाकोबो
लेलाले॥ सभविधिपूरनपरमकृपा।
लि॥ बाबानंदकहोसमझाई॥ हमरामु
नपतिहीविसमाई॥ कवनिभमापैरै
ब्रजलोकि॥ काकेमुखिवनावहिभो
कि॥ अंधकूपमहिपरेमजानि॥ ताको
बरजैउपखुसुजानि॥ हउतोतेरेघरिको।
पति॥ घरिवारीहोनाअबपति। मधिकै
भीसमझावहुवापि॥ जैसीकिरतिकमा
वहुआपि। नंदनंदकोबोलेनंदि॥ सन
हुहमारेमुखिकेकेदि॥ सरपतिकोश।
जाहमकरै॥ ईंद्रहमारेइखिकोहरै॥ व
रखाकरैसहनिसिउधारि॥ उपजहिकोम
लपासअपारि॥ तिणखिउहमरोगऊअ
घाई॥ दैषहुयामहिसंसानाहि॥ गऊझो
बहुतेदवहिषीरि॥ ब्रजकेकारहिअनंद
सहीरि॥ तिसतेहपतेनिकसेचोउ॥ सभ
जीवहुकापानीजीउ॥ सनीअपूरनपरम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परमवीति। सोजलसरपतिकैआधीनि
वेनसिउपजहि सरपतिदेव। सफली
कैहमारीसेव॥ आउबलीपरमपरमन्ना॥
ईंद्र बिनाहमदेउनहजा। जोसरपतिकैं
पजहिनाहि॥ नातकालिकोप्रतिउव
पाहि। ऐसीदागिवरषाडारै। सकले
ब्रजवासीशोषाकरै॥ ताबाकोबोलेभ
गवाति। पैइनसेकछुकीपेवषाति॥
सनैपिनाब्रजमेउलनाधि। मेघनहोवे
निसरपतिहाथि। कोइकहैअतिविस
नअनेनि। मैभजेनअनभैभगावेनि॥ नि
सअनेनकीचेरीमाईया॥ विमलविम
नजसवेदउगाईया॥ हरिकोमाईआ
केगुणीनीनि। जनममोनकुनमपरवी
नि। रजिगुणसकलजगतिकोकरै। पां
नकुपालैनसंघरै। नीनोगुणिमाई।
आकेचेरे। मतिवचननिरमलहैमेरे॥
रजिगुणिकैवसिमेचिविचारे॥ ईउप्रसके
गुणीवदिउचारे। रजिगुणिकीआगि।
आगिरधरै। आईजगतिमहिवरषाकरै

द.म.
म.
ए.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिउबकरीकैगलितिम्रनमनै॥ उरझुबवे
कौलिउमतिगनै॥ हसुनमूतितिमोके
माहि॥ तिउषभिनुरिहैसंसानाहि॥ सर।
पतिप्रजउकहाउजाति॥ कवधोपजउ
सैलपहाति॥ नदीसमुंद्रअवरपाषाति
गउहतिगुफाईकठउरप्रगाति॥ ईनस्र।
स्थानउवरषैमेहि॥ कविसरपतिसिउ
कौउसनेहि॥ वरषाकरहिरहैवहि।
जाउ॥ मेघउकाहेईहैसभाउ॥ कवहं
ईंद्रकापुजोकरै॥ काजेकवनहमारा
हरै॥ जहाहोईजलकोमलकोमलथा
ल॥ नहाजाईहमकरहिनिवास॥ स
नीछेवावानंदपुनीति॥ नमकोहउस
मझावोनीति॥ पजउजसनमुभग
वाति॥ जिनकोप्रापिपजहिनाराति
हरिकोपिआरीपजउगाई॥ जीवहि
जिनकागरोसपाई॥ पजउगिरगो।
वरधनजाई॥ जाकीहमसभवसते
छाई॥ वाकैफरनीपीवहिगाई॥ जाकी
हमसभवसतेछाई॥ वाकैफरनीपीव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिगाई। सखिव्रजकीतितिषीरसिराई
षेलहिहमजिहकेंरसीमाहि॥ वासेपू
जहमारेनाहि॥ तिरकोपद्मजुहराछव
ढाई॥ षविहीबलोविलंबुनलाई॥ ले
लेबलझयहिपकवानि॥ बाबाबानि
हमारीमानि॥ सिरपरिमानीसुनिकी
बानि। नेदबुलाईयपुनीजानि॥ मह
रिसभकोवानिसनाइ। सनेसभैन
मरमरेभाइ॥ तिरकोपरजतिसभहीब
लो। केषावबचतिसनाईउभलो॥ सब
नेआगिआमानीसीसि॥ मोहनिकह
हिसविसबेबीसि॥ बलेबेगिउठिव्रज
केलोगि। नानाविधिकेलीनेभोगि॥
नेवरयतिकैनिकटसिधारे॥ सभिव्र
जवासीहरिकेपिआरे॥ सजेव्रजसतिहरा
धुवढाई॥ हरिकीपिआरीसजीगाई॥
सुंजाणेवरयतिकीकरी॥ षकारतिके
रनिकरैनतिरही॥ व्रजसतिभंकहि
मोहोषीरि॥ आपिपरोसमहिसाममस
लीरि॥ गाऊआभंचहिकोमलचालस॥ गो

१६. श.
म.
४४

४४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पङ्केमनिभयेविगास्त॥गोवरधनिको
अरपेभोगि॥सभहीहराषेव्रजकेलोगि
आगैकीनेव्रसनिगाई॥वालकिलीने
रघङ्गचराई॥लागेसभेपाकमादैनि॥गो
मरोममहि३पजैवैनि॥मूरनिपेकअव
रिह्वरिकरी॥गोवरधनिकेऊपरिधरी॥
लागीअवनिप्रगटिवङ्गभोगि॥सभि
विसमानेव्रजकेलोगि॥नवह्वीवोले।
नंदकुमारी॥देषङ्गलीलानैननिहारि॥
वङ्गगोवरधनव्रजनिषाई॥अनिहीते
दनिहीरचकाई॥लेगिरासूपसारैहाथु
अववैभोगिगोवरधनिनाथु॥व्रजलो
कनिकोस्यामसनाहि॥ईहिगोवरध।
नुपरवननाहि॥ईच्छाचारीहैगिरिरा॥
जु॥प्रगटिदिषाईजेदरसनअाजु॥स
नोभयातमसमैसजाति॥व्रजमहि।
होईगोवर्द्धीकलियानि॥हराषिभपे
सभिव्रजकेलोकि॥प्रभपामादिन।
विनेतासोकि।गिरिकोप्रजचलेगिहि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

डोरि ॥ बीचबिराजहि नंदकिसोरि ॥ सषसि
उथिहिमहिपैठो आई ॥ हूंदैसमाने केशव
राई ॥ ईऊलीलाकोईसनैसनाई ॥ प्रेमभ
भगतिमाधवकीपाई ॥ माषनचोरकिसो
रमुकेरि ॥ कमलदासबलिगोकलिबेरि ॥ ११
साषी ॥ छजाभरीईछकीगरबप्रहारीस्याम ॥
सनेमरपतिकेपिउबलीसभमारेब्रजधा
मि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सरपतिकोमेटीहरिछजा
हरिकीउसेनडूतेहजा ॥ नबिसरपतिको
पिउबलिभारी ॥ क्रोधमारिषे ईहिबातिउ
चारी ॥ देषहुब्रजजनडूपेआंधे ॥ धतिके
गरबिमारिषिअतिबांधे ॥ कमलमनषबउ
करिजानिजे ॥ हमसोदनमनिमहिआनि
उ ॥ कैसाहैबडूकमलअनूपु ॥ धारिउलहि
रूपासमसरूपु ॥ अतिबाचालीकरैबबाउ
प्रबरूनमानैपहैसभाउ ॥ किसीनमानै
आपिसमानि ॥ हौहीश्रेष्ठहोभगवानि ॥
बालकिहिरदैमाहिश्रसोकि ॥ तिनउपदे
सेबिजकेलोकि ॥ ब्रजजनतिनोकीसरनी
पवे ॥ मापिउमतेबमषिभवे ॥ सागरित

द.गा.
म.
५

89

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नरनाननिउअह्लाद ॥ मूतभयेविषगातिउकौ
रा ॥ हूउअह्लादसुरपतिबलिवान ॥ त्रिण
कमलवज्रभअभिमान ॥ ईंद्रसवउनक्रुमे
गुडलाईया ॥ तोकोईहिकहिवचनसुना
ईया ॥ ब्रजमहिवरषाकरनतिभारी ॥ सुना
मेरीजिनोहमारी ॥ चारनहूनेपांचलिउन
रापे ॥ वलबुवेगिब्रजरहतनपावे ॥ मार
हुनेदगोपकोगाउ ॥ प्रेलैकरोब्रजमेउलि
षाउ ॥ गाईगोपगोपीअरुग्वारि ॥ ताहि
कालिमभिडारहुमारि ॥ विणहैतिनकोरह
नतपाई ॥ तातिकालिब्रजदेहुवहाई ॥ बोले
मेघईंद्रकेसंति ॥ ब्रजकेरषिककैहैभगवंति
हारिपरिवलिकिहिसीतिलगाहि ॥ पोते
आगेकोअबुनाहि ॥ महावलिहैप्रभुमधु
नासहि ॥ जगजिननिमहिधर्मप्रकास
नि ॥ तिनकोवोलिउसरपतिराउ ॥ होपाई
नेमारोकरोसहाई ॥ ऐरावतिहाथीपरि
बकोरो ॥ ब्रजासपाचलेकमहिधरो ॥ लिया
वज्रमाथिउनववेसिपउति ॥ समसरिकरै
हमारीकउति ॥ जोकछुईंद्रकरीअभिमानी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेघउआगीआसिरिपरिमानी ॥ आपेवा
रिब्रजकैमाहि ॥ प्रभअनाथपछानतिना
हि ॥ चमकहीदामनिअतिभयानि ॥ देषति
मरिमानेगजमतिवाति ॥ फुनिफुनिगरज
हिभादरिकारे ॥ जिउमरिमानेगजिभतिवा
रे ॥ ऐंप्रकारब्रजमेउलपईया ॥ सूरजका
रअरूपहीगईया ॥ मेघउछूटीजलकी
धारि ॥ अतिदुःखदाईकिफूलैविआरि ॥
ममलिधाराचलैअपारि ॥ तीछनगोले ।
माथिफुहारि ॥ महाप्रलैलागीब्रजमाहि
ईउकहिश्रीसुकदेवसुनाहि ॥ गोपगाईके
पेब्रजनवारि ॥ अतिदुःखदाईकजलकी
धारि ॥ वाघाहिगोलेअतिदुखदेहि ॥ महा
प्रलेसेउमदुमेहि ॥ घोरहराईकेपीके
ममिगाई ॥ गोपदुधीरजधरिजेनजाई ॥
मावउकाहिरदाअतिजले ॥ पनिलगाचे
छुमतिनलै ॥ ऐसाजलपराजेब्रजमा
हि ॥ तिलभारधरनीदीसतिनाहि ॥ ऐसी
दारुणिवारषाभई ॥ ऊचनीचठाहरतिमिट
गई ॥ ताउप्रकारहिवारंवारी ॥ अतिउखे

दृ.का.
म.
२.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हीनाजलकोधारि॥हरिकीसरनिपरोस
भिधाई॥ताहिआहिब्रजगोकुलराई॥हेम
नुधासनिहेभगवानि॥नमविनुसरनि
नेदेषहिआनि॥हेडखमोचनहेचनि
स्यामि॥तुकीविडारनिझूरनकामि॥हे
कृष्णगमेहेगोपालि॥हेदामोदरदीनु
दईयालि॥हेप्रभपूरनपरमानंदि॥हे
विस्वंभरब्रजकोचंदि॥कमलचंदहेब्र
जकोप्रानि॥आपदामेटनिदुरषषडगा
लि॥सरनिसरनिहेप्रभझपारि॥सवबि
धिपूरनब्रजआधारि॥हरिजीमनिम
हिकीयोवीचारि॥हनविनवरषाहो
निअपारि॥मेघनउमडहिकनिकीमा
सि॥बनहरिसभीसरिपतिकेदासि॥ई
डदिषाईगेरईरूपरनाउ॥होईकक्षा
कजनावोआउ॥गीरगोवरधनलीग
फारी॥मधसूदनिकेलगीनवारी॥वी
महसतिनिकुरीस्त्रेगुरीधरि॥नाके
नषपरिधरिउधरनीधरि॥नषपरिरा
षिजोउहपसमानि॥षरिकउनकिकी

नाभगवानि॥ सुषिनिबोलेश्रीभगवानि
सावहोव्रजजनहमरेप्रानि॥ जानेह।
रिलीनगिरिकउधरे॥ तिसीगरतिमहि
व्रजजनपरे॥ वालकिसदेवकुरागाइं
पैठेवेगिविलंबुनलाइं॥ व्रजजनम।
निमहिकरैवीचारु॥ गिरिगोवरधन।
भारुअपारु॥ जसमनिसुनलेहरुसउ
मारि॥ करिपरिधारिउअतिलपरागी
जोहरिकेकरिनेगिरिपरै॥ सभिव्रज।
वासीचरनकरै॥ श्रीपतिश्रीगतिसां
गपानी॥ तिनकोहृदैकीपहिचानी
बोलेकमलनैनोव्रजलोके॥ नैकुन
मनिमहिकीजोसोकि॥ हरिगिरिकी
पारिकेसधरै॥ यातेमनतमरोमनिउ
हमरीभुजामहाबलिवानि॥ सुकैपछ
नहिमिनिसवजानि॥ सघलभवनिको
लीनेउठाइं॥ साजेपालोदेउवहाइं॥ नै
कुनसोकुरिदेमहिकरो॥ सतिबचनि
चरिनोनगिरिपरे॥ मतिनेचिंनादेरुति
स्वामि॥ जविहरिउचरेवचनिसुनीन।

याउनिमकैमनिपरनीति॥ विंना
मिरीअनंदहिभरे॥ अनिप्रसंनव्र
जवासीकरे॥ नषिपरिनाथिगोवर।
धनधरिजे॥ गिरधरनामुनवैहीप
रिजे॥ मातिदिनसिकरेधरिगोपा।
लि॥ येकपाउनहीटरेदिआलि॥ ब्र
जजनदिषहिनैननिहारि॥ कोम
लकरिपरिपेनाभारि॥ हरिसिउ
धानलगावेरहै॥ संदरस्यामजनभैरही
गहै॥ हरिबिनदिमरिनलागैआनि
नैनैमहिआईरहैपरानि॥ क्रपाइह
केशावजीकरी॥ भषपिआसब्रज
जनकीहरी॥ लकुटीलैलैआव।
हिगुआरि॥ हरिकेकरिपरिपेनाभा
रि॥ मिरिनलिलेलकुरीअरकाहि॥
मनउछुपावहिहरिकीबाहि॥ जन
धाननमनउरवारि॥ हमरेसनके।
करिपरिभारि॥ हाईहाईसनिदीजैग
रि॥ कोमलकरपरिलीउपहारि॥ बा
निमघाकीलीजैमानि॥ निकसिनानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

है मै रसप्राति ॥ सुवहिं गोकुलि सुखिवहि
जाउ। कोमलकरपरिवारीमाउ ॥ हरि
गिरधारी लीला करी ॥ महाहठीलाश्री
नरिहरी ॥ सपति दिन सिवीते पहिंभो।
ति ॥ हरमे चब्रजउपजी योति ॥ उरिविले
जलमेचविचारे ॥ तिनजानो उब्रजगी
सीमारे ॥ जगमहिं सुरतिकीजे प्रका।
स ॥ माधवके मति सदाउलास ॥ ब्रज
जनको बोले भुगावे ति। निकलइस।
भैसहति सिउणाति ॥ समनो साभि।
चालिरिपरि पुरी ॥ जोके पावकहलि
मेकरी। काढैगऊ खावूदेवालि ॥ पा
छै निकसे नरुणि गोपालि ॥ वरता।
निकाढ्ढी सभे समारि ॥ समि पाछेनि
कसी ब्रजनारि ॥ कनिकमलापनि
कउ किकरिजे ॥ वइरित होगोवरधन
गिरे ॥ सभही ब्रजजन आये धाई ॥ मे
हति लीने केठि लगाई ॥ लागे विपत्र
सीमारे ति ॥ गोपी बोलहिं प्रेमततवै
नि ॥ हलधर केठि रहे लपटाई ॥ सब

द.श.
स.
९२

92

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चूमैपिआरीजसमाई ॥ मसकचूमै ।
वावानेदु ॥ गोदिविशेव्रजगोकलि ।
चंड ॥ चूमरिगुआरसभैहरिपि ॥ व
वलिवलिजाउहमरेनाथि ॥ गोपि ।
केठमिलीमनिमाहि ॥ हरिनैनक ।
सिउनैनमिलाहि ॥ व्रजजनगाव ।
हिहरिकेनामि ॥ जैसधुनसंदरिम्ना
मि ॥ गिरवरधारीविपतिविडारि ।
गरवप्रहारीदीनदानारि ॥ गिरधर
लीलाकरीबषानि ॥ अपीम्रहीम्रे ।
सष्वीभगवानि ॥ पहिलीलाकोई ।
सुनैसनाई ॥ प्रेमभगतिमाधवकी
पाई ॥ जैगिरधीरीनंदकमारि ॥ क
सदासषपगिपरिवलिहारि ॥ ७२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

साखी॥ कहतिगोपमिलिनंदकोसन

ऊनंदपरभाति॥ सननमरालोबन

कमलप्रतिबलीयह्नेबलिबानि॥२

द.शा.
म.
९१

९३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चौपाई ॥ सखि ब्रज के जन विसमय भए ॥।
केशव हरि दिखावहि नए ॥ सबै बोले गो
पकुँ की जाति ॥ सुनी श्रे हमरि मनो ह
रि नाति ॥ सत नन म एको ऊ वद्धो मस्रा
न ॥ अति मली अऊ ने अति बलि बान ॥
सपत वरष का कोमल गाति ॥ गिरिव
र धारेउ कर दिन राति ॥ जोई न पाछे ली
ला करी ॥ सभै माथु हम ह देपरी ॥ वको
विदारी ई नही लालि ॥ गाउ उलरि उई
नगोपालि ॥ त्रिणावरत मारिउ ईन सा
मि ॥ उषिउ फारी ई सके कामि ॥ वद्धस
र वकसा हने ॥ य कि गुणि क कुजाति न
गने ॥ धेनुक मारिउ ईन जगदीसि ॥ काह
होई न ईन की रीसि ॥ हलधर मारिउ देत
प्रलंबु ॥ लागो नाहि न नेकु विलंबु ॥ का
लीनाग महा बलि बानि ॥ सोई नमथि।
या की रिस मानि ॥ पावकि नेराघे ब्रज।
लोकि ॥ मेरे स भै ह मारे सो कि ॥ यह ली
ला ईन प्रगट दिषारी ॥ कर पर धारिउ व।
द्रो गिरि भारी ॥ हम विसमै ऊपुने मन मा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हि॥ निहचैजानन्नुमानषनाहि॥ ऐसीउ
उरजनमकिउलईउ॥ गोपक्नकाकिउबा
लकुभईउ॥ यहिनोलाईककऊचीठऊर॥
किसीभूपकाहोनाकउर॥ इसहिम्रजो
गिहमारेभागि॥ उवैरयाकेदर्शनलागि
हमरेमननलिउहमरीप्रीति॥ बढैदिनो
दिननउनलिचैति॥ बोलेनंदवद्धपा
धानि॥ सनोभईयानुममभैसजान॥
हमराहतिमहावलिवानि॥ हमरेयाई
उगागमहान॥ तिनकहियायाकाप
रनान॥ संतउधारनउछलिबाप्र॥ सक
लबरनमतिजगमहिलेना॥ संतजना
उकोपतिसबरेना॥ ब्रेनाधारेरकनश
रीर॥ सकलजगतिकोकारैपीर॥ पीति
वानउपापतिमहिपरै॥ सिमरनिकीनेक
लमलहरै॥ पविकलिमहिद्रुयायनसा
म॥ पूरतिब्रसम्रलेषच्रकोमि॥ तिनस
नकहियायानारायनि॥ वालकरूपीउर
षउगानि॥ केवहूवमतदेवैकाजाईया॥ ई
उभीमकिकोगारउमनाईया॥ जोजनया

द.ग.
म.
८८

९४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिउ प्रीति लगावहि ॥ दीनो लोक परम ।
सुष पावहि ॥ गिरिवरधर नाके नकवा
ति ॥ नारायण सभ मेरे नाति ॥ याको भ
जन सने हहि साधि ॥ हम रिसति हमरि
नाथि ॥ मनी ति नीज रैनै सीवा नि ॥ ऐने ।
वढेन सो धा ना ति ॥ यह लीला कोई स
नै सुना ई ॥ प्रेम भगति साधव की पाई
जै जग वी सम्रने न सपारि ॥ कलदा न
पगि पारि विलिहारि ॥ २४ ॥ साषी ॥ सुरपति
पाई उ चीन्ह होई नीज सुतो अभिमान
गिरधरग र व पूहारि उ त्रिभवनपति भ ।
गवान ॥ चौपाई ॥ सुरपति निज मन के कार
हि पाई या ॥ गिरवरधारी सरन सिराई या ॥
वन महि मोहन चारहि गाई ॥ ईद्र न हा
ही सारे उ धाई ॥ सरसमा नि मुकुट सिर
परिउ ॥ तिहि सभ मोति जनन लेवा परिउ ॥ नि
परि दीन्ह हरि आगे भई उ ॥ सभै मान मन
का त्रिरिगई उ ॥ हाथि जोरि लागा हरि
गावनि ॥ तुम ने लागा पाप धिमावनि ॥ तू
मो मुसो भगवंत न सुने नि ॥ सभ निध मामी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कमलाकेसि॥ पंकजलोचन निसंदर स्या
म॥ संकटमोचन पूरन कामि॥ निरवि
कारि निहक्रोध क्रपालि॥ ग्रबभुराज
निवाल गुपालि॥ दीनानाथ दइआ भं
डारि॥ निरमल निरभै प्रभू मुरारि॥ गरब
प्रहारी दीन दइआलि॥ संत सहाई बाल
गुपालि॥ जै गिरधारी जै नंदलालि॥ दइ
आसिंधु सामी दरदेव॥ सभ हि हैं बिस
मारी सेव॥ लोकपालि लोके सभ लेषि॥
नमो निरंजन बालक भेषि॥ बासुदेव गे
भजनि बासि॥ सभ ते सुणी नमा रदासि॥
पारब्रह्म पति परमसु बास॥ सरब बिआ
पी सब ते उदासि॥ सभ ते परै न मा ताधाम
प्रभ गुराछोन मघहि निजनाम॥ पहि सन
पतन प्रगारि छिा इआ॥ तीन भवन को ना
उ मिटा इआ॥ करता भरता धरता आपि
आपि संघारु रुप निनपापि॥ अघे भगोबा
प्रभ निरवालि॥ लष चउरासी सभ किषा
नि॥ ननिकोत गरनिकोटि प्रकास॥ सदा त
मोरे हदै उलासि॥ पंकजलोचन नग्रंपतन वै

द. श्री.
म.
५५

९८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ति ॥ ततिमतिसरातमारेचैति ॥ जरीता
षजगदीसिषनीसि ॥ सतिसनातनि
विसेवासि ॥ भूतभविभवनाषअनाषि
सवनेति आरेसभकैसाषि ॥ जोगीभोगी
परमसजानि ॥ जगिज्ञानवेदकुकोषा।
ति ॥ सेसमैनवनमालीस्वामि ॥ गरुडा
गामीपुरषअकामि ॥ महारात्रिराजन
केराजि ॥ सातिपरेकोपूरनकामि ॥ स
भुनेउवप्रभूवलिवानि ॥ भुवनपाक्र
महीनाराति ॥ परमानंदमकंदमरारि ॥
जगतवीजिजगकेआधारि ॥ नमोअवि
नअमेपअपारि ॥ दीनदयालनिधमा
हाउदारि ॥ शाषचक्रगदानरहारि ॥ दा
रिदभंजनअभिनदानारि ॥ नमोनमो
प्रभपंकजेपाणि ॥ सशोतिरूपेपुरुषउ
त्तमि ॥ सिवप्रकाशस्वंभूवकुनूप ॥ किसे
नेजैसेमहाअनूप ॥ तभनमारेसाधस
माधि ॥ विमाकरुहदमरेअपराधि ॥ रा
जगरवकरहउथांअंध ॥ किसैनतिवा
वेअपुनाकेध ॥ आठोलोकपालकोरउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रनिगुणिलीनेमूउसभाउ॥ ज्ञानहीन।
हउबडोरावरू॥ केनेहूदैननैक्रबीचारु
सभतेबडापङ्कानोग्राग्र॥ भूलिगईग्या
नमतापरनाग्र॥ मकिउपरिनमकरुणा
करी॥ गरबप्रहारिडाधीनरिहरी॥ पहि
लीलाकोइसनेमनाई॥ प्रेमिभगतिमा
धवकीपाई॥ कमलनैनकरुणाभंडा
रि॥ कमलदासपगिपरिबलिहारि॥ ७५
साखी॥ कामधेनग्राईनवैलोक्रग्रपना
तिग्राणि॥ जानिजेउनसभागिग्रतिस
भकैरासनिलाणि॥ १॥ चौपाई॥ कामदे
ननिहिग्रवसारिग्राउ॥ बनमहिपरहेला
लकनाउ॥ हरिगुणिगावनिलगीवजा
नि॥ पहिश्रोनसुरनभगवानि॥ कमलक
लजोमेपारिउसि॥ जैजैजगतिनाथज
गदीसी॥ जगतिजोनिजगतिकेपरकासि
जगतिषाणजगभीननिवासि॥ ग्रादि
ग्रंतनमधिसुरनस्वामि॥ सभविधिपूर
नमदाग्रकामि॥ ईहितोहमतेइक्रनहीं
ई॥ नमविनमहमरेगोविंदराई॥ ब्रह्मा

६मा.
म.
९६

96

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऐसी है हो भगवान ॥ अब तुमने मति नहीं
करी बषानि ॥ लागी करनि हरि को अ
भिषेकि ॥ मंत्रि गावै नाम अनेकि ॥ उ
हि उछव अपना करि विसतार ॥ लागे
पूजनि प्रभु करतार ॥ तबै इंद्र की बी
री आइ ॥ तिन सुरपति को कीनै सनाइ ॥
तुम हूं करो कृस्न की पूजा ॥ तउ तुम सम
म को इ होन दूजा ॥ तुम हू करो कृस्न की
पूजा ॥ तउ तुम सम भको उ है ईन दूजा ॥ ऐ
रावन लिआई जो जल लिधारि ॥ नमरीगा
अति जो निअपारि ॥ अब तुनासु उ हरि जै
ऐरावनि ॥ आनि जो जल अति परमसु ।
धावनि ॥ सभि मिलि पिलिआवे तु हूप हअ
नेकि ॥ करनि लागे हरि को अभिषेकि
प्रथमे रूपवकु रिजल लिधारि ॥ देंदन ।
तु हू पसु गंध अपारि ॥ पूजा जो गुरु पूजा
वहि हुरी ॥ परम हरषसि उपूसा करी ॥ ।
आई उनारद तु मरे साथि ॥ वे तु मने हूरी
ली नेद्ररा थि ॥ कैंनरि लागे हरि गुनगन ।
नि ॥ अपसरि लागी पूरनि ताति ॥ साथ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देव अपेरी धरव ॥ हरि गुन गावत नि लागे
सखि ॥ जै गोविंद गोपाल हि ध्याले ॥ पर
माते द्रम नैन कि पालि ॥ बाजे बाज हि ना
ना भांति ॥ जीन भवे नम हि उपजी शोभाति
सवरा बारकी आपदा गाई ॥ ति हि यवद
रिधहि लीला भई ॥ सलना सभै डुगायहै
ईवही ॥ लीला श्री सुखासी सकि कही ॥
विरकुड नै मध्यपारव है ॥ लीला श्रगम
कहा को कहै ॥ देघ इसाध कुख कचकह
नी ॥ लघवुदासी जो निश्रवानी ॥ परव।
ति काटि पतीमनी ॥ सी हि ॥ जविपजैडर
पोनमइसि ॥ पनै श्रगादि पक्षानडवानि
सभै कै प्राणी जसो धामाति ॥ जाकै प्रजैप
हि विभई ॥ नी निभवति की श्रपदागाई ॥ या
नैभा निकाल मै विमारि ॥ सदा ध्याइ श्रहि
नै दकुमारि ॥ बोले कैसव सवहि संभीति ॥
येन जिउगाजै स्याम समीरि ॥ सनुरे इंद्रवि
चारे दीनि ॥ महाप्रभद्रम धपारमप्रवीनि
नकिउपरि सु फफरुणा करी ॥ उरमलि
नैसमिपरि हरी ॥ हउप्रभ पुरानसदा श्र

द॰ प्रा॰
म॰
९॰

97

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कामि ॥ गरब प्रहारी मिरो नामि ॥ गरब छूका
ढि ज्ञाई राज हि करौ ॥ हमतें निसदिन म
नमहि डरौ ॥ हमरे चरण हृदै महि लेधरौ।
जग्र हरिनाम अविदिश्रानरौ ॥ ईस्वदी।
न्हेहोई लागापाई ॥ चलि ओप्रभ नेपाउ।
षिमाई ॥ कामधेनु लेश्रागि आगाई ॥ पाम
भगति केशव की भई ॥ अपमरि साधि।
सिधारे देव ॥ सफलि भई सम्भकी सेव ॥
सरपति की प्रजाप हि कही ॥ सो प्रभ सनि
सम्भ को सही ॥ काम वेलि प्रजे चनि स्यामि
प्रभको राषि जेगो विंदनाम ॥ जसधाते
धन के सवाराई ॥ गोकलि आये नाई व
राई ॥ ईकूली लाको ईस नेसुनाई ॥ प्रेमि
भक्ति माधव की पाई ॥ गुणि अनंतश्रेम
न भगवंत ॥ कलसदासवलि कमलाकंत

७६

साषी ॥ प्रानिनं दरदिन उआदश करति
लगे ई सनानि ॥ इनिवरति के लोगपे ब
जेजन भवे हैरानि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ दिनसि
उआदशी हरि को नानि ॥ जलि महि परे ओ
वजी प्रभानि ॥ नेदराई मनि की ओसी चारि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जिउ विश्राम सु विधि करीउ चारि ॥ जिउ श्रा
गिआज्ञा विधि बेद पुरानि ॥ करो तिसी ।
विधि जल ईस नानि ॥ बोडी रही उद्याद
शी आई ॥ सीच्य सिधारी जमुना नाई ॥ पहि
रउ ना अन्न पुरानु करो ॥ हरि पद पदम हृ
दै महि धरो ॥ जमना जल महि मजन क
रो ॥ हरी को ध्यान हृदै महि धरो ॥ नदी स
मुद्र भरे जल माहि ॥ वरुणि ईनो सउ
भनो के नाथि ॥ राति वरुणि के जल महि
लोकि ॥ नदी समंदईनो महि होनि ॥ ने बा
बाको गहि लेग ये ॥ ब्रजबासी सभि विसा
ये कल कल बोले ब्रज लोकि ॥ नंदन
पाये उपजे सोकि ॥ सभ कुछु जानन हि ।
हरि गोपालि ॥ जाने बाबा नंद पाताल
छन महि नाथ वरुणि के पाये ॥ वरुणि ह
रष सिउ ठाढे भये ॥ करी उं उ तिकल कै
पाई ॥ सिंचासन बैसे हरि राई ॥ वरुणि ना
थ की पूजा करी ॥ हरि मूरति हिरदै महि
धरी ॥ पूजा करि लागा गाउनि गावनि ॥ नमो
नमस्ते परमस्य पावनि ॥ श्री भगवान कु

द.भा.
म.
६८

98

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सजगदीसि॥ अभैअविंतअनंतअनी
सि॥ आज्ञदीनहउभईजेसनाथु॥ अभ
परिपंकजिपरसिउहाथु॥ हमारेसेवकि
वउअजानि॥ आनिउनंदनकरीपछा।
नि॥ पांनेसधरिउहमराकाज॥ देषेअभ
कादरपानिआज्ञ॥ गावहिगेयहिवानि
श्रुति॥ गयेवरुणिकेश्रीभगवानि॥ ज
गमहिनासहमारेभये॥ वरुणिदीनके
केशवगये॥ सुनिश्रैविनैकपाभंउरि॥
विह्वलभयेसभैव्रजगुआरि॥ नंदपि
तालेधामसिधारिउ॥ तिनसंतनउका।
सोऊनिवारिउ॥ वरुणिविनैश्रैसोजवि
करी॥ कउनऊकीनोश्रीनरिहरी॥ हा
थिवरुणिकेजोकेरहे॥ हरिगुणश्रीन
कदेवहिकहे॥ नंदपिताकउलेभयआ
येधामि। व्रजलोकनिकेपूरेकामि॥ बोले
नंदमहरिजीवानि॥ सुनोसभैतुमहम
रीजानि॥ वरुणिस्यामकीपूजाकरी॥ सु
तनोसभैतुमहमरीजानि॥ वरुणिस्या
मकीपूजाकरी॥ सुतहमरापभश्रीनरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरि ॥ जो को ध्यान धरति अव धूति ॥ पूरन
ब्रह्म हमारे पति ॥ लषि बिसमै सति ऐसी
बानि ॥ पैनो बउे जसो धानाति ॥ सभनो के
मनि उपजै भाई ॥ किउ ही हृदै क्रुठि दिषा
ई ॥ बहु णिलो कि ते आनि उे नेउ ॥ ब्रजम
हि बढि उे परमानेउ ॥ ऐहि लीला कोई ।
सैनैसनाई ॥ प्रेमि भगत साधव की पाई ॥
कल कल धै के पावराई ॥ कल्स रास पगि
परि बलि हारा जाई ॥ ११ ॥ साषी ॥ अंतरिजामि

स्याम धनि धरे तिनके कामि ॥ कणाक
रे ब्रजलोकनि को दिषराई जे तिज धा
मि ॥ १ ॥ चौपई ॥ अंतरजामी जानि उे स्यामि
संतजना के परे कामि ॥ जो ई नके मति ।

द॰ग॰
म॰
९९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

99

उपजी विश्वासी ॥ सभ ही पावहि हमरे
दासी ॥ बोधैरै निसभै ब्रजसंति ॥ सभि
वैकुंठि षडे भगवंति ॥ सभनो देषि गोह
रिको धामि ॥ सभ ते ऊंचा वैकुंठ नामि ॥
कैसा है वैकुंठ निवास ॥ जगमगाति हा
रिके परकास ॥ सति रूप अविनासी धा
नि ॥ सदा विराजहि श्री भगवान ॥ पावा
को पवन न चंदु न सूर ॥ न सम ज्ञान रू
है ने हरी ॥ दिवि देहि धारै सभै संति ॥ सभै
चतुरभुजी संतन अनंति ॥ सभै स्याम घनि
न ति मनिमो हैं ॥ सभनो पहरि पीतंबर सो
है ॥ सभै भगति मूरति ध्यानै दि ॥ प्रभ सभ के
के सम कुंडि ॥ हरि सिंघासन ऊपरि भगवा
नि ॥ संदरिता निधि ग्रषपुरानि ॥ सिंघास
नि पर विस्व विराजहि ॥ जसकहि निगा
म विरंतर गाजहि ॥ वरनो यहि हरिजी को
धाम ॥ जितु कहिया सकदेव महान ॥ नी
ल कमल सो गाति सुहाई ॥ पीतंबर तनऊ
परि फहराई ॥ चारि भुजा संदरि विग सा
वहि ॥ स्रवन कुंडल निपरि सहावहि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गुरुकिरिसीसबरिजगिमगिकरै। नीनिभ
वैतेकेतनमकोहहै॥ केठिवनीबैगेती।
मालि। चानकुलगिग्रतिपरमामालि॥
मंदमंदमाधवमनसकवहि। संतनकुको।
मतिसतुउपजावहि। कमलनैनक।
मलाकेकेति। प्रभश्राधोतमप्रीभग
वैति॥ सनमविठादेवारोवैरि॥ हरीगु
णगावहिकरहेश्रमिटे। नेनिनेतिकहि
गावहिनामि। नमोकपानियिसंधीसा
मि॥ नेरसतेरगरुउपावंउ॥ चेउमहा
वलश्रवरंकुमउ॥ वलकुमरेघनपेन
उसेति। चक्रदिसिसोभहिप्रीभगवंति
पेकुकुचलेपाछेघउ॥ हरीध्याननैन
हमैधरा। दोहरीसेवकिचमरुफुलाव
हि। ततिमतिहरकेसतुउपजावहि॥ रंकि
सनमविठादेभगवाति। नैनपंचकर
नेमुषिपाति॥ सभिहरिसेवकिसदाकि
सोति। पुरीरहतिहरीजमकोवैरी॥ सधसं
नकीहरीकेलोकि॥ जनमिनमिरतनन
रानमोकि॥ अवरीअसंघकलकेदासि॥

द॰शी॰
म॰
१००

100

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मूरतिपरमअनंदविगासि॥ ह्याधिजोरिसमि
सेवकषरी। यहिब्रजलोकनिदरसनिक
रि॥ जैसेसेवकिअवरिअपारि॥ तैसेगोप।
ऊकेपरिवारि॥ गोपक्रमनिमहिकोउवी
चारि॥ ब्रह्माकेशवशंभुअपारि॥ हमरेका।
मिनवैकुंठपाउ॥ वहीभलाहमगोवलि
गाउ॥ इहहारिदेवनकेदेव॥ ब्रजमहिले
लेगोरिषिलावहि॥ इहाविसअनंतक
सभिगावहि॥ ब्रजमहिग्रिहिग्रीहिनाच
रिषावहि॥ वैकुंठठनेभयाअभाउ॥ हम
कउब्रजहरिलेहीजाउ॥ फुनिकुनथा।
नेधामहिषालि॥ जसुधानंदनठकुमार
ब्रजलोकनकाअममिटिगाइया॥ वैकुं
ठिनेब्रजमिठाभइया। यहलीलाकोइ
सनैसुनाई॥ प्रेमिभक्तिमाधवकेपाई॥।
वैकुंठनाइकविसनअनेनि॥ कल्लदास
वलिकमलाकेनि॥ ०८ साषी॥ आइसष
निधमरडुहतिई हिविति उहरीतिई। गाउ
मिटावोकामकाल्लवोलोरासवनाई॥ ४
चौपाई॥ आपोकोनकिमासिउनीनि॥ भपे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जगतिकेनिरमलचीनि । ठतिग्रहसर
दिसहावीरानि । मारवमननमहिविनवी
वानि ॥ गोपीसिउमिलिलीलाकरे ॥ गारव
कामकासभिपरिहरे ॥ विन्द्रावनिमहिमा
पवषरे । रोमरोमआनंदहिभरे ॥ चंदिस
भैननिसंदरीकरे ॥ सोलकलासंपरनिव
रे ॥ पूरनिमाकीरात्रिविगासि ॥ केपाव
कैमनिवढिउउलासि ॥ विन्द्रावनिफूले
फलिफलि ॥ भ्रमनिसषराईकजमनाकू
लि ॥ गोपेनहंगोपालिग्रकामि ॥ गोपीकी
गतिसंदरारिसिआमि । कीनोनिपरि
मनोहरिरागि । जिनहीसनिजेजिनोके
भागि ॥ जिनगोपीकीहरिसिउप्रीति ॥ रि
रिपुनिहरेतिनोकीचीति ॥ सभनउरम
लिरहिसमालि ॥ सभहीचलीकुंरवहि
उतरि । कोनतिआइउहनीगाइ ॥ कोनति
भोजनआधाषाइ ॥ येकमलेघीपतिको
पाइ ॥ भरनातिआगचलीसभिधाई ॥ सक
कोग्रस्पतिपातिकाति ॥ तेउठिधाइउगो
नाति ॥ मजनकरनियेकिउठिभगी ॥ हरिस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेहिउरिफासीगी॥ पतिकोभ्रनपरोमरि
कोइं॥ नेउठिचलीसनेहरिपोइं॥ इंकन
जुरूपग्रगानिपरिधरिजे॥ नेउठिचलीवि
लेवनकरिजे॥ यंजनिदेतीघीइंकने।
नि॥ नेउठिधाइसनिइरिवेनि॥ वछुरावे
घेघीइंकनारि॥ नेउठिचलीविलेउवि
सारि॥ जिहजिहकारजिमहिपीदेहि॥
नेउठिपाइकमलसनेहि॥ कोगेपीपीय
हिमफारि॥ बिहवलभईनपाइउआरि॥ वे
ठिगइहरिध्यानस्लगाई॥ तिग्रागेप्रानि।
विलेवनलाइं॥ प्रानतिभ्रागिरहेहरिजीव
हिगइं॥ कमलनयपनेगोपीभइ॥ सघीसमा
नेकेशवमाहि॥ बिनसेनेरिहरिपावहि।
नाहि॥ चलीसघीप्रीतमकीओरि॥ थाहिक
ढवकेवधनिनारि॥ जेमेछुटेधनयनेवा।
नि॥ नेमेधाइसघीसजानि॥ जिउगंगाके
महप्रवाहि॥ केघीकउननिवारेताहि
मिलेवेगसागरकोजाई॥ तिउसमिगोपी
प्राइधाई॥ चमकहिकुंडलीफलहिहारि
वाजहिनपरिमवदिरसालि॥ पऊबीजा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ईकमलकैपाणि॥कमलकुसुमसुषरहेविगालि
कमलनैनकादासनुकहिजे॥तेमरेम
थानेरहिभरिजे॥सभनकुत्राईउउता।
करी॥करिउउतिहरिसनमषिषरी॥श्री
वङ्मषीउचारेस्वामि॥कउनतमारेहेरो।
कामि॥सषसिउत्राईहोब्रजनारि॥श्रीति
हीतमरेहदैउदारि॥भागिवानिसभते
तुमभइ॥कोटिजनमकीश्रापदागइ॥त
विससेकिउक्काउेधामि॥कुलवधयङ्
कैहोतिनकामि॥हैकिउत्रोकलिमाहि।
कलिश्रानि॥बनकिउश्राईसषीसजानि
किउश्राईहोसतिपतिजानि॥निंदाकरति
सतितिसंसारि॥श्रउनाभरताकैसारेंह
जैसनैसाप्रभहेसोइ॥दीनकुचीलदरि
इकरूप॥ऐसाभीपतिप्रभकारूप॥श्रउ
नापतिजैसाभगवंति॥वेधसमानविरा।
नाकंति॥गोपीसनेकमलकेवेति सभन
कुनीचेकीनैनेति॥नीचेबरतिकमलसे
करे॥वचतिकमलकेमरजचरे॥संदसषी
जिउकमलपुनीति॥सषीश्राहीलिउलिन।

द॰पा॰
प॰
१०२

1.02

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कौ प्रीति ॥ चेदे निरषि वछ अति सुषपाई
स्त्रजि देषनि ही क्रमलाई ॥ ति उसषि गो
पी कमल समाति ॥ स्त्र निवेद कसभगा
वानि ॥ वचेनै उदास करे भगवानि ॥ ने
स्त्रजकी किरनि समानि ॥ सनि उदास
वी वलिकी वानी ॥ चेद सषी गोपी क्रम
लानी ॥ चोर दनि भूमिलगी सगिपाई ॥ ।
चिंता सि उमुषिनी विनिवाई ॥ वोली स
षी कसलको वानि ॥ विनती सनछ जसोधा
नाति ॥ ऐसे वचनि वछरिमन कहो काहे
हमारे ननिको दहो ॥ वोले वछरिमनक
हो ॥ काहे हमारे ननिको दहो ॥ आई होवति
देषनि हेति ॥ देष छकै से फले छषि ॥ देष
नि हो मिरि जावे मषि ॥ वोले वछरि कसभ
गवान ॥ सुकिसि उप्रर के हमरे प्राति ॥ आ
ए हमरे दर्शन मिति ॥ सुकिसि उषचे नमारे
विति ॥ भला भई आअवि दर्शन करिओ ॥
महा कठनि भवसागरि निरि जे ॥ हमरे द
र्शनि परे अउरि ॥ हउ भजीओ सोउ नमरउ
रि ॥ जावछ पामिन लाव छवारि ॥ गऊ व छा
की लीजे सारि ॥ पूत कौ घनि पानि करा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वहु ॥ तिनकी नतिका मानु भिरावहु ॥ स
भिजाई भरता को मनु देउ ॥ तुम सिउ का
ने परमेसर नेहु ॥ जैसा वेरिव नाव हितेहु
जैसी ही जाई करम कमाहु ॥ मनु नापति
जैसा नाम न ॥ कंवल बिगाना वेपु समान ॥
भागने वेलो खिजवनारि ॥ जैसी वानै ला
लविसारि ॥ अवलि विति पगि निहचा
लि भये ॥ धामि सिधारति नेअमिराये ॥
केहाथति भरता गिहि गाए ॥ तुम मरे पगि
न जिवलि उनजाई ॥ तुमही लागि भरता
रिहि गाई ॥ मनतु करे तिनत विरही तनि
जाई ॥ विनती मन जनज मेघा लाति ॥ विउ
ममाति मवचनम विनवाति ॥ वेउन सेकि
आकरनि वृथाति ॥ वेनो दरति हमारे प्रा
नि ॥ उरवि विवेकी वचनज कहे ॥ सोहम
हृदै भीतरि गहे ॥ परम परमेसर महतनेको
है ॥ तुम रे पगि का धीन समु होई ॥ जिह सतिकी
ना श्रेसिति भोगि ॥ ताको को ऊन लागति
रोगि ॥ जिन मने नेऊ तम सेनी कति जे ॥ पं
ति जनम तिन हीजगि धरिओ ॥ हमरी प्रीति
तेमो सिउ लागी ॥ हमरी त्रिभवति महि

ह.प्र.
म.
१२

103

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

डिभागी। तुमरेसुनतिहुं बनारे केसि॥ ति
नहमसमोहेनरखवारिभेसि॥ कमलनैननम
खिपंकनिस्याम। नखिक्कुबिमोहेकोर
किकामि। मंदमंदमुखिहासिसभाई॥
नमहेसेत्रिभवनिकेराई॥ नंदरिक्कासी
पुरमेउदासि॥ नासिउहमरोबढेपिआ
रि। तुमरीपरमनमनोहरिबानी॥ हमस
भनाकेहाथिबिकानी॥ प्रेमभरीगोपी
कीबानी॥ सुनीश्रीआपतिसारंगपानी
भयेकृपालकृपानिधिस्वामि॥ ओमि
भोगिपतिप्रभुतिहकामि॥ पहिली
लाकोइसुनैसुनाई॥ प्रेमिभगतिमाध
वकीपाई॥ गोपीनाइकनंदकुमार॥
कमलदासपगिपरिबलिहारि॥ ४६॥ सा
षी॥ ओगेसरिभगवानहरिरमेसषीमि
उस्वामि॥ तिनकाउपहरिजीहरिगोर्प
पिनाथिनिहकामि॥ १॥ चौपाई॥ कृपा
सिंधुप्रभकरुणाकरी॥ सभिगोपीकीपी
डाहरी॥ हमसेस्यामसदाप्रेमहिभरे॥ गो
पीसिउमिलिकउतकिकेरे॥ जमुनाके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लिखीलेआपा॥ तिनकेतनिकानाउमि
राईपा॥ मेरमेरमखिपकजिहाहि॥ गो
पीकीहरिहरिहाहिआसि। रमेकंसगोपी
केमति। उराषिउरानतिमदाअंभगि॥
गोपीकहहरिसोइहरिकैरे॥ तिनकेना
तिमनिकाउखहेरे। गोपीमनतिभइह
रिमेति॥ रोमरोमरमिरेहअनेति। समि
गरवीअउनेमतिमाहि। हममानिर
गाकोइनाहि। परिउराषोनमउरउउ
रानि॥ हमरैवसिहआभगवानि॥ नवि
हरिहरपमंनाधमानि। गरवपहारी
नाथनाताति। समिगोपीअतिविहव
लभइ॥ विछुरेमीतिदीनहोगई॥ ला
गीकरतिमहाबिललापि। हाहेकम
लगावेनापि॥ हाहेकंतमनोहरिनामि
प्रगनपरेहमरेकामि॥ हाहेमीतनहमा
रेप्रानि। कहागयेपीतमभगवानि॥ नि
परिदीनअतिवउरीभइ॥ हरिकोषोजा
तिआगैमाइ॥ पछिहिपीपलिकोमिलि
वाति॥ देषेकहहृनेमपानाति॥ अरेअं

द.स.
प.
१०४

104

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वृरेवटिरेनालि॥ देषेकह्रेंजसोधालालि
ष्ठरेष्ठोवरेवटिरेनालि॥ देषेकह्रेंजसो
धालालि॥ ष्ठरीवेलरीललनाप्तवासि॥।
जाहेंजूहीष्ठरेपालालि॥ रेष्ठनारिरेलिं
मगुजनी॥ गुरुपपानिसिउहोमरघुरि॥
रेकपिघरेविलष्ठसोकि॥ हमनोसक
हिलप्रेमहिरोकि॥ हमिसभिनमैला
गहिपाई॥ मीनहमारादेऊवनाई॥री
धुरनीनेंष्ठनिसरजानि॥ जापरिविचा
हिप्ररषप्ररानि॥ जविप्रावनिप्रमिरे
ऊवद्घाईया॥ समिपगिनमैरैसीसिल।
गाईया॥ सुकारिरूपमपेहरिराई॥नवि
नकेंछिरहीलपराई॥ हमिसमिनेरे।
लागहिपाई॥ मीनहमारादेऊवनाई॥न
लसीकेमफ्ख़हिकारिपिष्ठारु॥नकि
पाकुरिकलरिषालि॥ नमरानन्हेव।
निजिहूहउरि॥ हेतिप्रवसिनहाथ्र।
नकउरि॥ देषह्रसघीफुलवनिरहिगे
समनोहरिकादरसनलहिगे॥ देषज्र
हरनीफूलेनेनि॥ देखेईनज्रहमारेचैनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरिमाकालाकीग्रइवासि॥ग्वपीकै
मनिवढ्हिगेउलासि॥येकसषीबोली
परधानि॥सनोसषीरउकरोवषानि
महिमरीधमालाभगवानि॥जिनह
रिहरेहमारेप्रानि॥हेइकसषीमीत
कैसंगि॥अतिसउद्वतिनाकेअंगि
कुचकुंकमनाकेरसिभरे॥वैजनीमा
लासिउपरे॥निकरिहोहिगेप्रभूदई
आलि॥सषीसमेतिजसोदालालि॥
षोजतिषोजतिआगेगइ॥हरिविउ
गकरिआतरभइ॥चरनिचिह्ननिदे
षेवनिमाहि॥ऐसेपगिविनकेअवना
हि॥अंकसवजरधुजाजवपाहि॥क
मलपाहिमहिऐसेमिनसयाहि॥निक
रिहेहिगेश्रीविजनाथि॥राधाकेपगि
देषेसाथि॥गावेकेसवकेगुनिनामि
आगेचलीषोजतिस्यामि॥आगेदेषे
हरिकेपाइ॥येकसषीनेकहिउसुना
नाइं॥नहिवरिकुसमरहेषेरासिभरे॥
पलिराधकामनिमहिकेरे॥राधाप्री

र॰ग॰
पं॰
१५

105

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

को दीपै भनाई ॥ लरहो रशीपरिचताई
रषितफलिसषीकैसीसि ॥ ताकैबसि
रूपैजगदीसि । सोऊनतिफिरहिनपावहि
हरी ॥ हरिमनतिहदेमहियरी ॥ सांगरा।
धाकौआतुमान ॥ हमैरैबसिहूआभगवा
न राधाहरिकोबचनसुनाई ॥ सुनऊमौ
नमकिचलिआनजाई ॥ हरिकहिआ बा
ई कांधे चक्रो ॥ हमसिउमिलिअतिकउ
नकिकरो ॥ यहिकहिहूपअंतरिध्यान ॥
गएव्रह्मादिपुरषपुरानि ॥ राधाकौब
नेबिललापि ॥ हाहकैतिलगायेतापि ॥
जैसेकुंजनपावैऊगरि ॥ रहैसप्रकासिउरकै
रिपुकारि । राधाजीकोतिउत्तरवभईया
वनिमहिछाडिमनोहरिगईया ॥ सभैस
षीआइतिरषपानि ॥ राधाजीपहिकरीव।
षानि ॥ कहसापप्रीनमभगवानी ॥ तिह
हरिहरेहमारेप्राति ॥ राधासाधुवचन।
कहीदीऱा ॥ गरवमुकैचोरभीनरिको।
षा । सभैसषीनवउठीपुकारि ॥ वङपुर
सोतनमनाखपरहारि ॥ गरबूहमारैमतिह
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भईया॥ याते छाडिकपानिधि गईआ॥ षोस
निषो निति आगे गइ॥ हरि विजोगकरि आ
नहभइ॥ अति गहवरवन देषितन हा॥
कसचे दकैलागेन जहा॥ फिरी सभैनि
सवनकोनिआनि॥ हाहेकेन हमारे भागि
विहवल भये हमारे चीनि॥ छाडिगये मन
मोहन भीन॥ जिहवाहरिने ष्वो भगवान॥
ध्यैयेहहरि भेनरिध्यान॥ निषी स उरि मि
लिआइसभै॥ किरि विधि मी नमनो हरी
लभै॥ ईहलीलाकोई सनै सनाई॥ प्रमिम
गन्हिमाधवकी पाई॥ जनसघदाइका
गरवप्रहारि॥ कलसर...पगिपीरवलिहारि

साषी॥ जोजोलीलाहरिकरी लागी कानिव
नाई॥ कसरूपसमहरी भइ तु नीषा भाउ मिराई॥

द॰ग॰
म॰
१०९

106

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चौपाई॥ आवहु सषी वनावहु वाति॥ जो जो
करी जसोधा नाति॥ कोउ चलै मोहन सौं वा
लि॥ कोउ वजावै वेन रसालि॥ गोपी पे क
व कोसी भइ॥ नंद महरि कै भीन रिगइ॥ पे
कि भइ जसुधा हरि माई॥ पेकि भइ प्रम के
सवराई॥ गोद लिली वे हरि वकी उठाई॥ नेन
नंद हरि मषु मसकाई॥ जव प्रभु सुनि की ले
मषि पानि॥ निकसे तन वेव की के प्रानि॥ पे
कि कलइ कगाउ भइ॥ चरनि लागी उलरी।
ह्रोई ह्रोपइ॥ त्रिणावरत होरइ कनारि॥ लेइ
रिको उठि चउी गगनारि॥ मारि उत्रिणावरत
भगवानि॥ ई कि वज जन हूइ हैरानि॥ पे कि
स्याम जि उत्तर निघलै॥ गोकल की रजि मे
नीरलै॥ मन हुसु घरवाज हि पाई॥ पाछै महरि
देष हि हरि राई॥ पे कसषी भइ के प्रावराई॥ पे
कि भइ जसुधा हरि माई॥ पेक सषी ऊषलि।
सी भइ॥ ह्री कठि गो ठि जसोधा पइ॥ ऊषल।
को ले चले प्रकामि॥ जसुधा नंद संदरा स्याम
दोई भइ वह दोह मिवउ॥ गोकल मरि वहु
दिन के गउ॥ नोरेह षिकी प्याकरि जोरि॥ ई कि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

व्रजजनहोइकरतेमारि॥कौउववक्रासरको
वकहोइ॥हरिजउटेनविहरहिमोरउइ॥
कालीनथीकरेइकउरूपि॥पेकिरूपेकेश
वपरमअनूप॥कहोनागच्छाउरूयहिवउ
रि॥ऐसेकहनिजमेथाकउरि॥कोउलेनि
केशवकोनाउ॥अगिनिकोइहोइसमवि
लैलावेदाउ॥कोइलेनिकेशवकोनाउ॥
अगनिकसमविलइमिलाई॥व्रजजन
रहेचरनिलपराइ॥कोइहोइहरिगिरिधा
धरे॥व्रजलोकनिकीपीराहरे॥जोजोली
लाकेशवकरी॥तिसीप्रेममहिगोपीप
गावहिलीलापरमअनूप॥समभहीभइका
सकारूप॥दीनहोइलागीगुनिगानि॥हा
भहीव्रजनाथहमारेप्रानि॥जविकेप्रग
टेनंदकुमार॥सवउधमोचनप्रभुमुरारि
कमलनैननकेशवनरिहरी॥नरैनेविन
कीआपदाहरी॥बोलीसषीनमावेप्रेम॥
नमरेपगिमिउहमारेनोम॥हेकोमलस्व
दाइकसवे॥महाप्रभुकिनविलंवलै॥
लोकिकरतिनफकोनंदनंदन॥नेविम

रु.शा.
म.
१००

107

वनिकोप्रानवंद॥ तुमकोग्रसाविनतीक
री॥ तुमरीमहिउखकरीभरी॥ ब्रह्माकोवि
नतीचरिधरी॥ जगमहिप्रगटेह्वैनरिहरी
प्रगटेसभकेसुखनिमिति॥ किउदुखदीउ
हमारिहरी॥ प्रगटेसभकेसुखनिमिति॥
किउदुखदेवहमारेचिंति॥ हेविस्वनाथ।
अनाथमहाई॥ कमलनैनहेकेशवराई
तुमरीकथासुनावैकोई॥ ऐसादानाथ।
वरनहोई॥ जविनमजानेथोवनिमाहि॥
नविहमकेपावअतिदुखपाहि॥ नविहम
आपासमहिमिलिकहै॥ दुखरूपरिउख
कैसोसहै॥ कमलनैनकेकोमलपाई॥ न
गनचरानिवनिभीतरिजाई॥ मनकोर।
केकरिपगिउठदेई॥ प्राणिहमारेसोकरि
लेई॥ कोकरिअप्रनेनैनसुहाई॥ देखिन।
मकहिनमारेपाई॥ हेकिसोरिभाइबलि।
राम॥ मूपेकउकिसामारत्रसामि॥ विचन
रूनेराखेवनलोकि॥ अविकिउदेवरूपेने
सोकि॥ कामअगनिदहमसहीनाजाई॥
हेकपालकरिकृपावुजाई॥ हेकपटीहेप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रमसजानी॥कह्यागपेहरिहमरेप्रानि॥१॥हेक
ठौरहेपाघरचीनि॥वेमिदरसटेउमोहि।
नमीनि॥हेयनेनहेकमलाकेनि॥२॥दीना
वंधपूरनभगवेनि॥सनपनित्रहिसमि
श्राउडारि॥येसेहमरेनमसिउपिश्रारि॥
श्रहेअनाथकोकिउनविगयो॥अनिहि।
श्रालनेनिरदैभयो॥रैनिसमैषनिभीना।
रिहै॥मनतमरेपनिकोकनिपूरे॥रोउस
मैपुकारिउकाये॥हाहेकंनमकुंदमुरारि
मूरछभयेसमैब्रजवालि॥दीनवंधनव
भयेकपालि॥प्रगटेभयेमोहनिलषमै
नि॥मेरहासिमषिपंकजनेनि॥पीनव
सनवेजेतिमालि॥मोरमुकटसिरिपा
मरमालि॥जवहीप्रगटेस्रीभगवानि॥
गोपेकैननिपायेप्रानि॥उठीसभैगोपी
तिहकालि॥देषेप्रगटिजसोधालालि॥
कमलप्रगासिनिरषनचेउ॥नैलमिले
मिउदीपकुजलै॥येधकारमेंहरिकोहै
जवहीसूरजकेरैप्रकास॥नैतरावि को
हीहैविनास॥मिटरिपापसिमरेभगवानि

द.पा.
म.
१.८

108

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

करै सो हि प्रापति भगवान ॥ रह्यौ केठि को
पाल पराई । किन ह्न गहे केशव के पाइ
किन ह्न राषी दिष्ट लगाई ॥ किन ह्नै हि ।
ह्रदै लपेस माई ॥ कोऊ सषी चुमै हरि हा
थि ॥ कऊ कैहै वलिहारी नाथि ॥ को हरि
हाथि ह्रदै मैं हि धरै ॥ ननि मनि की पर
सभहौ ॥ हरि के मषि मित को मंडला
ई । कोउ सवहे हाथि मेंटरि काई ॥ मन न लाम
परि पंकज फूलि । तिन कों लि आपे जन ।
मनाफूलि ॥ अनि कों मल जमनाके ति
आई ओन ह्रा जग ति कोषनि ॥ भोद्ध नि ।
सषी विह्वावनि करै ॥ तिन परि वैसे ह
रि सि भो ॥ सकल सषी वैठी चहुँ ओरि
मधि विराजै श्री भगवानि ॥ वहु निरषति
हरि चंद समानि ॥ जो को ध्यान मह्रा मनि
धरै ॥ रिदै कमल का आसन करै ॥ रिदै क
मल महि लाल लअव हि ॥ अनि अपार
मणुजोगी पावहि ॥ प ति प्रसारि दिम वमा
गति नै ॥ सभै होइ फुनि जन मिन मरै ॥
वन री परि वैठे चतनि स्यामि ॥ सभि विधि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सवकेउरहिकामि ॥ बोलीसषीसनेोगो
पालि ॥ कहहुगपेषेहेनेटलालि ॥ जव।
तुमजानेगाईचरानि ॥ हमकउपलभरि
कलपसमानि ॥ सोफसमेव्रजआवहु
स्वामि ॥ तवहरेषेहमरेकामि ॥ देषहि
तुमरामुषिभगवानि ॥ पलकैजानहि।
ब्रजरसमानि ॥ काहेब्रह्मापलकैकरी
महामूढमतिहूहैऐपरी ॥ ऐसीप्रीतिन।
मारैसंगि ॥ दिनसिरैनिछिनचरीअंगि ॥
वनिमहिहमकोकिउनिरापो ॥ अतिक
रोगकंहिकारिभयो ॥ हमचतुरविधिके
उरपुतनाहि ॥ तेकऊककउनतिनाकेवा।
हि ॥ येकपुरषअतिकीआकरै ॥ भला।
बुराकछूहदैनधरै ॥ येकपुरषऐसेजग
माहि ॥ कीआनेकृपकानेनाहि ॥ तुमहोक
वनकरैहरिराई ॥ सुउनीगतिकरिके।
पासनाई ॥ बोलेतवैकमलभगवानि ॥ वा।
तिउरषकाकरोवषानि ॥ येकिपरमपर
करनेप्रीति ॥ पतयरककीसीतिनकीरीति
तिउआपसमहिबेलपुजागहि ॥ तनपु

द.सा.
म.
१०३

109

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जाईदेनेसद्गुणावहि ॥ तैसेमीनमूरखसा
र ज्ञानहीनमतिहीनविकारि ॥ अनका
नसीउ करतसनेहि ॥ सोहैसारिदसिवै
जगमेहि ॥ शत्रुमित्रतेरहैसकामि ॥ सो
जोगेसुरश्यानमराम ॥ चउथाप्रीतिपक्षु
तैनाहि ॥ अतिकठोरबज्रहिरदेमाहि ॥
सोहैउ छजिवैजगमाथ ॥ सेवाकीपेल।
गापैताशु ॥ तविगोपीआपसिमहिवो।
ली ॥ हरिकोलागीकरनिठठोली ॥ वानिउ
वारहिआपसमाहि ॥ यहिचउथाहैसम
नाहि ॥ बोलिउठेतविसीभगवानि ॥ को
उमसहिदनहोहमसमानि ॥ हउकनमि
करणाभंडारि ॥ नक्रनलावहुमफैवि
कारि ॥ अंतरिध्यानतमहुतेभाईया ॥ ते
रेयाकहूहरिनगाईया ॥ जोजनमसिमि
उलावैप्रीति ॥ वेगिनमिलोसियानीरीति
दिनदिनताकीप्रीतिवधाई ॥ संतउवा
रनमेरेताउ ॥ कष्टसाधिजोधनिकोपा
ई ॥ सोपतिसमीप्रीतिलगाई ॥ जोधनपा
वैमारगिपरा ॥ चोराहेतदावसउकरा ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमसिउनईस्याबादाईस्याप्रेमसु॥ जनसब
दाईकनमरानेमु॥ समेसनोयावातिनम
री॥ नमसकिप्रानऊनेसनिपिप्यारी येति
सषीनमवडीउदारि॥ हमरैहेतिनतिउसे
सारि॥ मेरीवेरलोककीकारि॥ नमसीको
उनविभवनिनारि॥ निस्यागेभरनातिस्या
सति॥ नमनेभलेसभैस्रवसति॥ वऊनबा
तिकरिकहावषाना॥ हउप्रभनमरैहा
थिविकाना॥ जोनमकहेसोइहमकरै
नमरीआमिआसिसिपरिधरै॥ निपटिनो
धुतिनकाहरिकाउे॥ सापीजनकाल
मिडधुहरिगे॥ यहिलीलाकोइसनेसनाई
प्रेमभगतिमाधवकीपाई॥ कसक्रपानि
धिहरिकरनाति॥ कसदासपगिपीवलि
हारि॥ २२॥ साषी॥ येलननलागेरामहरिसो
हेकोरकिकामि॥ ईकिईकिगोपीकस
मधिगोपीमधिचनियामि॥ १॥ चौपाई॥ व
नलागेरामसिप्रनेति॥ श्रनगुरुध्रम
भगवंति॥ बरनोनिजहरिजीकोध्यान॥
नितुकहिप्यामकेदेवमहान॥ नीलक

ह.गा.
म.
२२.

110

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मलकोसुंदरदेहि॥ सभिननजासिउ
करतिसनेहि॥ मोरमुकरसिरिपरम।
रसालि॥ आलिनिउकरतिसनैगुंथ
रीआरेलि॥ सारदकमलदलसंदानै
नि॥ मंदहासिमुषिश्रंमिनवैनि॥ श्रव
नकुंडलिजगमगिकरै॥ नितरू।
षिनीरिमरोवरिनैरै॥ पीनवसनकुपरि
फहराई॥ चेदनिसिउचरचीसभिकाई
केंटिवनीवैजंतीमालि॥ पगिजाइपरम
रसालि॥ केंटिकादनीआपरमसहाई
नरवरिभेषजगानिकोराई॥ कमलफू
लसेकोमलचरनि॥ भिववविरंचिसभि
जाकीसरनि॥ जषासककिकहीउरहरि
ध्यान॥ गोपीनाइकगरुगुरान॥ गो
पीजनकोकह्योध्यान॥ जिनकीजीव
नश्रीभगवान॥ चंदवदनअरुपंक
जनैनि॥ नषिकुविसोहेकंदर्किमैनि
कानकुंडलिजगिमगिजंति॥ केंटि
वनीमकुताकीपोति॥ वैसरिनाकास
वीकैवनी॥ मीननिनकेत्रिभवनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पनी॥ केकनिभ्र आकारनि छिनकाति॥ गो
मेगोपिनि मिरहे भ्रगाति॥ ग्रंगीआ ग्रंगि सं
गग्रनूप॥ नषसिष लौग्रति सं दरीन्नूप॥
रूपरि ओढैनील रकूल॥ मषिजिउपं
कजिफूले फूल॥ ऊषजिउन उननिहोति
घनारि॥ करिचीनासी पामरमारि॥ सं र
गिजंषनि कमलमे वरनि॥ गोपीसमै
कलकी सरनि॥ नूपरि वाजहि चरनरु
माषि॥ समकै भीनरि श्रीव्रजनाषि॥ जे
निहरिकी सषी अनूप॥ नेनेही हरिपे
सरूप॥ येकसषी मधि पेकुचन स्या
सभी सषी अनके ररतिकामि॥ इउगो
पीसंगि वनेगोपालि॥ मरनकमणिकं
चनिकी मालि॥ मिरनकमणि प्रकागो
पाल॥ कंचनमणि श्यामसषी रमालि॥ नि
रतिकरनि लागेनेरनेहि॥ नषसिषपु
रनपरमानेहि॥ आपेदेवसमै तिहका
लि॥ देववंध सभि आनोनालि॥ सभा
नोभिलि कीनाजैकार॥ जेप्रषोतस
श्रीगमसपार॥ वासुदेव जेहरि भगवानि

द॰ श॰
प॰
१११

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कमलनाभ जै श्री नारान ॥ जै मधुसूदर।
नमो मुरारि ॥ महाराज जै जगति अधारि
कसवंदन जै जै गोपालि ॥ संतन महाइरी
मरईयाल ॥ जै लीला मै जै गोपालद
याल ॥ जै लीला मै जै चवन स्याम ॥ जै गो
पीजन प्रानि कामि ॥ ध्यान धरै मुनि तिन
ने पारै गो पिमिउ मिलि लाकरै ॥ ईछाचा
री जै भगवानि ॥ बालके चूपी ग्राषि उग
नि ॥ जै निननउ वन अलषम भेव ॥ व
लि वलि जाउ चरन पारे देव ॥ जसकहि
वाले वजेव्रवजानि ॥ किंनर असुरी
धुरवम्रजानि ॥ वीन रवाव कोकिमिर
दंगि ॥ नराछे नाढो लि उपंगि ॥ मधुरन
गारे अरुसरनाई ॥ सारंगी ग्रान मोलक
रनाई ॥ अवरसाज सभ वजे अपारि ॥ ना
चे हितमिउ नेद कुमारि ॥ गोपी केकं
कन अरुहारि ॥ वाजे नूपर परमरसा।
लि ॥ वरन वजे चपे कडे वाजे ॥ मानो को
टक किंनरगाजे ॥ कवन वजे ववजे ति
हिकालि ॥ करीन जावै किसी मालि ॥ स
भवने चपे कडे वाजे ॥ मानो कोटकिच

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नहरलजै॥ तीनभवनघरेनिहनाति
कउनकिकै श्रीभगवानि॥ नाचैथेइथे
इनाति॥ नाचैसभहीपेकमानि॥ हाथि
मोरिपगिधरनीचचक। मानोकरि।
हेतीदोहक॥ श्रीगोपीवदेवनेरि॥
हरिगपेश्यंगीश्राकेवेरि॥ समभूषन
छोलेहोइंगवे॥ हरिसिउपरमकनर
लिभवे॥ सिरनेगिरेपुहपकोपोन॥ व
रषाहनिकोवेंदउवंति॥ मानेवलि
गुंजहिचरझेरि। तिउगतिश्रावहिवेध
ननाति॥ ऊवेनाकरतिपएकग्रलापि
नाकउकलसनाहतिश्रापि॥ श्रवस।
धीऊवासनलेति॥ भलेसामकहनेक
रीहेन॥ मेतवेंदनघुऊपरिढरी॥ मा।
नोउसीकमलपरिपरी॥ परमभगत
सभगोपीभइ॥ ननकोसभसमारिउडि
गइ॥ रहेचकतिग्रहवेंदसमेति॥ नाव
हिनाघजुगतिकेमेन॥ तिनकीगति
वलेनेनेगइ॥ किपाजानेकेतीनिसभ
इ॥ नाघनितिकीराहेमइ॥ पुनिवि
गननतिनघनिनइ॥ निहवलमवेम

द॰श॰
म॰
११२

112

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुरारिमनकेहि ॥ सषीसमेतनिजसुधानंद ॥
कोईभजनहरिरूपरिधरै ॥ कोईभजनहरि
रूपरिधरै ॥ कोईसुधतिनिपावनकरै ॥ ह
रिकपोलसिउधरहिकपोल ॥ प्रेमसिंधु
महिकारहिकलोलि ॥ देवबधूअतिविर
मलभई ॥ पतिसंगितेनेसुधिभलिगई ॥
देवबधूहृपकोवरषाकरी ॥ जैलीलामेंश्री
नरिहरी ॥ जमनाजलिमहिपरेनागनि ॥
सषीसमेतनिसिरीभगवानि ॥ बेमिरजार
उरगाम्रकुंरर ॥ जलमहिलागेकानिग्रनं
द ॥ लागीनवजलक्रराहोनि ॥ नमोविशे
भरनाथम्रजोनि ॥ छूटेदेहिसषीकोपि।
याक ॥ प्रतिहीरीकैनंदकुमारि ॥ कहिकं
हिहसैफराहेउआरि ॥ हरिपरितनिउरैवा
रि ॥ हरिपरितनिउरैवारि ॥ होहिरिगोविं
दाहेहिरे ॥ बधगोपीप्रारेमनिमोहिरे ॥
मनेछुहकोसवामनछुरु ॥ नटवरिभेम
वामैनछुरु ॥ स्यामसलोनिप्रामैनछुरु ॥
मनिकेरउनिप्रामैनछुरु ॥ नैंदकेनंदना
मैनछुरु ॥ जगनकेवंधनामैनछुरु ॥ का

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मनकेमधपमामैनूकहूं ॥ कतिगिरधारी
स्यामैनकहूं ॥ गरभप्रहारीस्यामैनकहूं ॥
हमतहिकलगोपीकैमाषि ॥ मीनरूपनाथ
हकेनाषि ॥ कवरूस्यावहिजमनानीरि ॥
कवहूंपैठहिजमनानीरि ॥ त्रितुगजिष
लहिहयनीमाषि ॥ तिउगोपीसंगिषेलहि
नाषि ॥ वहूनभांतितिनकउमहूदीया ॥ षे
लतिवृसलमउरातिभईया ॥ गोपीकोवोल
हिभगवान ॥ वालकरूपीउरषउतानि ॥ व
वतिउदारेहरिरसिभरे ॥ तमहमसितउति
तिकउनकिकरे ॥ तनोमषीवभिधाम
सिधाऊं ॥ हमहैपगिलेहैरेवसावहूं ॥ सभ
नेमिलिउउनाकरी ॥ हरिमरतिहहेले
षरी ॥ लेविहिस्यामभिगोकलिगाई ॥ कल
रूपसभिगोपीभई ॥ किसनसिधारेस्रुते
धामि ॥ हानकरिगोपीकेकामि ॥ ईहली
लाकोइमतैसनाई ॥ प्रेमभगतिनिमपवली
पाई ॥ देवहूंमिलिकीनापरणाम ॥ हैटरि
वमिगोपीस्याम ॥ गुरप्रसादीसितिपायेती
हरिकोलीलानतिमनिहरी ॥ अपनेअपने

दश.
म.
११३

113

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लोकिसिधारे॥ सकलदेवकेसवनिस।
नारे॥ कमलावलभकेसवराई॥ कुलस
मपतिपतिवुलिजाई॥ २२ साषी॥ शिव
देवीकउपूजनिचलेसभैव्रजवासीलो
कि॥ पिनाउथारिउसांपनेनाथनिवारे
सेकि॥ २॥ चौपाई॥ शिवदेवीकादिनग्रा
ईया॥ ब्रजकेलोकनकेमनिभाईया॥
सवब्रजकेजनिपूजनिआईया॥ शेव
देवीमहजिमनाईया॥ सिवकीविधा
वतिपूजाकरी॥ गोपकूकीमतिप्रेमहि
भरी॥ विपहोकोसिमदांनभूचाई॥ ह
रषसहतिद्विजसकलअचाई॥ बीवि
कलपूरनपारमेश्वर॥ कउनकिदेषेप्र
भमरवेसुर॥ आईउनहाभईआनकस
पु॥ वरनउरनेग्रिसनाजाई॥ कालरूप
अहिवुरीवलाई॥ अहिकोलागेकरनि
प्रहारि॥ सापुनकुाउरहेपुकारि॥ क
सकलवोलेव्रजलोकि॥ मरेचनेह
मारेसोकि॥ शोपिग्रिसेव्रजकोपतिने
रि॥ कपाकरहोगोऊलिचंधि॥ आपे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कसलसांपकेपासि ॥ सुनसुंनजनजनउकी
आसि ॥ अहिकउलाईउपंकसिवावि
नार्थमैपतिसभिउ:खहानि ॥ चानक
मलजविकसलगाईया ॥ नविनिन
सांपसवरतनपाया ॥ तिनिजेसापको
देहकवउ ॥ भईउविहिआधरपरमय
नप ॥ जोतिवंनअरुभलेशरीरि ॥ सभ
लाकेनलउजलचीरि ॥ नाकोबोले
श्रीभगवानि ॥ कहोभयानेकवनस
जानि ॥ हाथिजोरितिनविननीकरी ॥
सभशेनेसनीपेनरिहरी ॥ विद्या
धरहेदरसननामि ॥ विषेभोगकरितस
दासुकामि ॥ अंगिरिषीसवरकैषमुति
वउमहामुनिअतिसुवसति ॥ तिनकउ
मुकिउपहांसीकरी ॥ ईक्रउरमतिहिर
देमाहिधरी ॥ तिनक्रोधुकरीहीउस
प ॥ रेपापीतेंहोईजेसाप ॥ तिसहिदिनकें
ईउअजगरभईया ॥ प्रभकैपगिलागि
समजुलगया ॥ तिनकाश्रापउकपाय
तिभइ ॥ प्रभपरसादिविदिआधरगई ॥

द.रा.
म.
११४

११४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वासुदेव है पुरष पुराति ॥ कउन कीरत किया
करत उवषाति ॥ अहि मानै कुन वरनी जा
ई ॥ दीन होइ लागो प्रभ पाई ॥ जग महिम
ईयाहू मा एनाम ॥ विदिआधर पर सेव
नि स्याम ॥ जो पगि सकरि सदा धियाई ॥
से सम सहे मूषे कीरति गाई ॥ नीरषि मे पाणि
परमा पुनीति ॥ सनक सनंदन सेष चीति
वेस्ला मजन सचनमे षिगावै ॥ परिपरि प्र
भ का पारू न पावै ॥ सो पगि प्रगटी श्राम म
हि पाये ॥ अउ नाम आगनक हि याजाई ॥ वि
दिआधर हू हि कीरति गाई ॥ हरि मूरति म
नि महि समाई ॥ प्रभ कउ तीन पराक्रमा क
री ॥ नमो नाथ निरमल नरहरी ॥ करि डेउ
उति चलिउ निज धामि ॥ प्रभ पुरषोतम
पूरन कामि ॥ माई श्यामो इसभै सिरिगई पा
परमभगति हरिजी का भई पा ॥ व्रजजन
सभ विसमै होइ रहे ॥ ईन जस धाम ति श्र
वन कहे ॥ हरि गुन गावति फिरि चिति आपे
जस धानैं रुन हृदै समाये ॥ विदिआधर
की मुकति वषानी ॥ जपी श्रहि शेसेसा ग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पानी ॥ इऊलीलाकोईसनैमनाई ॥ प्रेम
भगतिमाधवकीपाई ॥ बासदेवजैविप
तिविदारि ॥ कमलदासपगिपरिबलिहारी
रु ॥ साषी ॥ षेलनगरहिरामसुनेनप्रभही
भगवानप्रकामि ॥ रासिसमैगोपीसहि
नसंगिभईप्रावलिरामि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ षेल
हिरामसप्रभतिहकामि ॥ संगहिषेलहीश्री
बलिरामि ॥ रासिसमैगोपीकैसाथि ॥ षे
लहिकोरिभवनकोनाथि ॥ सबगोपी
कैसंदरीरूप ॥ सभिमिलिनाचहिश्रहिता
नि ॥ कउनिकोबराहिविगसहिभगवानि
हरिसंदरेदहिप्रलापैराम ॥ कबहूंगा
सिरीचननस्याम ॥ आपसिवीविसराइहि
गीन ॥ दोउमहाप्रभभागीमीन ॥ शंखब
काईकजधप्रगानि ॥ गावहिसनैगगम
गवानि ॥ आलेनहोतानिलेगागि ॥ महाप्र
रकेनानभागि ॥ तिनैगोपीकादर्शनपा
ईया ॥ दोषीबडाकामभामाईया ॥ तिन
सबगोपीलईउठाई ॥ हरिपिथारीकउ
लेहीगाई ॥ सभिगोपीमिलिकरेयुकारी

८
श्री
रस
११५

115

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रामकृष्ण हे प्रभु उदारि ॥ रामकृष्ण नवक
रीसमालि ॥ प्रभु रूषमो चवनदीनदईया
लि ॥ दीनो लीने रूषी उफारि ॥ वज्रप्रभजी
वीने हृषिमारि ॥ शंखचक्रके पाञ्जेपपे ॥
ग्राहि उरान निनप्रति नपे ॥ शंखच
क्रेदेषे भगवानि ॥ महाप्रभु उकेकेपे प्रानि
कालमिर नकरिज्ञनेवीरि ॥ संकरषण
प्रकाश मशारीरि ॥ कृष्ण उमषी लेभागाप्रा
नि ॥ पाञ्जैपरेकम भगवान ॥ गहिउनाई
हरिलगीनवारि ॥ सिरिपारिकीनोमवम
हारि ॥ उन्नरिसी सपरती गिरिपईया ॥ म
क्षीपरमवउभागी भईया ॥ मणिघीभा
केसीमरमाल ॥ लइ उनारिकृष्ण गोपालि
शंकरषण कउदइश्रेनेति ॥ वनसलव
कुलप्रभु भगवंति ॥ सिरिपरिराबाहेवा
लिराम ॥ उलेवणेगीवोलेस्याम ॥ मणि
शंकरषण सिरिपरिधरी ॥ ईहलीलाके
हरिवृनमहिकरी ॥ हरषभये श्रुतिमरद
नकरी ॥ सो प्रभजपशुहीछिनपचलरी
ईहलीलाकोईसनेसताई ॥ प्रेमभगतिमा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धवकीपाई ॥ शंखचक्रनारगाकरणका
नारि ॥ कमलदामपगिपरिवलिहारि ॥ २४
साषी ॥ दीनगीनप्रभकाकहेतिपरिप्री
तिचितलाई ॥ करणामेकेशवकुलल
षतिधिकेसवराई ॥ चौपाई ॥ दीपगीनप्रभ
जीकागाहे ॥ प्रभपरपरमगीदेमहिगहे
गोपीहरिसिउषेलहितानि ॥ दिनिहोगा
ईचरावनिजाति ॥ सभगोपीईकठीहोई
प्रेममगनिहोईहरिगुनकहै ॥ दिनकार
हरिकीरनिगाई ॥ तिनकीमहिमाकही
नजाई ॥ मनोसषीहरिजीकोध्यान ॥ जि
नहरिहेरेहमारेमान ॥ वामश्रेमपरिवाम
कपोलि ॥ मारदकमलदललोचनलोलि
अधरिपरिउहीवेनवमालि ॥ कडिउद
वेछिदड्कीपालि ॥ अधरिविंवसेपरम
अनूप ॥ मेदहासमषिपरमसरूप ॥ मुख
मआलाकानीपरिपरै ॥ ईढधननषकीछ
विकोहरे ॥ केढिवनीवैजंनीमालि ॥ मनो
रनकीपरमरमालि ॥ वामीतिलकु वैजं
नीमालि ॥ वामीतिलकुविराजतिमालि

पु॰ भा॰
म॰ म॰
११४

118

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

घतिसंदरिंदुचरारेवालि ॥ मोरमकउ
रोमनिघतिसीसि ॥ नैनमिमोहरवविस
केउसि ॥ सनोसधीहरिदैनवजाई ॥ सभ।
कोननिमनिलेनिउराई ॥ सनिउनिवलै
नजमनानीरि ॥ पसपंधीसमिमपेरवी
रि ॥ विरहकूकतेमपुधाराखवै ॥ वीननाउ
सनिहिरदाटवै ॥ मोहेमोरचकोरविहं
ग ॥ समनकूकेननिजरेघनंग ॥ मिरगा
रकेदांनोविणरहिजे ॥ रिदावेणसनिउ
निसिउगहिजे ॥ वसाघाईउशेकरिमा
घि ॥ वेकनवजावनिधिभवनिनाघि ॥
सरपनिकूघाईउनिहिकालि ॥ ववमहि
परमेस्रीगोपाल ॥ स्राघोनारइनमरेमा।
घि ॥ वसनुमनोहरिलीनेहाघि ॥ किंना
घमरूघापेरीधावि ॥ सापनिनीलेघापेप
रवि ॥ समनोहरिकाटरासनिकरिउ ॥ सा
ननिरागपुनिननिमनिहरिउ ॥ पोहनि
रागपुनिवनावहिनपे ॥ सननिटेववीस
मैहोईगपे ॥ कवनरागमावहिहरिराई ॥
देवउसहीनकोघामाई ॥ सनिमहिविन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैसे भ्रम मह्रान ॥ हूं मनाउ अनूप रामरूतान ॥ पा
ति निकसे राग हूनी सि ॥ कवन रामनाव।
हिजगहति रहें ही सि ॥ सहिन की नौर हिये
विचारि ॥ गहें भूलि पिव दे हि समालि ॥ व
लाह बि समै होई गहें या ॥ सनु तिरागउत
रीसा भई आ ॥ नारदि नौमारमपे हैं गति ॥ बी
नसमे ति बिसारे प्राति ॥ बिसमे किनाय
हांधरवि ॥ चकति भये धुनि सति मति
सरब ॥ सनन राग बिसमे होगये ॥ मोहन।
राग भलापे नपे ॥ सम मनजन पराग बिस
मोहगये ॥ मोहन है कउनु ॥ चकति भये
सति बउरह भजैन ॥ मैलजू काहिर
माईगहैं ॥ तिनऊ नैसी नल जल बहै ॥ देव
बधमन हरी गुणकान ॥ उनरी सी होहि
दैकिसी के पाति ॥ चलने ठाढे ठाढे बलै
सभन हके हिहरे निरदलै ॥ याउ निकं।
रिरकि हसलौ ॥ मोहनि तिह मती पीतलकी
तिनमहि जमसधा निकसी याई ॥ सभनौके
मिउ बचन मनाई ॥ प्रेम ममगति पी हरिकौ।
माहि ॥ पको तिनमत सभमले नाहि ॥ हमरी

र.कृ.श्री.
म.स.
११२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीसनद्भमरीवाति ॥ करममनोकरतेन्तमसे।
नाति ॥ बेनवजावतिनमरेष्ठति ॥ सवराव
रमोहेश्रवध्रुति ॥ जनसधावलीमंदमसका
है ॥ सतिकोप्रमनस्रेगिससमाई ॥ जनसधा।
मतिमहिकीउवीचारु ॥ इनकाकेशावजी
सिउपियारु ॥ सतिकोकहेनकाइकोजै
इहिसभुटेषिसफलहोइजीजै ॥ गोपी
वङ्गरिसमालीस्यामि ॥ विनुहरिभजनन
इआकाम ॥ देषइलालचरावनिगाई ॥
मरामङ्गरिधुनिबानवजाई ॥ तिनतिन
राविहिगाऊस्यापाई ॥ तिनतिनराषहिके
पावनाई ॥ गोपगिस्तिउकछुउपावेमही ॥
केशवकेमनिजातिनसही ॥ इहिहमरा।
मेनमंडलगाउ ॥ सनउधारनमेरेनाउ।
मप्रतेपगिस्तिउधाससमकरी ॥ होनमही।
कीधाराहरी ॥ पंचविहनपकेसवपाउं
नवयुजाग्रंकसपारिसहाई ॥ चरनक
मलमहिपंकजिवसै ॥ धरैध्यानदुःख।
दारिदनसै ॥ राऊअक्रूकोअववापैनारि ॥
आपीवरहोजनमनातीति ॥ राऊअक्रूपावै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अवधैगुआरि॥ बड़रिजमनाअवधहिराम
नरारि। समकेपाछैअवहिगोगोलि। नाथ
बिहैभहदैनरईआलि॥ जमधानेंदन।
अनेंनअकामि॥ अबहीपरतिहमरैकावि
वीनुबजावतिनंदकुमारि॥ हरनीघरीकुं
रैवहिउरि॥ ऐसेहमकूतिआगेधामि॥
हदेरहैवसिसैदरीस्यामि॥ हमसमाति
हरनीकूभइ॥ हरिपरसतिमाईयाकहि
इ॥ हरिपरसतिमाई॥ मोहतिआईगाईव
रई॥ संगिसघाकोपानिसहाई॥ ब्रजमहि
आपैकमलाकेसि॥ जसधानेंदनश्रीभ
गवंत॥ जगिकेवीजिनकिनकूजने॥ बन
सीदेहिसवकनेवने॥ पीनउपरनावन
वजाई॥ गतिकोचालमनेहरिराई॥ सुनी
अकामिवधानहिनामि॥ जेतुरघोनमसं
रसामि॥ मोरतितिसिउलपरावेकेसि॥ आदि
निरंजनबालकिमेसि॥ आयेगोकलि।
वीविगोपालि॥ सभिगोपीजनभइनिहालि
पाईसघीआईमनमहिघरी॥ हरिसुरतिहि
हदैमहिधरी॥ सभहीदेखहिहरिकीउरी

हं.ग.
म.
१११

118

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जैसे बिनु बिहि बिंद चकोर॥ नैन पंथ करते
मुषि पाति॥ तिउ बछुरे ननि पाव हि प्रा।
ति॥ केंठि मिली वे। हृदे समजा गि॥ कुमल प
छिमन उरारहि बारि॥ हरि हृसि तिन केम।
निहारि लेहि॥ लेही गये नक्रोरे दे हि॥ तिनकी
पीरा मभि मिलि टिगइ॥ कुल न्रुप समि मिगो पी
भइ॥ ग्रहिमहि हि आये हरि अरु रामि॥ जस
धा जी के पुरे कासि॥ गइ धाई सन मपि ह
रि भाई॥ मो हृति लीने के ठिलगाई॥ पुरन
सकल मनोरथ भये॥ भो जननि स्रप पे नाना
भांति॥ जस दा के मति उपजे शांति॥ राम
कमल अवि भोगि अचाये॥ कोमल सिर।
नाप रिपा छाये॥ जस धामल निलगी ह
रि पाई॥ मुष ते सदा कथा सुनाई॥ गो हे।
णी मल हि राम के चरनि॥ राम कमल विभव
ति दु:ख हरनि॥ सष सि उसो पे नाथ अने
ति॥ राम कमल पुरन भगवंति॥ बीणा गीत।
को की उवषानि॥ जपी अछि श्रेसी प्रो भग
वानि॥ तेती सपि आई सं पुरन भये॥ परे सले
सभ फान कटहे॥ ईक्र लीला को ईमने समनाई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रेमभगतिमाधवकीपाई॥ जसधानेंदन
नेंदकुमार॥ कलदामपगिपरिवलहरि॥२५
साषी॥ ब्रषभानसुप्रिजमहिम्रादिरवदेह
भपानि॥ केशवमारिविजहिउविभवनप
निभगवानि॥१॥ चौपाई॥ ब्रषभानसुव्रजमी
तरिग्राईया॥ महाभईग्रानकदपदिपाई
या॥ परवतिसोतनग्रतिभेरूप॥ वसनो
वतिधरेकुरूप॥ कानवउेगिरराजसमा
ति चनिग्राईग्रटकेपरवतिजाति॥ वात
हमाथिमहीकोमारे॥ वतिजिउगरासैगर
जिपकारे॥ जसनाजीकेदिविकनारे॥ सि
वेऊसिउभनमेंउउद्धारे॥ आरोगोवाम्रत
ग्रजाति॥ धरतिग्रहारीग्रतिवलिवानि
गरजिउचनजिउग्रतिहीवली॥ सना
तिसवथाऊग्राभजिचली॥ दहेनकिन
हेटेहिममाली॥ गरवपातिहोवेतिहिकं
लि॥ सववृजकेजनविहलभये॥ भागस
भेहरिमानीपपे॥ हरिकोवालेसमिव
जमंति॥ आहिग्राहिपरनिभगवंति॥ ग्रा
हिग्राहिहेनेंदकुमार॥ गिरवरधारीगरम

पृ॰ १२ म॰ २४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रहारि॥ आहि आहि केशव करुनारि॥ ब्र
जजन सभिन मरे परिवारि॥ काली।
मर्दन दीनामाथि॥ सभ नेति आरेस
भकै साथि। हम नो दास न मारे नाथि
बोले कस्स अने द हि साथि॥ भउनि
आगु निहचल बिन करो॥ हम रे पनि
लेहि हदे धरो॥ अमर गवा रको उठे
भारि॥ म निने विंता देउ बिसारि॥ हरि
के बचन सुनति ब्रज लोकि। मति नेम
कल बिसारे सोकि। कृष्ण दैन के सन
मुष आईया। ब्रषभान सुगोपालि इ
लाईया। रे रे सूरु अर्बेन अज्ञानि॥ गा
भ प्रहारी हम भगानि। कछु बलै है
ने मकै दिषाई॥ ईउ बोले प्रभ केशव
राई॥ प्रभ पीना वर करि सिउ कसिउ
भगनि है निहरि रसि मह्रि रसिउ॥ पग
री दा बिसवारे कसि॥ आदि तिरंजन।
बालकि भेस॥ दै नो ह्रा षि वजाई ना हि
प्रभ मकू पुसु दन मारद निकारि॥ क्रो
धसुना बैतिसे सुनेति॥ कउनकि करे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रभू भगवंतनि ॥ पेकेकमखापविलेम
जेधरी ॥ निरभैघरे प्रभू नरिहरी ॥ क्रो
धसाधि वृषभासरूम्र्याइया ॥ निक
रिआइ हरिदरशन नपाइया ॥ प्रद्धि
केरशिर उपरिधरी ॥ क्रोपद्धिमरि
केशवपरकरी ॥ प्रद्धिमाधिमनि
चप्रहारे ॥ गपेफूटचनदीनविचारे
हरिपहिआइ जो क्रोधहिभरिजो ॥
कछुककमजी कउन किकरिजो दे
नो सिंगलीपेचनिस्सामि ॥ लीलाम
नमनेनमकामि ॥ पाछेअरिउरूप
रिपरनि ॥ परिउमाइ ग्रठारहि बनि
तंननेनि कसिप्रसीनागइया ॥ बङ्
उमरमनिसावनिभइया ॥ फूनिम
नमधिआइ जो गोपालि ॥ दोनो सिंउ
गहेनंदलालि ॥ चरनिलगाइ ओंधी
वामाधि ॥ परनिपक्रोरिजो विभवनि
नाथि ॥ पेरिफेरिकाढेनवप्रानि ॥ सिं
उजोफारिलपेभगवानि ॥ एकसिंउकी
सिसिपरिदई ॥ निकसिजिङ्गमाधकी

२-शो-
म-
१२-

124

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

२ ॥ फारेनेअपछोरे पाई ॥ मुक्ति भयेउ परसे
हरि राई ॥ ब्रजऊपरि सिरिसद केभईया ॥
ईऊफलकेशावजी नेलईया ॥ मुक्तिभयो
हरिकेकरिलागि ॥ दंतभले केऊवेभागि
देवब्रह्मपकी बराधाकरी ॥ जैसेविनासी
आपदाहरी ॥ ब्रजजनलगेअसीसादेनि
जैनंदनंदनपंकजिनैन ॥ ब्रषभासर
कीमुक्ति वषानी ॥ जैसेनंतप्रभमस्नर
नी ॥ ईहलीलाकोईसनैसाई ॥ प्रेयमभगति
माधवकीपाई ॥ गारग्रहारीहीनदईपाल
कसदासवलिवलिनेदलालि ॥ ४८ ॥ स
षी ॥ नारदआईजेकेसिकैकहिजेसाचुम
मफाई ॥ वसुदेवेग्रिहिनंदकेबालकिय
रेछपाई ॥ १ ॥ चौपाई ॥ केसराईकैनारदआ
ईया ॥ सभब्रतंतकहिप्रगरिसनाईया ॥
नारदनाकउवातिउचारी ॥ सुननऊकेसि
कुलकेअधिकारी ॥ वसुदेवेकेदेनोपुत्र
ति ॥ जाकेहृदैधरातिमवधति ॥ क्याउपि
तानंदकेधामि ॥ कृष्णचंनअरुस्त्रीवलिरा
मि ॥ नेदनारिषीकेतिआजा ॥ सोअपने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

थिहिआ निवसाइ ॥ सोन किसिला साथि
पछाराइ ॥ पति कहुंडाई न मिजाई समार
न विनाहि ईहि वाति उचारी ॥ उपजिउ
क्रोप कैसि को भारी ॥ षै विषरगुलीना
थगि मथनाति ॥ त्रपुचितिओ वसुदेव म
होति ॥ न विनारहि ईहि वचनि सनाई
या ॥ कहा के समाई या भरमाईया ॥ ई
स वूढे का काडुप्रहारु ॥ नेद या मै है ।
कुल उदारु ॥ ककु वलहै नानि सै हि षाई
ईहि मर षिमति वै गिमिराई ॥ नारहि जी
वसुदेव कछु उ ईया ॥ कहि ब्रनेब गुरदै
वमिधाईया ॥ कैसी राजे केसत्रु लाईया
ताक उई हि कहि वचन सुनाईया ॥ मारि
थाउ जसु धा को नेहि ॥ नउ हम मै मनि
वदैथ नेहि ॥ वसुदेव दैव की वैद पावे
ऊति चारनकुं तै जीर मिलावे ॥ अउ नेले
व किनि करि वुलावे ॥ निनकउ ईहि क
हि वचन सुनावे ॥ हम छम कवो उ रप्रथा
न ॥ हेन कछु उन मसति वलि वानि ॥ मन
रूवाति धरि हमरी कांनि ॥ हमरे सेव कि

द॰ श्रा॰
म॰
१२१

121

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभैसन्मानि ॥ मलजयधरिहमरीकांनि ॥ हम
रेसवजयकीलीलाकरो ॥ रामकुसलकेसा
नमुषलरो ॥ जवआवहिवहूरोऊमहानि
वेगितिनकुंकेकाढेप्रानि ॥ अरेमहाबा
निआगेआउ ॥ कुवलीआपीन्हपीले
आउ ॥ पाकउबहूनीसिरविषिलाई ॥ अ
गनिरूपकरिगउभषाई ॥ रंगभूमकेए
षहउआरे ॥ जवआवहिवसुदेवकुमारि
तिनकोगजिपेतिनेपहुराई ॥ तिनहीका
लिविलंबुनलाई ॥ सिरिपरिवातिमहाव
तिमनी ॥ वहूतभलाहैहमरेधनी ॥ सेवकि
केसबुलावेअउरि ॥ रंगभूमिकासाजहू
ठउरि ॥ सभनेऊचाठउरबनावहू ॥ हमए
भासनडीलिनलावहू ॥ धनषिजगुहो
करोपुनीत ॥ सवपहिवानेराषहूचीति
मारोपसुपूजहमहादेव ॥ सफलीकरै
हमारिसेव ॥ महाधनषकीपूजाकरो ॥
तिहप्रमादिसकलेउषहरो ॥ सभिजनि
भीनरिकरहुपुकारि ॥ धनषजगुराजाके
उआरि ॥ फलिपाछेअंकुरबुलाईआ ॥ नि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परिहैनकरिनिकरिवैमाईया॥ खनगं।
हरहमारेवीर॥ वेउदानपतिरहीकेपीरि
कीजैवैउहमारेकाम॥ जावडुनंदमहरकेधा
म॥ लेआवडुकेशवघनस्यामि॥ संगिहलि
आवडुश्रीवलिराम॥ नंदमहरिकोमाथि।
लिआवो॥ भेरिलिआईकहिवोलैभाउ॥
रामकस्नकोनैभामाई॥ कहिकहिमीठे
वचनसुनाई॥ धनषजगकोलीजैनाउ॥।
वलदेषदुमथुरागोगांउ॥ मनसुनकी
उरतेभनिजाई॥ जाईकहनैपायहिनाई
वलङ्कमषानकरङ्कविलेवु॥ गोपङ्काम
महरनोक्रूरेवु॥ जवमथुरामेआवहिवा।
ल॥ दिनकउमरवावङ्कनिहकालि॥ हम
राहाथीअतिवलिवानि॥ कोउनदेषिउ
ईमसैसमान॥ टमसरु शहाथीबलमपै
समभेकेबलक्तिनमीनरिहै॥ सोठाढोहे
रंगड्सार॥ कारनतिकेमानप्रहारे॥ वधै
कहुगनिनेहरिराम॥ रंगभूमहिआवहि।
स्याम॥ रंगभूममहिआवहिस्याम॥ जोधा
मुष्टकोचांउर॥ तिननेकरवावउगावु।

द.भा.
म.
१२२

129

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मारेगासकलब्रजलोक। मनकेसभैउतारे
सोक॥ देवकीग्रहमारहुबसुदेव॥ जिन
कुदेवकीग्रहउग्रसेन॥ ईनकुपिआरे।
पंकजनैन॥ फुनिमारहुजादवकीजाति
सनईहिसाचहमारीबाति॥ फुनिमारहुई
नकेसनबंध॥ सुफलकेसुषजादवबंधु
शत्रुनराषहुजगमहिकोई॥ निरभैराज
हमाराहोई॥ हमरासत्रुहैजरासंधु॥।
महाबलिसिउअतिसनबंध॥ बाणासुर
हैहमरामीतु॥ नरकिसिउबिपरीलगा
वैचीन। बंतकिरैबसमाहाबलिबाबि॥।
सोहैमीतहमारेप्रान। जिनसिउमिलि
भोगेधरिभोग॥ सभहीहोईहमारेलोग
बालककुलिआईउबिलंबनलाई। नं
दग्राममहिपैठोजाई॥ हमरारिपुलेगो
कलिजाऊ॥ धनषजगजाईतिनउसबनें
बऊ॥ रथकुपरिहरिरामचढाउ। वेगिलि
आउबिलंबुनलाउ। नबबोलेअंक्रूरमहा
न॥ भलेभूपजीकीपेबषान॥ भलीबुधि
मनमाहिबसाउ। करमोकोगतिलषीन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गाई ॥ आवै न मरै आ गिआ मानि ॥ होई
गो सो जो के नागन ॥ ष का के सका माने
वैन ॥ आई रैन ग्रिह कीनै सैन ॥ बिन बन
रहि उरैन हरि सैन ॥ देष उगा हरन भगा
वैन ॥ हरि सिमरन सभि रैन बिहानि ॥ जै
स नैन प्रभ सारंग पानी ॥ ईह लीला को
ई सनै सनाई ॥ प्रेम भगति माधव की
पाई ॥ कमल नैन के सब कर नार ॥ क
सहा सपति पति बलिहारि ॥ २० ॥ साषी ॥ के
सो गोकुलि महि राई आपरि चोरे कांग
आगे केशव मन हा प्रभ अच्युत न मल ष
अभंग ॥ २ ॥ चौपाई ॥ केसो प्रानहि काल
सिधाईया ॥ चौरा होई गोकलि महि
आईया ॥ महा मई धान करी चकाईया
हरि आनी लावुन सहाईया ॥ सो बीग्री
वाकरन को र ॥ सो सठिया वो गोकलि
गोर ॥ श्री वाकु नी अति बलिवा नि ॥ नम मी
नरि थे देव बिवान ॥ तां के के सन हां ल
लिगवे ॥ सा विवान सभ ई के ठेभ थे ॥ महा
प्रष्ठि पे रि जे सिर उ ऊ ॥ नमन ते री नै वार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रिफेकि॥ मुष्टअतिदीरघमहाभईग्रान
नीछुनदारैसस्त्रसमान॥ महीप्रहारै।
चरनोसाषि॥ अतिबलभारीदोनोस्र
षि॥ गोकुलिमहिकीनोहिनकारि॥
प्रतिसतिकेषिउसमसंमारि॥ मनम।
हिविनवैहरिकोरूप॥ कहावसैवकुरुक
सग्रनूप॥ केशवनाकेसनमषिगपे॥ व
उभागकेसीकेभपे॥ केसीकोहरिवो
लेवातिवाति॥ हमहैकुसजसोधानाति
जवईहउवोलेनदकुमारि॥ ऊलट
हेमाहैदनगवारि॥ पिछलेपगिकीचोर
चलाउ॥ प्रभकोउहद्वैनदषदाउ॥ चोर
चलावहिकमारि॥ प्रषाअमितअनंतन।
अपार॥ लावतिसाईगोहजीवारि॥ दोङ
वारनगहिलीपमुरारि॥ दीउआरिकङु
कीनोजोरि॥ गिरिउदैनजनसिरकोउ
रि॥ पाछैपरिउचारीसैहाषि॥ लीलाको।
रोप्रभब्रजनाथि॥ बङ्गरिदेनजरासाव।
नभईया॥ मुषपसारिप्रभकोदिसगाई
पा॥ श्रीमामुषकाकीजेविसधारि॥ जो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तुम्र व लै वै गो मे स्मरि ॥ निकरि निरंजन
कै जन वश्याई पा ॥ नव के रावण हि षेल
दिषाई पा ॥ वासि भुजा ना के मुखि दश ॥
देनहरु सिक क्रोधी गहि लइ ॥ दांन द्रुका
सहि कै प्राहार ॥ डुमति दोषी वउगा
वारु ॥ पावति भुजा दोनि गिरि पवे ॥ ।
दांन विहू नै के षी भवे ॥ नितु लोइ कौ
नपै लहार ॥ विणा पारसनि छिन हैव
निछुार ॥ सपै दोन नै स गिरि पवे ॥ ईश्रुम
इसहदन नै फल लवे ॥ फुनि भगवानि
वषाइ वाहि ॥ पैठि गवे नाके नि माहि
नितु अहि विमल करे प्रवेस ॥ कसम ।
नाति उकोनो नैस ॥ गोकै उस प्राण सुरि
विरह वन भइपा ॥ निक सिजीउ तुरुमाति
गवेपा ॥ भजनि कनि लिइ भगवानि ॥ अ
श्रशोन मशाति ॥ दव शुह पकी वाला
करी ॥ जै जगादी मा ग्रपदा हरी ॥ माति ऐं
नहरी वन महि गवे ॥ प्रीनम उप्रानि स ।
णासंनि भवे ॥ वन महि गाई वणाई ब्रुनैन
कमल नैन कमला के कैन ॥ ई कलील

शि. र. रा.
१ म.
१२४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोइ मनमै मनाई ॥ प्रेम भगति माधव की पाई
न मो ज्ञ सो था ने कुमारि ॥ कछु दास प
ति परि बलिहारि ॥ ८८ ॥ साषी ॥ नारद नामी
जगति महिं हरि सेवक सब जानि ॥ बनम
हि परम कै देकै तन महिं परम महि श्री भगवा
नि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ विंद्रा बन मैं नारद आई पा
ने दर्सने दन का दर्शन पाई पा ॥ कैसे देषि
सिरी भगवानि ॥ गोप मडपी ग्रषरा
न ॥ मोर मुकट सिरि जग मगि कै ॥ नी
न भवन के तम को हरै ॥ कैठ बनी वैजंती
माल ॥ अलि जितु सिर ब्रूत्र चरन रेवा लिकं
धेक मरी आ भ्रूबन कुफल ॥ जगति ना
थ जग जीवन मूल ॥ तनि बिन रतन गेरी हि
रि नाल ॥ कटि का छनी आ परमरसा
ल ॥ का छनले ध रिवेणा बषान ॥ हाथि
छुटी निरमल नारान ॥ नीन भवन प
ति ष रे त्रि भंगी ॥ नष छवि मोहनि को
टि अनंगी ॥ यहि नारद हरि दर्शन का
रि जो ॥ रोम रोम आनंद हिम रिजो ॥ डा
ढि अम्रतु न पर मन करि अके ति ना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुखधामैतउपजैशांति। नारदकी मति अ
महिमगी॥ हरिमूरतिहूदेमहिधरी॥ प्र
भकोनीनपाइक्रमाकरी॥ नमोनमो नि
मलनरहरी॥ उंउतिकरीफूनिनीनि
महाति। नमोनमस्ते श्रीभगवाति॥ ह्य
ग्रिवीरिलागगुनगावति॥ वेदपाद
श्रुतपरमसुपावति॥ नारदहरिकी
कीरतिकरै॥ प्रेममगनलोचनजलउ
रै॥ कमलकमलपगादीमुअनेति॥ प्रान
पुरुषभगवंति॥ सभतेनिपारेसभ
केमाहि॥ नमरेषवलनवानेजाहि॥ सति
रूपस्वविनासिरेव॥ अमितसुगोचार अ
लषअभेव॥ सतिवचनडषकारति
हारि॥ दईस्वासिंधुमनिपरमउदारि॥
जैपरमातमप्रभनिर्वाण॥ शांतिसिंधु
निरमलनाराति॥ वासुदेवभगवंत
अनेति॥ कमलावललभकमलाकेति
॥ विस्वविआपकआदिमाहि॥ अ
अमेपअषेअनादि॥ दुष्टविनासन
नरहरिआलि॥ आदिनिरंजनवालगो

125

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाल॥कवनतुपिलेजसकोकहउ॥आ
दिनअंतमाताँलहउ॥अवुरहेउर॥नार
दउवाच॥नमोकमलचंदमनोहरसके।
दानमोमोरपंखवेसमहिमाअशेखे॥
नमोवेणवाजेजगतिपतिविराजै॥न
मोवेणधारीनमोधेनचारी॥नमोदुष
विसमसमअजाउधारी॥नमोविस
अस्यानजानीसमहिमा॥नमोमधुर
लीलाप्रहारीवृषीला॥नमोस्यामअंग
सम्बेरीरिअभेनी॥नमोसनिमाचार
फलकरेवाना॥नमोवेदस्वासासकल
महिनिवासा॥नमोनिरभैनाथनिरके
पएकं॥महामूलनकोधारिप्रगटेअनेक
नमोजीवजीवेसभखलउधारी॥नमो
निगमतेअगमहिमानिहारी॥नमो
देवकोदेवअभजोगसेवा॥नहीआदि
दिनहीअंतनिअविगतिअभेवा॥नमो
नागकालीनिरतिसीप्राकोनी॥नमो
अभैपदवीसकलसंतदीनी॥नमोनि
उतासुनीनानतरीसानिवासी॥नमो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परमनिरलोपनिरमलउदासी॥ नमोम
हाजोगीमहातेजकरता॥ नमोमहाजो
गीसकलविस्वभरता॥ नमोपरननाभ
भानतमहीप्रकासे॥ नमोदेवकीनेद
वमहेदेवविप्रासे॥ नमोगोपगोपीमकना
रे॥ नमोसर्वसुखामीभगतिकामयेनो॥
नमोदुषतेमुकिकरेउग्रसेनो॥ नमोत्रि
पिकारमलणजमतमतिदुलारे॥ नमो
व्यासलीनेभगतिपापहरे॥ नमोदुरीम
पुराजहाजनमलीमा॥ नमोभसकाम
रमनुहरकीना॥ नमोमथुरितुनिगाउ
रेमाईलोरी॥ नमोभगवतसलमलीकि
रनमोभी॥ नमोकुलककसमहाप्रभीपी
जे॥ नमोत्रिपरिमकिहीनोकोनामु॥
दीजे॥ २॥ चौपाई॥ हेप्रभुकिपाकहोवउ
पै सरतिपालसेवकमुषदाई॥ केसी
मारिउकरुणाकरी॥ सभिदेवकुकीया
पदाहरी॥ जवजानाचासुगंगाप्रजान
सवहकरैचाउनिवलिवान॥ नागाहि
देवसकलेनजिधाम॥ मोनमछेदि

हे. शा.
म.
१२१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देवनस्याम॥ उदपदेवोअंमनपीआ॥ अ
मरदानअमतिनकौदीआ॥ कैसीनेके
पेषेदेव॥ सोनमभारिउअलषअमेव
उठहीगपेसमदेवविचारे॥ पदमपार
पारसमभरउरे॥ विनमीसनजसोपा।
कउर॥ चरितिहमारे देषउअउर॥ नीजै
दिनसनीश्रैभगवाति॥ हाथीमारङ्गे
वलिवाति॥ वङ्गरमलमहकवोउर
नेजोधाकीजहिगेचरी॥ फुतिमारङ्गे
मरषकेम॥ फुतिनोषङ्गगेसमजउवे
स॥ लनेहैसदीपनमस्पावाल॥ वेलहि।
षावैगानेदलाल॥ कालजमनफुति
नजैपराति॥ फुतिनारङ्गमचकेदमहा
ति॥ वङ्गरिउआरिकाकरङ्गतिवास। ह
उउनगावोनमरादाह। मष्टनाईका
करङ्गविवाहि॥ नानाभांतिचरित्रदिषा
हि॥ मोलङ्गमरङ्गमपेकमउनारि॥ लेआ।
वङ्गभुमासरमारि॥ वाणाभरकीभुजा
हजाति॥ अवरकाहराघङ्गमोचारि॥ मा
ङ्गोवसदेवअपाल॥ होहिमेपरमअ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गीतितनिहाल ॥ चक्रनमालढूंघनस्या
म ॥ कामीजानैगेमिबधाम ॥ पारिजा
नलिआवहिगेचषि ॥ मतिभामाकोउ
नैरुषि ॥ अवरषेलकीजहिगेचने ॥ स
भैनमोपहिजावनतिगने ॥ हांकद्दगे
फतिरथपारथका ॥ जधकरावद्दगो
भारथका ॥ जधकरावद्दगोभारथका
प्रगटिकाद्दगेगीताज्ञान ॥ अर्जुनकें
करवावद्दपाति ॥ अगमगाइंजतिगी
नाहै ॥ अंधकारमाइंआकोरदैहै ॥ जोम
मनैगोगीताज्ञान ॥ मोपावैगोपुरष
पुराण ॥ नामहिताखिउग्रारथग्रनूप ॥
गीताज्ञाननमालारूप ॥ परमस्वरूपगीता
समझाइं ॥ त्रिगुणमइकउदेतिमिराइं
सगलीगीतानितनहीपुरी ॥ नमरीसेवा
हूहैधरी ॥ समनैप्रतिनिवैउहलि
गीताकारमनिसहीपास ॥ नमकउम
जैविमारैप्राति ॥ निसैकोलगेनजम
कोवाति ॥ प्रहतिप्रहारहिसैनामारि
हीकारतिनेभमकोभा ॥ स्त्रवाकेहि

द॰गी॰
प॰
१२२

127

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गोषेलघनेत ॥ सभविधिघगतिघभम
गवेन ॥ करमनमारेदिवघपरि ॥ तिनको
गावैगोसंसार ॥ जसुनमरेजगघपदरु
रै ॥ मनकैजनममरनतेकरै ॥ कृउगाउकृगा
नउननिगोन ॥ घनिसुषदाईकपरमउ।
नीत ॥ जनननारदहरिकीरतिगाई ॥ कृदे।
केसबलोपेसमाई ॥ उउउतिकौकुस।
कैपाई ॥ नामउविदाभईउजसगाई ॥ फति
हरिलागेगाईबराई ॥ गोपनछपीउराष
उरति ॥ उहलीलाकोईसनैसनाई ॥ प्रेम
भगतिमाघकीपाई ॥ कुसकुसकेशव
करनार ॥ कलदासपसिपतिवलिहार ॥ ९९

साषी ॥ बेलहिगयारुमिउकंसमारि नि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ंजनमोई । कोमेछांनमकरकोउकोपर
इयाहोई ॥१॥ चौपाई ॥ षेलहिकेशवगुया
रुसेगि । प्रभुयविनाशीमहाप्रभंगि
कोउवालमेह्यामेभये ॥ कोउपरकुया
होइवहिगये ॥ कोउनसकाहोयेवाल ॥ ।
कउनककरहिजेमोधालाल ॥ विउमा
मरयाइउनिहिकाल । निनहोषीमनि
कीउवीचरे ॥ षेजेनेहरिसषाकुमारि ॥
मारिइनोकोभोजनकरो ॥ युउनेननि ।
कीषुध्याहरो ॥ वालकुहोइरलिउनि
नवीच ॥ यनिकोरामरापमनितीव ॥ न ।
सकरुवालकमहिमिलिगइया ॥ निन
हीजेमावालकुभइया ॥ षेकिवालका
कोगिहिलेजाई । रापिगुराभहिश्रावे ।
धाई ॥ वालकिरहैविलंवुनकरे ॥ मेलि
गुराहिमिलकोधरै ॥ महाइछमपिवो
वुराई ॥ रहेमांविमनिवालकिष्माई ॥ ह्मी
जवरेषहिनेननिहारि ॥ कह्मागवेनि ।
जेमषागुष्मारि ॥ रेषिउउमहकरुमगा
वान ॥ इनोहरेमनिमेंदमजाति ॥ श्रीवा

ष्ण.
मु.
१२२

128

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तेगोगो विंदग हिलई था ॥ नवै दै नेपाव
नसाभई था ॥ कै जो रूप रहतु टकै नाहि
हरि नाना विधि विहार नि हि धारि ॥ माधव
मारि उमउमर हो रि ॥ परि निश्री बाउ री नो
रि ॥ का ढ्किल सुकाने बालि ॥ समउ खे।
मो वन दोन ठई प्रालि ॥ देव बुद्द पकी व
र्ष्या करी ॥ गुप्रार द्रु को प्रभ भ्रप पर हरी
हरि जसु गाव हि गुप्रार पिप्रारे ॥ महाउ
छ ने कुसउ वारे ॥ नमम हि सजस व षान
हि देव ॥ जैस विनाशी प्रलवषु भेव ॥ ।
शो किपरे घिह व लेमगारि ॥ मेगिपिप्रारे।
स षाम गुप्रारि ॥ गोकुलि महि प्राप्त पेहरी
राई ॥ प्रति विग सानी हरि की माई ॥ प्रवि।
भोजन पोठी भगवंत ॥ प्रस्तु लध हवलि
रामप्र नंत ॥ विउमा सावधु की उवषान
मपी प्रतिष्ठे से कपा निधान ॥ पहिली ला
कोई सनै सनाई ॥ प्रेमभगति तिमाधव की
पाई ॥ जैजसमति स तिने रकु माटि ॥ कुस
दासु पमिपरि वलि हारि ॥ ९८ ॥ साषी ॥ प्रेक
रबलि ग बैठि करिक मलापति के पा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हि॥ बंदनवउं तिन संतन के चरन कमला
सिउ चाहि॥ २॥ चौपाई॥ रघुपति वै सिवले
षंक करि॥ ह्रिमनै हि न घसिध भरुखी
मारगमनमहि हि विनवन करै॥ चरन कम
लहरि के ह्रदय धरै॥ कविपरिपंकजे पर
सोंजाई॥ केशव राम भगति के राई॥ कैसे
है वह रूपंक लिपर सोजाई पाहि॥ आपि
धनारि सभकी आरि॥ तिनको ध्यावै
से भसमाधि॥ गति गावै नारद लोसाधि
वारिवधन ब्रह्मा जस गावै॥ सेसमहे
समषि पार न पावै॥ तिह्रिको प्रसंसे
रेव॥ प्रभै ब्रह्मा सुब रास्तुक देव॥ जांको
वहि वरदरान॥ रिषमनि ह्रदय धरिहि ध्या
न॥ सिंधुसमा ह्रि रिहिदान निधु्राणी॥ ह्रीलि
देनरपति सिउलाभि॥ मनि माउ नतसी
सिउमहि ह्रिमो॥ चरन कमल को धावका
गहिजे॥ सो पदरि पंकज निपरासो प्राव॥ प
रनभंए आइमारकाज॥ फलिनलाहि
लिआवे भरम॥ ऐसा करहु मारक मै
उरलभमहरहिवे उउ चाहि॥ तिउह मउले

द॰ प्रा॰
म॰
१२५

129

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मग्रभूतरि ॥ बज्ररिसहानहदैनहिकैरै ॥
अतिअपनासंमाहेरै ॥ पारसहिद्या।
लचनावहिगाई ॥ प्रगटिचानबनमें
हिलगाई ॥ गोपीपुत्रहिहरिकेबरनि ॥
तिनचरनकुंकोहुउहेमरनि ॥ नास।
तिगुधिनमनमहिकरै ॥ भगतिभा
उलेहिरदैधरै ॥ कालिनदीमहिमध
मगुवहै ॥ कोउकिसेनकिनागलहै ॥
गोप्रजपालीनेदउमार ॥ जनमपर
नवउतनलैणार ॥ मनवकिवलैका
पहिचानै ॥ कमलनैनपहिहरैश्यानै ॥
फुनिजनमनमहिकरैबीचार ॥ अंत
हिसामीवञकरनाह ॥ हैमोदामअनं
नअधीन ॥ चरनकमलकोअतिहीरी
न ॥ रामिमुपनमकिकोलभभपै ॥ मा
तिपिरगदकुनदिसमपै ॥ सगनभपै
रीनेमानन ॥ दर्शनपरलोगाभगवान
देषोगावतिसंदरिष्याम ॥ अहदरीभा
रप्रीवलिराम ॥ मेरहासमधिपंकुनि
नैन ॥ उपरहिगेअतिप्रेमनवैन ॥ उव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रेसारेकेशावस्रवप ॥ मनिमयिमोहदे
षिमरूप ॥ कंसद्रमारासनितुरदेव ॥ बद्र
नकरेगगानेकोशाव ॥ कऊनमनितुरा
कमसमान ॥ जिहसमाहिदेषोभगवा
न ॥ फुनिमोवैस्रत्रनेमनमाहि ॥ श्रेसा
भागिहमारेनाहि ॥ कवनकोटहउबद्र
भगवान ॥ हउस्रधीनबद्रउरषडगान
बद्रस्रविनासीकिहिविधिपाउ ॥ मरा
गिधरमहैमेरेनाउ ॥ फुनिषरभीनी
करैविसास ॥ हउनोकेशावनीकोदास
स्रजामलउधरैनामनारानि ॥ सदहिवना
रिउश्रीभगवानि ॥ तकहिमिषाचलि
गनिकातरी ॥ क्रपासिंधुश्रेनरिहरी ॥
कपिस्रहरीछडधारेराम ॥ दशाधनेदन
द्राषस्रकाम ॥ हउनोदासमनषपरी
कपाकरहिगेहलपरवीर ॥ जवदेषोगा
श्रीगोपालि ॥ रविनेउनरेगानिहिका
लि ॥ हरिकेचनगझेउगाजाई ॥ मिउस्र
हिबदनमिउलपराई ॥ लेवहिगेहमि
केउवाई ॥ रावहिंगेफुमनिकेठिलगाई

श्री.
मं.
२२.

130

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हीगलिमिलनेकाफलपेहि ॥ मीधंमैहोव।
हिगेहिहि ॥ कृपाकरतिहिगेकु निजगदीस
हाथिधरैगेहमरेसीस ॥ जिनकैसिरहरीके
करलगै ॥ कालमिरततिनकेननिभगै ॥
जिहकाकुपाबलनलदईया ॥ पडनिर
वाणमसभुनेलईया ॥ जिहिकोसीसफलक
रलगै ॥ कालमततिहिकोनजिभगै ॥ देह
सपरसघेहरिहाथ ॥ केशवकोपोतरग
कोनाथि ॥ सोकरहउहेपरसोप्राज ॥ घर
तभईप्राहमाताकाज ॥ घगारहोगासनन
घदीन ॥ देघोगाप्रभपरमप्रवीन ॥ प्रेमा।
सघजनवैनेनकुलहा ॥ कुनिदेघनकउक
कुनरहा ॥ कुनिवोलहिगेकेशववानि
मुकैवलावहिगेकहिनाति ॥ ववनरटहि
गेपरमसालि ॥ नवहोवहिगनिहालि ॥
कुनिवैसावहिगेकरिप्रीति ॥ प्रतिमघव
हेरमौरीति ॥ वहुविधिसंतमनोघुकौ
करध्यानतेनकुनरहैलै ॥ दासप्रभकौ
ध्यानलगाई ॥ रविनजिपंथिप्रवरहिस
जाई ॥ सेवसैनश्रीपतिजगमाधि ॥ देवक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

को श्याम त्रिया करि राखी ॥ जो जन हम राख्यो न
लगाई ॥ मगन है इ विसरै सब धिकाई ॥ ना की
मेव नम इ मिलि करानी ॥ जो जन मगन हमा
री सरनी ॥ तन ग्रेह कु मगन है रि माहि ॥ ता
नि मति रषि मा त्रि न बिना हि ॥ देव आई
र घ मा त्रि पाव हि ॥ भाति प्रताप न व
नै जाव हि ॥ ऐसे मगन कुल से गि भई या
नीन को महरि नउ नौ र गईया ॥ ब्रज के नि
करि पहुना आई ॥ ना का भाग न कहि आजा
ई ॥ हरि पति विरह तिरह मति पोरे ॥ ते म रोम
या ने हरि भरे ॥ रषि ने उन रिपति उरता
या ॥ है या वव उ भाति हमारा ॥ देव उगा
रि पुत्रि कीन्ह पति ॥ रिषव लि लि सम नेरी
सो मन किपाई ऊवे भाति ॥ रहि उठ उ लि
ह मन न कि लाति ॥ पा म र षव हरि का जन
भाइ या ॥ वहन दे कि जि हो हो इ गया ॥ ले
य क ले सीस वधाई ॥ वहन पुरि ग गा ज लि
ना ई ॥ म ह्मदीन जि उ मान क्रम लपै ॥ गहै हा
य क्कानी सिउर दै ॥ तिउ हरि जन कृपा लि
र जि पाई ॥ ना का भाग न कहि आजा ई ॥ न ष

श्री·
म·
१३१

131

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिषहरिपगिरिनिलपराईपा ॥ मगनस
रूपीहरिपहिआईपा ॥ अनिबउभागो।
ब्रजमहिगईपा ॥ तामकुसरदर्शनभईपा
ईरुलीलाकोइमनैसनाई ॥ प्रेमभगति
माधवकोपाई ॥ जसधानेधनंनेदकुम
र ॥ कमदासपगिपरिबलिहार ॥ ४२ ॥
साषी ॥ गोसालामहिरामहारिकाहैदोनो।
वीर ॥ विहवलभयोनिरहोमनिगनमें
कहराकेपीति ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बसोकेशवमी
कोध्यान ॥ गोपसरूपीग्रषग्रान ॥ नी
लकमलसोसामशरीर ॥ पीनबसनउप
रिबलिबीरि ॥ कमलनैनचंचारेकेसि
साकेसमिसनिकरलिघटेसि ॥ कमल।
सामगोरेबलिरामि ॥ महाप्रभूदोनोनिर
कामि ॥ नीलबसनहलधरकेअंगि ॥ सि
अहिसोभतिचंदनसंगि ॥ दोनोकान।
निजगिमणिकरै ॥ दसोहिसाकेनमको
हरै ॥ सभननिचारचीपासलबासि ॥ नी
नभवनकोपरहिआसि ॥ कमदेवमहि
दीसहिराम ॥ रामदेहमहिदीसहिस्याम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

होउपरमपुरिदरपुनिभये । परमप्रगान
तिनिनप्रतिनिनये ॥ गोसालाकैभीतरि ।
हरिषरे ॥ ह्राघ्रङ्गप्रभूडहनधरे ॥ इकि
करिसेलीइकिकरदोहनी ॥ रामकल
त्रिभवनकेधनी ॥ श्रेकश्वरसनतप्याइउति
हिउउर ॥ देषेनैदजसोधाकउर ॥ परम
प्रीतिकरिप्याइउधाई ॥ प्रभिपरिपंके
त्रिपरमेजाई ॥ हरिजनरहिप्याबरनल
पराई ॥ नाकाभाउनकहिप्याजाई ॥ कप
सिंधुप्रभलीउउराई ॥ हरिजीगषिउअं
ठिलगाई ॥ हरिसेवकपकेहोइगये ॥ प
मप्रेमकरिविहवलभये ॥ हलधरमन
महिकीउवीचार ॥ केशवकरनेकमंत्र
पार ॥ यहिजगवहरिकोजेवनिप्याइपा ॥
कम्प्रीतिकरिकेठिलगाइपा ॥ मनदो
नोपकैहोइजाई ॥ भिनभिननतिदीसहि
नाहि ॥ निआरेकरोसेमिमगवैन ॥ ईउ
विनिउवलिरामप्रवेन । हलधरदोनो
करेनिआरे ॥ हरिजनेइउप्रभुकहेवउवारे ॥
हरिजनदानोप्रवानमनेहि । दोनोमलि

दश.
म.
१३.

132

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गेहविदेहहि ॥ भिंन भिंन दीनो कौ करी ।
हरिपगुरुहृदे भीतर पैठै ॥ राम विहंग्रो सेही
ग्रहसे तिनि ॥ हलधर जी पुनि नाग ग्रनेति
हाथिंग हृदे दीनो के राम ॥ ले चर च लि जे
सं नु च न स्याम ॥ भीतरि जाई प्रभे क वि ।
ठाई या ॥ जा परिजन ग्रेक बरवै ठाई या ॥
जन के चरन पषाल हि राम ॥ पानी पल
रहिं दहरि स्याम ॥ चापी कर हिं सेन कै च
रन राम कमल त्रिभवन दुषरन ॥ कनिम
य पाक म म म पि उहरी ॥ पक गऊ ले भे
राधरी ॥ मं चा पै व ठू स्या ग्राद रसालि ॥ क
पा करी ग्रनिक मलक पालि ॥ पानि षला
पे ग्रति भगवानि ॥ व ठून सेन कौ कीनो
मान ॥ जो चित मैं व पमार गमाहि ॥ सो उ सोर
हेरि प्रगदि हि षाई ॥ ग्रारि उरष ग्रति भा
दरक करि जो ॥ जन तन मन ग्रानंद रि भा
रि जो ॥ मिले नंदरवा वा फुलि ग्राई ॥ रहे दो
ऊ ज निम जके द्वाई ॥ वैसे सष मि उम
कल मह्हानि ॥ नंदराई क कु को पेव षानि
है ग्रंक बाझ कमल परिवार ॥ सषमित ग्रा पै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सनेहि॥ भजनकें कनह्ना यत्रुपरि ढले॥
गपेसुकिमुविजोरासिभरे॥ ब्रसेकेसिरि
रिपवेगपेरझुलल॥ रोमरोममहिपरवेसल
सिहिथिरनेसभिरेंकरोभर॥ विरहिनाप
करिनपहिगार। लागीकुराणमहाविल
लाप॥ सभनेवउेविद्यापिनाप॥ घरेविध
नाकरनकोर॥ रईयानकिनीहमरीउ
रि॥ थेसतेघरेवनिलेछीन॥ महामबूंते
नाहीप्रवीन। कमलनेनमघपंकजेनि
नाकोरमनेकाहिउहासि॥ नघछविति
रघउरलघेकाम॥ परममनोहरसरस
म॥ हमरीजीवनप्रानघ्रयारि। केघाक
लघकुंदिमराति॥ यहिअकूरस्रतिनिप
रिकोरि॥ किउमारउविनमेउलकरि
रपवतिथ्रीईउवउोमम्रान॥ पानक
प्रविलाकेप्रान। सनोमघोरहिनेंदन
होई॥ पाकेजीतिमनलनकोई॥ नहह
मामिउनजिउमनेरि॥ देरवानने भईउ
निदेहि। वउेमतेपेसभिव्रजलोक॥
हमकोमहालवनावरिसोक। महाकंस

र॰ग॰
प॰
१३४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ईनका किंपा करै ॥ करौ क्रोध नो किंपा ध
वहरै ॥ उद्धव धामि हमारै नाहि ॥ बहिगाउ
नमि रुउरि सिधारि ॥ हे प्रभ कोहो बहि
उनपाति ॥ नउ ब्रजनर है जसोधानाति ॥ को
थपसगान प्राति है होई ॥ रहै सासब्रजथ
पराको ई ॥ कोइ गोप माति जाई प्रधान ॥
नउ ब्रजनर है हमारे प्राति ॥ सनकु सखी
ईछिने रकुमार ॥ नई श्री श्यामसिउ बदिले
पिश्यारि ॥ मथुरावासी जो श्री श्याम बालि
ने श्रविति श्यारी लगी गुपालि ॥ देषकु
सखी तिनकु के भागि ॥ जे घरहि जिहरि र
रसति लागि ॥ जे नके भागि हमारे हो ॥
कमन भोगे जे ने करै ॥ प्राति जाई हरि को
रपु गहै ॥ बचन समेनरि हरि पहि कै है
कहवलि उ हरि हमरे प्राति ॥ जानति रे
वहि श्री भगवानि ॥ एक सखी बोली प
रयानि ॥ सनकु सखी हउ करो बषानि ॥
ऐ ब्रजवासी बउे अजान ॥ मानुष जानी
उ श्री भगवानि ॥ जिन गिरधर मो री ज
लिधानि ॥ निमे न जानन हिले पशु श्यामि ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहांकेसमसुणकोगाउ॥हरिकोदेनवि
गोरिसभाउ।काकोकहिहमारेभागि॥
नीवैषीहरिदर्शनलागि॥उलरेभागि
हमारेभये॥जिनहमनेछिनमाधवलये
उदीसरितेईसभनारि॥मीनमीनका
हिपगटिपुकारि॥गोविंददामोदरमा
धवस्वामी॥जसदानेदनसूरनकामि
तविविरहानोईसहीभाति॥मोपीकैमनि
नैकुनपाति॥मानहिउठीसरातिकोपा
ई॥मारगमहिसभिआइपाई॥कोकि
षीहरिरथकोगाडू॥कुलविंकोगाम
विमनिदाऊ।रथियिकूरावरावेसाम
प्रकहरिभाइस्यीवलिराम।लेवलिउर
पुरहाकिसजाति।मामकसप्रभपुावउ
गंन॥गोपीहरिरपुगाहिउजाई॥रहीक
सकिउदिषलगाई।गोपीकोबोलेह
रिगाई समपीहिरेउगोरहनपाठाई॥मंद
हासहरितिनकेपानि॥चलेपुरीकोश्री
भगवान।हादीभईसभैव्रजनारि॥हरी
रथुदेषहिनैनतिहारि।रथकीपुजाहि

दे०भा०
स०
२२५

135

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रमहिधरी ॥ सभिमबनुविहोईदेखहिषरी
द्धिछुपगोवरजबधुनिभई ॥ जपहउन्नी
मोगोपीहोइगइ ॥ फिरिघरिआईसभित्र
जनारी ॥ हृदैसमानेनंदकुमारी ॥ मना
निहृदबलकेशावमहिमईया ॥ तनघरि
आईआमनसंगिगईया ॥ यहिलीलावैं
ईसनैसनाई ॥ प्रेमभगतिमाधवकीपा
ई ॥ गोपीबलितनिनंदकुमारि ॥ कम
दासपगिपरिबलिहारि ॥ २२ ॥ साषी ॥ से
देरिरघचरिमहाप्रभुआपेजमनातीरि
संकेरघणअंककूरजनुध्रमहरिस्यामसरी
रीर ॥ २ ॥ चौपाई ॥ जमनातीरमहाप्रभुआई
अतिनिर्मलजलदेऊपचाई ॥ अंकरूर
संतमतिकीआवीचर ॥ यहिदेनोदा
सदेवभमार ॥ केमलपरमविचारेवाल
केमउहमतिचोरकाल ॥ तिनमारनि
कोदेउबलाये ॥ रघचनाईहमलेही ।
आपे ॥ हउतोआनिमादउबारु ॥ पाउक
माईउपारमअपारु ॥ अंतरिजामीसारं
गपानी ॥ जिनकेकहदेकोपरिछानी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मधवमनमहिमातिविचारी॥ जनमेकरु
रहमेरेहिनकारी॥ इमअनेनभगवेंतउ
रते॥ जनमेकउरकरिवालकजाने॥ क
छुमउनापरनाउरिषावो॥ जनकेम
निकासोकमिरावो॥ जवजमनाजल
मजनकरै॥ इमराध्यानहूदेजविधै
मलहीमहिप्रनाउरिषारे॥ सेवकका
सेनाउनिवारो॥ मेकउरनायनेमा
मालई॥ संध्याकरोमधिम्रानेमइ॥ लै
मागिनालई॥ संध्यालेप्रभकीनोई
सनान॥ जपैप्रभसजउवजेमहान॥ ज
विजमनाजलिरवकीलइ॥ जलम
हिकलरिषाइरइ॥ वाहरिपपतिरवे
वीर॥ संकरषणप्रहस्नामशरीर॥ वइ
नीरमहिरवकीलाई॥ फनिजलमा
हिरिषाररई॥ कैसेरेषेश्रीभगवान
तिहिध्यानकोहोतिवषान॥ सेषनाग
परउजलवरन॥ रेवसिपगणसेव
हिचरन॥ संदरिमतलकिवनेहजारि॥
ममनोऊपरिमकरिसालि॥ मकर

द॰ग॰
म॰
१११

136

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऊंसित उमा तिष बनि सहावहि ॥ निननेर।
विसासिकोटिलजावहि ॥ गातिसेषकें
सेनरसालि ॥ कंठबनीबैजंतीमालि
नीलबसनऊपरिफहराई ॥ जिउबंदनसि
उमहिउरिफाई ॥ कानकुंडलजगमिम।
गिकरै ॥ पुरैआननसभिपानकेजरै ॥ गो
रिकीविवैसेभगवानि ॥ कमलवदनरभुत्रे
ग्रखग्रनि ॥ बुरनोईहरेशरकेध्यान
कृपाकरीप्रभुकृपानिधान ॥ नीलकमल
बनस्यामशरीर ॥ जगिजगिजगनतिवा
रनधीर। कमलनैनमुखकमलप्रकाश
मंदहाससबमुखकोतराशा ॥ मुकटसीस
परिजगमगिकरै ॥ अलखभवनके।
नमकोहरै ॥ स्रवणकुलिउकुंडलपह
रावहि ॥ जिउनिरमलजलमीनरावहि
सिरऊपरिछुंचवारेवारि ॥ जिउरसिभौनेश्र
लिपरवारि ॥ अतिप्रसंनमुखिप्रभनिर
वाणि ॥ सोतिरूपनिरमलनाराति ॥ मा।
पविंबसेत्रिभवनिधनी ॥ कीरचोवसी
नामावनी ॥ पतिमंगरागरीकामपिवाल ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केठिवनीवैजेमीमालि॥कउमनकमणि
हरिजेरहिमरहइ॥कोरिमरछुविरेहनि
उराइ॥प्रभग्रनेन त्रिभवनकेराइ॥सेह
रिछानीपरमजेदारि॥मिउलनासिउ
वनेयपारि॥सिंग्रमनाहरीहहेमजारि
ननमनप्रभपरिउारहिवारि॥छांनीच
रवीभजारमालि॥मरदेवमेप्रभग्रा
काल॥केठिजनेरुवनिउमुरारि॥नील
मैलजि उंगायारि॥मेघवक्रगहिहा
थिमदइ॥पकिहापहहरिकमलभामि
नि॥कुहराकाकहिकेसाथि॥वीना
सीकरिजमीकेनाथि॥मेदाउहरिनि
नवलिपरे॥पहिर्क्षेकअरहसिरदान
करै॥नामसिंग्रमावरनिसमान॥कोम
लजेसवनेश्रीभगवान॥समनीरघरवे
हरबरनि॥कोमलकलपकमलमेवा
नि॥रछोनरहवनमभउः।वेहान॥सि
नवानेकोमभजगुगान॥रछोनव
मणिपनिपारचमकावहि॥तिननेकों
किंचदलजावहि॥जवधुजिम्रंककमबं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कलिपादि । वजरपाव समिजगकोश्रारि
पोड़ेबिहनपेपगिनलिमोहि । सभने
मेटहिसोभापाहि । पोड़ेबिहनपेजन।
हिनधरे । श्रक्रुमनगजिमनिलिहबल।
करे ॥ विषेवालनावजरपरहरे ॥ गिउ
हरिभगतिप्रेमविसधरे ॥ प्रजाकालि
नेनिरमैकरे ॥ कमलसकलनाप्रको
हरे ॥ पेपावोसंननसषकारण ॥ पगिन
लिगषेभगनउपारन ॥ नषसिषतोमरो
मसभो । सनमषिसमिहोसेवकिषरे
श्रागेभ्रसाश्रहमहादेव ॥ नमोनमलेष
लषभ्रमेव ॥ नवुरिषश्रहसनकादि
कवारि ॥ श्रहमारदजनमतिकेपारि ॥
प्रेमभगतिप्रहंलादिमहान ॥ श्रतिमो
मतिसनमषिभगवान ॥ नेरसनेउनग
रद्रुपरचेउ ॥ वेउमहावलिश्रवरक्रमेउ
वलक्रमदेषवपेनउमषा ॥ हरिसरूप
हिरदैघ्रीईरषा ॥ सकलजगतिकोसाम
नहारी ॥ ढाहोनउहीसकलिविचारी ॥
श्राढोवसवश्रानलेश्रादि । ईउभीस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नग्रषिग्रभपरसारि ॥ श्रीग्रहक्रोंनिउञ
वलधरे ॥ हाथिजेरिसिरिनी चकरे ॥ ठ
डीमाईग्रग्रतिहोईदीन ॥ सनमुषप्रभ
परमप्रवीन ॥ विरिग्राग्रवरग्रविरिग्रं
देई ॥ ईंद्रभीवरीदीनसीहोई ॥ कालमि
रतिहईनमहिषरे । ग्रतिग्रपीतिमवि
नीवेधरे ॥ ठाढेननवातिग्रहवीस ॥ ग्रभ
कुग्रागमभैग्रनीस ॥ प्रवग्रहमगुग्री
वर्दविग्रास ॥ पवनपेकनउनदेवपा
वास ॥ ठाढेसरनेनीसकरोरि ॥ ईंद्रसह
तिसभैकरिजोरि ॥ वावनवीरग्रउरन
नाथ ॥ ईंद्रभीठाढेजोरेहाथ ॥ ठाढेग्राठो
गजिदिकपाल ॥ योमग्रहीकेवउविसा
ल ॥ मानिसिंधूपेमरानिवेतिं ॥ ग्रिहिमि
छुवग्रनगननग्रनेतिं ॥ एकवेरग्रहवा
रभांति ॥ ईंद्रभीविरमाननिमगावाति
वालषेलग्रसाकेरतिं ॥ साठसहंसग्रव
रमग्रवधूति ॥ ग्रंगुसष्टमात्रननिपकि
सहाहि ॥ ईंद्रभीधरेतिनकेमाहिं ॥ नहीं
समुद्रीकाग्रधिकारी ॥ वरलाषवालनस

पा॰
सं॰
२२८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विगिरधारी । रविरकोसतिखसनीकुमा
री । आठनागकुलिआठपहारी । रवि
कीसतिखसनीकुमारि । आठनागकु
लिआठपहारि । विधाथकखखकजम
खधारम । समजीवकुकाठाकारम
गहरआदिसमदिवबिकुंगि । मूरतिवं
निवसेनअनेगि । वारोमेचमहावलि
वानि । ईकुमीसनमुखिघरेनाराति । स
नोमुकलिपुरीपरधानि । ईदिमीहैसन
मुखिमीभगवानि । नीरथपिनारदोवगे
प्रभ । श्रीमानेलेसिधीलेसाभ । वि
हिआधारीवारुणीधोई । बुधिमाकाजे
नअलोकि । कानिआईनीगेगाषरी । स
मखलनामतिप्रेमदिमरी । ईकुंजीआ
ठाकीईकुनी । पेइरिआगेनिपदिनिमा
नी । सानोमुक्तिपुरीप्रधानि । ईदिमीहैस
नमुखभगवान । रिषवसिष्टकीनारपि
धारी । नामअनेकनीहीनविचारी । गउ
रीअनहठाहीसरसुती । अनुसेकाखिआ
रीपारवती । जषिसिधगणसरीधरव ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुरलोकसलोकठहैसाव ॥ नागदेवकिंनरी
धरनि ॥ सुरतिंबतिथरेहैसाव ॥ अपसरा
राछोकरराजारी ॥ प्रथमविभूनकोकरन
पारि ॥ कलपिनरोवरिसनमुषिपरा ॥ का
मधेनमुषनीचाकरा ॥ जीवम्रवरद्यानामि
धारा ॥ कामधेनमुषनीचरा ॥ जोतिरुपं
धीवधपरा ॥ गुरजोनकेउकविहेग ॥ स
राईकवईनइकेसेगि ॥ ईजीनेसनमुषि
भगवानि ॥ किसहीकेनतिरिसैनप्रानि
जीवरहतिसरानिपाबानि । नाकोहलेन
वलेपरानि ॥ निउहीपाहिसमिसेवकवै
सतिग्रधीनमुषनीचेकेरे । क्रपासिंधु
श्रीपतिभगवानि ॥ तिनपरिक्रपाकरी
नारानि । क्रपाउहजाविनिनपरीकरी ॥
सकतिउपिसभकोमनपरी । सवधान
समिसेवकिमवे । प्रभिपदिपदमहदेग
हिलवे ॥ भगतिकरतिलागेसमिसेवकि
प्रभिमरानमनमुषभगवंतिनि । कोउकि
वेदपाहिजमनगावहि । कोप्रभसनसव
नाचदिपावहि । कोउकिमिलिंउतुना

139

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

करौ । कोऊ हरि मारा तिहि बेपुरै ॥ ईकनऊ
राखो हरि मनहु लगाई । किन ऊरहू देलीयो ।
समाई ॥ ये कै गुरुरूप की कौरै फुरहारि ॥ ईकि
गुरुरूप की कौरै फुरहारि ॥ ईकै मिलिननम
नउपर हरिवाहि ॥ कौऊरवा व मनदेगावजाव
हि ॥ पारि पारि कोउ समोग्र मनावहि ॥ ई
किनऊ के लोचनिजलवहै ॥ कोउ हरिसे
वऊहरि हरि कहै ॥ परपदी पईकसराव
गवहि ॥ कोऊ किसे व किवमरकलाव
हि ॥ नाना विधि समिहहि जसगावहि ॥
जसगाव हरिपरपाहनघावहि ॥ कउत
कुमवहरकी आभगावेनि ॥ मुरली प्रभ
हिपरी सिंगं केत । मुरली मुरली धरनव
नाई । तिनपु लिसमकी मरति चुराय ॥ ह
रिमुरली प्रेमसरकौ ॥ वऊरीति नोकेत
निमनिहरै ॥ वऊरी नि नो केतनिमनि
हरै ॥ वऊरी सिमै प्रनरी ली भये ॥ ननिम
निभ लिसमऊ केगवे ॥ गीतामहि प्रभ
गीवमहानमा ॥ अरजुनकेहरिउपामा
नमु ॥ ध्यावनोरवमहिभगवानि ॥ गेव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मद्दानम्नकीआवधानि ॥ प्रातिकालि
निउमराजेवै ॥ पैकैबारिजगतिनम
हैरै ॥ नैसेउमघनेनघपार ॥ पैकैबारि
वेसमारि ॥ ईसकारनघगुनिघनभेउ
नामपुभकाकहीघतिगेउ ॥ मीताम।
निजोगेउसनाईपा ॥ मोधुंकचूसको
इहारिधीईपा ॥ परिघसालेजेनेसं
नि ॥ सनमवि काढेसिरीभगवेन ॥ के
पारहकरिघभकरनारि ॥ समिजीवा
पेपैकैबारि ॥ चेकरूपभगतिहरिरस
वभईपा ॥ भाग्रति आगिहिहृदैकेगई
पा ॥ हरियिजेगरिलागाउतिगालि ॥ प्रभ
परमातमघगारिपकान ॥ गावैगाघा
मकेसवनारि ॥ निरुनमसरगुननामघ
पारि ॥ घडजिननेहरिभजनघकारि ॥
मजैप्रभकोभगतिउदारि ॥ नैसमिवा
नोगाहरिसेति ॥ कपाकारहिगाकम
लाकेति ॥ इंद्रलीलाकोईसनेसनाई
प्रेमभगतिमाधवकीपाई ॥ जगपति
जगगतिघपारि ॥ कमलदासघपगिपरी

१.का.
मे.
१८.

140

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बलिहारी ॥ २२ ॥ साषी ॥ अंकरूरबाच ॥ कोरनि
कौसमकूंदकीजनअेकहूरिजलमा
हिं ॥ आविगतिअैसेअलेषप्रभवरनि
नवरनेजाहिं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हरिजनहरि
कोकोरनिकरै ॥ गुनगावैभवसागर
तरै ॥ नमोनमलेगुरषपुरान ॥ अैसेअ
गोचरश्रीभगवान ॥ काधरिरहैध्या
न ॥ सूजाकरहिंकइसहरजान ॥ ज्ञानजमि
करिहरजरिवेक ॥ सबसंतनकोनमरीट
क ॥ ईकबनमहिंईकग्रहिमहिरहै ॥ जो
सिमरहिंतेप्रभपटलहैं ॥ कथानमारीप
रमरसालि ॥ पेकसनीमविहोनिनिरा
लि ॥ कथकरै ईकपरमपुनीति ॥ ईक
तमारेपगिराघहिंचीति ॥ सहंनामुईश
किपरहिंसज्ञान ॥ ईकिकरतेउउति
महान ॥ प्रेमीयेकविसलपटगावहिं ॥
तालमरंगरविविविज्ञावहिं ॥ येकि
मगनह्रोईगिरिगिरिपरै ॥ सकलज
गतिकोपावनिकरै ॥ येकभगतिश्र
बनेहरध्यावहिं ॥ प्रभपरसादिपाल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पउपावहि॥ तिनकैअगाधमति अतिसरसा
ति॥ सभकेरछ्यासी भगवान॥ तिनके
तनकेसैसोचीति॥ तिनकौतनमनलिउ
लागीप्रीति॥ समनाछिमारिखालख
काम॥ अवरदेवकोलोनननामु॥ सप
नाजानैसरीरसंसार॥ देहधामसतनके
वेकनाहि॥ औसेकोहृतिनमसिउलौ
कसनामसतनिउरमनिमागै॥ त्रिगुण
कौवतेपरजैदेव। तमनोग्रभ्रमनेतम
मेव॥ नमोनमलेत्रिगुणप्रतीत। नरी
पावासीपरमपुनीत॥ सुरनपरमानं
दसदाउव॥ संतजनाकेकलपनरेख
र॥ नमोनाथतिरगुणिअविगति॥ प
लमहिमाजाइकोदकिसकति॥ अ
तिअगाहिजैनिरगुणसरगुण॥ नाहि
सकलजनमहिमाकहिसगुण॥ निरं
कारअकारअनेति॥ जपिजपिउधरे
कोरिमहंति॥ किआगुणगाउपाव
पाउ। दीनउधारननमसनाउ। आदि
हिपुरखदेवनमतामरछिआकोजैप्रभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चनिस्याम॥ कारकूरूमारामभक्तान॥ अरं
उपिस्वरूपसमनामान। नकिकोजानक
भपनाराम॥ दीजेवरानकूनजैनिवास
जनकेकरिजोरेरहिगये॥ अंतरिध्यान
महाप्रभभये॥ जलतेनिकसेजेअंकूर
र। प्रेमभगनभसिषभरपूर॥ चकतिर
हेअंकूरामहेने॥ कहागयेपूरनभगवे
न रपपरिदेषेदोनोवीर॥ संकरषण
अरूस्यामशरीर॥ हरूपेहरूपेहरिपरि
राईया॥ प्रभबिनातिश्रनिबिसमैभईया
ठाढाभयानम्रषिकछुकहै॥ चकितिहो
ईहरिपगिकोगहे॥ जनकोजगपति
वैलेवानि॥ बिसमेसेकिआरूपेनावि
धरनीनभिकछुदेषिउनाहि। कैकछु
देषिउजलगंमाहि। किआसबरजदे
षिउकछुबोल॥ कहाभयेविनउवा
डोल। बोलेजनअंकूरामहान॥ कहा
कहाहेश्रीभगवान॥ जोकछुअचर
जेभुआकासि॥ जलथलअरूपाता
लनिवासि॥ दिसाविदिसाअहोनाथनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभकेकारननसभगवान॥ नमसेश्या
मैश्वरजननाहि। सभपहिछ्लानैभूलि
उनाहि॥ चरनकमलपोमननमाहि॥ चार
लागिरबैबैठाआइ॥ सेमसेमप्रभाहैस
माइ॥ पेहलीलाकोईसनैसनाइ॥ प्रेम
भगतिमाधवकीपाइ॥ बासदेवबस
देवकुमारि॥ कसदासपुगिपुगिवलि
हारि॥ २४ ॥साखी॥ आगेठाढेपेषमहि

मैरहगोपअहरउआरि। जाइमिलैहरि
मैतिसितुकेशवरामअपारि॥ १ ॥शेष
ई॥ आगेगोपउभीकहिहरे ग्रहश्री ७

र.क.
म.
१७२

142

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मोहनराघवरे ॥ मिलैजाइंतिनकोभ।
गवान ॥ रामकमलप्रभुग्रपश्रुगान ॥
रघपुरिसोभतिदोनोवीर ॥ गोपगु
आरइकेसगिभोर ॥ आगेगुआरना।
चनेजावहिं ॥ प्रेममगनहरिकेगुन
गावहिं ॥ परमानंदभरेभगवाति ॥ ।
आपेमपुरानिकरिनाटाति ॥ तिक
रिमथुरजिविहरिगपे ॥ नविधंके
रदीनपतिभपे ॥ संकुरप्रभपहिवि
नतीकरी ॥ दीनहोइस्तुतिप्रेमहिभपे
री ॥ सेवकजोदीनोहाथि ॥ हेप्रभकौ।
नैआजुसनाथि ॥ वलइकपाकरिह
मैप्रामि ॥ गोपइसहितकरोविश्राम
हितसिउचरनपषालेआज ॥ ष्टारनभ
ईआइमारकाज ॥ प्रभचरनामतसिर
परिधरो । ननमनधनत्रिकुपावनः
करो ॥ प्रभपगिजलसंकरिसिरधरि
उो ॥ पतिप्रमारिआनंदहिमरिउो ॥ सो
वाणामनहउरूपाउ ॥ पतिप्रनीनक
रतिहरिनाउ ॥ नाग्रहिलागहिद्दीके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वरन। नाग्रिहकौ सभनीरघसरन॥ न
वबोलेस्त्रीपतिभगवंति॥ सुनश्रंकर
हमारेसंति॥ नमनाग्रिहदेबोगाआई
नाईकेसकोषवरिसनाई॥ केसदह
केप्रानप्रहारि॥ करितिरमैजडकुल
परिवारि॥ नविनमैरपारोगोपाई॥ स
निवचनलेहृदेवसाई॥ जनश्रंकुरह
रिआगिअमानी॥ जोआगिअभगवं
नवषानी॥ वलिउंसेनविलिषासाई
ई॥ हरिसरानिचरियसीवरोई॥ किआर्जु
नौवद्धरिनकविद्यावै॥ हरिविनपल
समकलपविहावै॥ जनश्रंकुरकेवा
पहिआईपा॥ राजाकोआइसीसनिवा
ईपा॥ श्रंकुरकेसपरिवानिउचारी॥
उनरेवानिसमगिरिपारी। गोपगुआ
लिकनेरसमैति॥ आनेकसनमा
रेति॥ करिवनेनप्रकारसनाईपा॥ द
रिसेवकपनेग्रिहआया॥ ईहलीला
कोईसनेसनाई॥ प्रेमभगतिमाधवा
कीपाई॥ जेनगरीसअनेनअवाई॥

द॰श॰
स॰
१४१

143

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कुलहासपणिपहरिवलिहार ॥ ९५

साखी ॥ चुलेउरी कौ रामहरि गोपउ
नारे वाणि ॥ मथुरा वासी संतजन उ
धरे दर्शन लागि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ वडे गो
पसभ वागि उतारे ॥ भूपि कंसजीउ
पुरी सिधारे ॥ हलधर संगि संगि सभ
उधार ॥ पेहरि सौभा परम अपारि ॥
घरे नाम प्रभु राजीको ध्यान ॥ जिउक
हना प्रभुक देव महान ॥ कछु कमणी
केव ठेहु श्रागि ॥ चमक हिरे दरान
अपार ॥ कंचन की सभ कालरि वनी
तिनकी सोभा जाति न वनी ॥ बारिउ
रिधारी जलाभरी ॥ गहल पूरनजाति
न नरी ॥ कंचन के ग्रिह जगमगि कौ
लाल करो खेउ पारि चौर ॥ संदरि छजे
वने अनन ॥ तिनपरि पंषी परम सरूप
मुकिमुहसारक मोरचकोर ॥ मैना
नी करा तिमि तिमि सोर ॥ चूने कषून राखे
दरापेष ॥ अहि हित्राहि ऊपरि उ हि अस
ष ॥ फूटफसली खिडमार गिल बची ॥ प

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रमसतजानऊहितकरिरवी॥ नांवेकेशभ
पारथुजान॥ तमहिकेसकमावनिरा
ज॥ केचनसितचतुराहेवने॥ मथुरा।
केशनिजातिनगने॥ कुंभस्तरउग्रारउ
पतिधरे॥ भूपरीपमथुराकोकरे॥ मा
गिक्षुटकेचंदनसाथि॥ मथुरादेषम
थुरानाथि॥ वेधरिवानरफूलहिउग्री
वकुटिमसोभहिवागिश्रपारि॥ चहुऊ
वगीचेपडूपतिभरे॥ मथुरासिमरत
पानकिरले॥ थेसीमथुरामाहिनगा
रि॥ पैठलेसंगिरामथुग्रारि॥ राजपंथ
हेवलेथंनेति॥ कलसकिरपानिधिक
मलाकेति॥ मंदरमेंहराजचालरमाल
संगिविराजहिवालगोपाल॥ मथुरा।
जीमहिपरोडकारि॥ आपेदेनानंद।
कुमारि॥ निपटिसोहमथुरामहिपरि
उ॥ गाहगहादिनभमंउलभरिउ॥ प्रा
हिथहिनेमभनिकसीनारि॥ देषेदेनोर
ममरारि॥ इकिवाहरि इकिकउपरिवरी
कलसनामसनिसभिषविहरी॥ कीउरि

द्.शा.
भ.
२५५

144

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भाईबाल्लकिउगि। कोउठिपाइपानवि
सारि॥ अंजनन्नैननापावनिभईया॥
कलनामहिरदागहिल्लईया॥ ईकि
पगिपनीईकिरहिगउ॥ सनिविदेरि
मध्युराजनिभउ॥ येकउठिभाइबरन।
विसारि॥ ईकनोसिरपतिउरेहारि॥ वी
रंगुगधरिअंगीम्याखीस॥ मोरेकेशव
हरिजगदीस॥ ठाढिवरनपगिनपरि
हाथि॥ मथुरामोहेमथुरानाथि॥ जैजै
कारजमहिपीनारि॥ सभिउठधाइस
भैविसारि॥ गुहपविसछप्रभऊपरिकरी
हरिमूरतिहिरदेमहिधरी॥ जोकोसभि
मुनिकरतेजाप॥ गुहसिवब्रह्मदिषएई
उआप॥ धागाथेल्लिवरषहिईकिनारि
मोतीलटकहिनीश्राउदार॥ हदेवीवि
माधवगहिलपे॥ सगलरोमनलिझाडे
मपे॥ चलैनैननतेसीतलधार॥ निपरि
कसलिउवउधिश्रारि॥ जिरीश्याकोमु
खिभयेविगासि॥ मानोपंकजिफूलो
सकासि॥ मंदहासहरिमनहूलिलपे॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कृतिहरिसनमुषिब्रसननआये॥ हरिकै।
मसनकिहाफुलगाये॥ नषीहोकुंसंटी
घनस्याम॥ राजनोनहोयेवलिराम॥ अर
यहनेनिकसीसभनार॥ ननमनहरिप
रिउारहिवार॥ हरिकेमसनकिहाफल।
गावहि॥ धूपदीपअरुचमरझलावहि
रुजाजोगरुजावहिहरी॥ मधुरगुरीश्र
मसिउमभरी॥ मारगिआइयोजोवीजोइं॥
सभअंवरिकेसभमलषोइं॥ जोवीभी
षाअरुनीलारी॥ उहकरममहिमति उ
जीआरी॥ केसवदेषैनेननिहार॥ अंवरि
नानावरनअपार॥ जोवीकोवोलेभगवा
न॥ हमकोअंवरिदेहिसजानि॥ हमराव
चनलेहिजोमानि॥ अविहीहोइंवडीक
लिआनि॥ जोवीवोलिउपारमअजान
केसनसफैनकैवलिवान॥ वनिकेवा।
मीरे वजनगुआनि॥ असीवानैवगिविसा
रि॥ मेरिउारिपहिमननेचाहि॥ सघुतो
रैनोघुपकरिजाहि॥ नमसेआघुपछान
निनाहि॥ हमरेराजानेफलपाहि॥ वांधै

ह॰श्री
म॰
१४५

145

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लाहै करै प्रहारि ॥ कुनिषाकैं नेउहै मारि ।
धोबी मूरख नजानै स्याम ॥ प्रभ परमानम ।
हरनकाम ॥ कहूलीलागोपालदिषाई
नाकोदेषंगरीकोलाइ ॥ धोबीकामल
कुमिटिगईया ॥ पहिमधुसूदनतेफल
लईया ॥ जोधोबीकोधोबीग्रउर ॥ देषे
तिनेनंदकेकउरि ॥ तिनकुंकालदिसरी
महिपवे ॥ पोराउगरिभागिसभिगपे ॥ उ
आरकुंकोबोलैभगवान ॥ लटकुंसंबा ।
रिसवासजान ॥ गुआरकुलदिलीपेभची
र ॥ आगिआकरीहलाईधवीर ॥ पहिर ।
नजानहि गुआरपिआरे ॥ गुजरिकमरी
उढनिहारे ॥ माधवभीपरिपहिरनजा
नहि ॥ ईउकहिश्रीप्रभुकरेववषानहि
गलिकाननैननैकामीस ॥ कउनक ।
कालिकसजगदीस ॥ प्रभुकरैजोको
हरिसंति ॥ पहिरनजानैकिउभगवंत
सभकोमतिनिसहीकोदर ॥ आपिननै
कुकिसनेलइ ॥ संवारिकाहेपहिरन
जानहि ॥ सोप्रतेनमकरेववषानहि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कैसेहैकेशववचनस्याम । सभकेईसग्रनं
नस्यकाम ॥ सोननउसननभूषनपिआसि
सकलजगननेसदाउदासि ॥ सग्रेलाभ
संतनसटसदीव ॥ क्रिपाद्रिष्टजीवहिसभि
जीव ॥ निरालेभनाथहुकेनाथ ॥ धुरनअ
सथनेदहिसाथि ॥ जरदपिअैसेहैंभगवं
त ॥ सरपहिकछुकसनेहहिसंत ॥ जोक
छुसेवकभोराधरे ॥ श्रीकाहुनिसीका
करै ॥ अवबहिसोजोजिनअवबावहि ॥
पहिरहिसोजोजिनपहिराबहि ॥ धोवीबी
रनअरपेहिनसिउ ॥ आदिपुराषअराजन
केमिनसिउ ॥ ईउहरिकैननिचीरनआव
हि ॥ श्रीसस्यामीसुकदेवसनावहि ॥ ईकु
नांनीथाऊहाथरा ॥ तिनकेशवकावर्ण
नकरा ॥ तिनहरिजीपहिविनतीकरी ॥
हाथिजोरिअतिप्रेमहिभरी ॥ हउपहिरा
वोहेवचनस्याम ॥ आगिआकरहुप्रभूनि
हकाम ॥ वहुतभलाबोलेहरिगई ॥ नहि
संतनकरिप्रीतिबनाई ॥ तिसततांनीकाका
ईकुनाम ॥ तिनपहिराएश्रीघनिस्याम

146

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कुनिपहिरापेकुलधरबीर। कुनिपहिरा
पेनेरथ्यहीर। रामकलसञ्जहसणागुआरि
सकलमंडलीवनीश्रपारि॥ सेवाकरि।
हाछाकरिजोरि॥ इहलगारहहरिकोउ
रि॥ देषिउप्रपनानंनवनिस्यामि॥ कु।
निदेषेवलभवलिराम। देषेबालकनै
ननिहारि॥ अतिप्रसंनहूपेकरनारि।
वरुदीनानाकोभगवानि॥ सनहमारे
सेनसजानि॥ नरुकोदीनाअपनारूप
स्यामघनरभजपरमअनूप॥ नविईरि
नमसहूहैशरीर॥ नविहमराननपाव
डवीर॥ ननमननमरासभनेवलिही
न॥ ज्ञानअवरुपावडविज्ञान॥ धनसि
उशाननमरणधाम॥ साधकाहोयोवि
सराम॥ कबूननेरेवसंरहिउ॥ रोगविश्रा
धिकबुलगेनछिउ॥ सभहीभगमिन
मारीकरे॥ ज्ञानअनुधभोगकारिमरे॥
पेकवारिपहिरापेस्याम॥ वाईककेसभ
रेकाम॥ नितप्रतिजोहरिपूजाकरै॥
गुरुरूपप्रसादीमसलकियरे॥ प्रेममगनमो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विंदलउवहि ॥ किपाज्ञानोप्रभतेकिप्रा
पावहि । वाईककोवरुदेकरनाहि ॥ सन
मषिरिहनसकोपमाहि ॥ निमरवदन
कहिरहेकनाइ ॥ कछुकेसवजीलज्ञा।
पाइ । जविसकिपहिहरिकपासनाइ ॥
सनतिपरीछुनिहदेहिनाइ ॥ सकिके
प्रसनपरीछुनिकरिउ ॥ निसुवदन।
किउकेपावकरिउ ॥ वाईककउउतम
वरुदये ॥ नोकेवेसकुनारघभये ॥ लग
निकिउहृदयेभगवान ॥ सुरनउरषउनी
नउरान ॥ ईरवनोनसकजीसमका
कलकपायेसनतप्रववावउ ॥ वोले
श्रीभुकरदेवमहानि ॥ सनउपरीछति
संनसज्ञाति ॥ निनवमिनहरिलजति
भये ॥ उपखपाननिनिनप्रनमये ॥ जन
तिनवाईकपरपहिराये ॥ हरिसिउतन
मनसकललगाये । वाईककोवरु
पामरहि ॥ ईदेचोमकिसाथलगाई ॥
सेप्ररनभगानकुमाई ॥ ईउमनमजीमन
महिभगावानि ॥ ईनजननमकिकोप्रा

र॰श्रा॰
स॰
१४॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्राति ॥ वचनमात्रहीमुक्तिमुषिकहे । वा
ईकेकेउग्रहारिउदहे ॥ ईनहमरीप्रति
सेवाकरी ॥ मुक्तिग्रनेननेकछुनसरी
कीयापछानननहाहमुरारि ॥ ओसभ
ऊवग्रपार । ईननमिनहरिलजापार
कमलवललभकउरकनाइ । वाईक
कउतिसनाग्रनेने ॥ आगेचलेकस
भगवंने ॥ मालीजातिसदामानाम ॥ ना
केगपेकसवनस्याम ॥ वङजनसनमु
षिग्राईउथाई । रहिउकसकैपगिलप
राई । कोमलपरमविछाईकरी ॥ एमस
हतिवैसेनरिहरी ॥ मालीविधवतिप
जाकरी ॥ सेवककोमतिप्रेमहिभरी ॥
प्रथमेप्रभूकेधोपपाई ॥ पगिजलली
नासीसचाई ॥ पगिजलसिउसिविउ।
परिवार ॥ भीनरिवाहरि चाकोउग्रारु ।
हाषिपुलावेसंतसुजान ॥ प्रतिसंतोषे
स्रीभगवान ॥ पुहपरुकेगलिमेलेहा
रि ॥ हरिकोदेषैनैनतिहारि ॥ अवरुहार
लेग्रावैसंत ॥ तिनसिउपहिरै स्रीभगवंत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हलधरकोपरिरापेषहारि॥क्रनिपहिरपे
सवहीगुआर॥श्रोनेसेनगनेपकवान
सतऊसहिनश्रवेभगवान॥वुलीकरा
ईलिआईआपान॥पानिअवेप्रभउर
घइरान॥हाविजोरिजनसनमुषघरा
हरिसइपहिरेदमहिपरा॥गारिगादि
केरीनैनजलढारि॥प्रेमवढिउअभिल
खिअपारि॥हिनसिउगावेहरिकेनाम
नमोनमस्तेसेदरस्याम॥प्रभउरबोलं
मउरघचलेष॥अपैअकोचारअभै
अमेप।किआउनगावोअतिमनिही
न॥नमोनमस्तेनाथप्रवीन॥दीनन्नमा
रविनैसुनाउ।कउनप्रभुकीरहलक
माउ।हेअनेनकेकुआगिआकरो॥यहि
कहिहरिकेसनमुषिघरो।ताकोबोले
श्रीभगवानि॥कछुवहमोनाहुसेत्तकजा
नि।सेनमहरामाविनतीकरै॥प्रेमभिल
नलोचनजलढरै॥दीजैप्रेमदानउदा
नारि।केशवकमलनकंरिअगारि॥तिह
वलभगतिकृपाकोरेहर॥प्रभकेव

ह.भा.
म.
१५८

148

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गिरिसिउ बदै सनेहु ॥ साधन गोअहीरहि
रिआल ॥ सभमहि देवो श्रीगोपाल ॥ न
पाअलना को हरि कहिउ ॥ जो मागिउ
सो हरि ने लहिउ ॥ फुनि हरि कहिउ दे ।
नि केअउरु ॥ हदान मागहु मगठउरु ॥
वेलमाग सदा अरोग ॥ सभल छमी ।
क भोगहु भोग ॥ लछमी वंत सकल प
रिवार ॥ दीनी दाल मधुकै दमगार ॥ देइ जी
न सभै सदज्ञान ॥ वरु देउ ठकुर भगवा
न ॥ आपे माधव वीचव जारि ॥ भेटा राधरि
लोक अपारि ॥ मघ मल घासे अरु वउना ।
रि ॥ केचन मान कमु कना हारि ॥ घान ।
पान पकवान अनेक ॥ भेटा राधहि बान
रु टेक ॥ जो थीजा के उन मवानि ॥ सो दे ।
लोधे जमु धानानि ॥ चसि वंदन कुवजा
ले चली ॥ मारगि मिले मनोहर वली ॥ म
लिनि सिउथ वलिम्न वरन की थाली ॥ ता
कै कारै दषी वनमाली ॥ थाली वीचि क
टोरी धनी ॥ वंदन अगर भरी अति बनी
कुवजा को बोले हरि राइ । आपुना ने वि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रनैनसुनाई॥ नाथजानिनेराकुलकैसा
केराचलीकेचनलेचैसा॥ कुबजाबो।
लीहोईअतिदीन॥ बिनतीसुनेप्रभ
परवीन॥ केसराईकीटहलकमाउ॥
कुबजाचोरीमेरेनाउ॥ चसिचंदनना
कैलेजाउ॥ राजाकादीआपनषाउ॥ इ
मोचंदनसिउरुचधरै॥ बहुरनमाईआ
ईआहमअपरिकरै॥ हमराचंदनला
वोअंग॥ प्रतिरुबिनाकेचंदनसंग॥ कु
बजाकेबोलेभगवान॥ सुनोसषीतुप
रमसुजान॥ पहिरउजलाईहमारैअंग
हमरीरुचयाचंदनसंग॥ बहुरनभूला
कुबजानेकहिउ॥ बडेभागिहमदर्शन
लहिउ॥ सफलाचंदनहमआजु॥ प्र
भपाहमारेकाज॥ चंदनुचरचिकहरी
कैअंगि॥ कुबजापरमसनेहतिसंगि॥
चंदनसिउहरिनिपरिसुहाने॥ हरिगु
नसुकदेवबषाने॥ मनमहिहीउविचि
उमिरिधारि॥ बडीकुगतिनिहैनकरीहमा
री॥ पांकेतनिकाअंगमिटाबो॥ संदरी

द॰शा॰
म॰
१५९

149

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लधिकरीरिषाएवो॥ कुबजाकेचरना
ऊपरिचरन॥ राषिउअपनाहरिउव
हरन॥ डोडीनलैधरैप्रभहाथि॥ क
सकउनकोत्रिभवनिनाथि॥ ऊपरि
कोषैचीभगावानि॥ छिनमहिसंदरी
भइसजानि॥ नानोविंगनरनुमिरगवे
संदरारूपसभूनेभये॥ केशवजीकोवे
लीवानि॥ अतिहीमोहीतिरीआजानि
प्रभकापीनउपरनागहिउ॥ विहवल
होईहरिकोईहकहिउ॥ रूपनमाएनन
मनुहरिउ॥ कियाजानाकछुरउनाष
रिउ॥ हमरैग्रिहचलकरोनिवास॥ अव
रुचराबोवनोसवास॥ हसिकरिकल
सषीसिउबोले॥ प्रेमिभरेमधुवचनअमो
ले॥ कहिउविसपतिसारंगपानी॥ तुमरी
मनकीहमपहिचानी॥ तुमरैमनिसोम
किमनिमाहि॥ तुमतजकहाविदेसीजा
हि॥ अवनछाडिहमारेचरन॥ परदेसी।
कौहमरीसरन॥ आवैगातुमरैग्रहम
पी॥ तुमरीमनसाइमिसमिलषी॥ हम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोकरनाकछुककाज। तबषसिउषेलो
मथुरामाजन। तबषसिउषेलोमथुरामाज
कुवजाहरीकैलागीपाई। हरिमुरति
धरिलइसमाई। प्रभुयविनासीआगै
गये। सभिमथुराजनिविह्वलिभये॥ दे
षिहिदासघनेदसरूप। गिरिहकरुंटवक
रिजानहिरूप। लोकनिकोबोलेभग
वंत॥ घलषयवरजीभ्रमिनघनेनत॥
कहाधनषमामझीधरिउ। वजाजगुजन
कारणकरिउ॥ मथुराजनकुवताईउथा
व। सभकछुजानहिश्रीभगवान॥ ध
नषयानिआवेपवनीधरि॥ आदिपुरष
अच्युतअकारणकरि॥ धनषनिकरिआ
येभगवानि। वोलेराषेसभेसजानि॥ आ
गेजाहिननेदकुमारि। धनषहरनेनैन।
निहारि। राषेसभेउकारिनिरहे॥ धनष
जाईमथुराटनिगहे॥ महाधनषकछु
करीनजाई॥ नानकालहरिलीपाउठा
वेरिवनाईउँ श्रीभगवानि। वालकिट
पीउकरुषधान॥ वैविनेरिकीनाहधँउ

ह.शा.
म.
१५.

150

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पनषसवदिपरिजेखलेउ। रावेवोलेसमैम
गवारि॥ ज्ञानिनदेवदिनेदकुमार॥ जोपा
समैभयेचउफेरि। रामकुसनीलीनेहोरि
पनषहकिईकुलीग्रामसम। हजालीग्रा
प्रभवलिराम॥ तिनहीसिउसमिउरेमा
रि॥ गिरवरधारीगरवप्रहारि॥ ईकिमारे
ईकिजाईपुकारे। सुनराजाजीववनह
मारे॥ पनुषिकुसकीनादोषहि॥ समझो
धाकोकीनोउडे। सुननिकेसिकछुवारि
नलाइ॥ हरिपदहिसेनाग्रवहपठाइ॥ सारी
सेनाहनीमरारि॥ पनषजगिकेवीविउ
आरि। पनषतोरिउठिवलेग्रनेन। कमल
नेनहरिकुमलाकेनि॥ निरभैविचरहिम
थुरामाहि। गुहजनसजागेदरसहिपाहि
जिनकेचिनपीचिंतानिनि॥ किवहीदोस
हिगोविंदमिनि॥ मथुरामाहिजेजेजिनकि
उ। प्रगटेमाधवनिनदुनमिनि॥ कौतुली
लाहरिवाहागये। सकललोकअतिविस
मैभये॥ आएनंदपिनाकेपासि॥ नेदवा
दोअतिसनमिउपिआसि॥ वोलेनंदरम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हैचनस्याम ॥ विरलाईउसंगि हीवलिराम
उलीभपेषेमेरेप्राति । नमविनहमपेमिर
नमपाति ॥ कमलनैनहसिबोलेबाति ॥
विनतीमननइहमारेनाति ॥ है षै स्यामसुर
सोगाउ ॥ पिनाह्लादिहउकहैनजाउ । नंद
लीपेहरिकेंठलगाई ॥ वढिउप्रनंदनमं
गिसमाई ॥ केशवकोप्रचवाउषोर ॥ प्र
प्रचउपियारेवलिवीरि ॥ सकलप्रचाने
हरिकेउप्यारिरैनवसैतिहउउप्रनारि
धीवधुवाईकुतिमनार । मालीनारिउने
टकमारि । कुवजासपीकरीप्रनंनति ॥ ते
रिउधनषप्रमभगावेति ॥ पंचिकरमप्र
गमहिस्याम ॥ करिप्रापेसंगहीवलिराम
यहिलीलाकोइमनैसनाइं ॥ प्रेमभगतिम
पवकीपाइ ॥ कमलनैनकेशवकरनारि
हमदासपतिपरिवलिहारि ॥ ९८ ॥ साषी
कंसराविदेर्ईसपनमिउवीनेवारोजाम
यहिनिसवामनिमहिभइंउ मारहिगेव
नस्याम ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कंसराविडहिसपनेम
पे । अंगअंगनतनिमनउरागपे ॥ प्रातिमवेवी

स्प्रा.
म.
१५१

151

नीउघरैन॥ कंमदुल्लाउग्रगुनीसैनि॥उर
पिसग्रासिभरेउलषावै॥ कंचकमने
निपरिउरावै॥ अपनेसेवकलउलावे
तिनकउईदकहदवचनसनाए॥ रांमच
मनमसभद्दीनाउ॥ भलीभांतिसिउ
लोकवढाउ॥ नेदग्रादिसभगोपउ।
लावउ॥ एकमेवपरिसववैठावउ।
तिननेपेखुनजानापाई॥ मनदमरा।
वैरीभजिजाई॥ जवईदग्रागिग्राकंम
वषानी॥ नातिकालिनिनिमिरिपरिमा
नी॥ सावधानसभिसेवकभए॥ रंगिम
मकैभीनहिगए॥ जथाजोगवैठाएको
ग॥ जोगीठाकुरिजाकेजोग॥ सभकै।
ग्रागैग्रसनभए॥ तिनकैपाछैषरीव
हिगए॥ तिनकैपाछैवैसिवहाए॥ स
भपाछैसभसउवैठाए॥ तिनपाछैच
नरषपरावे॥ तिनकैग्रागैपाईकघो
रथपाछैगजकेग्रसवारे॥ रंगभमग्र
निभनीरसाला॥ रंगभूमकाकहिउव
षानि॥ तिउगवनसुकदेवमहान॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऐसीठाकुरहरिमनहिभगवंति॥खेलहिलेक
कमलाकेकंति॥ईहलीलाकोईसनैसना
ई॥प्रेमभगतिमाधवकीपाई॥नमोवि
श्वंभरप्रिथ्वीधरन॥कलहासपदिपं
कजसरन॥२०॥साषि॥जागेजाग्रतनृप
हरिकमलनैनपतिस्याम॥सुरजागे
जगकेधरणीशंकरबालवलिराम॥१
चौपाई॥जागेजागृहकेधरनृपगोग्वाल
जागेश्रीवलिरामहिदयाल॥जोपवन
पषालेहाथ॥जोदेपरमवरनजउना
थ॥मधुसूदनमतिवालिविचारी॥ई
हमरीमधपुरीपियारी॥सभसेननां
केतूपरिषावडू॥जमुमारनकरिमुनि
परावडू॥रंगभूमिदेषोगाथगाजु॥सप
लाकरहुजगतिकाकाजु॥देनोवा
गेपहिरेश्रेणि॥रामकमलप्रभुसदस्र
मेजु॥मंदमंदगतिचालिरसालि॥व
लेरामग्रहफ्रीगोपालि॥चक्रदिसरु
आरमेडलीसोहै॥पेछविनीनभवत
सहिमोहै॥गोपपरधानवडेलगिनंद

द॰भा॰
स॰
१५२

152

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पवंमिसोभतिभपेअनंद॥ आयेरंगि
भूमकेद्वारि॥ मानुषरूपीअनेतम
गरि॥ हाथिवलपरूक्रोधहिभरा॥ रे
गभूमकेद्वारपहिंषरा॥ गजकैनिक
टिगयेभगवान। बालकरूपीउरषउ
रान॥ वनजिउगरजेजगपतिवोले।
सनिवचननिरमलनिमोले॥ श्रीप
तिसवडुसनापेपेहि॥ अरेमहावत।
मारउरैहि॥ नातरिमारोहसनिसमे
नि॥ नरूसमेनिगजिराषेषेति॥ मूरम
हावतिवातिनमनी। सकेपकूानति
त्रिभवनिधनी॥ गजपतिप्रेरिउअग
पतिउरि॥ अतिमहूमेनभईआनकि
वोरि। सावधानहूपेभगवान॥ अवै
अगोचरअमितपुरानि॥ पीतउपरना
कटसिउकसिउ॥ जपसमेमनमोहन
रसिउ॥ पगउडीदाविसवारेकेसि॥ आ
रिनिरंजनबालकभेसि॥ गजिकेसी
सचपेहिलगाइ॥ ईक्रलीलागोपा।
लहिषाइ॥ संदिसाधिगानिगहेगोपा
ल॥ छिनकछिउरंभीजिगयेकपाल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पेरिनलेजाइंछुपेषुनेति॥ कमलकुप
तिपकमललोकेन॥ मेरिसाधिगजिफ्र।
तिगह्निलह्निउ॥ फ्रतिछुराइंहरिपाछे
गइंउ॥ प्रछुपकरिषैविउभगवान॥ मा
रीकेगजिवालिसमान॥ मारीकेगजि
सिउतिउवाल॥ षेलैतिउपासंगिगो
पाल॥ षैविउपनषपांचम्रहवीस॥।
जगननाथजगपतिजगदीस॥ गिर
गजिगजिभूमपरपंइंग्रामसवधानउ
रिफ्रतिगजिभइंग्रा॥ वज्रिगइंउग
जिहीजीपाहि॥ प्रभुपकहुनकीमा
निमहिचाहि॥ किसवभागेफ्रनिव
हिजाहि॥ नानाभांतिविचारिउदिषाहि॥ ग
जिपतिदरसिउलावैधंति॥ क्रोधीव
उतन्प्रावैशांति॥ फ्रनिमपुसूदनठा
ढेभपे॥ गजिकेसनमुषमाधवगये
मुषपरिदउवपेटगोपाल॥ संउली
उगहिदीनदइंपाल॥ चरनलगाइं
गिराइंउप्राम॥ लीलामात्रमनेतघ
काम॥ लीनेदोनोंदंतिउफारि॥ प्रभु।
अविनासीअमितिमुरारि॥ दंतउकी

द·श·
म·
१५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मल्लकिपुरि दइ ॥ तिकसतिं डगतिप
तिकोगइ ॥ राजकाभागुनकरिआता
ई ॥ कसदंनमहिरिहिआसमाई ॥ दो
नऊसाथिमहावतिमारे ॥ प्रगरिषेलि
जगमाहिरिषाले ॥ तेऊदोतलीनेहथी
आर ॥ एकनामईककलमतार ॥ डहेरे
तिकोंधेपरधरे ॥ दोनोंवीरसहानेष
रे ॥ रकनबूरदोतऊनेगिरे ॥ रामकस
केभागिभरे ॥ षरेसहानेदीनदईआ।
ल ॥ शंकरषणअरुकसकपाल ॥ ग
नकीमकनिकीनीभगवान ॥ प्ररन
पूरवपूनीतपूरान ॥ ईहलीलाकोई
मनैसनाई ॥ प्रेमभगतिमाधवकीपा
ई ॥ जैअविनासीअलषअपारि क
लदासपगिपरिवलिहारि ॥ २९ सा
षी ॥ रंगभूमिमिभीनरिगयेकेशवअरव
लिनाभि ॥ जोकाहूकेमनभसेतैसेदे
षसाभि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ रंगभूमभीतरिरवि
नसाम ॥ आपेसहितिभयावलिग
म ॥ कउनककरितउनहाभगावंस ॥ अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लषग्रगोचरग्रपिनग्रनंत ॥ दसप्रकार
कारूपदिषाइंया ॥ इंद्रकहिस्त्रीसुकदेव
सनाईंया ॥ सभसरूपकरिग्रगरिदिषावे
वे ॥ परसनेहरिभगतिवढावे ॥ मलइम
हवजरसाखावे ॥ वालुकवेगाहमरेश्रीग
मलकेमनिरूपेभंग ॥ जोयोषिसरिन
रिपरघाति ॥ तेजविटेषहिपरेध्याति
तिनजानितुप्रभनरसरवोतम ॥ कल
दासजानेगुरुषोतम ॥ तिनेश्रादेषेश्री
वनस्याम ॥ नषछवमोहनकोरविकाम
मरछलेतेइंहेइंमारपरी ॥ लपतुपिही
संदरिनाकरी ॥ गोपरूमानितुमीनवि
श्राम ॥ पेगोपालनंदलालहमारा ॥ जो
घनागामश्रतिश्रहंकारी ॥ तिनरूकरी
धीप्रजाउधारी ॥ वेदग्रामामानतिनपे
तिनकोमानमरापभमथे ॥ तिनजव
देवश्रीभगवानि ॥ भैसितुतिनकेकवे
प्रानि ॥ तेमनमहिमनकोसमझाव
हि ॥ सुषेवलहिनप्रजाउधावहि ॥ नान
रिमारहिगेरामोरदर ॥ वितलनाथववरै

र.प.
स.
१५४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वलिरामसहोदर ॥ कंसचंदकीपितप्रक
मात ॥ वसुदेवदेवकीपरमसुजाति ॥ ति
नके हृदि हवालकसेन्याये ॥ देषतिनके
हृदे इराये ॥ मारनको हमरे सतन्याने ।
मातपिताग्रसिही विलषाने ॥ कंसमिर
नितहिहीमहिपारिउदेषितुहकातनम
नउरिउ ॥ जोपेउनपेविचारी ॥ तिनको
मतिपरिबेदउजारी ॥ तिनदेषिउप्रभउ
रषवेराठ ॥ ईसहीननिपरमभजगुरुठ
जोगेसुरसमधरैध्यान ॥ परमतनतहै ईस
भगवान ॥ परमतनवसमझका कारण ॥ उ
तिपतिप्रतिपालनसंघारण ॥ प्रगनउ
रषउलीनञ्चकाम ॥ परमतनपैकारन ।
नाम ॥ जउकुलजानिऊरषिञ्चाकरता
पभगवानहमारेभरता ॥ इसप्रकारिकी
पेभगवंत ॥ नृपरिषापेकमलाकंत ॥ जे
सेजाकोहरिसिउभाई ॥ तैसेदेषेकेपाव
राई ॥ समझनेनिरलेपञ्चनंत ॥ कंसकु
पानिधिकमलाकंत ॥ लोकदुईरिका
दरसनकरिउ ॥ कोरिजनमकापापनकुरु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रिजे ॥ हरिमरति कारउनाथ रिजे ॥ परमप्रे
मिकरिहिहृदैधरिजे ॥ लागे करनिलोक
मिलिवानि वेदोनोवसुदैवेनानि ॥ पंक
रखगणप्रदभ्पीगोपालि ॥ गोकुलिवउके
सकेकालि ॥ ईनहूंबालकववकीविउरी
त्रघउफारेईनवनबारी ॥ ईनहीवकुस्र।
यासुरमारे ॥ ईनहीघेनकुदंनविदारे ॥ ई
नहूंकरिगोवरधनधारे ॥ गोपगाईका।
रिक्रपाउवारे ॥ ईंद्रवलीकागरभुमिटाई
या ॥ प्रगटिबेलजगमाहिदिषाईया ॥ ई
हूप्रलंबवक्षासुरहने ॥ पाकेकरनवज्ञा
तिनगने ॥ ईनहूंकालीकेफणिदले ॥ अ
भैहोईकालीग्रिहचले ॥ ब्रजमहिलीला
करीअनंत ॥ राधारमणिकसभगवंत ॥
दसमहसेहाथीवलधरे ॥ रंगभूमकेउपर
वरे ॥ मारिउनेकुविलेउनलाई महाब।
ल ॥ नेबोलेहोईमहाकपाल ॥ कहामल
पेकहेप्रभुकुमार ॥ अतिअनीनभपूकेस
केउदार ॥ बलरूपापपहिंदैघेनाहि ॥ स

नग्रकासतेपायंरपाहि॥ श्रीआबोलीग्र।
तिसरख्याति॥ गोपीसभतेग्रतिबलिबा
ति॥ देषहिसदाग्रनंदसरूप। यहिमन
मोहनपरमग्रनूप॥ भागिवानग्रजर
मरूभऱ॥ देहहीमूरतिदिसरोपर। मूह
कम्रहबांउरग्रबल॥ हरिपहिग्रापेदो।
नोमल नेकेशवपहिबोलेबाति॥ ना।
नीपेनंदबहजसोधानाति॥ मलन्नेष।
कीजेहमसाथ॥ श्रुसीहोईनबहमरेना
थ॥ राजाकेननिमहिसभदेव॥ वसहिस
दासंगिग्रलषग्रभेव॥ सर्वदेवमैग्रूप
शरीर॥ चुलकुंगमहिदोनोबीर। ली।
लादेषभूपसषपावै॥ हमकोसवरान
वीरपहिरावै॥ हमकोकोउगिरंउरिवा
वै॥ नंदमहरकोबकुनबडावै। तिनको।
बोलेश्रीभगवान॥ चुलकुहमकुहिउग्रम
हिसमान॥ वडेदंतिनमहहमसकुमार
देषकुनीनग्रनीनिदीबारि॥ सानहीन
हैहमराकंस॥ सभषोवैगाग्रपनावंस
फुनिबोलेप्रभकउबांकूर॥ हमनेनम।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अतिबलभरहूर ॥ ताषीमारिउलीलामाइ
कहुखमलगोननमरैगाइ ॥ विनतीब
नहुप्रभुभगवान ॥ जगमहिकोउनम
हमनान ॥ कबुनकोहहमनमसिउल
रै ॥ राजाकोआगीआसिरधरै ॥ देषहिके
सबकेपिनमात ॥ कोमलघरेहमारेना
त ॥ कहाबालपेकोमलघरे ॥ उभेसआ
सिभरेहहोईदीन ॥ परबसिबोधेअति
बलिहीन ॥ मनजपकउमचेअनेन ॥ चं
दूरधवरलागेभगवेन ॥ मइकसिउसं
करषणलागे ॥ भामिबेउदेनइकेजागे
ब्रलहिकलबांडूरेसाथि ॥ हाथइसिउ
हिलीनेहाथि ॥ पगिसिउपाइभजासिउ
बांहि ॥ कबरूआगेपाछेजाइ ॥ मूषीमारे
वेलेचपेरी ॥ झ्वानीसिउझ्वानीकीमेरि ॥
कोधेमाथिलगावहिकंध ॥ भलावसिउ
हरिसिउसनबंध ॥ बजरसारकेषावभग
वान ॥ ह्राउमासकेमलघजान ॥ चारन
भवेमलहूबैकेअंग ॥ लागिलगिकेपाव
जीकैसंगि ॥ दैनउठाएहोनोहाथा ॥ महा

र॰ज॰
म॰
१५८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सउमनिक्रोधहिमाषि ॥ हृदेकमलैकेकौ
उप्रहार । उरमनिदोषीवजेगवार ॥ प्रनि
ष्विनकेशवभगवान ॥ माधवन्माने
फलसमान ॥ पकरिभुजानेकोहरिल
इ ॥ लीलाकरहिदिनोदिवनइ ॥ सिरप
रितुवकृतीवार ॥ महाराजमथुमारन
गार ॥ फेरिफेरीपटकिउभूयामाथ ॥ न
किभईजेमथुमूरनहाथ ॥ हलधारन
इकउारिउमारि ॥ रंगभूममहिपरीउर्क
रि ॥ आयेमलष्ववृत्रगिनन ॥ लागनला
गेसंसिग्रवषवुरान ॥ इंकइंकमूरसभ
हैकोदर ॥ निकसनिउसभहकीगइ ॥
जैसेमलहनेचरित्राम ॥ कइकमारेश्रीव
लिराम ॥ रंगभूमहिमरथुपाई ॥ सभैउ
आरहहिलीयेउलाई ॥ तिनसिउयुलन
लगेभगवान ॥ अरुपांकरषणपुरषपु
रान ॥ नभमहिदेववजेवलेआये ॥ रामक
लकेरपंनपाई ॥ लागेदेववजेम्रवजान
जैपुरषेनमपुरषपुरान ॥ देवपुरपकी
वरषाकरी ॥ हरिमुरारनिहदेमहिधरी ॥ ना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैकलविसभगवंत॥ प्रकनावैवलभद्र
प्रनंत॥ प्रकसभनाचहिंगुआरपिआरे
जैश्रनंतसभजगतउधारे॥ वोलितकेस
महाप्रज्ञान॥ श्ररकरङकेशवभगवा।
न॥ ऐसीवातनकरतिसुजान॥ मलज
पमहिहनेप्रान॥ वोधकुसभहीगोप
गुआर॥ वसुदेवदेवकीउरकुमार॥ मा
रङदेवकेप्रकुउग्रसेन॥ ईनकुपिआरोपं
कजैनेन। कंसकरेयहिवचनउचारि॥ कु
टेकलमकुंदमुरारि। नानकालहरिकउ
नकुकरिजे। ऊपरिमेचजाईप्रभुवरिउ
कंसनिकटिजाईठाढेभपे॥ प्रारबगुणन
ननितप्रतिनपे। कंसवलीनवकेरसमा
रि। दोकरलीनेदोहथीआरि॥ वेउसिप
रिलीनेहाथि॥ निकटिकंसकेत्रिभवतिना
थि॥ कंसकलकउचोटिचलाई॥ हरिमुप्र
मुदनलीपेवचाई॥ कलकंसकउपक
रिआवाहै॥ सकलसंतनसिउउरनिवाहै॥
कंसनिकेशवगाहिआजाई॥ ईनजेनपि
रैनचरनटिकाई॥ तेजप्रगटिकीनाभम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वान॥ प्रभणामाने दनप्रारषप्रगनि॥ इ
तिनि इच्छा गै ह्युनी धरी॥ यह लीला उ
रघोनमकरी॥ लाजु कोरि कनेजसमा
नि॥ क्लानिनेकाडिगे भगवानि॥ जाव
मेरक्लानी हिषराइ। केपिउ केसन देवी
जाइ। नेनमंदवहिगईयाउगईं। वेगि
लीयागहि केपावगईं॥ गहउ रोपगहि
लेउ श्यामान॥ केसगहि उनिउ श्री भगवा
न। कंसकिसीसने प्रानिकारे॥ छिनम
हि केपाव केसमंघारे॥ गहिउ चाननेवि
भवननाथि॥ अतिपवित्र करपंकजा
साथि॥ षेवि चाननेभूमि उनारिउ॥ ऐर
वरिवभगवान ढिषालिउ। षेविउ केस
जहाँवनस्याम। केसपाल निहराहरि
नाम॥ क्लाउ केसकानन भगवंत। कंस
कपानिधि कमलाकंत। वैठेजाइ प्रभु
विसरानि॥ मिगवि उरिमनमल्ल हिभो
नि॥ हाहाकार जगनिमहि भईया॥ मरा
वलीराजामारगया। देवदुंदभकीना
ओकारु। जेभगवंत अनंत अपारु। केस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

राई के आठो वीर ॥ देषि वीर दुलष धरी नी
नधी ॥ कस्सचंद्र को जानन देहि । वैर वीर
का ग्रविही लोहि ॥ आठो मूरष आये धा
ई ॥ आठो आने काल भ्रमाई ॥ हलधर ली
ना धंन उठारि । महाप्रभ को लगी नवारि
एकै वार सभु सिर दइ । निकसि नि उआ
ठो की गई ॥ देव ग्रह रूप को वरषा करी ॥
जै कै रूना मै अपदा हरी ॥ कंसराई की
आई नारि ॥ नैगन सौ सम्र हकर दिउ कारि
आठो वीर की आइ नारि । भरता विन सभ
जगत उजारि । भरता नैली नै गोरि दुठाई ॥ अ
निउ खपाई जो कैहैन गाई । लागी करन
महाविललाप ॥ हाहे केन मिरावन नाप
हा भरता जो मेरे प्रानि ॥ विधवा को नीर
म भगवान ॥ तुम विन मै आस भसे मार
मून कृआराज उआक ॥ संनीम पुरहार
वनार ॥ संने मंदर धन वंडार ॥ नकिमार
मेमार उषाईया । फल पाई आजो कारम
कमाईया ॥ कस्सचंद हे पुरष पुरान ॥ स
भिभै भंजन श्री भगवान ॥ ईसही नेनि

द.पा.
म.
१५८

158

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कसेसंसार। प्रतिपालेकुनकरेसंघार
धर्मसेथपकेराघनकूरू। सभविधिस्र
नघरामउदारु। केसनाराजवरोवनम
नी। सनतमहाप्रभमूरुओउनी॥ आपेक
समभानीपारि॥ मानूकोहरिमारोवारि
दाउदीपेसभकामकराई॥ केसकल
केमाहिसमाई॥ अतिवडिभागीराजाके
स॥ सभुनिसतारिओअउनावेस॥ को
धअंगहरिसिमरनकरिओ॥ महाकठ
नभवसागरतरिओ॥ चलनेवैठेदिन
अरुरैनि। षानेपीनेवोलनिवैन॥ ना
नैध्यानतिनिकरिओपालि॥ भगिनी
कोसतिहमरोकाल॥ विनरहेषाइ
रिहीमाहि। पलभरिश्रीपतिभूलतहि
नाहि॥ समतेअतिवडिभागीभूप॥ हरि
जनपाईउकलसरूप॥ अतिऊंचीपर
किरतिगोपाल॥ वेरकीपेमारेनंदला
ल। भजीअहिमोप्रेमभगवान॥ कम
लावललभकपानिधान॥ पहिली
लाकोईसमेनेसमाई। प्रेमभगतिमाध

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीपांई ॥ मधुरामलयबलधपारि ॥ क
लदासपतिपरिवलिहारि ॥ साषी ॥ मा
तपितापहिहहरिगयेकेपावयलषय
भेव ॥ पहिचानेपिनमानाजीहनदे
वनकेदेव ॥ २ ॥ चौपाई ॥ मातपिताप

हिकेशावछ्रावे ॥ रामकसछाईसीस
निवावे ॥ मातपिताविसमेमनमाहि
पदानीहतनहमरेनाहि ॥ गलिमिलि
सकैनदीनविचारे ॥ प्रगटषेलभगव
नदिषारे ॥ देषनंतवालकतीनाहि ॥

द॰ पा॰
प॰
१५५

159

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निरचेकाजाइउमनमाहि ॥ बाहिबारि
करिरहेभये ॥ बरिद्रदेखिविसमैहोइ
गये ॥ माधवमनमहिवातिविचारि ॥ ई
नकीमतिभ्रमिभईउजारी ॥ घेलईना।
ङ्ईहमगारिनिहारी ॥ भ्रमजानहरिहि
हृदेधारी ॥ हमलीलाजगयनीदिखानी
मोहमाहिकछुबोलहिबानी ॥ मनमो।
हनयहिवचनउचारे ॥ महामोहतिन
अपारिजारे ॥ तनोविनैपितमातिहमारे
रिणहमरेमाथेपरिभारी ॥ विनसेवाग
तिनाहिहमारी ॥ सकलधरमफकउति
उपजावै ॥ सोसुतमातपितानेपावै ॥ मा
नपिताकीसेवनकरै ॥ महाकष्टनर्ग
पराधीपरै ॥ तुम्हतेजोवेमनबहोई ॥ ति
हसमानपापीनहीकोई ॥ महाधामन
जमपालहै ॥ वनीमातिरिसिरिउपरिसहै
प्रतिदुलपावैपरमगवारि ॥ तनप्रपन
कपिमिलेप्रहार ॥ प्रसालीहोईप्रउध
हमारु ॥ निसदिनसेवाकरोनमारो ॥ व
रनहुश्यागेमनलकुधरो ॥ कहनतमारे।
रिलकोनरो ॥ किस्याकेहिमुखनेनाति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सनाई। तुमसहमनेसुखपाईउनाहि। बाल
करोहिगोरहमहिकेल। बहुरहिषावहि
ग्रिहमहिषेल। बहुविधिकउककरहि
कलोल। वैलेप्रेमनतोनलिबोल। मा
तापितासुनेनतिसुखपाहि। सोतुमसहम
नेपाईउनाहि॥ ईहसषनेहजसोधेलहि
मा॥ अतिरसालसुषनेमोनभईया। रहे
उखेहमरेसंजोग॥ ननिमनिकयुनभोगे
भोग॥ अबहूंकीठिलगावहिनाहि॥ दईमे
करकुनीहिरहेमाहि॥ हमअधीनबाल।
कसुकुमारि॥ कहेंजाईनमकरोनविश्री
रि॥ नमनेभलेजसोधानेद॥ सुफिकउजा
नेथेसबकंद॥ जोबसुकूंदईहबचनसमा
पे॥ मातपितासुनअतिबिसमाये॥ मोहमा
रिबोलीमधुबाणी। अतिमाईआवीसा
रेमिपानी॥ ऐसीमाईपाकसपमारी। मा
तपितासभिवातिबिसारी॥ दोनोलले।
केरिलगापे॥ फ्रुनिमनेकुकरिगोदबैसा
पे॥ नेत्रप्रेमजलधारावती॥ बहीप्रीति
केसुजानिनकरी। मसतकचुमकेरैपि
यारि॥ हिनकरितनिमनिउरैयारि॥ मा

द०श्री०
म०
१६०

160

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नपिताकेबोलेफेरद॥कंसमिलायेयेमति
येपु॥मद्दजमाघवैसेभगावेन॥मानपि
तापहिनिकरिनारान॥ईडलीलाकोई
सनैसतनाई॥प्रेमिभगतिमाधवकीपा
ई॥कमलनैनकरुणाभंडारि॥कल
दासपगिपरिवलिहारि॥१०॥साषी॥
उग्रसैनआईजेबकरिवरनशरभगवान
क्रपाकरीकलमलहरनकेशवक्रपानि
धान॥१॥चौपाई॥उग्रसैनआईउहांईरी
न॥प्रभकेपगासिउलमोप्रधीन॥संभमे
उरकीकुंजीआनी॥होईअधीनिपहि
चाननवषानी॥महाराजजीकुंजीलेऊ।
किसीसंतनअपनेकोदेहिऊ॥तोकोबो
लेश्रीभगवानि॥संतसहाईक्रपानिधा
नि॥राजलेहुतमसंतसजानि॥वचनह
मारेलीजहिमानि॥कछुचितामतिम
नमहिकरै॥हमतमआगैसेवाकरै॥क
वनकीरघरनीकेराई॥तमसेवहियो।
तमरेपाई॥तऊकोदेवभाईमेउंउ॥त
मतेउरैसकलव्रमंउ॥ऐसीक्रपाम।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भगतिपरिकरी॥ उग्रसैननसिरछत्रधरी
कवननभनकेराजारहेन॥ नमरैथ्यागेह
मआधीन॥ राजतिलकनाकोहरिदई
पा॥ अतिप्रसंनहरिसेकबभईया॥ ज
सिभेजारदवकसमुलापे॥ तिनकोउं
हकहिवचनसनाये॥ किसीबातनको
सोकुनकरो॥ भूपदेवनेनैकुनडरो॥
केसतुमारीरलीवलाई॥ जेत्रिभुवी
जैसोतिभुवाई॥ देसदेसनेआवय्याई॥
जोअधीनयेभागसिधावे॥ सभनरूप
रमेहरिकेचरन॥ महाराजजीनमरीब
रनि॥ कृपाकरीतिनपरघनस्याम॥ स
भजदुकुलकेपूरेकाम॥ सभधनलि
उकीनेभरपूर॥ महाराजनेकष्टनदूर
कृपादृष्टितिनपरिकृनिकरी॥ कृपा
सिंधुनिरमलनाहरी॥ नहपुहसभ
संदरभवे॥ सोकरोगसभदूरिगवे
जादकुलविगसिउग्रहपसमान॥ ह
नवसंतनसेश्रीभगवान॥ प्रभसभतो
षेप्रोषोसंति॥ कमलनैनहरिकमला

द॰ शा॰
म॰
१६१

161

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केलि ॥ इहलीलाकोईसनेसनाई ॥ प्रेम
भक्तिमाधवकीपाई ॥ जैजउनाथिष्म ।
नाथिमहाई ॥ कल्सदासपगिपरिवलि
जाई ॥ २०२ साषी ॥ वहुरनंदजीपहिलाल
जीआवेकेपावराई ॥ पितासतकउप्रीति ।
कीरिहेकेहलपराई ॥ १ चौपाई ॥ फुनि
हरिनंदपितापहिआई ॥ चरनकसिउआई
सीसनिवाई ॥ नंदपिताहरिलीपेउठाई ॥
हितकरिराषेकंठिलगाई ॥ सीसचूमअति
केरिउपिआरि ॥ वढिउप्रेमप्रभमतापिअपा
रि ॥ नववोलेमनमोहनवानि ॥ विनती ।
ममञ्रपिआरेतानि ॥ मातपितादीनेषेउ
॥ तुमोकरीहमरीप्रतिपार ॥ हमतेअति
लेगराउकरी ॥ कोऊनतुमहहिरदेधरी
माषनषाईआप्यमातुराई ॥ अतिसषदीना
जसुधामाई ॥ कंसहमारेदोषीपरे ॥ नाह
तेतुमनेकुनउरे ॥ पोषेताषेकोआसने
ऊ ॥ धानतुमारेपालिउदेऊ ॥ कहामईऊ
पितमाताजानिऊ ॥ गऊसनेहतुम्होसे
गिवनिउ ॥ चलहूनातिसनावउगाउ ॥ जि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भवनऊपरिनमरानाउ॥जवईउकहिअ
सोदामाति॥कहिनभइनंदकछुबाति
बढिउसोकुअतिमुरछुभईया॥अतिउ
रवपाईऊनषसकिगईया॥रषउपरि।
गोपरूपाईलईया॥सषनेअधिकमरा
उलभईया॥हरिजीगोपरूकोधनदये॥
लबरनपविउतमनये॥सभगोपरूलो।
बांधेभार॥हरिबिनजानैसभैबिगाए॥वि
रिआभयेकेपावतेउआर॥फिरमरदेष
हिकरहिनहार॥आगेचलिवइरामविप
वहि॥नेदनदनकेपगिलपरावहि॥गये
कहमितउगोपउभार॥हरिदेहेनबिनंद
कुमार॥गोपउआर ब्रजभीतरआवे॥ज
सधाकोउआईवचनसनावे॥मधुरारे
रामचनसाम॥जिनप्रेमभिब्रजकेका
म॥जसधासतिमराहोईगउ॥बढिउ।
सोकमिरनकसीभउ॥मनिउरवषाईउ
हरीकीमाई॥ईऊउलुमषिनेकहिउन
जाई॥उरपमसामिभरेदिनैरैन॥भरिम
रिउरपंकजनैन॥हरिकारजनतनिमलि

द॰ग॰
प॰
१८॰

182

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भलराईश्या ॥ सुषनेश्रधिकमहाउघभ
ईश्या ॥ श्यामठोपहरिसदारिनराति ॥ उकी
उकारैमोहनन्मति ॥ जसुधारानीजी
कीपीर ॥ कहनेहदानवांधोवीर ॥ यही
जनधोरीसीकीही ॥ उरेपीरियहज्ञा
निनसही ॥ इहलीलाकोईसनैसनाई
प्रेमभगतिमाधवकेपाई ॥ केशवक
सभुक्रमुरारि ॥ कलदासपगिपरि
बलिहारि ॥ १०२ ॥ साषी ॥ मातपितादोऊ
सतकउसभकीनोसंसकारि ॥ ब्रजमहि
वीनंदनेदजीश्रववसुदेवकुमारि ॥ १ ॥ चौ
पाई ॥ मातपिताश्रनिवढेपिश्रारि ॥ को
नेसुनकुकोसंसकारि ॥ भद्रमेषप्रभक
रवाये ॥ केठज्ञानेऊविमलमिलाये ॥ श्रव
निवेदकुंडलपहिराये ॥ हरिगुनईउसक
देवसुनाये ॥ गरगासिषाईऊंगायत्रीजाप
सिहगिपनेमिरिजावेनाप ॥ ब्रजमहिपे
नेदनेदश्रहीर ॥ जसुमततसघनस्याम
शरीर ॥ मथुरामहीवसुदेवकुमारि ॥ ष
चौभयेमकुंदमुरारि ॥ श्रविजगनाथदेव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीनेंह॥ जैजगदीसुरघुवरतिकेंह॥ वस
हैं श्रानेविप्रडुलाई। कक्षजनमहीनो।
वीगाई॥ जवजनमेषेकस्पनेन। नवक
हिप्रावसहैवमहेन॥ वसहैवकहिप्राव
हैभगवान। वेपमालवनेछुटेनारान।
हससहंहैवछुगागाप॥ विज्ञीवरइंह
वालकनाई॥ नेगऊप्राहीमीनिहकाल॥
कहाकरहनजेहहरिसेवाल॥ प्रेसणं
वहिमधुपकवाति॥ धीरवंउसेमधवासम
ने॥ घउरहहवसहेवहिगाई॥ मझापहंव
रकूपुरिपाई। मालाकेवनकीपहिराई
मवणीसिगरूपकेपाई। मानवकमोती
हीपञुपार। केचनकीहीनेवरूभाति
प्रजेअझनकरइहनाति। पेनकस्पके
पिनउहाति॥ श्रतिप्रसनघ्रस्पनिसमभ
पे॥ मगलवचनकस्पकउकउहप॥ सबी
होइसंहीचनिस्पामश्राजनेजहीघव
लिताम॥ हेईश्रातीसमसभेसिधाव॥ वह
गिइश्रागिसंगानिजनिश्रावे॥ तिनकूहा
श्रसिपरिहरिग्रलगावे॥ नमोनाथ्रवसहे

ह.ना.
म.
१६३

163

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सज्ञावे ॥ नमोनाथगोवर्धनजैगोपाल
मकराभंजनदीनदयाल ॥ त्रिणावर्त
केषानिशानि ॥ वकप्रसुमारनश्रीभ
गवान ॥ जमलार्जुनऋषिउधारे ॥ गन
कमेरकोदेऊउवारे ॥ जैशंकरषणहने
प्रलेंब ॥ वहुविधिषेलेवृषकदंब ॥ पीत
वसनवैजंतीमाल ॥ जैमनमोहनमदन
गोपाल ॥ जैजिहसकलेदुष्टविदारे ॥ जै
जिहसलेसंतउवारे ॥ जैजिनऊषलसा
पबंधावे ॥ जैजहनामदमोदरपावे ॥ के
सीमारनश्यामशरीर ॥ वहुविधिषेलेज
मनातीर ॥ जैजैकेशवकृपानिधानि
वासुदेवजैश्रीभगवानि ॥ गजपतिमा
रनमलप्रहारि ॥ सभसंतनकेप्रानअ
धारि ॥ जैजगदीसरकंसकेकाल ॥ सभहि
मादवकीयेनिहाल ॥ जैसीकसदेव
कीनेंद ॥ किधागुणगावोहममतमेंर
ब्रह्मापरैनजसकोपारि ॥ सेसरहेगुनव
रनहजार ॥ करववेकीगावहिनाम ॥ म
प्रराममलनमोचनश्याम ॥ केशवअपनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीरतसनी ॥ तिकरित्रलापेसभहीतुनी
सभपहिरायेवांबार ॥ सबरानपटंकारक
ईहस्मा ॥ कुंडलमकरसवारबकीमालि
पहिरायेतिनकोगोपाले ॥ मंगनजनभ
पतिसेकरे ॥ कलबंदसभयनसितभरे ॥
हाषहोईनवसभैसिधाई ॥ चिरजीवकु
वरदेवसजाये ॥ चिरजीवकुंदेवकीसनं
दन ॥ वगाउनीतिनीनोष्ठरबंदनि ॥ वसुदे
वेत्रिसमंगलभये ॥ तिनहरिचीतरिषा
वहिनये ॥ संसकारकाकीआवषानि ॥ जे
पीश्रहिंश्रेसेश्रीभगवानि ॥ ईहलीला
कोईसनेसनाई ॥ प्रेमभगतिमाधवकी
पाई ॥ जैसेनतुनाथश्रनाथसहाई ॥ कुल
दासपगिपगिबलिजाई ॥ १०३ ॥ साषी ॥ सं
दीपनकैरामहरिआयेदोनोवीर ॥ वि
द्याअपरनिमहाप्रभगुणनिधिगति
गंभीर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रामकलपांपेकेवले
जिनकुंडकोरकनिरदले ॥ संदरासि
पसिदोनोवीर ॥ चलेसरावनिसभजनवी
र ॥ सभआसक्रंतेतिनवंदनिकारे ॥ ईक्कांवे

स्वा. भ. १६७

164

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भ्रमेड़े सगरे । सभ को सीष निसी को दरस
आपन संघ की सूने लई । अैसा प्रभ पा
ये के आई या । जा का पारु न कि न ई पाई
या । मानुष देह धरी उ भगवान ॥ मानुष
करम करहि नाना न ॥ प्रगी अबे तीव से महे
न । नाम से दीपन परमसु ज्ञान । कसप
गोत्री विदिआ वेन । तो के आई उ पुरष
मने त ॥ हि न सिउ पर सो गुर के पाई ॥ स
तिगुर दो नोली पेउठाई । हि नु करि राषे
के बिलगाई । सं कारषण अहके पावन
ई । देषा रहु बैठा पे लाल ॥ राम कसप्र
तिदीन दिआल ॥ सतिगुर को प्रभ बिन
ती करी । हाथि जोकि अति प्रेम महि भरी
बिनै सुनहु गुरदेव महानि ॥ नमरीम
न सभ बिधसु ज्ञान ॥ बिदिया पार ति
नमारे आवे ॥ नाम तु मारे हम सुन पावे
व सु देव पुत्र दो नो जुड़ कउर ॥ म धुरा
प्रीहमारी दउर ॥ मधुरा ते सतिगुर
पद्दि आवे ॥ वउ भाग मिअ बिदा सन पावे
कथ्या करहु हे स्री गुरदेव ॥ यीहै की सभे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कौंगे सब ॥ अब हरि अैसे बचन उचारे ॥ प्रेम
भरे अति मति उजीआरे ॥ सनि सनि गुरके
भाव की बानि ॥ हरे माहि अति रुची हित
नी ॥ बहुर नभला सनि गुर जी कही पा ॥ ब
डे भाग तिहारा जान हम लहिआ ॥ जो कछु बि
दिआ ज्ञान बिबेक ॥ पाछै कोऊ न राखी
एक ॥ बेद पाठ बोधंग हम साधि ॥ पाछे
न की त्रिभव बिना धि ॥ सभै पाठ बोध
सब ठाईं ॥ पठे लाल जी दील न लाई ॥
बिदिआ पारति लगे भगवान ॥ सर शं
कावण तृणषष्टांन ॥ सब देव हू के गु
रन स्वाम ॥ पूरन ब्रहम सीन अकाम ॥
तो सनि गुरकी सिष मन धरै ॥ ईक्षा वा
टी कउन कि करै ॥ बेद पाठ पे अंग हुला
ष ॥ पाठे हैं न की त्रिभवन नाथ ॥ राज ।
नीत बिधि शास्त्र पौ आर ॥ पठी कल जी स
भै अपार ॥ चउ सठ दिन महि दीन रहै ।
आपे रे कपाल ॥ सकु बिदिआ हरि हि ।
डे परी ॥ प्रभ सनि गुर पहि बिनती करी
हाथ जोर बोले गोपाल ॥ बिनै सनो गुर दे

दं.का.
मं.
१६४

165

© Dharmartha Trust J&K: Digitized by eGangotri

बरईग्राल।नमविदिध्याकरिकपालि।
षाई॥सभहमरेघरमोहिसमाई॥जोई
छासोमागोदान॥राषोसमैनमारामा
न।जवहरिप्रसेवचनउचारे॥नवगुर
पतनीपाहिसिधारे॥पतनीकोगुरवच
नसुनाइआ।सुननीयाहउअतिहीवि
समाइआ॥रामकृसइहिदोनोवीर॥अ
तिबुधिवंतनगतिगंभीर॥मातकालवि
दिआसिषलर॥पेकपेकदिनइंनकीभ
इ॥वइनकालवालकसमकी॥पेको
विधिपामनमहिधरै॥चौसठिदिनमा
हिसमसतासि॥चउसठिविध्यासिषेकु
मारि॥पेदोनोवसदेवकुमार॥मानुषहो
हीनसुनरीनार॥देवकुकेहैपेगुरदेव
जिमथिहिकरीहमारीसेव॥पहनिह
याहमरेमनमोहि॥परमपुरषहैसं।
सानाही॥जोईछासोमागोदान॥राष
नकुसहमारेमान॥संदीपनयहिवच
नसुनाये।सुनपतनीमानेअतिसुषपाये
नातिकंनपहिकीउचार॥अेसेहैवलदे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कुमार॥ हमतासन नमागर नेलईया॥ ध्यान
देहजेकाने रईसा॥ फरीदिश्याल गुरवा।
हीश्रा ईया॥ रामकमलकोवबनमनाई
या॥ सागर वोरिउमेरावाल॥ प्रानपिया
रामनपालाल॥ प्रभदोनमोगारूवनि।
त्याम॥ श्रवरवाननेतीरदाश्रकाम॥ वइन
नेमलाभवनेसरकही॥ गुरकीश्या हा।
हिरदेमही॥ रथपरवैठदोनोबीर॥ संक
रषणश्रहस्यामणगौर॥ होकरीउरषभी
भगवंत॥ कमलकपालिधिकमलाकंत
ईहलीलाकोअसनेमनाई॥ प्रेमभगत
माधवकीपाई॥ कमलनैन-॥१०४॥ सा
षी॥ आगेसागरतीरप्रभहलधरश्याम
तारि॥ मागरवइनेमेरायधरीकीनीबान
जुहारि॥१॥ चौपाई॥ रथपरवैठदोनोबीर
संकरषणअहस्यामशरीर॥ केशवको
रथजगमगिकरै॥ दसोदिसाकेतमको
हरै॥ होकरीजेरथपरमानेद॥ केशवा
कमलनारीमकरंद॥ ह्विनमहिश्यायेसा
गरतीर॥ रामकमलजगाउधानधीर॥ सा

द०मा०
प०
१८८

168

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गरउठिउमूरतिधारि॥ माधवकैपगिक
रीज्ञहारि॥ करीपरक्रमालागापाई॥ बा
रिबारिपगसिउलपराई॥ चलीसंतउंउ
उनाकरी॥ सागरकीमतिप्रेमहिभरी॥ बे
रुआनेनालस्रपारि॥ वउमोलकेसुक
लाहारि॥ हरिकोउस्रपेप्रेमहिसाथ॥
सनमलिदाढ्यजोरेहाथ॥ ह्रायजोरु
लागाउनगान॥ नमोनाथनिरमलना
गन॥ अलषभवनकेसाजनहारि॥ ना
मोनाथसाबेकारनारि॥ जगकीरचना
चीअपारि॥ नमेनाजानेनेकुगवार॥ अ
तिगुनीनपगगंगाधारि॥ तीनभवन
अबेरनविउरा॥ वलछलवावनविस
अपार॥ सदाविराजउवलकेउथार॥ से
षवैनप्रभपरमउदार॥ संतउदारनउ।
रविउरा॥ करुणासिंधदरिउनिवारि
वैदरषगपतिकोअसवारि॥ गुणनिधा
नेजगकेआधार॥ जिनहितलीनेवउ।
अवतार॥ दीनमह्रीकेकाटेभार॥ धर्म
पंथकेराषनहार॥ रामकलसुरषोनम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

घ॥ सभ जग जै त्रन मारे हा घ॥ बेद रटहि
जेत्र धाइ घार॥ सेम सहं घ्रम घ करत उ।
वार॥ प्रवर विवेक नहे हिन पार॥ हीनहे
हैगिर परे इ घार॥ कवन कोर है हैं किया।
जे सक रउ॥ पेक तेम का पार न लहउ॥ व
उ भागि प्रविर दरशन भइ पा॥ दोष र
घर हदै घन न गइ पा॥ मह हाम उकहि को
हा सनाउ॥ पनन उ पार न त्रमरा नाउ।
भगव त्र लतार न नमरे चरन॥ हे प्रभ र
उपर पंकज सरन॥ हे प्रनेन न कछु प्र
सिप्रा की॥ पपनि रमेरा हहे परी॥ कि
उप्रा पलखी नाराइन॥ हे ररमे केक उ
व पाति॥ न वबोले जगा गधाजन द्वारि॥ श्र
घेत्र ले घ घरे मत्र पाति॥ सति गुरहु म
कउ आग पा केरी॥ सोप्रा बारह मसि रवे र
पती॥ गुरस नन मरे जल के माहि॥ बेमि
लिया इ देग्र हम नाइ॥ सागर बेलि प्रेग्र
निहो ई दीन॥ हे प्रभ नत्र मभ विघ प्रवीन
हमरो भीन र वाल कन्नाहि॥ नमप्र भसभ
के हिरदे माहि॥ तीन भवन जो जी प्रकी।

र.रा.
म.
रु.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जानि। तुम सभ ज्ञानन की भांति
सव की सभ विधि ज्ञान न हारि। सरव
विद्या की हो करतारि॥ दैन शंषासुर
निवल वान॥ जल महि वसे महा अ
ज्ञान॥ मत उनयसि ग्राहो वै वाल। सभ
किछु ज्ञान उ श्री गोपाल॥ केशव सभ
किछु ज्ञान निहार। जान बूझ की प्र
छि मुरारि॥ लीला करै अनेक प्रका
रि। परमानंद कुंद मुरारि। जब सागर
है विनती करी। सुनी कृपा निधि श्री
नरहरी॥ कूद कल जल भीतर परे॥ दे
उ भया जल कउ तनक करे॥ दैन शंषा
सुर मारि उ स्याम॥ प्रभ अविनासी सह
म कामि॥ कीनो नाका उदर विडार॥ के
शवली ना पांशुति कार॥ पांचजन प्रभ
जी को संष जाते निकसे वेद अशेष। इं
न शंषासुर दैन चुराइ॥ संष प्रभु का थ
रिया क्षपाइ॥ गहि राषि आ पाछा ती मे
हि। पल भर संपाहि छाउ ते ना ही॥ नारि
विदारा मुरारि मुकुंद॥ शंषली आ कदि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पमानेद | रामकमलेसंषत्रनीत || म
वेधर्मकेदोनोमोन || धर्मराइकेरूप
रिउमार || संषवना इंउकसुनरार ||
संषवना इंउओवभगवेन || नरकवी
वथेजेनेजेन | संषसवलिनकेकनप
रे || नरकनिवासीसमतिमनरे || धर |
धरत्रूपचनरमजसाम || समेसिधा
रेवैकुंठधाम | भलेमनापकसभगा
वान || किहिमषिकोजेसजसवषान ||
संषसवरसिउप्ररषप्ररान || नरक
कीथावैकुंठनारान | जोपरकिरनमो
रूवउरार | वारवारजाइभेवलिहा
धर्मराइपुनपेरीकान || प्रनिमले
केपेतिनकेपान || संषसवसनधर्म
उराइ | कउनवलिमफिपरिआइया ||
धर्मसंषसिउधरिउध्यान || शेलषज्ञा
वनिकोवलवान || वेदरिचानिकसी
प्रनासाप | धोलमजावनत्रिभवनना
प || धर्मधोलकासवरूपछानिउ |
कलध्यानचरटभीतरिध्यानिउ || इति

र. पा.
म.
१६८

168

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ममनाथन ह्रजाहोई ॥ पंचजननसोशं
खेनकोई ॥ ईद्रनोशंखकसभगवेन
आदिमदरथेनाहिनथनेन ॥ धाईउ
ननमनस्रानविसार ॥ बउभागीजनप
रमउहार ॥ प्रभपगिसनम्रविजाईगि
रबईया ॥ कसप्रमाइक्रमारथभई
या ॥ प्रभकउतीनपरक्रमाकरी ॥ ह
रिम्रानिहूदेमहिधरी ॥ तीनकोउउ
उतिमस्थान ॥ हरषभपेखतिजनकेप्रा
न ॥ निपरिप्रभकेउआदरकीउ ॥ ह
रिकरनलप्रपनाकरधरीउ ॥ प्रभक
उविनेसनाउसंत ॥ भीनरिवलीपेखी
भगवंत ॥ आजदीनहरउभईगेसनाथ
सषनिधपरसिउप्रभकेहाथ ॥ मंद
मदगजचालनसाल ॥ भीतरचलेका
लकेकाल ॥ धर्मस्रपापसिंघासनलि
आईया ॥ आपह्राथकरिप्रीतिविछा
या ॥ तापरिवैसेस्रीभगवान ॥ कमला
वल्लभक्रपानिधानि ॥ वैसेसाधा
भयावलिराम ॥ निपरिविरानहिराम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सरस्याम ॥ सजालागाय मेश्रनिकस्त
ग्रिह्मसहिश्राये सभई:खेहरन ॥ तमक
सकोपोरेपाई ॥ पुगिअस्तलीनासीस
घराई ॥ वेदनवाविउपुरसमरोध ॥ उ
हपपातनतसीसनंवध ॥ निनसिउ।
सजेप्रभकेचरन ॥ दीनवंधनैनमतीस
रन ॥ तिलकलगाईओहरीकेभाल ॥ प
रमसहानेमदनगोपाल ॥ वस्त्रवाये
मोलअपार ॥ प्रभकोपहेजे वारंवार ॥ श्र
निवाचीसोपेमाथअनिमेंतोबेपउ
नेहाथ ॥ केरमिलायेमकनाहारि ॥ ला
लनबाहरजोनअपार ॥ कुनअरबी।
वेजेनीमाल ॥ पगिलेकहीजलाईस
कलि ॥ अपप्रभाईगेसंनसजान ॥ वि
घवनिपजेआरवउतान वहूरोअपे
भोगअपार ॥ अवेक्रिपाकरीरामसुरी
तुलीकराइघलायेपान ॥ अतिप्रसंन
कीनेभगवान ॥ दसपनआनिदईकु
निहाथि ॥ देवोदसपनत्रिभवननाथि
वमाक्रलाविनिलगामहंत ॥ प्रेतपसे

र.सा.
म.
६८६

169

हरिकानिजसेवन ॥ बहुरोनीनपरक्रमा
रकरी ॥ मनुक्षेगावैजैनरिहरीरी ॥ नीना
करोउंउभेतिमहोनि ॥ अतिसंनेषोषेश
षभुतन ॥ हाथिजोरिफनदाढामंडा
या ॥ भलेक्रपानिधिकीनीदईया ॥ ३ ॥
लकननैमसेनकेभये ॥ गहिगहिकेउ
प्रेमहकलये ॥ बलेनैननेसीनलषा
जनकउमुलीदेहसमालि ॥ गुनगा
वैपरगाइनसके ॥ बहुरावहुरहरिकेरि
सनकै ॥ निपटिकसहकरिधीरजध
रिजे ॥ रोमरोमआनंदहरिभरिजे ॥ हरि
ली· ॥ किआगुनिवरनोश्रमिनश्रपार
कसदामपगिपरिवलिहार ॥ १·४ ॥
सीषी ॥ धर्मराइअतिदीनहोइठाढोदो
करजोरि ॥ गुनगावैमुषप्रेमकरिढ
हकमकोओरि ॥ चौपाई ॥ धर्मप्रभुको
सनमुषषरा ॥ हाथजोकुमुषनीवाक
रा ॥ लाभाकेषावकेगुनगावन ॥ संदरी
परब्रह्मपरमसपावन ॥ नमोनमो
आनंदसरूप ॥ कमलावललभपरम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अनूप॥मेदहासमभुषिकमलप्रकास॥स
भतेऊचनमारेदास॥कमलनाभकी
कमलनाभव॥कमलपादप्रभप्राब
प्राति॥कमलाकंतप्रविंतप्रभेद॥
कमलिकिलपालप्रभुर॥दीनबंध
उःखेकारिनहारि॥मोरहमलेवउग
वारि॥जैभगवानप्रलेपप्रपारि॥महा
प्रभूहरिमहाउदारि॥जगतिनाथजग
तिनाथजगकेप्रतिपाल॥जगतिवी
नजगकेआधारि॥नमोप्रलेपप्रलेप
प्रपेल॥आदिनिरंजनबालकमेष॥
पूरणब्रह्मभगवानकृपाल॥नमोन
मोप्रभदीनदेइपाल॥कवनउपि
लेजमकोकरहउ॥नेकुनप्रेननमाए
लहउ॥अनिप्रधीनहउभई॥आनिहा
ल॥जाकेभाईउश्रीगोपाल॥महाप्रभ
कछुमानिआकरो॥पपनिहमरैहिदै
धरो॥किहिनविनिप्रभपारेपाई॥लो
प्रतेनकाकिकृपासनाइ॥नवप्रभवी
लिउभिभवनराउ॥हमारेगुराकावाल

१.गी.
म.
१२.

170

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कलिआउ॥ जोनेकरहिनमैसीसोरै॥
जमगुरिगईआनआवैकोई॥ जोहम
करहिसोइपरवान॥ आज्ञावैगिहमा
रीमान॥ समउँउहमहिहमराउँउ॥
हमनेउरपैसमभ्रसंउ॥ धर्मसीसपातिआ
गिआमानी॥ जोकछुकीनीत्रिभवनपै
नी॥ हरिकेगुरकोआनिउवालु॥ जनरी
फाईउसिरीगोपाल॥ वालकुदेकरि
गोपाल॥ वालकुदेकरिठाढ़ाभया
वउभामिहमरदर्शनुलया॥ गुरकेवा
लकुलेभगवानि॥ भयेधर्मनेअंतरी
ध्यानि॥ रामकल्ससतिगुरपहिआवै॥
वालकदेकरिपगिलपटावै॥ सतिगु
रकोबोलेभगवानि॥ लीजैवालकउ
हमहानि॥ सतिगुरस्त्रुतिबिसमैहोइर
हे॥ कैसावकेगुनजातिनकहे॥ हाथि
जोरिहोनीप्रभघरे॥ गुरसननमृषिसि
रनीवेकरै॥ गुरकोबोलेफुनिभगा
वानि॥ विनैहमारीसमनउमहानि॥ व
शीक्रपानमरहमपरिकरी॥ हमनेसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वानैकुनसरी ॥ अबाबानिकछुमान
हदेव ॥ सभक्तीकोउनमारीसेव ॥ सति
गुरकहिओमनडुचनस्याम ॥ छूटनथ
पेहमारेकाम ॥ नमसेसिषजिनडकेप
पे ॥ देपहषदारिद्रमिरिजापे ॥ सफली
विदिआहोईहमारी ॥ अगमहरिकीरति
वउिवनमारी ॥ जोजननमतीकीरति
गाई ॥ देनोलीकपरमसुषपाई ॥ स
तिगुरमसकुलाईउहाणु ॥ चारनडल
गेत्रिभवननाथ ॥ सतिगुरनेविदिआ
लेगये ॥ विहवलहासंदीपनभये ॥ स
तिजानीसवचरमाह ॥ भोनरवाही
यरिकोउग्राह ॥ पतिविदिग्राप्रभग
वाति ॥ निरविकारनिरमलनारति
लेगनकउदिषावहिराह ॥ अलष
गुरषमविगतअथावह ॥ आयेमथ
राग्रीमुकंदर ॥ बासदेवदेवकीनेद
मातपिताकेबानीनागे ॥ बासदेवदेव
कीअतिवडभागे ॥ सतिदानोलकेहि
लगाई ॥ भगतिनिनक्काकेरेनजाई

द.प्रा.
म.
१२१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जारदव विगसे कमल समान ॥ आपे।
सनेराम भगवान ॥ सेरीपनकोली।
लाकहौ ॥ हरिपगिसिमरनउधरन
सही ॥ मानपीनाथ्यानेदै भरे ॥ ऐसोसि
उमिलकउतककरे ॥ ईक्षलीला ॥
कमलनैन ॥ १९६ ॥ साषी ॥ आपेमघुरा
महि प्रभु श्रीभगवंत अनंत ॥ कमल
विगसै निरषससिमिउ विगसै हरिसं
त ॥ २ ॥ चौपाई ॥ रामकुलमधुराढिगआ
पे ॥ जाके कुनिसभिवे दक्षमाये ॥ पांच।
जनप्रभुजीकोसेष्ठ ॥ जानेनिकसेवेद
अमेष्ठ ॥ शोलवजाईजे श्रीभगवान ॥
अधमिधरिपुनिसभासमान ॥ शोल
सवउजाढवसनिपाईया ॥ सभजउ
कुलहरिमनमुखिपाईया ॥ छोरेहरी
केपगिलपराये ॥ रामकेहरिलेकेठिल
गाये ॥ वडिअक्षकेहरिचुरनेलागे ॥ स
भजारदवसभनेवुडिभागे ॥ मातपिता
कोभीनरिआये ॥ फनिदानोप्रभिपगि
लपराये ॥ वसदेवदेवकीलीयेउठाये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हितकरिराषेकेरलगाइ ॥ प्रेमसहित
लैगोदिवैसराये ॥ सीसचूंविमुषिनैनलि
गाये ॥ वहुरिगिमीरेभोगिअवाये ॥ दिव
वस्त्रनउननिपहिराये ॥ मातपिताआ
नंदहिभरे ॥ पूतनकूसिउमिलिकउत
ककरे ॥ ईहलीला ॥ कमलनैन ॥१०
साषी ॥ केषावकममकूंरप्रभनानाव
रिचरिदिषाहि ॥ प्रेमिअवरविनिआन
कोफगगरावोव्रजमाहि ॥१॥ चोपाई ॥ मा
धवमनमहिचिंतवीवात ॥ राषीधा
तिहदेमहिरात ॥ प्रेमभगतिआनदेवाऊ ॥
राउ ॥ प्रगटिजगतिमहिसोभापाऊ ॥ है
मराप्रेमीगोकलिगाउ ॥ उधवकोदेह
तिज्ञानपठाउ ॥ उधवमथुरानिसरजानन
हमैप्राननकैप्राति ॥ व्रजमहिउ
धवमननिधारे ॥ व्रजलोकनकोप्रे
तिहारे ॥ तिनपहिआमेंज्ञानउचारे ॥
जोनेकवनकवनदोक्षारै ॥ ईकुचरि
भीतरिधरीवसाई ॥ कमलावललभा
केशावताई ॥ जवहीमहरगुनीनप्रभाति

द॰शा॰
म॰
१०१

172

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरिपद्रिष्टापेजेपवलाति ॥ हरिजनह
रिकादरशनकरिउ ॥ रोमरोमआनंद
हिभरिजेउ ॥ प्रभकउजनकीनापरणा
म ॥ हृदेध्यानमधिहरिहरिनाम ॥ नि
करिवैठाईजेउपवसंत ॥ सदाहृदैमा
कैभगवंत ॥ हाथजूसिउगहिलीनेहा
थ ॥ ऐसीकृपाकरीजउनाथ ॥ जनक
उबोलेस्त्रीभगवंत ॥ मनीपेसंतउनीत
महंत ॥ तमरीमतिविगिआनहिभरी ॥
वरीउधिचारिभीनरिघरी ॥ ऊजमहिआ
जूपिआरीसंत ॥ तिनकोधिककरिआ
वउबीति ॥ ऊजजनहमविनभपेअधी
नि ॥ मनऊमधाप्रीतमपरवीन ॥ विरहि
हमारेविआकलिभपे ॥ देहिधामिब
नविनभलिगपे ॥ तिनकउआईमनाव
हुस्नान ॥ समिवरिभीनरिकहुभगवा
न ॥ जोहुजाईसुनावहुभाति ॥ समिया
नेकैमतिउपजैसाति ॥ हरिपरसादी
सागादईया ॥ उधवपहरिहरषुप्रति ॥
भईया ॥ सीससलगाईजेहरिकेपाई ॥ ले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आगिआरयिवैठेआइ॥ बलिउसनव्र
जमेउलधाम॥ जिनकेजीवनसेरविधा
म॥ सोकिसमैब्रजआइउसेत॥ उनरनि
लोगोरविभगवेन॥ गोधनआइउवा
नेअघाइ॥ समनरभीपिआरीहलिग
ई॥ गारजहिव्रषभप्रकारहिगाइ॥ निन
कीसोभाकहीनजाइ॥ टउरीआवेगऊ
पनीन॥ बछुरासिउआरकानेचीन॥ ब
छुरआंउनइनउनधावै॥ गऊआव
हेकेहिलगावै॥ गोधनिपाछेआवेगु
आरि॥ समिनुषिवेनवजाइरसारि॥ ही
गुणगावहिवेणुउमाहि॥ भागिनि
रूकेकहेनजाहि॥ ब्रजकेचहूदिसफू
लेरुषि॥ समकेसमैभैनिराववहिमुख
कोकहिकोकलिमोरचकोरि॥ कीर
हेसकारनमपुमोरि॥ गोपनिघरिउ
ठीव्रजमाहि॥ उघवकोरसुदीसनि
नाहि॥ नंदमहरयहिपेठोजाइ॥ हरि
हीतेसोमनसमहाइ॥ नंदनिपहिआनि
आरतकीनउ॥ कमसरूपकोलिहिदेघी

द॰ मा॰
प॰
१०३

173

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ओ॥ पणिपषाद आसन बैसाई या॥ पर
म प्रेम करि अगरि दिषाई आ॥ वीर ष
लाइ अरु पकवानि॥ बहुरि मेघले।
मारपेपानि॥ बैसाई उरू परि पर जंक
वैठे उ प वषसंतन असेक नेह गई तब
बोले बैन॥ विनती सुन न झुपिआरे सै।
न॥ बड भागी वसुदेव पुनीत॥ अति दुः
ख पाई कहु मत ऐमीत॥ मिले शुतके।
शाव अरु राम॥ केस विराहे उ श्री घन
स्याम॥ मात पिताका सभ पुः खेपाई या
सखी सभै न जुकुलिका भई या॥ मेरे
सुनन ताको सुन॥ ऊधो श्रराध हि सभ।
श्रवपुन॥ कहु ऊधव कछु वानि शुनी
त॥ मकि कहु कव चिनारहि वीत॥ का
हू विनारे जस धामाई॥ जाते निष्ठ दिन
मात नुषाई॥ कबु विनारहि सषा गो।
पारि॥ जिनि सिउ षेल हि सो कि सवा री
गिरे गो वरघन गो पीगाई॥ कबु विना
रहि के पावराई॥ जबके हम ते विछुरे।
स्याम॥ ग्रिह काज ते भए पुकाम॥ दिन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केउभूषणतिंद्वारैरति॥ हेरैसभैतबष
कजैनैन॥ वौरीसीजसधाह्रोइगई॥ प
तिपीतकछुजातिनसही॥ हमनोनि
नप्रतिउरमकरै॥ वओप्रानिरषिउप
रिवौ॥ वलेचलैमथुराकोउरि॥ गरिकु
रेवकेवंधनतोरि॥ सुवतिसनैनवबे
लारसालि॥ वनमहिजापैश्रीगोपा।
लि॥ अवहमविंद्रावनमनमहिजाहि
वहमनमोहनदीसतिनाहि॥ वालि।
वालनिरीसैवतिलगे॥ घोजनिफिरि
कलहमदगे॥ वनमहिफिरैनदराल।
दिषाई॥ हैपरविंद्रावनहीमाहि॥ फि।
रिचरिस्यावहिवनिकोदेषि॥ यहिमहि
रेषहिहरिकेभेष॥ वहमालीवहक
मलीधरी॥ मोरपंषवहलकुरीपरी॥ द
रितुनसिमाहिहिरदेमाहि॥ कमरूप
हमनववहोईजाहि॥ मेरहासिवहपके
जैनैनि॥ मकमीनाकोकलिवैति॥ कवि
आवहिगेहवहिगेहमेरेलालि॥ प्रालि।
पिआरेवालगोपालि॥ कहहिनिकहति

२.ग.
म.
१०४

174

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वौरिहिइंगाइ ॥ नवकूपवगुनिविसमे
भइ ॥ उपवमनमहिवानिविचारी ॥ इ
उ इंनपहिपठिआगिरधारी ॥ मनम
रिजाहिजमोधानंद ॥ मानहि उगमग
तिमकुंद ॥ उपवकहि उमनकनंदगं
मनितेगुनिसंनागमिराई ॥ पाकैग्रा
वहिजमधालालि ॥ नमरेहीमतग्री
गोपालि ॥ ईउमनिमावधानसमभ
ये ॥ हरेवीविगोविंदगहिलपे ॥ प्रमन
करैजोकोहरिसंत ॥ सठनवोलेमो
इमहेन ॥ उपवकाहे फूउमनावहि
कहनिनंदमतिपाछेग्रावहि ॥ बो
लेश्रीशुकदेवमहोन ॥ मनकपरी
वनिसंतसजान ॥ जेकोनिपरिकइ
मपिआवे ॥ फूउकहोनग्रातिमवु
पावे ॥ मनिववननेमिपिग्रानीकी ॥
नपनि उनारहिवाकेजीकी ॥ ईतनि
मिनिउदवहरिसंति ॥ फूवउचारिगे
परमसमहंन ॥ वज्ररोवोलेवावानंद
कविआवहिजेमपिकेकरि ॥ मनउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धवहमङ्गलिपेयेति ॥ विनमननहेषम
हाग्रधीनि ॥ चनेञुःलङ्कनेणविनाषि
मारेकहाविङ्खोरेमाथि ॥ गराति कदि
श्राघामानघनाहि ॥ हमजानेषेहरेमा
हि ॥ हनेमहावतिहमतिसमेति ॥ येने
वीरजगतिकेवेति ॥ मारेमुहकश्रहा
वेङ्गा ॥ कंमवलिङतिकीनोचूरि ॥ मा
नसिनेयहिवानिनहोई ॥ जगतिनाथ
हैमारदोई ॥ लीलासिमहिवडिजोङति
नाथ ॥ हरित्रनिगाचैहरिकेवाप ॥ लन
ऊपवनितिवकीविदारि ॥ ञिगाबार
नमारुवलिभारी ॥ वकुमघघेनक्रु
हतिउग्रलेव ॥ लागोनाहिनैकु
विलंब ॥ नोरेजमनाग्रञ्जेनचूष ॥ ति
नकेकमलमिरापेडष ॥ कालीकेफ
निरदलेदिग्रालि ॥ मूपेजीवापेवा
लेगोपाल ॥ पावकनेराघेभगवाति
सेतिमहाउग्रग्रुग्रानि ॥ समभक्रनके
जनजमुनातीरि ॥ हरिगुलगावैम्प
मवाहीरि ॥ गोवापनगिाकरिवरिप

द.श्री.
प.
१२५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उ॥ब्रजलोकनकेसभत्तुःखेहरिउ॥ब
उनकोछमहिक्रिप्रिमलनाजाई॥वेगिसुन
हउलीस्याल्हूडाई॥किआहैकेउनब
रनेवंति॥हमरेहीलनमौभगवंत॥
जमधामनेपूतनगुनमाम॥रोमरोम
परसेवनस्याम॥सकलरोमननठ
हेभये॥हदेवीचलालनगहिलये
प्रस्पनउमडिचलेहरिपिआरि॥गो
रीजानेनंदकुमारि॥जसदावोलिउठी
लिहकालि॥मचहेमेरेवालगोपालि
मैननैनेजलधरावहै॥हनपूतनवो।
रीहोइकहै॥सकलरोमनलिडदेभ
ये॥हदेवीचमोहनगहिलये॥भगा
नभइकेपावकैमाहि॥हरिजसधाम
हिंश्रेनरनाहि॥उधवलागेकपनला
न॥मनउजमोधानेहसजान॥नम
रेभीतरीकहूनगईया॥येतामोहून
मोकिउभईया॥पंनजननमनमराज
मिमोहि॥नमरेभागिनवानेजोहि॥न
नकोहजानीउत्रिभवनराउ॥नमरे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भीनरिकरहनउई पा॥ पेनाकोइहनमोकि
उभईपा॥ पेनजउमनहमराजगिमोहि
नमरेभागिनवरनेजोहि॥ सनकाराजा
निउविभवनराउ॥ मैसावढिउप्रभुमि
उभाव॥ वेउनेनाथनिरंजनदेव॥ सभ
नेनिआरेपलघप्रभेव॥ रमनतामस
भइकैमाहि॥ किसीवसनेनिआरना
हि॥ सभकोमातपिताग्रहवंध॥ सभा
हीसिउनाकामनवंध॥ मातननातन
सधानमीन॥ सभनेनिआरपरमडी
नीन॥ सभसिउसभनामसराउदास॥ स
पराचाकारिहिआनिवास॥ प्रभअ
बिनासीकरहनजाई॥ सभमहिरहिसा
मीरहिगासमाई॥ जगउपजावैपाले
आपि॥ आपशंघारेउननपापि॥ कैसे
हैकेणवभगवाति॥ कहिसुघताको
करहिवषान॥ जगकोवीजजगतना
कोजोन॥ ईसैअगधैमनधरमोन॥
ईहीनिरंजनईहीअलेषान॥ ईसेअ
गपैमनधरमोन॥ अगिजगिधौरेन

र.प्र.
प.
१८८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नउननभेष॥ संतजनाकीरषिआकरै
दीपपंषजगतेपरहै॥ दुरमतिरोगी
डहसंहारै॥ कृपासिंधुत्रिभवननिस्ता
रे॥ कुसमाननदुजाअउर॥ सोतनमजा
निउआपनाकउर॥ समकारनिसंदरि
स्याम॥ तिननईस्रामनमोहननामि॥
विमनविस्रापकहरिनागान॥ प्रभसूर
धोनमसातिनिरवाति॥ जीवप्रकना
उदूतेपरे॥ जोवकछुईछासोकछुकरे
सकलिजगतिकोजोग्रसिनाई॥ सोइ
कालहरिमाहिसमाई॥ भगतिहेति
लीनेअवतारि॥ होकरनिधरनीकोभा
रि॥ कृपानिधानिप्रभूकरतारि॥ जो
कोककुनपारावार॥ रामकलवहि
भाइरहै॥ ईतनेलषवउतलीहोई॥ ज
नमनमिरनजराउपाधि॥ ईसैनवि
आपेकोइविआधि॥ सदासतिसाव
धमकुंर॥ ऐसेहरिहैसनीसेनेर॥ भ
नभविभवनाघसनाथि॥ समकछु
केपावजीकेहाथि॥ पतिवकुंडअकें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

डेव्यसित्रुपि ॥ जीवजोनत्रिभुवनकी।
मधि ॥ ईननेरुपनतकोइ रुउर ॥ सोन
मस्तानिउअपनाकउर ॥ धंनभागित
मेरेकिपाकरुउ ॥ केशवकेपगिहिरदे
गरुउ वहिनाराईननिरमलभगवान
तानतेजनिधमहाबजाति ॥ सिमर।
नेजोगसदाभजनीया ॥ सदावसाईश्री
भोनिरिजीया ॥ जपीश्रैनाइश्रेध्याइश्री
साम ॥ मदामनोहरकेशवराम ॥ हरि।
मधुसूदनदैतनिवदार ॥ वजोहरीलाम
हाउदार ॥ सभउवमोचनदीनदिया
लि ॥ पंकजलोचनसदाकृपाल ॥ क
पासिंधुजगदीसमधुलेषि ॥ सवावा
सभवहीश्रमेष ॥ उदवउमउमेचल।
माति ॥ हरीकीमहिमाकरीवषानि ॥
हीरानारदनविहामीराति ॥ श्याइति
करिपुनीतप्रभाति ॥ कृपवसंतवर्ष
नेमाति ॥ तनेजसोधानंदसजाति ॥
वउउगुणप्रेमुकमलसेसिमधुईया ॥ सिम
सिरिमरसमभजीउउगाईया ॥ उदेप्रा

ह॰शा॰
प॰
१०१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिउपवमसुरतिमानि ॥ जमुनाकेनटि।
गपेमहानि ॥ करिईसनानुचरिपाउ
धानि ॥ सुषिनेगावैगुनभगवान ॥ ऊ
धुनेदव उसरहानि ॥ मिलिहरिको।
गुनकेविषानि ॥ ईहलीलाकोरे॰ ॥
कमलनैन॰ ॥ ९॰६ ॥ साषी ॥ वडीप्रातिगो
पीसकलिकरहिमथानि ॥ हायरुमि
उरधिकोमथिहिमुषिगावहिभगवा
न ॥ १ ॥ चौपाई ॥ गोपीजागीप्रातहिका
लि ॥ हरदैभीतरिश्रीगोपालि ॥ दीपज
राईतिहोमहिघरे ॥ अंधकारमेदुरी।
केहरे ॥ पवईसनानीजलसिउकरी।
मलिसमनोप्रेकीप्रथमिहिभरी ॥ दधि
कोमथनलगीकरपिआरि ॥ हरिको
पिआरीमहाउदारि ॥ गोवालिपरिदधि
मटकीधरी ॥ हरदैसमानेश्रीनरहरी
गोपीजनकोकहिउध्यान ॥ जिउगा।
वतिसुकदेवमहानि ॥ वेदवेदनिश्र
रुपंकजनैनन ॥ करिकेहरिमिलीकोक।
लिवैनि ॥ कोनोकेंउलजरेजगाई ॥ ति
नकीमेभाकहीनजाई ॥ केकनवान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिजलबरिहाई ॥ होतनिमषनीपेको
नबकार ॥ हरिगुनगावतिलागीरस
रि ॥ जैमनमोरनमरदनगोपालि ॥ ब
कीविशरजसोधालालि ॥ छपिउका
रनिपरमकिरपाल ॥ चितावरतके
चाननप्रानि । कालिमरदनगुरपा
गुतन ॥ करिनिराधारनिगारबपुरही
येनकुमारनमहाउदारि ॥ बकुरद
नेजसोधानंद ॥ प्रानपियारेबालम
केर ॥ माधवैबोरकनइलनगु ॥ बा
लकुपावनिमहापनगु ॥ संदरिलि
याममबकिविवरान ॥ बकविधिली
लाब्रजमहिकरनि ॥ हरिहरिप्रानि
हमारेहरि ॥ हरिगुनगावनिलोचन
हरे ओली लाहरिब्रजमहिकरी ॥ ने
ममगावहिप्रेमहि भरी ॥ गुलकना
कामममकेमपे ॥ गादिगद्दिकेठिप्रा
मिलकिलवे ॥ चलीनैननैमीनलधा
मारि ॥ नबसिबपरामशभूमरहि ॥ न
निमनिमीसमिमधिभूलिगइ ॥ ह
रिगुनगावनहारीहीमइ । तिनकीत

ह॰गा॰
म॰
१२८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैसोसबभए॥ सरगिलोकनेआगे
गए॥ गोपीजनहरिकेगुनरटे॥ रसो
ढिमाकेकिलविषकरे॥ हरिगुणगा
इसमारेदेह॥ आनिरसिमानीभयेस
नेहे॥ सकलकेभमरनकोचले॥ ऐसे
ऐसविथ्यापेहरिबली॥ हरिरसिमानी
गजिसोचाल॥ ननिमनलिविआपिरहे
गोपाल॥ मारतिआपसिमहिसभाली
केभमरनजमनाकोचली॥ उधवको
रथुदेखिउजवे॥ सबआपसिमहिबो
लीनवे॥ यहिसंदेसियकोकेसबी॥
कहेवानककुजानिनलषी॥ कुनि
आपेअंकूरअजानि॥ चलिकोपेअब
लाकेप्रानि॥ कंसमुएयोईनअजानि
हमतेछीनवरेभगवानि॥ फुनिकिर
आयोपाषरचीनिलेहीगयोहमागे
मीत॥ प्राणहमारेनवलेगईआ॥ अ
लिकिहिकारणिउदमभईआ॥ माके
हमारेननिकोहरे॥ पिंउकेसराजाके
करै॥ समकेकरीषीयहिबीचारि॥ आवे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उपवपरमउदारि॥ संध्याकरिआइउ।
हरिसंतनि॥ हरिहरिकसहरैमखिमंति
ऊपवजीकोकहोध्यानि॥ जोंकोजीव
नथीभगवानि॥ हरिहीमोसंदरिता।
निसामि॥ विनहरिसेवहिदाग्रकामि
कमलनैनअरलेवीवाहि॥ हरिऊप
वमहिंअंतरिनाहि॥ प्रभुपरमारीवा।
गासंग॥ मरवसैजनश्रीपतिसंग॥ के
वनीवैजेनीमालि॥ जनकोदीनौदीन
दिपाव॥ पीनवमनऊपरिफहलाई॥।
तिउदामनिचनिवीचिसहराई॥ गोपी
देखिउपरमचनप॥ यहिमोकेपावही
सोरूप॥ आइउनिकरिजवैहरिसखा॥
गोपीजननननवहीलखा॥ कदीपा।
मपरवानिवखानि॥ हनपठिजैहैश्री
भगवान॥ मिलिउपवकीपूजाकरी॥ म
धुरवचनकहिमनमधबही॥ हाथि
जोकुकारवैपेपाइ॥ थैसेहीथकेमर
गाइ॥ लेजनकउआइपेकोमि॥ वेनरही
दवेहदैनग्रोनि॥ वैठीसिरानेकुंभउनागी

द॰पा॰
म॰
१०५

179

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बहिरि बउ फरै जनन बिबाकार॥ लागीन बैउ
ला हूने दैनि॥ हिन सिउ बोल हितीहू नि
बैनि॥ सनकुसबीकपटी चनस्याम॥ ना
जिना बैकरी अपना काम॥ जब लगि
का रजिन बूलगिकै॥ कपट बोलि सभि
सरवं सबहू चैरे॥ अंग अंग सभ कपट हिय
रे॥ जिनि हरि हूमरे नन मन हरे॥ गनका
न बल गया दूह रेहै॥ जब लगि मिदापइसे
लई॥ कामी के जब निघुरे राम॥ गनका।
बाने हो न अकाम॥ जब लग न रख मडि।
फल रहे॥ न बिलगि पंषा न रख रखहै॥ फ
लनिघहरू हिन बिसभ ऊडि जाहि॥ को
आभैक्रुपछान हिनाहि॥ अनि घुग्रिही
के भोजनु करै॥ उदरी सुरि फुलि पाव।
नि धरै॥ बन मिहि भिगम हालबपाहि
लागे आगि न सभै न जि जाहि॥ नैजेसा
घिजब भूपनि रेब॥ न बिलग प्रजाक
मा बैसेब॥ पानागं सिउ तब लगि हैन
जब लगि सिरतै भपेन खेत॥ कि आक
परी कोपहूहि संदेस॥ मारति फिरे तिसी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आकेदेस॥कहनिकुहनिबुडरीहोइग
इ॥कमलरूपसभगोवीभइ॥कोबैठोका
हरेध्यानि॥कोउनगावनलगीसजा
नि॥रोवहियकपुकारिपुकारि॥प्रान
पियारेनेदकुमारि॥तिसीसमेइकम
धुकरिआइया॥नवगोपीइंहिवचन
मनाइया॥कारेहमरेकुहोनवानि॥आ
हनिसीकारेकौसरनि॥मधुपलकौति
तेपारसिमरी॥निनसिउघेलेवझनी
हरी॥नावेगाउनगुनहमपाही॥कपट
कसनिसोपहिमाहि॥बोलिउबीइंके
श्रवरसजानि॥सनझमथीझउकरोव
बानि॥मधुकरिजानेहमरेबानि॥झउ
रेपरेअसोधानानि॥मधुराजेवेसभाम
रेवहै॥कहुकवानिजवमघनेकहै
कोइनकोमाननिहैमाधु॥मोहनिकी
सभिवानैकाज॥हमपठिकहीथेपा
ग्रजकउर॥मधुपलमहिहमनेकी॥ठउर
वडोललउलेगाराइमभीरउ॥जिनहमरा
ननमनपनहरिउ॥कमलानोहैबुरीगा

द.पा.
म.
१८.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वारि ॥ जिनकपरीखितकरेपिआरि ॥ वो
लीअबहसषीरसिभरी ॥ अतिपरपंची
बहुनारिहरी ॥ वेकविलोकनिपंकजनै
न ॥ मधुअतिसंदरिकोकलिबैनि ॥ मंद
हासिहसिमनहरिलई ॥ लेहीजाईन
बहुरोदई ॥ सनहुसषीवहुअतिबलि।
वानि ॥ सभविधिपूरनश्रीभगवान ॥ भू
मिरसातलैजीतीनारि ॥ सुरगिलोकि।
नोत्रीआउदारि ॥ तीनभवनजोसंदरीना
रि ॥ तिनकोदेखैनैननिहारि ॥ वाकेपाछै
लाभीफिरै ॥ हरीकोदेषतिनभतेगिरै ॥
वेकविलोकनिफासीसाधि ॥ आपहुबी
चिनदीसहिहांधि ॥ तिउवधकुवनि।
त्रिगिफहीई ॥ चीआफसावहितिउहरी
राई ॥ हमहैकवनविचारीदीनि ॥ उनि
सभमोहीपरमप्रवीन ॥ दीनबंधुजोमा
नेनाहि ॥ करेसनाथहमारामाउ ॥ मधु
करिहमरोकुहोनपाई ॥ हरिकीवाति।
ननैकुसनाई ॥ कवनकहैवहकेपाव
राई ॥ कपटेराईकरितोकोगाई ॥ विर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

काकपरीसबिकानाहि ॥ सन्नहमता
केकर्मसमनाई ॥ प्रबजन्मकमायेकाम
सनहोकहहनिहोइसालिस्याम ॥ दसर
थनंदनिरामउरान ॥ सारेमिथनषब
उयेवान ॥ विनाविनारैमारिउवालि
श्रेसेनिरदैईकुगोपालि ॥ सूपनषार
वनकीवैनि ॥ तिनदेषरावबकौनेनि
मोहीरबुपतिरूपश्रपारि ॥ रावुहीसि
सिउवडेपिश्रारि ॥ नाकानाकबिडारि
उराभि ॥ श्रेसिनिरदैयरियवनस्वामि ॥
श्रवरस्तमकूवाकेसतिकर्म ॥ वउश्र
नबननश्रावनिसरम वलकेश्राईजे
वावनिरूप ॥ वामनमुषनेकरैश्रनरूप ॥
वलिफुसलाइडोवानिवनाई ॥ वाकी
गनिकछुलनीनगाई ॥ जाचीवसुधा
नोचरन ॥ वलिराजाकीश्राईउपारन
जवपगंकलपदीयोवलिराई ॥ नवश्र
नेनहोपेहरिराई ॥ नविवावननिकी
यास्याह ॥ नाकाकक्रूनपारिउएक ॥ वे
कुवरनमभूमंउलकरिउ ॥ हमालेनममं

र.मा.
म.
११९

181

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उलधरिजे ॥ नीजेपगिकेपांनवधाइया
वेषदीनिपानालपठाईया ॥ तिनह
ममोहीवैनवजाई ॥ मेदरिश्वेगितिभे
गिरिदिषाई ॥ जोनूकरहिजोश्येसखामि
जाकेदुःखविसिउश्येसेजरो ॥ काहेकषा
कुस्मकीकरु ॥ नाकोउनहसनजुमसो
नि ॥ वानिजथारषकसेवषानि ॥ सन
हैमधुकरिपरमप्रवीन ॥ हमकिश्री
वगुरीहीनग्रथीन ॥ वांकोकथासनहि
जोभूप ॥ ग्रहिकुरंग्रुकरिजानेरूप ॥ ति
षागेराजदेसिभंउगरि ॥ विभागहितिरी
षासेनसवकुमारि ॥ हुंदनितिश्यागल
गावहिझारि ॥ श्रवनसनेगुननामसु
रारि ॥ पंषीजिउजागिफिरतेहै ॥ यकि
ठउरवकुकवहूंनवैहै ॥ वांकेउनिसति
नेजैसेस्मारि ॥ नकुनकरेकिसीसिउपिआ
रि ॥ हमोलीलारेषेनेनि ॥ श्रवनकुसने
नाषकेवैनि ॥ हमसिउमिलिकीनेविव
हारि ॥ नानाविधकेपरमउदारि ॥ हमसि
उभूलेश्येसेस्वामि ॥ ग्रिहिकाजनेभ्राऊर्के

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मि॰ तिनाग्रतिचउग्रनिवैउमनेहि ॥ मले
मतिपतिभूलिउदेहि ॥ हमग्रैसीतिनमै
सीकरी ॥ सिंचनहोइमहानरिहरी ॥ कउ
पेकजोरोटेटेइ ॥ हूकसमेनिचांपिको
ढिलेइ ॥ भमहगइआकुनिआइउथा
इ ॥ हिनसिउगोपीलीआवलाइ ॥ सवह
षसोनलवचनसनाइ ॥ मपुकरिकोप
गलागमनाइ ॥ आउसमरमतिपाम
सजानि ॥ हमपहिपठिउहैमगवानि ॥
जहिजिहिठउकिलगापेपाइ ॥ वोतेउ
रीसोलिउमाइ ॥ कोहीग्रहकेपावकोप
रणाम ॥ ममैजपनहैनमरोनाम ॥ भम
रिवीचीकरिसषीसजानि ॥ उधवजीप
हिकरेवषानि ॥ भमरउरिफलवारि
गइया ॥ ग्रैसीगोपीजनकीदइया ॥ कु
निरूपवपहिसषीसजानि ॥ कानिस
सीमपुवचनवषानि ॥ सषलिउआयेपर
ममहान ॥ परमकुमललिउहैभगवानि
कउविनारहिपिनग्रहमाति ॥ जिनिका
नेपेग्रउनेनाति ॥ कवहूंउग्रालसमार

र॰शा॰
मे॰
१८२

182

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिगाई ॥ जिनकाज तिन्ह हमा छबाई ॥
गिरगोवरधन जमुनातीर ॥ कहूं समा
रहि स्याम शरीर ॥ हम बपुरी अतिदीन ।
अधीन ॥ कहूं समारहि प्रभ परवीनि ॥ ।
वेपरवाई भये वनस्याम ॥ दई पावति ।
को है तिनकाम ॥ हमरी की संदर मज
विसालि ॥ चंदन चाची महारसालि ॥ क
वआई धरे हमरे सीस ॥ ऐसी किरपा ।
कोजि जगदीस ॥ कंकु ऊधव कवआव
हिलाल ॥ सभ बपुरी हमहो ई तेहाल ॥
गोपी विरह कहिउ विनलाई ॥ नैऊव
विसरहि केसव राई ॥ ई हि लिला॰ क
मलनैन ॰ ॥ ९८ ॥ साषी ॥ ऊधव अति वि
समै भये देषि तिनौ का प्रेम ॥ धंनि धं ।
नि हम भसषी सफल नमाता नेम ॥ १
चौपाई ॥ ऊधव मी विसमै मिनि माहि ॥ इ
नकी सम धारि को जननाहि ॥ लागा ।
गोपी के गुन गावनि ॥ संदरपद अरु प
रम सुपावनि ॥ धंनि सषी पहित मना ।
नेम ॥ सभ तेवडा नमाता प्रेम ॥ हमरे कं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अति ऊंचे भागे । उपरि उन मरे दर्पन लागि
न मन ताहू हरि सिउ दे षिसने हू ॥ पावन भई र
मन दे हू ॥ ऐसी प्रीति नमारे वनी ॥ नैकु न
बिसरै त्रिभवन धनी । जगो हो मिन पिनी ।
ष्पद नी ॥ पोसैनेसम भवे दरुतान अप
अठनेम साधना करै ॥ जगि के भोगि सबै
परहरै ॥ ईंद्री मनको जीति सजावै ॥ पावै
प्राणवस सानि । वसे ईकोन न जेसा
अनति श्राग फल करे अहार ॥ गहवा
वनि गिरि कंदरि वसै । जोग धिश्रान वै
रस महिरसै ॥ नउकरि पं विश्रान नको ।
साधे ॥ पुरि विरदि श्रा अलपवन श्राधे ॥
जीवदईश्रा अरषि मा उदास । रीता कै त
टिकै निवास ॥ श्रवरचे नेमनि कर्म क
माई । नउफुनि ऐसा प्रेमन पाई ॥ नमे
नोसमभैनपामउदारि । कसहेति अनु
दीनो आरि । तीन भवन नहीत महेसमा
नि । ऐसी पिश्रारे श्री भगवान । समनै
श्रागे को जन नाहि । अउ वभई बिसि
वनके माहि । देषि प्रेम बिसमे हो ईगो

६-षा०
म०
१६३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभते निस्तारा गोकुल लिगाउ ॥ प्रभ मक्ति
उपरि करुणाकरी ॥ तम पहिपठि उ श्री
मराहरी ॥ भगति तिमारी देषी आज ॥ प्र
रण भई आहमारा काज ॥ कछुक संदे
सो मन हुप्रवीन ॥ तम को दीपे तम रे
मीति ॥ तम रे भीतरि है व्रजनाथि ॥ देष
इस्था न सलोचना साथि ॥ सो प्रभ ने
न निस्तारा ना हि ॥ है तम रे हि हृदै हीमा
हि ॥ मो कछु दीस नि सभ हि स्वामि ॥ प्र
भय विना सी आत्मा राम ॥ जग के तीन
जगति पित माति ॥ वरन विहन न कछु
नाम न जाति ॥ वन गिर सागर सलता
नीरि ॥ जैसे छोटे वडे शरीर ॥ चलने घ
रे सजाति अजाति ॥ सभ के भीतरि श्री
भगवाति ॥ सभ को संगी कहेन जाइं ॥
मीति भवन महि रहि उ समाई ॥ न उन
पीये जो निस्तारा होइ ॥ हृषीकपा विन
ठउर न कोई ॥ सम जे हृ जो सम का उ
वा ति ॥ तो तम रे मति उपजे पांति ॥ सदा
नि कर हि हरि कवहू न हरि ॥ वह दहिम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भवनरहिआभरशी॥जनमनमिरतन
देनचहे॥सोषिजोगहरिकेगुणरटे॥का
कानिचनेविललाषि॥समकिउमिथा
नकरिउरोलाषि॥नउनपीपेजोहोईति
आरा॥नमरेमीनतिमीनननमारा॥जोनह
मानोज्ञानविशानि॥भवरकहीयोश्री
भगवानि॥जाकाकेनविदेमसिथाई॥
ताकोसिमरनिउधविहाई॥लगिरहे
मनपनिकोउकि॥तेसेमिरहनंदकिमो
रि एमममेजोचरमहिरही॥तातिका
हरिपदवीलही॥ज्ञानसननहनउनि
एनाहि॥हेतमसीहीहदेमाहि॥उधव
कहिउहिहदेकाधमे॥गोपीकेमनि
समहीभरमे॥गोपीकेमनहविज्ञेन
लान॥एकैज्ञानहिश्रीभगवान॥उधव
कोबोलीसरजानि॥नंदकुमारहमारो
प्रानि॥जोसममीनतिहैचनणाम॥ते
भीहैतोआनमरम॥परतोमिलिगोवर
धनहाषि॥जैसेधरिमापाब्रजनाबि
वलतोकेशनजीकीचालि॥वेनवजा

द.श्रा.
स.
९४

184

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ई दिषाई ऐसो लि॥ मोह तिजी सो रागस्र
लागु॥ नउ हम रा सभउ नरै नागु॥ षेल
दिषा मोहन की भीति॥ नउ हम रे मन।
उपजै प्रोति॥ हरि को कमं न पे कसमाई
है साग्यान म वराम कहाई॥ आप सरषी
है भगवान॥ अवर न हूजा क ससमान
अवर जीव सभ विग्रापी काल्ली॥ काल
रहत निपे कै सो पालि॥ अवर जीव सभ दे
न सुधि न॥ सभ विधि पुराणि अभ पावी
न॥ अंजन त्रिभंग वेनम किं परे॥ को रि मे न
मैन हूके उरै॥ अमे राम कस ने मपे॥ विस
मे हो ई बसा दिकरा पे॥ सभ कूठे वोलति
है वेति॥ आनि मिलाव रूपं कजैनेन॥ वो
ली अवुह सषी परपाति॥ सभे सनकह
उकरो वषानि॥ वरू कपटी अविआवनि
नाहि॥ रस किभई उम षराके माहि॥ हो
नेके सह मारे भागि॥ जीवै षी हरि दर्श
निलागि॥ मारि कंसहू रि सभै मै हिरासे॥
नाद्व सभे अमे हो ई वसे॥ कहउ वके
वस्रा वहि लाल॥ साम सको नेम दनगो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाल ॥ हमकिपाआनैआनमराम ॥ हमरी
जीवनश्रीचंतस्याम ॥ मेटमेहमषिपंक
जेहास ॥ श्रतिशसंनश्रभमराविगाहि ॥
कमलनैनश्रकवाकेकेस ॥ निनिहममो
हीनरवीभेस ॥ पीतउपरनागलवन
मालि ॥ वेनकआवनिपरमरमालि ॥ हा
कोचालिगआकृमहाई ॥ वनमहिये
नचराबनजाहि ॥ पंनकिसमेव्रजका
तिश्रवेम ॥ गोरजमिउलपरनेकेसि ॥
श्रतिरमभीनामेदरभेम ॥ हमपालाको
मरापरेस ॥ हमसिउविलेनानाभांति ॥
मनिननिमहिजेपआवैपांति ॥ तुमत
ग्रहपरमारेसीस ॥ श्रतिसषदाइकश्र।
नेकेइस ॥ श्रतिसवासपरपंकजिफल
लोपशिरमरीजीवनमूल ॥ निसिकाउ
किआकैजानि ॥ समथानंदनहमरे।
प्राति ॥ श्रवविहिजेगज्ञानविनान ॥ जो
वनघानीहरीकाध्यान ॥ वहिपिन्न
देखिउकेनाहि ॥ कैसेज्ञानरहिजेमना।
माहि ॥ समसाधनकेफलकाश्रंन ॥ श्रा

र.मा.
पं.
२२५

18

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

षड्री है श्री भगवंत ॥ आनि मिलाव हु

मारे गपानी ॥ दधि न जि कहुं बिलोवे

यनी ॥ हौ के कमे चिनार चिनारि ॥ हे र।

म भे उकारि उकारि ॥ ह्वा ह्वा नाथ रमा

के नाथ ॥ ह्वा ब्रजनाथ जगत के साथि

उष के सागर ब्रज वहि जाई ॥ लेहु भगा

गहि के पावरा ई ॥ चलउ धव वकु देषा

षोन ॥ जहं षे हैं षे श्री भगवान ॥ हा षो

सो गहि ले ने ह्वा थि ॥ ऊधव कौ ले आइ।

साथ ॥ जहां जहां लागे हरि पाई ॥ नहां न

हो सब दे न बनाई ॥ इहां ने हरि तूष उफा

सन कुवेर के दोउ धारे ॥ यहि वन सो।

दा फूले फूलि ॥ देषो निरमल जमुनं ना

कूलि ॥ देषो गिरगोवरधन षंत ॥ सक

लि ठउर षेलि भगवंत ॥ किंउ भूले ति

श्री भगवानि ॥ मिनि पी आरे भी वन

पानि ॥ करहति करति बउरी होई गर ॥

उधव कीनति विसमै भर ॥ मूरछ होई

हे उमाय पर ॥ कमलनूप सभ गोपी भर

षड़े लीला - ॥ ११ - ॥ [illegible] ॥ पक लाना उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुष्टभगतितिनकोंसान्नसुनाई॥गोपीकी
कीरतिकरेजनपिआरेहरिराई॥४१॥चौपा
ई॥पहुंचोनाजनसानबषानि॥इनके
व्रतपेकैभगवानि॥उधवतिनकैलागि
पाई॥गोपीकीव्रतपेकुहतिसुनाई॥कि
हमुधन्नमतीकीरतिकरी॥पगमुमरेउलि
मसतकियाते॥जैसावढिजैसेप्रभुसिउभा
ई॥तमवसकोनाविभवनराई॥रमानपा
ई३ईहूपरामारि॥जैसानमरेमनअहिला
ढ॥स्वागिलोकमहिजेतीनारि॥नमस्तीर
कोऊनपरमउदारि॥कसकथानिनर
रनिरमालि॥सदानमारसंगिगोपालि
पामहिभरमुनजानकुकोई॥हरिकोम
गोमहरिहीहोई॥वैसिगानिअहुचोआ
गोति॥अगुतनगुकोआनधारीमोनि॥
मेगलवसहिविचारीदीन॥ग्रतिसिंव
तिसभुविधितेहीन॥सनेनकबडुनीत
प्रगतें॥कंचनकौरषकोईसनानें॥को
इनउरिससाधनकरिउजो॥ऐकप्रेमरिढ
महिपतिजो॥कलप्रेमसंगिजैसीभइ॥ल

द.पा.
स.
१९९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमिलतरतनकैसिरपरादइ॥कामप्रीतिहिहदे
गहिलइ॥पेनीग्रंगकाकनारषिमइ॥प्रेम
ननानहिज्ञानहिकैत॥वहिइमषोतम
सिरीभगवंत॥कसककषगावहिदिन
रैन॥हृदेसमानेपंकजनैन॥सोगोपी
सोइघनस्याम॥जोगभोगपतिप्रभुनिह
काम॥ऊधवसिमरैश्रीघनस्याम॥जो
गभोगपतिप्रभुनिहकाम॥नरोश्रेस
निगोपीजनननामि॥ऊधवसिमरेश्रीभ
गवान॥दानदेउप्रथमकपानिधान॥प
कनननुहमरत्थवहीजरो॥विंद्रावन
कोकउनककरो॥विचरैजहांतमसोमी
न॥भ्रीपरेसिरपरमप्रनीत॥गोपीप
तिरजिसिरपरधरे॥तनमनप्रेमसदा
मनकरे॥उतमजन्मकहासतिकर्म॥
श्राश्रमवरनिसभहीभरम॥किमउ
नमुकुलवृसहमनकरे॥रहेपवित्रवे
वेदमषिपरे॥जउलगिश्रेमाप्रमनहोइ
तवलगिप्राननसमननकोइ॥कहाभइ
श्राजोवृसाभइपा॥कहाभइश्राजोस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भयारद्दैया ॥ काहाभईश्रीजोवोलैसाउ
विनाप्रेमसभवानैकाउ ॥ येनियंनिगो
पीसरज्ञान ॥ जिनकेप्रीतमप्रगषप्रान
सरजुचकेटनानारूपै ॥ पानकिमिरहि
जोहरिकोजापै ॥ विणलेजातिउजईवि
मारि ॥ भगनदहेइकेभारि ॥ तिउउधव
कामिरिउज्ञानि ॥ प्रेमपंथसिमरिउभग
वान ॥ गोपीजनकेलागेपाई ॥ लेलेभ
सनकिमपरिचराई ॥ वारिवारि उउना
को ॥ गोपीपागेनलिमसनकिधरै ॥ नै
मोरेदर्शनभईश्रानिहाल ॥ जिनकृपि
भारासीनरिपाल ॥ पेकुनिमषजोजपै
श्रनंत ॥ कसलकमलकहिमषनेमंत ॥ ना
कीमहिमाकहीनजाई ॥ वकृजनसग
रावंसनराई ॥ पलभरिईनोनभुलेश्रनं
ने ॥ प्रानपियागणपीभईवैन ॥ प्यारेदिन
कहलाकहिश्राईया ॥ ब्रजकोदषिनै
जश्रवाईया ॥ वृन्दनमासवसिकीश्रा ।
ब्रजरउरि ॥ गिरिहरिहगायधरिनंदकिसो
विरहिश्रामंगोतुम्हवसंतिनि ॥ मदाजपेमलि

द.स्क.
स.
१८०

187

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीभगवंत ॥ सभ्रब्रजबासीईकेठेभए ॥
परमसेदेसेहरिकोदेपे ॥ गरिगदिकोहि
नैनजलबहै ॥ सभीबाननकोजनक
है ॥ बोलेब्रजजनपरमसज्ञान ॥ मनि
थैऊधवमहामहानि ॥ हरितेमोमांग
निपेहि ॥ हरिसिउनउतनवउसनेहि
मनिबिनवैकेभावकोरूप ॥ बऊमना
मोहनपरमस्वरूप ॥ लोचनदेषहि
केभावराई ॥ हरदैमाधवकोसमाई ॥ ह
मरामीभावपरेपरणाम ॥ रसनाजपोक
लकोनाम ॥ हरिगुणगावनिदिनअरु
रैनि ॥ नैकुनभूलहिपंकजनैन ॥ क
रनिकहहमकोलेजाउ ॥ हरिहोको
भावसिउभाउ ॥ ऊचीनीचीठोरिसिधां
हि ॥ मोकोहमकउबिनानाहि ॥ पऊबि
नामनभूलहिहरी ॥ जिनिब्रजमंडल
लीलाकरी ॥ कारुब्रमीरबाटहीलां
नि ॥ नैकनबिसराहिश्रीभगवंत ॥ उध
वकहिउसनकुब्रजलोके ॥ हमणासिम
रणाकाहैसोकि ॥ जोसिमराहिगेनमरा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नाम। तिनकेअरहिगेसभकामि॥ हरीको
भगतिमराहिअभइ॥ तमरीसोधरिदेष
रिलइ। तमकोकरनाकछुनरहिउ॥ प
मप्रेमप्रभजीकोलहिउ॥ ब्रजमनलिया
वेभेटअपारि॥ प्रभकेपीतमपरमउदा
रि। जसमतिदीनामथनवनीत॥ आप
नेसतिकोअतिकरिप्रीति॥ इनउतने
मिलिकरीजसहरि॥ जैश्रीकसमकुंदा
मुरारि॥ उधवआपेमथुरामाहि॥ ताके
भागिनवरनेजांहि॥ केसवकेपसीय
रमेआवे। ब्रजकोलीलाकहीसनाउ।
सनकुनाथजीसाथीकहैं॥ ब्रजकोलि
मरिविसमहोइरहै॥ सभकछुजानक
कहासनाउ। अविनिजसेवककोकलि
गाउ॥ आवनहीनाहैजसमती॥ तुमरी
हीरंगिजसधारती। तानिकालिलेयु।
विउअनेन। जसधानेदनकमलाके
न॥ अतिभीठाहैउधवसेन॥ नमडं
बोकहतिभगावेत॥ उधवअचेबनल
म॥ मुचितेलेरिजसधानाभि। कहलि

द॰ शा॰
म॰
१८८

188

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रहीसमिवजकीवानि ॥ ग्रैसीभातिवि
हानीतानि ॥ भ्रुवरमेरिहलधरकौदरः
कलुमेरिशमकीलई ॥ ममरगीता।
कोवीउवयानि ॥ जपीग्रहिग्रैसग्राभ
गवान ॥ घहलीला ॥ कमललैनन ॥ १११
साषी ॥ कुवजाकेकेशवगयेकमललैने
नकरनारि संभिसषाउधवलीपेषी।

नमथरमउदारि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ कमल
नैनजाकेग्राये उधवकोलेसंगि।
सिधाये कुवजाकासनमधिग्राई।
धायेई प्रभपदपदमरहीलपाटाई
कवजाकामंदरिग्रतिऊंचा हरिप।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मिलागभईसुनिसच्चा। सदिरुषिजुव
डुभंतिवनाईया। ऊवग्रामसभपरजे।
कविछाईया। सफलाजामहिकेणव
सार्ईय्या। परमप्रेमकरिप्रगटिदिषा
ईया॥ चित्रमालवड़तिभीवनाउ॥ छुटि
श्रपाटिकछुकहीनआउ॥ मोतीलर
कहिफूलहिसारि॥ लरकहिदीपकि
जैतिश्रपाटि॥ अगरधूपपुहुपनेगिहे।
माहि॥ महिकेभामिनवरनेजाहि॥ क
वजामसभपरजेकविछाईया॥ परमप्रे
मकरिप्रगटिदिषाईया॥ उजलिश्रा
विविछावनेकरे॥ चनिसगंधरामसे
नीभरे। नापरिवैठेसिरीभगवानि॥।
मानुषप्रपीउरुषपुरानि॥ रननषव
ननवपीतलिश्राई॥ ऊ[illegible]तिक
रिभगतिदिषाई॥ कपधवजाकेश्रा।
मेधरिजे॥ हरिकेदर्शनननमन[illegible]रंगे
उपवजीपरिहिकेसवधान॥ प्रभकेप्री
नमपामसजाने॥ यापरिवैसकहरिके

र.पा.
स.
१८६

189

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सेन । अति सुषपाव हि श्री भगवंन ॥ बोले
उधव परम सुजानि । सुन सुषि तिरजति
ति भगवान । कवन की रपीरे पीव
हो ॥ प्रभ पर दमरिदम हि गहो ॥ नमस
कार पीरे कौ करिजे । लेउ बाई जनुपा
छै धरिजे ॥ घरनी परिवो ढे हरि सीजे ।
सदा हरे जा के भगवंन । गोहिदी वी विली
ने हरि पाई ॥ कर सिउम विमलि मत्ता ।
किलाई । संत संगा है प्रउने भागि ॥ विग
से हरि के दर्सनि लागि । लाग हरि पगि ।
कीरति कराति ॥ सिह पगि की प्रमादि
कसपति ॥ पेपगि ब्रस्मानि सदिनगाई ॥
से सस हेमु षिपारु नपाई ॥ संकरु ध्या ।
न धरे च हि माहि ॥ नार द आदि सनका
दि ध्याहि ॥ ब्राम्ह देवा रिषसा नि प्रमाति
विष्यास प्रनष्ट करे व मरानि ॥ जिनि
कौ मोव हि वेद पुराति ॥ सनि सनातनि
प्रभ भगवानि ॥ सिंधु स्ता भींनी जि हिस
मारि ॥ रखी निरंतरि पगि सिउ लागि ॥ गे
मालउमी रघु रघुनाथानि ॥ सभ ते पाव नप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गनारानि॥ मोपमिलउमरीमोटीमाहि॥
अगुनेभामिनवरनैजोहि॥ कुवजाकी
नोननिईसनानि॥ अगुनेमुषिमहिअ
रुपेपानि॥ पहरेउजलवस्त्रअनूप॥ क
रिसीगारवनाईअनूप॥ पारमसुगंधल
गाईअंगि॥ रोमिरोमिरहेअनंगि॥ आ
इकुसेवजीकेपासि॥ मंदमंदमुषिपं
कजिहासि॥ प्रभपहिआनीमेरिसा
लि॥ अनिप्रसंनकीनेगोपालि॥ कस
तेरिअरुअगारकपूरि॥ ईनसिजोलिअ
ईवासनपूरि॥ आपेकमलापतिकेअं
गि॥ कवुजापरमसनेहहिसंगि॥ बां
नपानपकवानरसाल॥ तिनसिजेतो
षेश्रीगोपाल॥ सनमुषिठाढीदेकरि
जोडि॥ रिदेलगाईहरिकीजेरिकु॥ नी
वेमुषिकमलमतिसषी॥ हदेकीग
तिगोविंदलषी॥ बैठेकंकनकेवनम
पलके॥ नाकीकलमिटाईसेकि॥ माय
वनाकेपरवेकामि॥ सभविधिपूरणपर
मधुकामि॥ हरिपमिलेहिरदैपतिथै॥

१.म.
म.
१९.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वेपेसवेदुःखकउहरै ॥ वकनदिनउ
कामिरिउनाप ॥ केशवजीकोघरवि
उथाप ॥ वहिचंदेनषाप्रभकोदईया ॥
निहप्रमादिहरिकोपइलहिया ॥ नि।
निप्र निचंदनअरपहिसंत ॥ तिनहकै
वसिश्रीभगवंत ॥ कुवजाकोसुघरी।
यागोपालि ॥ सभदुःखमोचनदीन।
दईयालि ॥ कुवजाकोलीहेहरीराई ॥ ने
कुनहमराहुराप्रथाई ॥ वकुदिनरस्रा
करेनिवास ॥ जोहिनकरेमननमरादात
मीसथामीसककहनिमहान ॥ सनो
मीकनिसंनसजान ॥ कुवजाकसन
श्रसपछाने ॥ परमसरूपमीनकोरिमा
ने हरिमूरतिचदेगहिलई ॥ ईनीश्री।
मोकनाराथमई ॥ ताकामनहरीउठे।
गोपाल ॥ कमलाकेनश्रनेनकपाल
लेउधवकोआवेधाम ॥ सभकेसभवि
धिपूरहिकाम ॥ प्रभुनेयहिहरिआईवि
राजे ॥ नीनिभवनपरवाजेवाजे ॥ ३१ ॥
लीला॰ ॥ कमलनैन॰ ॥ १२२ ॥ साखि ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आपहरिशंकरकेपत्रुनत्रिभवननाथि
रूपवस्वरूवलिरामजीपेदेनोजनसा
थि॥२॥ चौपाई॥ वेलेसंतनकेत्रिभवनना
थ॥ हलधरस्वरूउपवलेमाथि॥ श्रीकृ
रसंतनकेमंदरिआपे॥ जनश्रीकृरसनन
सिउठिधापे॥ परसनलागेप्रभजनव
रन॥ वेउमसप्रभस्वकारन॥ जनश्रीकृ
प्रभिलीपेउराई॥ हितसिउराषेकेरि
लगाई॥ कंठिष्ठाडिपरसेहरिपाई॥ प्र
गटिपछानेत्रिभवनराई॥ कुनजनव
नीउंउउकरी॥ हरिमरतिहिरदेमहिध
री॥ हाथिनलेपरिश्रवनेहाथि॥ श्रीनी
नेत्रिभवनिनाथि॥ सभप्रजेकपरिष
भवेसाधे॥ भानिभ्रमनिकाकहिआन
जावे॥ हितसिउलागासवाकारन॥ जेन
उनेदतनमसीसारन॥ पमकुसकेधोप
वारन॥ जिनचारनकुकीसभजगेसा
न॥ पतिजनलखपनेमिपरधरिउ॥ सा
फलजनमहरिकीजतिकरिउ॥ जल
सिउसिंचिउसभपरधरिउ॥ सफलन

दसा॰
म॰
३६१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमुहरिकेजनेकरिउ ॥ जलसिउसिंचि
उसमुपरमुहरिकेजनिकरिउ ॥ जल
सिउसिंचिउसमघरवारि ॥ भीतरिबाह
रिचरिकोडुआरि ॥ समतीरथमेंजानिउ
पाम ॥ हिनसिउपूजेकेशवराम ॥ केवा
नकीचउकीलेआईया ॥ नापुरिपुरवे
नमवैसाईया ॥ आनिउसेवमुनेलख
रीध ॥ केसरीचरुग्रचसनवैध ॥ राम
कलकोभरदनकरिउ ॥ परमप्रेमसि
उकुभरिउ ॥ निर्मलजलकुनिआनिउ
मेन ॥ रोउनउलापेश्रीभगवंत ॥ आ
निउजलवस्त्रसालि ॥ पहिरेहलधर
श्रकगोपाल ॥ तिलकुलगाईउप्रभके
भालि ॥ फुनिपहिराउमकतामालि ॥ क
मलफुलपहिरापेहारि ॥ अतिसेतोबु
रामनगारि ॥ वंदनप्रकलगाईउअंगे ॥
सेवकिपरमसनहेहिसंगे ॥ भजावाक
रेपरुचीहाथि ॥ जनपहिराउप्रेमहिसा
थि ॥ फुनिअरथीवेजनीमालि ॥ पगिल
उउरकोपरमरसालि ॥ तलसीपहरीस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेरुहिसंति॥संनचाराइग्रभकेग्रगी॥गरु
ग्रषाइउअगरिमवास॥अनिरमसीनार
दिकोरास॥फुनिदरपनिदिषिराइउसे
न॥विषवनिष्ठनेश्रीभगवंत॥श्रानेमे
योजनअनिकप्रकारि॥मीठेषाइसग्रा
दिग्रपारि॥अचेतमग्ररूश्रीभगवानि॥
कमलावनलभकृपानिधानि॥गुली
कराइषलायेपांनि॥अनिप्रसंनकीने
भगवान॥कमलावललभकृपानिधा
न॥भयेप्रसनप्रभसचारजानि॥धूपपु
वाईजगायेदीप॥वारेहीरेनिउजलमीष
फुनिहरिसंनफुलाइउचउरि॥थामिवि
राजहिप्रभजउकउरि॥करीपगकमा
फुनिदहरिदास॥हरिमषिनेषानिसभा
सषाम॥फुनिकीनीउंउतमिहंत॥श्री
निप्रसनकीनेभगवंत॥फुनिगहिलीन
हरिकेपाउ॥करसिकमलिमलिमसना
किलाउ॥परमप्रेमसिउरहिउमपूरी॥वे
पगमभमरिमनिनेउरि॥फुनिकाढदी
नोकरिजोरि॥रिमरिलगाइप्रभकीउरि

ह॰श्रा॰
म॰
२६२

192

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

३ लकतिनैमसनेकेभये॥ गढिगढिके
दिप्रेमि रुकिलाये॥ वलीनैनतेसीनल।
धारी॥ जनकोत्रिभुलीदेहिसमारि॥ व
उभागीकेशवकेसेन॥ जाकेत्रिहिमहि
कमलाकेंत॥ द्वारिजोरिलागाग्रुनिगा
नि॥ सनक्रकृपाकरिकृपानिधानि॥ परि
लीला॰॥ कमलनैन॰॥ १२३॥ साषी॥ केश
वकेकीरतिकरैवडोसेननरत्रानि॥ प्रभ
प्रनैनसुरिजनकहैजेनामानिउधमा।
नि॥ १॥ अक्रूरउवाच॥ नमोनेनप्रभुभग
वे॥ नमोनमसनैकमलाकेन॥ नमोप्रवि
नयधेदभ्रमेद॥ नमकोगावहिचारोवे
द॥ जीवप्रकृतिउह्रैमेपरै॥ प्रभुप्रवि
नासीजनमनमरै॥ प्रानप्रसप्रनंदहि
भरे॥ नमरीमाईंग्राकउकिकरे॥ रजेगु।
णासकलिजगतकोकरे॥ सानकृपा
लैनमुसंघरे॥ नमनिलेपग्रमेपग्रले
ष॥ माईपाकीनेनानाभेष॥ माईयाकें
नमविनानकरै॥ नमरैपमिलेहृदैपी
प्रभकेपगिकाजरिपरनाप॥ जगतसा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रैसपनासाप्रु ॥ हउमेरागालिकासीपाई
तीनभवनकोपरीनचाई ॥ सोजनतम
सेसरनीपरै ॥ सोउतनमरीमाईश्रातरै ॥ त
मतजिकोनहिकोउउपाई ॥ तउईहिमा
ईश्रातरीनजाई ॥ पेकगहोतमारीसाति ॥
जेपप्रभकेपंकजिचरति ॥ सोचतनमरी
माईश्रातरै ॥ प्रभूपरमाहिनजनमेमरै ॥
जैसेप्रभवप्रहिलाहितमेंत ॥ नारदाहिस
नकाहिमहेंत ॥ निरभैभएकमलप्रसादि
सदाविराजहियाहिजगारि ॥ सभकहु
तमराहभगवान ॥ कसुनमेराहेनाए ।
ने ॥ मांकेग्रिहिमहिकमलानारि ॥ बाली
वेदतमारीचारि ॥ निरमलतमाराहथाग्र
हारू ॥ अमंरतनीतोभवनिविसथारू ॥ भ
वनसमिरकिंकोरिप्रकासि ॥ नेरमन्मंद
तमारेदास ॥ घगपतिसासतनश्रीभगवंत
सितकापकिपतिनागप्रनंत ॥ वातनक
मलनषंगगाधारि ॥ तीनभवनप्रछाद्दे ।
तिविडारि ॥ कहामेरिकियासेवकमाउ ॥
प्रतषभवनपतितमारानाउ ॥ किपाहै

र॰पा॰
स॰
१९३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केसंतोषेसिस्याम॥ तुमसमजगिकेश्र
नकाम॥ त्राहित्राहिप्रभाक्रपानिधान
हमरीमाईयाकरहुनाशनि॥ धनुयह
षनपतनीषमहवंध॥ ईनकीहिनका
रिहउयानिषंध॥ तिउकिरयाकारिमा
रिउकंख॥ खषीकोडोसभहीजउवंख
तिउहमरीमाईयाकरिउारि॥ नउनिधि
दानेमहाउदारि॥ जगमहिप्रगरिको
उप्रवनाह॥ तिउहमराभाहनिबाह॥ भ
लहिमहरिमनभउारि॥ त्राहित्राहिवि
भवनकेराई॥ दीनतमालेकवबाई॥
पहलीला॰ ॥ कमलनैन॰ ॥ ११४॥ साषी
हसिकरिबोलेस्यामघनमाईयादीनी
उारि॥ मोहिलीजेजनत्रापनापबिगा
निमलषप्रपानि॥ १॥ चौपाई॥ हरिका
रिमाईयानापपसीरी॥ प्रभुनेजनके
उपरिडारी॥ जनकोबोलेश्रीभगवा
न॥ मनवाचाजीपरमजानि॥ हमतोबा
लककोमलनानि॥ तुमहोवउहमारे।
नानि॥ हमकोपालहुपंषहवाप॥ ना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विश्रेवे हमनमनेश्राणि॥ नृकिकौपिना।
करहतिवमदेव॥ श्रेकुरवचाकीकरीश्र
हिसेव॥ जरकुलमहितमवशेप्रधान॥
तभिकुलराघनिनेरामान्॥ हरिभगत।
ऋमतिमृषिमहान॥ चरिमहिमूरनश्र
मान॥ जगुतिनमारीदेषीश्राजि॥ हरए
भईश्राहमारकोजि। जानहुसभुहीनी
रषिनावै॥ सभदेवऊकीसेवाकमावै॥ दे
वऊकीप्रतिमापाषानि॥ मारीकोईकि
कैसजानि॥ सभिहीतीरथिमहुसभि
देव॥ जानहुकरेइनौकीसेव॥ नउनम
कोश्रशाननजाई॥ फकिफतिमाइयाम
हिउवाई॥ साधभगतिकारसनकरे।
ननकालमाईश्राकोतरै॥ पहिभीनारेप
हचिरकाति॥ नेनमिलेजनुमिलेगोवि
लि॥ नमनेकातितिदर्शनकोजै॥ रामर
साइरमुननमनिभीजै॥ निरमलसाधू
हरिकेलोकि॥ नेऊमिलेसभकाटहिसो
कि॥ तिनभेत्रिगुणश्रनीनमहंत॥ मृतलि
वतिकिरतिभगवंत॥ रीमानापेवापमि

१·पा·
म·
१५५४

19

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रावै । सखीस्वरूप विकांत पतिनि गावै
केलपत्रकुंकादै दरिद्र । रंगभूमका
दैन छिद्र । ईकईकगुणा है तीनहूमा
हि ॥ पगुताप्रदरिद्र मिराहि । साधभग
तिमहिनीनोलकुन । सभकउ हरिकी
सेनविचषति ॥ तीनोगुनकेसवभग
वाति ॥ पुगरसाधकेकरतिविविषति
तीनोगुनकेशावभगवाति । दर्शनकी
नोपापमिटावहि । तनिमनिकीसभन
पतिन्नकवहि । हरिसिमरनदैत्रिका
लोवहि ॥ जनमजनमकेपातकउवहि
केलापत्रकुंअकलीचंदेव ॥ आपिकही
तिप्रभवसवल्लपघअभेव ॥ कोउनत्रिभ
वनसाधसमानि ॥ साधधरैमूरतिभ
गवान ॥ अवासाधमहिवंउप्रतापा ॥ १
श्रीमुखिनाथउचारतिश्रापि ॥ जोनरली
गनाबनिजावै ॥ गंगातानकेपाउमिरा
वै ॥ गंगानेनरूपिधरिआवै ॥ वकुरो
धरमअधरमकमावै ॥ शंभुभगतिकै
दर्शनपावै ॥ पिकुलपापुरसभैभजि ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गावै ॥ आगै पाउन होवनि पावै ॥ पिछला
मन महि मूलन लिखावै ॥ गंगा ने आनि
अधिक बताइ ॥ साधु की सोभा नाथ बता
इ ॥ ससि सूरज दिन की नपरि मिटावै ॥ आव
हि सारज बकरी तन पावै ॥ साधु का कोइ दर
सन पावै ॥ ताका नाउ सभ मै मिटि जावै
आगै नाउन उपजन पावहि ॥ मानिस
मै ह्री नाउ मिटावहि ॥ ससि ने अधिक
साध बडिआइ ॥ प्रभ सरावो न मग्र गति
दिखाइ ॥ कलपब्रिछ दारिद्र मिटावै ॥ म
हा कठन त्रिसना न गवावै ॥ सा कठन
त्रिसना न गवावै ॥ साधु का कोइ दरसा
न पावै ॥ तान काले त्रिसना मिना मिटि
जावै ॥ आगे त्रिसा नि कारि न आवै ॥ ६
अकरी श्री भगवान मनावै ॥ कलपब्रि
छ रुती फल देवै ॥ आपि करति प्रभ आल
ब प्रभ सेवै ॥ कोइ नसमरे साधु समावै ति
साध परे मूरति भगवान ॥ साधु की
माची बडिआइ ॥ अकथ कथा भगति प्रहि ना
बताइ ॥ फुनि संक्रा को करति निगोपाले

२.प.
म.
११८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कालव्यतीतकालकेकालि ॥ साधद्ध
कीसमकोइनकरे ॥ सभितीरधितेन
मसेपरे ॥ हमक्रतेआगेहरिसंत ॥ सदा
हैदजाकेभगवंत ॥ साधद्धकीवधि
आइकही ॥ जनअंकुरसतिहिरदैगही
फ्रतिश्रेकुरूसिउवचनसालि ॥ उ
वरतिलागेकलगोपालि ॥ सनुवावा
जीकुलकेचंद ॥ भकैलउवड्डकाद्ध
अनंद ॥ जनअंकुरभुलिगाईआन
प्रभकोमाईआअनिवलिवान ॥ राम
कलप्रभदेवअनेत ॥ वालकिकोजि
नेहरीसंत ॥ हितकरिदोनोकेठिलम
पे ॥ प्रभकोअविगतिलषीनजाए ॥ हर
षिभऐअतिजनअंकद्धर ॥ नषसिष
प्रभभऐभरपूर ॥ जनकोवालेफ्रति
भगवान ॥ सनवावाजीपरमसजान
पेकिहमारीहलिकमावड्ड ॥ केसवपा
उवणामीमिदावड्ड ॥ जावड्डतिनकेघ
रिकैमाहि ॥ केसाजगिमहिएजकमा
वहि ॥ प्रेतराजमटरराजावलिवान ॥ सो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धाउसमभनाकाज्ञान॥कुंतीकेसुततिहुंसो
वीति॥धर्मंसूपमाप्रापतिथीति॥तिनसो।
नेइकीधवरीलेश्राउ॥हमसौसिउजिन
वैधिरभाउ॥तिनकापाउपिनामरिग
इंया॥तिनसंतनइपरिहमरीदईया॥प्र
नरामस्यकेवइतेनेर॥ग्रहंकुंतीस्त
कुलकेवर॥तिनसिउसमवरतेको।
नाहि॥भेदुनसतिमनीजेमाहि॥वङु
श्रेधाग्रतिमनिकाग्रंथ॥सनइसिउ
नेकासनवंध॥पांउवकविनतोकेवी
ति॥बाकेहिरदेवसीग्रनीति॥हउजा
नेसमभनाकीबाति॥परमपिग्रारेग्रग
नेनाति॥नसुविनाहिघबालेश्राउ॥कै
माहकेरवकोराउ॥वडतुभलाहुसोमे
वकिकसी॥हरिकोग्रागिग्राहिरहै।ग।
ही॥हलधराउधवग्रहुवनस्याम॥स
धसिउग्रापेग्रगुनेधाम॥यहिलीला·
कौपमनेसनाइ॥प्रेमभगतिमाधवा।
कीपाई॥कमलनैननग्रहकरोवंडार॥।
कमलदासपतिपरिवलिहार॥२५॥।

र॰ग॰
म॰
१६६

196

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

साषी ॥ हसतनापुरी अंक्रूरजी आपे ह-
रि के संत ॥ पांडव की सुधि लेलिकउ
पठियो सिरी भगवंत ॥ २ ॥ चौपाई ॥
ऐ अक्रूर भगति हसतनापुरी आपे ॥ सु
धि लेनि भगवान पाठाये ॥ आई ओ

संत सभा के माहि ॥ जाके दरसनि सभ
आवत नाहि ॥ देषिउ प्रतपास हा बलवं
त ॥ देषिउ भीषम परम महंत ॥ देषिउ
द्रोणा महा सर ज्ञान ॥ देषिउ करणम
हाबला ॥ असवथामा महाबलिवंत ॥ दे
षिओ बिदर कृसन को संत ॥ दुरजोधन
सा निगुरह का ॥ आगे सेवक घरे हजा

गा॥ रेषीश्रेसीसभामङ्गति॥ सभहीजो
पाग्रतिवलिवेन। मिन्नसभैउठिश्रार
हर्दइपा॥ श्रापेसेतुश्राजनसषभईया
मिलेश्रेकभारिक्रेनवउाई। नेजसभा
काकहिश्रावजाई॥ उजलश्रासनश्रा
गेधारिजे॥ सभङ्केवक्रुश्रतिश्रारकी
जे। क्रुमलप्रक्षवैसापेसेनि॥ कक्षुक।
वैसिफ्रनिउठिश्रेहरिसेनि॥ क्रुनीके
पिक्नगइजेमहान॥ सराहदेजाकेभा
वान॥ क्रुनीजीश्रतिश्रारहकारिजे॥ क्रु
मलश्रासनश्रागेधारिजे॥ श्रासनिवी
वैठिजेहरिसन। हरिहरिकलसदान
विमंन॥ नवहीश्रापविदरमहरान॥ स
राजवैभवक्तिहरिनागान॥ श्रेकुरभगति
कोक्रुनीवोली॥ हरिदासीप्रीतमनि
मोली॥ हरिश्रेक्रामनटेमेरेहृ। पेकाइन
सिउवदिउसमेहृ। पारमक्रुमलसिउ।
दीपनमाति। वाचावाचीभावनिभा
नि। रामकमलतेषरेश्रागागि॥ समहीजा
रवमीनरहिमोगि। कक्षुचिनारहिमेरी

रु॰ग्र॰
म॰
१९०

197

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बाति ॥ पति दुःख पावै दिन न्य रहाति ॥
सीव लिय मन्यव रहचति सामि ॥ प्रभ श्र
विना सिद्र हष प्रकाम ॥ हमरा तन म
दुःखि सिव दहै ॥ कि उहरी हमरी षव
रन लहै ॥ दीन दई या लड्ड हन नाम हरि
प्रान हमारे श्री गोपाल वर्जरी ॥ ति
मेल ना यनि रंजन ॥ सभ मन न केम व
दुःख भंजन ॥ महा दुःख कि उ कारनि
नाहि ॥ सुकि को उ कौन को जमि माहि ॥
सभ है के रव हमरे पिश्रालि ॥ रुवहित
रेव को मै वा लि ॥ नि उहरि माउ दके
वार को आरि ॥ ईन उ मन ने सभि पाव नि
हारि ॥ लि उ दुस्ह हम हि उरनी व सो ॥ रउ
रन पावो कि हि हम न सो ॥ भामि जाउ जि
रजा नाथा उ ॥ जप लि र हो के शव को ना
उ ॥ हउ प्रना थु विन के पा वराई ॥ थी मे
दुःख ने ले कु कू राई ॥ बलै ने न ने सी रत
ल पारि ॥ कैली विश्रा पि उ कष प्रपारि
नो षी विरह रूप रूप अंक रुरि ॥ लक ने केम व
नै कुन रहरि ॥ कोमल विल [illegible] रि गे अ मानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमरे सिरपति श्री भगवानि ॥ राजकर
हिंगेहन नमारे ॥ सतिवचन धरि हृदै
हमारे ॥ कंनिकाजन कोनानो भू ॥ हारे
कैसिमर निपायो मोभू ॥ कंनि रे षिउप
ज्जा विउहार ॥ सभ पोउव सिउकरा हि
चिया र ॥ पांचो पोउव देष हि लोग ॥ वे
हैरानि सिंघान सिनि जोगि ॥ परमते
नेम्य हसी नेउदारि ॥ परचारे देषे नेनि
हारि ॥ लै कसम कल मिलि श्रेसे कहै ॥
हहै रिवे सिंघासन बहै ॥ कैरा वृस हहि
ने श्रेसी बाति ॥ तिनकाने जनरि दे ला
हाति ॥ वडे तरदिन सहरी काजन राहि उ
कैरव कामन सव हरी लेहि उ ॥ श्राइ उ
सनसभा के माहि ॥ जो के दर्शन सभ
श्रघजाहि ॥ पेतनाम हराको माहि ॥ जो
के दर्शन सभ श्रघजाहि ॥ धूनन हर
को कैलि उ मन ॥ प्रभ कै को धीन मधा म
मरंत ॥ मनिश्च हिरिनामा वचन हमारे ॥ स
भिरि दिन करम चाम नमारे ॥ धर्म पंथा
कोराजकमाई ॥ रोनेला किपा मह

द॰ग॰
म॰
१५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

षपाई ॥ सनमतीज्ञेदोऊसमानि ॥ सम
कीज्ञानहिनेसरखानि । हमरेसमनादे
षेनाहि ॥ किणमतिषारीहिदेमाहि ॥
सनकिआदेवहिनेपरलोकि ॥ विनाथ
मेषनिलागनसोकि ॥ धर्मपंषिवलप
परिहितिआगराजाकहैहमारिलागि ॥ प
कुनापहिगापाउकमाई ॥ हमरीमतिले
हिरेसमाई ॥ नवषनराहकरेवषान ॥
सनहरिकेजनपरमसजानि ॥ वचनन
मारेसपासमानि ॥ सनिसषपाईओहम
रेकानि ॥ कोऊनवानिहृदेरहिराई ॥ क
उनेककरालेहेहरिराई ॥ जड़लमहिप्र
गटेभगवानि ॥ हरिमधुसूदनप्रघषेउ
ठानि ॥ तिनहमसोहेसभेगवा ॥ हाकर
हिगेभूकोभा ॥ नेकुनवानिहमारेहा
थि ॥ जोकछुकारिहिसहरिनडनाथ ॥
सेवहमपापकारहिअज्ञान ॥ नवहम
कोमारहिभगवान ॥ तीनभवनपति ।
कमलअनंत ॥ जोकछुकारहिश्रीभगवंत
मलषअचानीअमितअपार ॥ आपेभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मउतारनभार॥ श्रनएष्टकामोधिसन
विदाभईओश्रेकूरमहान॥ कमनामुन
पतामखिमाश्या॥ श्राईश्रभुकादर्शन
पाश्या॥ श्रधेगाउउनिश्रभुकाउको
हीमूरतिहदैधरी॥ मिमिउपरनेश्रभ
केपाई॥ केशवलीनाकीठलगाई॥ सा
भश्रनेनश्रकूवणान॥ हेहरितमनेक
कुनकाना॥ सकतुजाननहारमुरार॥
कउतककेकरहिश्रनेअपार॥ यहलीला
कमलनेन॰॥ ११६॥ साखी॥ जगसिंयकी
हामताकेमराईकीनारि॥ भरनाकम
विआरिओपिनहिकरीप्रकारि॥ १॥ सो
रठ॥ केमराईकीधीरेनोनारि॥ केर
विआरिओकमलमनारि॥ जगमेंधरतनश्र
तान॥ मधुरेमपतिवलिवान॥ नाको
बेरीहोउपियारी॥ विधयाहोउदीन
विचारी॥ जगमेधपरिहोनेगाइ॥ दीन
विचारीश्रानरभइ॥ पिनवलीपहिक
रीप्रकार॥ नातहमानतापुनिवार॥ हा
मताकेनतादापतिमारिउ॥ हमतननमन

२.म.
म.
१९६

199

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

माननिवारिउ॥ कंसहमारानोहिजसम
ना॥ कविद्याकीगतिहैपितमाता॥ बा
सुदेवपुत्रमहाबलिवान॥ महाहठीला
श्रीभगवान॥ हमरावैरुकसलनीलो।
मै॥ करिकिरयाहमकोसपदंजै॥ नोहि
जामानाजादवमारहि॥ नमश्रागेसभ
जोधाहारहि॥ जरासंधसुनिक्रोधहिम
रिउ॥ प्रभुकोमाइश्रयंपुलाकरिउ॥
मारवहमाहूनहिजवाउ॥ पातिनप
श्रतिलजापाई॥ सबावीविचोलिउब
लवान॥ सकेपछानतिश्रीभगवान
किश्राजादवपतिउहिमकोरे॥ पाहग
हनिलजमरो॥ नारदवकोउनिमतो
जानि॥ जिनकुहमारेहनेजमानि॥ तेहम
रहनिसेनोलई॥ सानुधानसभसेना
भग॥ उगमडीसेनासिंधुसमानि॥ श्रागे
पविनासीभगवानि॥ श्राइमथुपुरी।
लीनेघेरि॥ मथुरानीविकरकबउदे
रि॥ देखीसेनाश्रनिवलिवानि॥ सभन
रकलकंपेप्रान॥ हलधरकोबोलेभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गवान॥ मानषचूणी धारष धराान॥ भाइ।
कोकोलेहरिताई॥ कठपभकोजहिक
वनओपाई॥ सेनामानसजलहोइगइ॥
मधुराधुरीवरेनीभई॥ विनवनकोना।
हरिजगरीस॥ सतिससनानतिविहेवी
स॥ सविविविननकीनोभगवान॥ देरष
उतरेभानसमान॥ नभनेउतरेदेरष
नीको॥ शीतमरानकलसकेजीको॥ न
भनेउतरेदोनोभान॥ अमिननेजनही
किसीसमान॥ असकहमहनिसारथील
ष्वि॥ परमेतिनोजगमकेनाथि॥ सदर
देनोरथकीध्यान॥ श्रीसश्यामीसक
केहनिमहानु॥ रथकेवनकेहिवउनी
न॥ ध्यानधरेहोइनिरमलचीन॥ सब
नत्रवारहनानाभांति॥ कोइहसरको
इसमकोकोति॥ हरिकेरथपरिआइ
धवार॥ वकुमलदासननेजुग्रपानि॥ वे
उग्रथमसनंदननाम॥ मारेगेधनष
पराक्रमधाम॥ गदाकौमोदकीमहा
प्रताप॥ सारकोपरजन्यसारकोचाप॥

दो॰
म॰
[illegible]

20

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बरनिषंतमहिबाणाश्रनूप॥रषिप
तिभुजागाइकेरूप॥कवचक्रसको।
जगममिकरै॥दसोदिसाकेनमकोट
रै॥दिवसवरकोकेचनमहावै॥दसोदि
साकोतिमरहरिरावै॥कवचुसाषिमा।
गोषवनिसहावहि॥तिननेरविसमि
षनेलजावहि॥सारथीकोहैदाहक
नाम॥सदाहरैजाकेवनस्याम॥श्रम
केसवकनामसनावैषाने॥जिनकाज
सश्रसादिकगावैजाने॥येकषलिहजा
सजीव॥जिनकाकेसवहीमहिजीव
मेवग्रहरूपनीजावलिवानि॥यकवचा
नेलाइकनामवषानि॥केशवजोकर
षकोध्यान॥कहिउसभैसुकरेवमहा
न॥श्रविहलधाकोरषकोध्यान॥वि
श्रामप्रनमककानिवषान॥हलधरि
जीकोरघुवलिवान॥श्रनिश्रविनासी
परमप्रनाव॥हलधरहमूमलनेजस्रपा
र॥षमहिहलधरकेरपीश्राय॥नाल
श्रक्रूसीधजाविसाल॥वलकोरषपी।
प्रेमरसालि॥रषश्रविनासीहोइश्रजीन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रामकमलकेपरमउलिन॥ ईनरघकार्के
परमउलीन॥ ईनरकाकोईध्यानलगाँ
ई॥ कोईमनेकोउनघकीगाई॥ घउ
नेमघनेश्रीमुककहै॥ मोजननीहवै
हरिपदलहै॥ संकारघणकउश्रीभग
वान॥ बोलेप्रीतमउराघउरान॥ यदि
नमरेवलिमभहयोआ॥ ईनसिउ
मारीमैनामारि॥ कटकरनगुमशंघ
प्रपारि॥ बमकावउहलगमनगरि
जहउकुलप्रभूनमारीसरनि॥ समउघ
मोचननमरेवरनि॥ हलघरप्याशा
लीनीमानि॥ जोकहुकीनीश्रीभगा
वानि॥ दोनोकवबलगापेप्रेंग॥ रामा
कमप्रभमरउप्रभंग॥ रघपतिवैठे
नोवीर॥ शंकारघुलयकमिश्रामपरी
कघुनउकुलकोमैनामाथि॥ वाहरी
निकसेत्रिभवनिनाथि॥ नराहिंधकेम
नमघआये॥ नाकेउनमभवेठउगावे
शोघुवजायउझेश्रीभगवान॥ प्रभुशिवि
नाघीउराघउरान॥ मैमासमघउपंथा
कोभईया॥ उहनिप्रानपदेध्यानालंध्या

र॰रा॰
म॰
२०१

201

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गेंदसबरहुतिपैटीकाति ॥ जोथीसे
नासिंधुसमाति ॥ सरीखरोभयेसबकी
प्राति ॥ कउनककीनोश्रीभगवान ॥
पैसासेंधुअतेंतबजाईआ ॥ सबउबल
धरिपरेलिधाईया ॥ जासेंपढ़ीदशे
नकरिजे ॥ कोरजनमकापानकरीजे
नगासिंधोबोलिउअज्ञानी ॥ सकेपा
छ्यानतिश्रीभगवानी ॥ हरिकोकहि
उमुनोहेवाल ॥ तमऊपरिहमभयेदि
आल ॥ भगिनिजाडूलेअगुनिप्राति ॥ बा
निहमारोलीजेमान ॥ कमलनैनहेको
मलमान ॥ लीजेमानिहमारीबानि ॥
अवनिमाषुनृअविनउडराई ॥ माष्क
बोरग्रहोहरीराई ॥ इहासलविचारहि
प्रान ॥ सनतचउनेरमश्रीभगवान ॥ त
मबलरामअरोहमसाधि ॥ हमरेतम
रेदीमहिनाधि ॥ मोकोनोहिविलंउ
नलाउ ॥ जासेपिहेमेरानाउ ॥ जोतेम
केविउारहिवीर ॥ पातकिकोटनारहे
मेरानाउ ॥ जेतेमकेविउारहिवीर ॥ पा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पानकिकोरस्तनाहैशरीर॥ अगुपेलमहि
दाउपरान॥ तिसैरहैतिसश्रीनारायन
जगसंघकोश्रीभगवान॥ बोलेश्रीपति
पुरुषपरान॥ सराजानुरेजगसंश्रजान
सतिवचनहमकरहिवषान॥ जोयाव
कहिनमुषतेवात॥ करमकरहिनोहो
तिविधिशाति॥ सावणकावनीसवउ
नकैर॥ वरषाकोजमिकोउखहै॥
भारेकावनगरजनफिरे॥ निर्मलनी
रनवाहेतिरि॥ जोषामुषनेकहाधहिबा
वहि॥ कमेतिनोकेलोकसनावहि॥ स
षनेवकोहिकिनहायिरिषाई॥ सराष
मतिकोवतिमिराई॥ हमपवेकेहीव
नउवाकरि॥ प्रवेनमारीसैनामारहि॥
हयगजपाईकगावेवेति॥ मारकुजोध
वसुरषपहुममनि॥ इनतेपकनजानाप
है॥ साधुवषानेकेपावराई॥ क्रोधिउजग
संघप्रलान॥ नवइउवचनकहेभगा
वान॥ आगेप्रभप्रविनासीनाथ॥ सभ्य
नेतिश्रीसमकेसाषि॥ जगसंघजोधा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अभिमानी ॥ सभसैनाकउबानिबषानी
जारवसैनालेचढ़बेरि ॥ सभसैनाफि
रिजाउचौफेरि । लोकउआगिआलीनी
मानि ॥ घेरिलीपेप्रभश्रीभगवानि ॥ चे
रीसैनासहतिनोपाल ॥ कानअनीतकै
लकेकाल । रामकलसघदीसहिना ।
हि ॥ तिउरवआवहिबारामाहि ॥ मघु
रानगीचारोपरिचरी ॥ एककोरकेउप
रिघरी ॥ रिहनआपेश्रीभगवान ॥ मूर ।
छभपेसभुकेप्रानि ॥ गिरितिपरीदे ।
हिसघनाई ॥ बिनानाघमिरतकसीभ
रे ॥ होपरिसैनाउरैवान ॥ महामेघ
कीबुंदसमान ॥ सारीसैनापेकैवारि
प्रभपरिहिउरेसभुहथीआरि ॥ माथव
छोटाचढ़ुसमेति ॥ रामकलसजगान ।
केघेति ॥ जिउपरवनपरवरषापरे ॥ म
हासैनकाकछुनकरे ॥ तिउप्रभुन ।
होईरहेअचल ॥ रामकलससुणाकेप
ल ॥ नउकुलसैनाचाईलभर ॥ जगि
षणागेछपिता ॥ लीकोजानीश्रीभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वान । संतन जन कउ केउ लीपरान ॥ जिउ ह
मरे के श्रव सम्रथ पावहि ॥ नानक काल इभा
नव नावहि । जिउ रवि निकसत नवादरा
फाति ॥ हरि करे प्रभु तिउ हम्री धार ॥ सां
गघनषचराई ओ स्याम ॥ सभ संतन के
हरन काम । तेनी धिं वकी ओरे काति ॥ य
तिस्त्र निकें पिउ सभ संसारि ॥ घनघ ज
वैनगपति रेकारि ओ ॥ नाकाजम स्रुक
रेव उचारि ओ ॥ वेदरि वानिकसी गुनि
माधि ॥ भलेरूपानिधविभवतिनाबि
ग्रस्याने ले वेद उवारी ॥ घनघतिनोकी
वासिघारी ॥ देवोपरी घनघ पुनिकानि
हाघभपेसभ मताके प्राति ॥ दैनडघन
घसवंदसति पाईया ॥ सनतितिनोकें
सिदा उराइया ॥ गयेभानितिन जिम्र वुनेधा
म । घनघ पुनघसनिग्रीघन स्याम ॥ घ
नघसवु रकीम रिमामो कही ॥ प्रभपा
लिस्रि समनउ पावतसही ॥ कमलनैन
कमला के नाथि ॥ सांस घनघ बिरान
निहाथि ॥ याकेसो म निरदि वितिकेगा

द॰ग॰
म॰
१-१

203

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नषछुबमोहनकोरिअनंग॥ निहिनि
वंरामहिराजनबान। तिनकीनआ।
लाभानसमान॥ काढेबानकसभग
वान। मानोनिकसेकोटकिभाना॥ छा
डेसैनाबीबगोपाल॥ म्हानिवंनपरहे
ईकाल॥ कविकाढैकबजोवराई॥ वे
डगनिनिनकोलषीनजाई॥ चलिउ।
करहिअनिवोणअनंत॥ भलेभहप्र
भश्रीभगवंत॥ परेफिरहिसैनामहिबा
न॥ वेगिप्रहारहिसभकेप्राण॥ लरहि
गनिकैभीसबिसाल। कउनककीने।
श्रीगोपाल॥ जोधामारहिमारयोमा
थि॥ कछुकनाघरहिघराइहाथि॥ हक
होवहिदोनोषंड॥ भलेनाथकोरक
ममंड॥ नीनहोहिपाइककेहूक॥ ग
येसभकेआननसूक॥ हलविसना
रेश्रीबलिबीरि॥ नासिउबहुतेगिरहि
पातीरि॥ ऊपाटेद्रिमुसलकीचोट॥ ई
उबलरामविडारेकोटि॥ डुटहिमल
किनरफहिहाथि॥ कउनककरहिप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भृगुनाथि ॥ रघपानदीतिहप्रउसरवही
नाकीविधिसस्वामीसुककही ॥ नदी।
बीचजोवलसहावही ॥ श्रीसस्वामीसु
कदेवसनावहि ॥ भजासापसीभइवि
साल ॥ केससीससोभवेसिवालि ॥ हाथ
पाउईहसछ्वसरूप ॥ हैनंदवेसमवेश्र
नूप ॥ कछुपिसमजोधाकेसीसि ॥ बेल
रिधावेविभवनउसि ॥ ससमभेविछ
रूसेभवे ॥ वेकेदिनसमभ्रहीमनीगवे ॥ सि
रपरिहोउचमहिवेति ॥ लीलाकरीप्रभ
तिरमेरि ॥ गजिपतिभवेबरेनीमाहिं ॥
उकहिश्रीसुकदेवसनाईं ॥ लालज।
वाहरीकोकरिरत ॥ उरविउरभग
नहेते ॥ सारीसेनाहतीप्रनेति ॥ कमल
मेनकमलाकेकेलि ॥ जरासंधपेका।
कीरद्रिउहेडो ॥ हरिजसईउसीस्वामीसु
ककहिडो ॥ बेधिउजरासंधवलितम
प्रभ्रविनासीप्रानकाम ॥ हलनोंके
गलिमेलिउरामु ॥ सुनिउनिकट्रिप्रभ
यवनस्याम ॥ केपावकोकोलेवलितम

द॰गा॰
स॰
२॰४

204

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मैत्रभिमानीसीह्रानकाम ॥ आज्ञाकउ
प्रभुगिरिधारी ॥ ईन्जाराममकरीनमा
री ॥ माहिमुसलकीकोटेसीस ॥ आज्ञा
करहिप्रभजगदीस ॥ बालेमाथवपुर
घउटान ॥ मनबलितमहमारेप्रान ॥ ई
नकारनाहैवक्रनाकाज ॥ क्काउकुईसे।
नमारक्रुराम ॥ लेम्याबैगावक्रनीवार ॥
हेमहरनाधरतीकेभार ॥ लेलेचावैई
हेघमान ॥ बोजनकहाकिहिभगवा
न ॥ हलधराक्काउठ्याहामान ॥ पालि
उलाइश्रीभगवान ॥ लेगतिहोईके
लागईच्या ॥ रहिउनाचहूंपैईकाउइपा
जराशिंघमनिवासिविचारी ॥ गारउप्र
होतउश्रीगिरिधारी ॥ अविकिधायव
लेचारमहिजाउ ॥ नगुवनभीतरिजाई
कम्माउ ॥ मारसिलोकमिलेफनिधाइं
जराशिंघकोलीयोमिलाई ॥ जराशिंघ
कौंबोलेलोक ॥ हेप्रभनेकुनकीजेसो
क ॥ जोघाभागहिमारहिमरै ॥ लोकुन।
कवशिटेमहिपरै ॥ लमयागेकियाका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दवलाति॥ होनहारापेहहरवान॥ बल
हतहावहक्रुपनारेस॥ जगामेयमाति
उऊपदेस॥ प्रतितिरलजगाईश्यावरि।
मादि॥ हरिगुणप्रीमुकदेवसनादि॥
मायवप्यापेमगुणमादि॥ संगमथाव
लिरामसहादि॥ वारघहिदेवगुहपकी
माल॥ मघनेगावेगुनगोपाल॥ नैमभु
सदनगरगुप्रहारि॥ दीनदईश्यानिधिम
हाउदार॥ वेदीजनमनमघजनसकौ॥ ह
रिमरतिनिहिदेमहिपरै॥ श्रीमथुसदनपु
रीउनीनरसाल॥ नामहिश्यावेश्रीगोपा।
ल॥ समउश्यारुपरिमुकनाहारि॥ वेदन
वरवेपघवनाए॥ परेहारपदेवरमाघ॥
श्यापेजीनपुरीकोनाथ॥ तिरीश्योनिक।
लीरामहिसाघ॥ श्यारनीकरहिप्रेमहिसा
घ॥ गहमहवसनउवाहिवेद॥ श्रेमथुस
दमपलपश्रमेद॥ तिरीश्याहरिकोति।
लकुलगावहि॥ दोमुरतिलेहदेवसा।
वहि॥ पकवनेपीवारहिरमाल॥ प्रभप
रिवारपहिमुकनामालि॥ ठ३१ठ३१होवै

र.श्रा.
म.
११५

285

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मैकाहु ॥ आवे भी तिन्ह कुंद मुरारि ॥ जेता
पन सैना का हुती ॥ उग्रसेन के आगे ध
रिउ ॥ अघुने घ्रं दर आई विराजे ॥ महाराज
राजन के राजे ॥ ईसी भांति मोसननारहि।
वारि ॥ लेले आई उकटक अपारि ॥ जरा।
सिंधु लिआवै हुती पाहि ॥ हुतिजीतन की
मन महि चाहि ॥ सैनामारहि श्री भगवा
न ॥ जरासिंध के छाडहि प्रान ॥ जरासिंध
मन धारे आस ॥ हुतिजीतन कौ वडी पिर्थ
स ॥ ऐक बार भागहि अघवन स्याम ॥ प्रान।
होई हमारी काम ॥ प्रभ अजीन कौ जीत
हि कउन ॥ पल महि मारहि कोट किभ
वन ॥ ईसे अनंत अलेष अपार ॥ आवे भू
मि वारन भार ॥ कियाव पुरी सैनाव।
लि हीन ॥ काल मिलन हरि आगे दीन ॥।
जरासंध सुलीला करी ॥ अमित पराक्र
म भी नाहुती ॥ ईह लीला · ॥ कमलनै · ११
साषी ॥ नारद जी जरासंध के आवे पास
तजान ॥ ओहि राजा चारन कुल गा आवे
महा महाहानि ॥ २ चौपाई ॥ जरासंध के।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारदआये॥महामहानिधाममतिभा
ये॥जरासंधउठिसनमुखआये॥नारदा
जीकैपगिलपराई॥पगपषारिआसन
बैठाया॥जरासंधकैअतिमानभयाया
बोलेराजासुनोमहांन॥नारदमुनिसेपा
मसुजान॥सुनिनारदबोलेसुरज्ञान॥
मदाहृदैजाकेभगवान॥राजाजीसम
फावहुमनमै॥चिंतासीकछुदेषनकै॥
निरभैहैकिउतेराज॥चिंतासिरुकिउ
बैठाआज॥जरासंधसुनिबोलेबैन॥म
हाबलीहैपंकजनैन॥हउभोगाहरी
नेबहुवार॥मकतेभगतिनिनरामसुरारि
पहिचिंतादैहिरदेमाहि॥किउहीहम।
रामोकुमिटाहि॥जोअैनपरैतमारीब
रनि॥सभहूःतेमोचननममरेचरन॥वे
कबारिभागहिघनस्यामि॥सुरनेहोइ
हमारेकाम॥बोलेनारदमहामहानि
धामसवातिहैसनहुसजान॥कालजि
मनपहिहनपठाई॥सभभ्रबलेनकाहै।
निमारिहमनाई॥मथुरापुरगटेहिसमनग

द॰भा॰
स॰
१०६

206

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रि॥ तिनिहउजीतिउसहिवारि॥ जोतूस
मराकरहिसहाउ॥ बलिकीजैनवहुला
रवराउ॥ कावललेनमथावहुधाई॥
हउभाउसभुसेनमीलाई॥ जीवतिप
करहिकेशवराम॥ प्रानहोईहमारे
काम॥ कालजमनकावललेआवे॥
ईकछिसनुमरीसेनमिटावै॥ लेहुचेरि
मथुराकोजाई॥ कहाजाईबलधरह
रिराई॥ गहिलीजहिचोजोवसुनंदन
दीनरहउभातिधिहहलिकंदनं॥ जातमिं
धमानोइहिवानि॥ नीकीकहीहमारी
मानि॥ नारदकोफुनिराजाकही॥ म
रतिनमारीहमरिदगही॥ नापहिसम
हीजावहुदेव॥ कीजैसफलहमारीसे
व॥ तुमकोजातिनलागतवारि॥ तुमा
नेमनमापरिसबवारि॥ करिकिरपा
इहिकछमिटावहु॥ कालनमनपा
हिआपिमिथावहु॥ बहुतवलानारद
नीकही॥ तुमरीपीडजातिनसही॥ जे
हेरुसोईमहारामहंत॥ हरीनाईलायनेमं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मंत॥ कालजमनकेनारदआईपा॥ स
भामैविजाईचूपहुपाईपा॥ सभाविवि
नारदजीपैसे॥ सतिगुरकीनेकउतकं
थैसे॥ नारदकिसकीदीसतिनाहि॥ बै
ठेजाइसभाकेमाहि॥ नारदकिदीसा
तिनाहि॥ बैठेजाईसभाकेमाहि॥ पा
जातपुरहपुरहकीमाल॥ कंठिविरा
जतिपरमरसाल॥ तिहमालाकीजेत
मवाल॥ सुचतिततिमतिहोतिबिगास
वहुतसीधसैनामहिदउ॥ सभासकल
अतिविसमैभउ॥ यहिसवाततुअतिकें
कौआवै॥ सकलसभाफुनिफुनिवि
समावै॥ प्रगटभयेनारदगुनदेव॥ का
लजमनकोनीअतिसेव॥ देआरह
आसनुवैसाईपा॥ कालजमननेतनि
मतिभाईपा॥ कालजमनतववचनसु
नाई॥ कहुमहंतकिहकारनआई॥ जि
उआपेतुममहामहान॥ सोवनेतवमु
षिकरहुवषान॥ बोलेनारदमनववि
वान॥ मथुराप्रगटेश्रीभगवान॥ ज्ञान

ह. गा.
म
२०७

207

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिंधजी सिउ बहु हकार । वांकी सैना हनी
घपाति । जरासिंधत्न मपाहि पठाईया
सति वचन कहि प्रगटि सनाईया ॥ तक
कउ भूप संदेसा दईया ॥ दीन बमाही ।
धारनी पईया ॥ जोतु हमरा कहै सहाउ
बसि कीजै तब जादव राउ ॥ फुनि नार
द हरि ध्यान मनाईया ॥ कालिजमनि
सति मन महि भईया । कालजमन फु
लिउ मन माहि ॥ वाका रजकउ वानि न ।
जावहि । सभने कुचे मारे चरन ॥ जरासंध
से चाहु न सरन ॥ बकुन भला नारद जीक
हिउ ॥ हरि कां येन न किन हलहिउ ॥ ह
उ ले मरि सनेकर कलिया उ ॥ मथुरापरि
उराजा ईपाउ ॥ वा रि सत्नेषा वहि जरासिं
ध ॥ हमरा वांसिउ हिन सनबंध । काल
जमन जब थे सेक हिउ ॥ नारद हरिपा
सा हदै गहिउ ॥ रमे गुसाई वाति सनाई ॥
राम कृष्ण मुख हि रहै गाई ॥ जरासिंधपा
हि नार दिपायाया ॥ सब वृतांत कहि प्रग
ट सनाईया । जरासिंध सुनि हाथहि मीउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वंशीकृष्णसुरनारदुकरिउ ॥ कालजमन
नवउदमकरिउ ॥ लैसैनामथुराघेरिवी
उ ॥ तौसमिईनासैनाचली ॥ अतिअसंष
जौपावकवली ॥ अपारसमुद्रकीनदीवह
ई ॥ लीटडकेपरवतहोइजाई ॥ अवक
नसेषियाकीनीजाई ॥ ईउकहिश्रीसु
कदेवमनाई ॥ मथुरापरीजायउपरदे
या ॥ जदुकुलनिपटिकाहिलापईया
हलधरकौबोलेभगवान ॥ विनतील
नसुरुषणुराम ॥ कहुअबकीजेकउनि
उपाई ॥ बलिराइसेकाबलिकराउ ॥ का
लजमनआईओबलिवान ॥ जरासंधा
भीआईयाजान ॥ कौरिनसहैकटकि
काजोर ॥ देषहुपरिजेश्रीमहिसार ॥ कौ
टिमहीसैनाकोमार ॥ जरासंधकीवहु
लीवार ॥ वहुतनकिउदहेउवहुथानि ॥ सभ
जदुकुलकेउपरानि ॥ लरनेकउहमदे
नौवीर ॥ सुबवलिरामअभेदशरीर ॥ का
लजमनकैसनमुषिजाहि ॥ जरासिंध
वैदेषुरमाहि ॥ जोमारिसकलपरिवार

दं.सा
से.
२०२

208

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हमहिंभगाईजोवहुनीवार॥ जगसिंध
कैसनमथिजाहिं॥ कालजमनपठैपुरि
माहि॥ वाधिवरेहमरेपरिवारि॥ कछु
थाकरखणमंत्रउचार। कोरिवोसनी
थैवलिवीर॥ अतिविसालसागरकेनी
र॥ जामहिंउसमनपैठनपाहिं॥ तिरीथा
वैदीपसवचलाहिं॥ वकुनभलावोलेव
लिराम॥ नीकीकहीप्रभुचनस्याम॥ वि
नेवनकीनोसिरीभगवान॥ सिंधुसमीर
उपरधनुवान॥ सिंधुजवैसिमरिजोकर॥
मारि॥ सागरलाईनेकुनवारि॥ हसिवा
हिंथाईजोमुसिधारि॥ परसेकमलमक्रे
रमरारि॥ प्रभकोनीनपाक्रमकरी॥ ह
रिमूरतिहिहैमहिधरी॥ नीनकरीउंड
तिमहानि॥ नमोनाथपूरनभगवान॥।
हाथिजोरिलागागुनगान॥ नमोपरम
परपरमसुजानि॥ नमोनिरंजनसमर्थ
थभंजने॥ उहविनासनसभजनरंजन
कोरिकसिंधुगंभीरअथाह॥ आमित
थगोचरअलखअवाह॥ निगलेभनिर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भलनिरबान ॥ निहकलंक कनिहसंक
नाराज ॥ रोमरोम ब्रहमंड अनेक ॥ अषल
भवनकोनमरीरेक ॥ महाराजकछुग्या
निग्याकरो ॥ कृपादिसटिहमऊपरिधरो
सागरकोबोलेभगवानि ॥ कमलावल
लभकृपानिधान ॥ उग्रादशजोज
नजलषिंचलीजे ॥ नानकालकछुवि
लमनकीजे ॥ वैनेहमारीश्रीरमाल ॥ उ
ग्यागिग्याकीनीगोपाल ॥ जबग्याग्या
कीनीभगवान ॥ सागरसिरधरिलीनी
मान ॥ उग्रादशजोजनजलहरिओ ॥
नानकालकछुविलमनकरिओ ॥ सा
गरपरमअनंदहिभरेओ ॥ अपनेमनम
हिजानईउकरिओ ॥ कमलाकेनहलाई
धवीर ॥ केलकरहिनेहमरेतीर परसो
गानितिपंकजचरन ॥ जिनकीसभब्रह्मा
दिकधारन ॥ विसुकरमाकुनिनाघउलं
ईया ॥ नानकालप्रभपहिजनुआईया
करिउडवनिप्रभससनमुखषरा ॥ हाथि
जोरिमुखनीचाकरा ॥ विसुकरमाकोलि

द॰प्र॰
प॰
२॰५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीभगवान॥ आज्ञाकीनीगुरषगुरान
हमरीपुरेपुरीवनावङ्जाई॥ सागरती
रविलेवनलाई॥ दिवस्वारनअस्हजाई
लालजवाहर॥ सभैलगावङुभीवबा।
हर॥ विसुकरमाआगीआसिरमानी
मोकछुकीनीत्रिभवनथोनी॥ प्रभुको
मनकीनाप्रणाम॥ चलिगेजपतिअ
षिहरिहरिनाम॥ आईजेहरिजनमा
गरनीर॥ देषितनिरमलजलगंभीर॥
उआरपाजनकोरवनाईया॥ धामदि
विसभसवरनलगाईया॥ कुटकमा
लीकेदुआरेकरे॥ संदरकलसतिनो
परिधरे॥ दुआरिकलापेस्वकनाहारि
रतनषचतसभुवनेकिवारि॥ हेमकिं
गुरेजगमगकरै॥ धामथोमनकेमन
हरै॥ अतिऊवेविसुकरमाकरी॥ मानो
लसकअकासहिधरी॥ द्वारवनापेराह
वजार॥ सभहीरचनावनीअपार॥ वउरा
हीअरुमारगगली॥ पेअतिवनीसभ
मेभली॥ फुनिजानैसाजउराजदुआर॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बिसकरमा मनि परम उदार ॥ फुनि कौ
नेके सब के धाम ॥ जहां बिराजे हरि गोब
न स्याम ॥ सो लाल हे पेक सउ आठ ॥ नौ
कुनक के लमाई डोका ठ ॥ फर कमली
की भीने करी ॥ गुली आ की ले सिरी आ
धरी ॥ चार दर ऊ तिस मोल जराई ॥ तिन
की गुन कहु जाति न गाने ॥ तने चंदे
वे स भिति हि माहि ॥ दर पर मनु कना हो
रफला हि ॥ जगमगाति मणि खरी अप
रि ॥ मानो त्रिहि त्रिहि सर ह जारि ॥ कंक
न जिम मंदर चउफेर ॥ बीव का मंद
ली ना चेरी ॥ वहु बचे अरना लर माल
विचि विचि मंदर डम की पाल ॥ मस्ब
बनी वे पहवो निभरे ॥ अ पुने प्रभ को
सेवक करे ॥ ठउर वनाय जो गहुउगा
न ॥ दर पार रावान हु के ध्यान ॥ स्यमहा
की पाहू होवना इ ॥ हरि सेवक का मग
ति दिषाइ ॥ दर दो प्रमि वे स ज्ञान ॥
बिसकरमा स्रनि म बिम स्यान ॥ पुर के
मंदर वने स्वन प ॥ वहुनठउर महि कीने

ह.भा.
स.
२०१.

210

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रूप॥ निर्मल जल सितु पूरन ताल॥ बइ
न ठउर जन रचे माल॥ बिस्वकरमा बि
नै बै मन माहि॥ मोसो रचना होती नाहि
मन माने सभ पुरी बनाइ॥ ईउ कीरि स्री
सुक देव सुनाइ॥ ऐसे प्रभ के राज रचा
ने॥ अति अविंन महिमा भगवान॥ जग
मगाई दुआरिकापुरी॥ हरि मूरति हिरदै
मीन रिग हरी॥ कवि आवहि गेह मोरे ना
थ॥ लागो रहो गी चरन कै साथ॥ हरि
गमन नुमष देखै बरी॥ मथुरा उरि दिस
लेपती॥ जितु सभ थि ह थेम पुरा माहि
धाम किसी का विउ नाहि॥ सभ को सभ
पते से हम मोई॥ यहि रचना बिन ना थन।
होई॥ कोटी पीन लके भंडार कोतांबे।
कोवनी अपारि॥ यहि आनाज के मवबे।
नाये॥ विस्वकरमा तें भक्ता महा पाये।
विस्वकरमा मन का हि उवी चार॥ प्रभ ह
मारे कुस सगुणारि॥ जेती महि दीनी भगा।
वानि॥ कमला वलल भक पानिधानि
मोल माई प्रभ आगे धरो॥ पाछे राधिक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हालेकरौ॥ वडेभागवृद्धगोरलगावे॥ वि
सुकरमाकौभगतिनिहिबावे॥ पढेतरंग
वहलिनहरिसरनि॥ पूरमखेननविजे
मलवरनि॥ करनिसभकेसहरिध्याम
वहलपध्यावेहरिकेधाम॥ इंद्रसघमें
सभापदाई॥ देवकुकारिहरिभगतिनि
धाई॥ नउनिधिपदीकुमेसजानि॥ प्र
प्रनामुकिजानहिभगवान॥ देवकुके
सोप्रभकीरउ॥ जोधीवानिप्रमोलकि
नये॥ सोसोप्रभपदिहिमेहिपदाइ॥ श्रीस
निदेउहरिगाथागाइ॥ प्रभकादीयाश्र
यागेधरिजे॥ सफलजन्ममिलिदेवउ
करिजे॥ यातिइंहविधिसभकुडसंत॥
लोकअदीनाश्रीभगवंत॥ सोधरि
यागेभगवान॥ कृपाकरिप्रभकृपा
निधानि॥ प्रीउयाकाकाइंहिध्यान
इउसयामीसुककीयावधान॥ यरि
लीला०॥ कमलनैन०॥ १२८॥ साषी॥ मा
इयाकोयागाकरिकुनिहारिकमलनैं।
न॥ सभलेजावेउयातिकामपुरवालिलैं

द०गी०
म०
२११

211

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चौपाई ॥ कृतिमायाभगवाननतुलाइ। ना
नकालवङ्गप्रभपहिश्राइ ॥ हरिदासीपा
इहरिसरन ॥ परमेसुषनिधिपैकन्रा
वरन ॥ करिउँउनिहरिसनमुषिषरी ॥
हरिमूरतिनैनङ्गमहिधरी ॥ जोगमाई
याकोश्रीभगवान ॥ आज्ञाकीनीप्ररा
षपरान ॥ मथुराकोजननषरङ्गउराइ ॥
सोपरहैमकीसीजगाइ ॥ प्रीउयाहिकें
महिषरीपाइ । नानकालकछूवाहिन
लाइ ॥ सभउरठाइमाइयाजननषरि । प्री
उयाहिकामहिलेधरि ॥ अतिप्रविता
महिमाकरनाहि ॥ जोलीलासोअमित
अपाहि ॥ प्रानिभयेजागेसभसेन ॥ देषि
सागरनीरश्रनेत ॥ कहनिलगेमिलि
वातिवषाना ॥ यहहिकियाहैंश्राकहेस
जान ॥ मथुराकस्रालीग्रहस्याम ॥ को
हेंरहेप्रीतमबलराम ॥ सभनङ्गमिलि
यहिकरैवीचारि ॥ यहहिलीलासभक
रीप्रकारि ॥ सभमिलिगावेहरिकेना
म ॥ हूहेबसापेसंदरिस्याम ॥ मिउग्रहपे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभमथुरामारि॥ ईडकहिश्रीशुकदेवसना
हि॥ वहीषोसवरोयहगली॥ कोउकिसी।
कोसाषनरली॥ सकललोकमतेदहिमो
प्रभगिपरमारिहेमहिषरे॥ ईडलीला॰॥ क
मलनैन॰। १९६॥ साषी॥ मथुरानेसुंदरसु
रुचाहरिनिकसिसाम। दर्शनदीषोका।
लजमनकोपूरेजनकेकाम॥ १॥ चौपाई
मथुरानेश्रीपतिभगवान॥ बाहरिनिक
सेपुरषपुरान। कालजमनकेसनमुषग
वे॥ बडेभागवपुरुकेमये। वारिभुजाधा
रीभगवान। समदुःखवेभंजनकृपानि
धान। मंदहाससिरगिरनेफूल॥ सभम
तनकोजीवनमूल। कानकुंडलजगी
मगिकरे। तिउकस्तचंदलजगमहिनरे
रननषचनसिरमुकरिसहाई। मंदरिप
रमप्रभुहरिगाई॥ पीतउपरनामुकनाहा
रि कैसमनकुमणिगलिजोतिसूपारि॥
कंठिवनीवैजंतीमालि। पगिलउजल
लिपरमरसालि॥ वक्षमषलभिगुकीप
गिरष॥ विमलविमापकउरषमुलेष॥

र॰का॰
स॰
२२२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नघअतिसेंदरकहीवनाहि॥ ईडकतिसी
मुकेदेवसनाहि॥ प्रभकेपावनपंकज
चरन॥ जिनकीसम्भुब्रह्मादिकसरन॥
निरालंभनिरमलनिरकार॥ पारिसभू
नेउरषिश्रुतान। चाहवलिआएभगवा
न॥ कालजमनदेखेनारान॥ वडिभागीह
रिदर्शनकरिउ॥ कोटिजनमकापानक
हरिउ॥ कालजमनपहिंछाडेसाम॥ प्र
रनभयेभगतनकेकाम॥ कालजमनईउ
मनमहिंकरिउ॥ प्रभपदपरमाटिदमहि
धरिउ॥ वासदेवहैईहीअनूप॥ जोकहि
आयानारदउरूप॥ शस्त्रनकोईहाथउठा
ईया॥ नाकोसंगिसहाइलिआईया॥ क
वचुपहिरिउईनअचुअंग॥ नषढवि
मोहनकोरिसअनंग॥ अतिजोधाहैयह
भगवान॥ कालजमनह्वैउअतिवलि
वान॥ नकिपहिंआईउआजईकेला
पासिउभयाहमारामेला॥ धर्मजधपा
सिउआजकीजे॥ संगिनकोईमोपाली
जै॥ पांपहिंहैंहीईहैलाजाउ॥ शस्त्रनको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऐहाषउराउ॥ षाउनीसभ्रमैनाकोकहिउ
हरिमनूपहिरेसमहिंगहिउ। सभिजोधा
तेमरोदहे॥ हमरीसमझाहरैपहो॥ स
नमुषिपाहिरेकैलाजोउ। कबुप्रपना।
वलप्रगरदिषाउ॥ प्रभकेसनमषिआ।
पेषाई॥ तिकरिधाईदेषेहरिराई॥ नष
सिषलउहरीरामनकोरिउ॥ दर्शनकरि
अनंदहिभरिउ॥ कालजमनको दरस
दिषाई॥ दोनेभागिचलेहरिराई॥ काल
जमनहरीपाछैपरिउ॥ प्रभुनेमनमहि
तिह्वाकरिउ॥ हाषहसिउजुउपति
रिलैउ॥ कामदेवपासदाउजातिनदेउ॥
हरिमधुसूदनभागेजाहि नानाविधके
चरित्रदिषाई॥ ऐतनाराषहिपेकोहाषू॥
प्रभुप्रविनाशीत्रिभवननाथ॥ वडते
ऐतनिहोईतिरास॥ मनहमतेपरिहरिहोई
उदास॥ पाछैलाईधाउभगवान॥ स
भविधिपुरानश्रवणजाण॥ ईकश्रवत
महिमाधरवाने॥ ऐतनिध्यानमहाप्रभ
भषे॥ प्राणेषासोईपाईकसंत॥ वजोपा

द.का.
म.
२१२

213

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

षपनिवलिवेन॥ बिनजानेसोइआई
केनमगवानि॥ कालषुमआयेवडे
मस्तानि॥ कालिजमननवसबदमना
ईया॥ मकिसेकोपाछेलेआईया॥ सो
ईरहितुनिरभैसाहोई॥ याभितउकपरी।
मवानकोई॥ मकिसेस्नलिआवहिंसे
नि॥ सोईरसहिउकहलोवोग्रंगि॥ तो।
केवेगिलगाईलानि॥ मनगरगकेम
मनजानि॥ लागितुमरषनवेवलिवा
न॥ नोकेलोचनअगनसमान॥ कोध
भिसहिनिनजोधाकरी॥ कालजमन
केऊपरिपरी॥ कालजमननिउपा
सीआगि॥ भयोभसमजरऊवेभामि
मककोप्रसंनपरीछतकरिजो॥ कव
नप्रषमिरकेदीपतिजो॥ हेप्रभला।
काकोवषान॥ हमरेसतिगुरमषि
महान॥ बोलेश्रीमकअरहान॥ मन
ऊपरीछनसंनमजान॥ सरजिवेसी
भावलिवेन॥ दादाष्यामानधानासन
नोवनासकापनमहान॥ आपजीमच

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केरमहान॥ वशेभपजोपावललभद्वितो॥ उ
नमहाउदेवरूकाकातेउ॥ देनभगार्इज
नादेव॥ वेमीकरीमहरूकोमेव॥ वरूते
दिनदेवरूकेरहिउ॥ नवदेवरूवाकेर्इउ
कहिउ॥ हेजोधापरनीकोराज॥ नेगुरे।
समहमेकाज॥ ककुवामोगउदेमव
दार्इ॥ विनामृकनिजोरिदेसहार्इ॥ म
कनिदेहिपकेभगवते॥ प्रवरदेवस
भिवाकेजेन॥ नवराजार्इउकहिउसमा
र्इ॥ वलोनेमोनेप्रामिप्रापार्इ॥ धामिरि
धारेप्राप्रादेह॥ प्रापनेवामिउवर्इ
प्रमनेउ॥ फुनिदेवरूरामाकोकहिउ
नमरीकुलकाकोइनराहिउ॥ वरूनग
विनसिउउपजिउप्रउर॥ कोर्इनरहि
उनमराहउग॥ होहिमनुषरूकेछमा।
सि॥ नवहमरार्इकदिनपरगासि॥ नेजे
नीहउप्रविरहीप्रार्इउ॥ वरूनकालन
रलोकवहार्इउ॥ हेराहेराजाफुलिक
ही॥ विप्रापोनिद्राजानिनमही॥ सोव
रूमहैनकोइजगार्इ॥ भोगोनिद्राघनी

द॰पा॰
म॰
२१४

214

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रवाई ॥ देवदूत कहि उनाई परिसोगे
नककोजेनुजगावैकोउ ॥ छिनमहि
जरेहमस्ववहदईया ॥ श्रीनाजगकाइ
हाईया ॥ गोपहिप्रगटे श्रीवनसाम
समसंतनकेपूरनकाम ॥ कैसेप्रगटे।
श्रीभगवान ॥ तिसिध्यानकोहोसव
धान ॥ पीतउपरनाकुंडलकान ॥ गा
लिमणिकोरकभांनसमान ॥ चारभु
जाश्रनिविमलासाल ॥ देहिवरातनन
सामनमाल ॥ कंठवनीवैजंतीमाल
पंगिपरजंतकुलिहीमाल ॥ नवमि
षधंगश्रेणिसभरे ॥ घहिमसकंदेहा
शेनकरे ॥ हरिकेननकावादनभईया
सभोग्रफकानमसिरिगईश्रा ॥ मच
केटनुभईयासकेछिसहिपसारा ॥ महा
मेजमेकलमगार ॥ आईधाईपरमेह
रिपाई ॥ हरिकेपगिसिउरहिगेलप
टाई ॥ हरिसनमधहाढाकरिजोरि दि
नहलगाइप्रभकोउरि ॥ मधुसूदन
कोबोलेबानि ॥ कहोनामकहप्रपनी।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जानि॥ वैसानगकैथोहेभानि॥ ससीध्य।
होकैवहतामहानि॥ ग्वालेलकोपालस
हिकोन॥ कहजीकवनतमारसवन॥।
होईउजानिजेहहेसोहि॥ कोइदेवत।
मध्यागेनाहि॥ जेतेतेजवसीसीसाति॥
तमसभहतैपरेउदाति॥ तमहोसमदे
वनकेदेव तमरेपतिकोकोजेसेव॥ न
गनचरनआयोवनमाहि॥ कछूपतिम
हिउरियोतोनाहि॥ कहहुकवनतमस
हरस्याम॥ नामुतनावहुरूपालकाम॥।
वेसजानिकुलनामसनाई॥ तमरीमहि
माकहीनजाई॥ तासेमाधवमेचसमा
मान॥ संदरमुषतोकरेवषान॥ सनीश्रे
राजापरमसुजान॥ हमसुरासोतमप्राप
प्रान॥ प्रानसवलसनाहिथनेन॥ प्रभअ
विनासीहेभगवन॥ लीनेमुकेकइअव
तार॥ कीनेतुलाग्रहकसेसुपार॥ जिना
केपारिनकोजनपाई॥ जेतिमतिकोइ
तेनाहीगाई॥ पालीकेकिलकतालिसवै
वहनुजनमकोकोजनवकैर॥ इनतेहमा

ह॰गी॰
म॰
२१५

215

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कर्मअपार॥अतिअज्ञन्मजोकोजनव
नर॥अतिअशेखलीनेअवतार॥अव
कीविधिहृजेकरेवषान॥सुनीश्रेता
जापरमसुज्ञान॥हमपेधीरसमहृम
हिसैन॥सुनीधरेषेपंकजनैन॥मेष
उरस्थलसेजहृमारी॥चरनमलेषीक
मलापिआरी॥मेषउरस्थलमषकी
षानि॥पोढेकेनिरगुणनिरबानि॥मे
लसहेअमुषलजसबमनोवे॥हमरे
तेनमनसुषउपजावै॥हमरोसज्जनस
नोअपनीकरप्रीति॥परमपुरातनतन
हमरीरीति॥चरनिमलैषीकमला
पिआरी॥निजवासीअतिदीनविचारी
तेहाभ्रमवसालेगईया॥दीनहमारी
सरनीपईया॥अस्महमकोविनतीक
री॥महीनमारीदुःखकरीभरी॥ईति
निमितलीनाअवतार॥हरिकरनध
रनीकोभारह॥वासुदेवहमारापिनाम
हान॥वासुदेवसुकिकरहुनिमसुजान
पेकिकरहुनिमकिकोअपीकल॥हैर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिअमितपराक्रमविस्तार॥ बहुरोबोले
श्रीभगवान॥ कहुवहमागहुसंतमा
नान॥ जैसेवरकेदेवनिहारा॥ हमसमह
नेपरमउदारा॥ रामनामनमहिकोयेवी
चार॥ कथाभरथीहमरेडआरि॥ गसांसे
नयापरमपुरांन॥ तांमहिगावेगुननाा
रान॥ मपुराप्रगरैगेभगवान॥ जहुकु
लमहिहरिकपानिधान॥ पहिहअ
कसमयुवतार॥ प्रभपुरबोनमअमित
अपार॥ हरिपिछेगेलागायुनमानि॥ न
बोनमसतेपुरषपुरान॥ पहिलीला॥

कमलनैन॥ २२॥ माधी मव कंदउवाव॥
मवकेहमगनकीरनकैसनमबश्री

र.गी.
म.
२९६

216

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भगवान ॥ जेनैभगतिनेनीकैहैस्रनिथ
नेननारान ॥ २ ॥ चौपाई ॥ मृषकेनभग
तिहृतिकीरतिकै ॥ गुणगावैसवद्दः
खकोहरै । नमोस्रवेनस्रमेपस्रलेष
अगत्रगधारमिनउनमिमेष ॥ नमरे
मायास्रतिवलिवान ॥ मिनसभमोहे
लोकसमान ॥ मंदरिहरासनभंडा
येहमोकुभीनरकिउस्रारि । गिउदि
स्रानछिणाछ्लाइकूप ॥ मिमोभीतिय
छियहकानूप ॥ हउमेरेकीकासीगले
मभञुनउंसीञूपमहिपरै ॥ हरिपमि
सरमिपरेमोनरे ॥ नमनेवेमृषजनने
मरै ॥ हउधागजाकलकांचर ॥ लोका
कहमिमुखिकोमविकुंर ॥ गजमाव
कीघाञुमिमतिघुंद ॥ गहकुंटमा
सिउघामनवंद ॥ गजिमहिमानेडा
धारेफूलै । महामलहमघ्रागेवुले
सेवकजोधकहजार ॥ घ्राघाकारि
ऐहैडघारि ॥ हयगजिरघमानकिमं
दारे ॥ कंचनमुकतानेकैभारि । हन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारिचेरीरसिभरी॥ यहिरचनाथीमाई
ग्राकरी॥ सभैछूँरत्रिसेनीरलै॥ काल
वलिपेसभनारहलै॥ ईसननिकापार
नानमु॥ जीनेमरैनग्राधाकाम॥ देही
कीगतिनमिकरहनिजघारघ॥ राजा
कोउपतिउपरमारघ॥ परीरहेनोक्रा
महोईचलै॥ आगनिटरेनोरजसिऊ
लै॥ जोकोग्रचैनोविसराहोई॥ ईसिम
मानहरीधनकोई॥ ग्रैसेननिकाकौ
गुमान॥ सोमनिकाकौगुमान॥ सोम
तिमूरबपरमग्रजान॥ जाहिजाहिगु
रोतमरस॥ हाथुलागावहुरमरैसौ
स॥ वरकानामनलीजैदेव॥ नकिको
दीजैग्रउनीसेव॥ ग्रणामउपसभा
पाक्लैगार॥ सिद्धावरीनपसिग्राभऊ॥
मानुषजनमग्रमोलकलाल॥ जांते
भजीपेदीनदिग्राल॥ मानुषहोईह
रिभगतिनकरे॥ ग्रालमहेताजनमेमे
नगानरनेकाईहीउपाउ॥ साधसंगि
सिउउपजैभाउ॥ हरीकेजनहरीकौ

ह॰ गा॰
म॰
२२०

217

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गमरहे॥ हमसेकीसमदुरामतिकरे॥
ज्ञाहिज्ञाहिकहिलागाहरिचरन॥ हेउ
रषोतनमनमरीसरलि। मारैयामोहारो।
मोहि॥ सरननमारीलजानोहि॥ किवै
नमानारहर्षेनभईया। प्रभुप्रसादिस।
मेभरमुराईया। फुनिमनउरकुमकि
सेमार॥ प्रगरिप्रभूपहिकरोपुकार।
मुरषकेलधाममहिकरै। कालसरप
कोषवरनपरै॥ वीकेसभेभोगभगवा
न॥ विनानमारेनामअध्यानिधान॥ भे
गतिदाबदीजेकरतारि॥ समअबदा
ईकमहाउदारि॥ हमिकरिवोलेसिरी
भगवानि॥ सुनउहमारेसंतसुजान
श्रतिनिरमलयाहिबमानजान॥ हम
रजननंपरमसजान॥ सबलभगति
हमहमरीनपाई। हमरेपासिलेहरेव
लाई॥ पहिलेभीनकलिमानंकरिउ॥
सषभाउलेहमसोलेधरिउ॥ जवतिर
हेयानामहमारा। हउरिहमारीहरदान
माना। मनिमनिहमरीकथायतीन॥ ह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मसिउवडीनमारीप्रीति॥ सतिगुरनमे
मनमोइउकरे॥ हमरेपमिलेहरदेघरे॥
हमसिउनमरीवडीपिआस॥ दरसेनि
कोमहिजेपजीआस॥ माकैपहिगुन
परमासाल॥ दिसहिंकेउसैसेगोपाल
किमसाधननेदर्शनकरीउ॥ कोटिज
नमकापानकूहीउ॥ हमलाथालेरंका
नाम॥ हमरेसेवकसदानकाम॥ धनु
धिनमरीपहिंसंत॥ मलेपछानेसीम
मवंत॥ जगमहिविचारहमकिकोधा
ई॥ हददेधानमुषिकीरतिगाई॥ जवा
ईहिविनमनकूरेषाघीर॥ अमलनकुल
उपजोइगेवीर॥ जवनहमरीभगविवा
ति॥ हरिजनसाणिआलीनीमानि॥ उ
फानिआगीभाजनमुचकेर॥ पासेक
लमुणरिमकूरेर॥ देषोरेसभैशली
कोरेहमनदीपोकीनीर॥ जानिउक
कलमगलगोमहानि॥ निकरिविला
जरहिसिसीभगवानि॥ प्रभकोनीनवार
क्रिमाकरी॥ हरिमारतिहदेमहिधरी॥

ह.ना.
म.
२२१

218

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मीनकसोइंउउतमिसह्रानि॥ षहिङ्कानेश्
रनभगवानि॥ प्रभ्नेसेवकविध्याम
इंया॥ भगनिदानकेप्रावनेलइंया॥
उनीहिमागपेह्रसिंनि॥ हदेरहैव
सिध्वीभगवंन॥ वद्दीखाग्रमगपेमा
हान॥ जह्रांनविखापेमानखपिमान
वैसिनह्रांनपुलागाकरनि॥ मदार्थ
वैह्रीकेवरनि॥ लषिमांनकीनिरम
लध्यान॥ जह्रांवलहिसिरीप्रभमातन
वासदेवश्रीकलउदारि॥ नमोनमले
नाथप्रपारि॥ इंउजीउजपेहदेहरी
ध्यान॥ समनेकवाभयामह्रान॥ गो
सनमीनसभसनसरिमहै॥ वासदेव
नेपिमुषनेकहै॥ नेक्रनविद्यापेक
हपारीर॥ हदेवीचिहलाइंधवीर॥ भ
लेप्रलेषग्रनेनउदारि॥ षेलैषेलगो
पालग्रपारि॥ मुवकेषकपाइंतिप्र
रनमह॥ सनतेसकलग्रदिविद्यागइ
इंहलीला॥ कमललैन॥ २२१॥ साषी
कामतुमननगारगकाजोपाग्रानिव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निवान ॥ मुक्ति के दकोछि हिसिउ भल
कीजै भगवान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कालजम
नका कछु कबिनेत ॥ कहति प्रभ ल
करे बमहंत ॥ ग्रोहन का सत थावलि
वान ॥ आपन हरि निनाथा भगवान ॥ मु
क्ति केरै कीढ्हल लगाई ॥ भसम कीजै
त्रिभवन कै राई ॥ बडिभागी हरि दर्सन
कीजै ॥ रुरोर जोबील रहे थापरि जै ॥
भई जोन कति भगवंत प्रसादि ॥ सोप्र
भगाई थाहि थादि जगादि ॥ ईतनी का
ति भागवंत माहि ॥ श्रीसुआमी सुक
देव सुनाहि ॥ कालजमन ग्रोहन का
वैरा ॥ जाकी भई कलसिउ भेरा ॥ निउ
ग्रोहन का सत बलिवान ॥ सो अनंत
हरिवंस पुरान ॥ जासदेव प्रभ बरन
सुनाईया ॥ कलदास बानेसुनि पाया
कलदास बानेसुनि हिरदै धरी ॥ रहकाव
चानति परम प्रीति करी ॥ जाते साध स
नेति सुषपावहि ॥ प्रभागमन प्रभ केव
लिधिआवहि ॥ नारसुपो इति बाजदुक

द०भा०
स०
११९

219

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कलिका || धीनिडरइदइबुनकीबलका || उ
लकाकहहैनिकोइसरज्ञानी || कोइकहहि
संकुलपमहानी || पाविरकतिईहविर्य
हनकै || सदाहहेसुभकेपनीघरै || नार
वलागोकरनिदीचार || गगगपरोहनि।
करनिननार || पामिनहमएप्रोहनकउ
न || सुनासंनतिविनदिजभउन || प्रावइ
कोइउपाउबनावहि || किवैगगकोवि
प्राहकरवहि || कोइकिदिजकोवान।
किलाईपै || कहुकसीकरिगगगविका
ईपै || सासीसनिमतिविप्राहैनारि || वा
सोउपजहिसनप्रकुमारि || जवैगगउ
सउकुलिमहिप्राईपा || नवजदकउर
हेववनसुनाईपा || गगपसोहिसुग
हकोई || प्रावसोईजोविप्रावैजोई || है।
निप्रुसकसेसानाहि || कासनयोकेन
निकैमाहि || कहुककोपुसमिप्रोहन
कोउ || पहिनिरचावहिभीतरिपीरि ||
उ || कोइप्रेमासनितुपजावहि || नोलेजा
हवसमैमैपावहि || कावलपरेहदका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धाति॥ नरेंगाइ आदिजगरगामहांति॥ लं
गाधे कर कांनउ करति॥ सरध्यावहि
सिव के चरति॥ केन किरनकोहि
वलिवति॥ लोहिचुनकीनलीमहंति
धै माद कगिले ति आहाह॥ उदति
लावैचमाह॥ अनिप्रसंनापहि सिव
भइया॥ हइगरगकोदरशनदेया॥
कै मा शंकरजीकाध्यान॥ निरुध्यान
कोहेनवषान॥ गोरवरनसमानक
र॥ अंगमिविराजेतिनिमेलभूर॥ खेता
भ्रंगो उगायसमान॥ नागकुकेकुं३
लसभकान॥ अंगनिश्रसंनतीनोलभा
लोचन॥ सभसंनतकेसवडरवमोच
नीनालोचनमसनकिमोहि॥ ३ कहिं
श्रीश्रुकरेवसनाहि॥ भालविराजति
संदरीचंद॥ नषसिषलउरानंद
नीनजटाशिरिपामसहावहि॥ तिनम
धंगगनंगसमावहि॥ नीलकंठना
रीकेकहि॥ नागकरनफनि फनिकंका
नि॥ तोरमालनलिपामसहावति॥ अंगी

र. श्रा.
म.
२२.

22

नमैरामजसुगावति॥ हधरसुवनिहा।
थीकोघाल॥ येसाऊपरिबासुधरीमाल
जपतिमहाजसुवसमनातनि॥ प्रकृत
उराधपरिपुरामप्रुताननि॥ इंद्रध्यानशं।
करकागाइया॥ सुधनिधिगारगपरोह
निपाईया॥ गरगहदुकेपत्तिलपराइया
महादेवकेमनमहिभाइया॥ वाढाभ।
यादेउकरिजोरि॥ दिहलनगाउमिवकी
जोरि॥ लाभाशंकरकेगणनाथन॥ सति
जपार॥ यपरामपावति॥ नमोत्रिनेत्रत्रि
सबकिनाला॥ सभमधदाउंककहरि
वारन॥ त्रिपुरदैतपुरमहनिविनासन
नीनिमवनिश्वानंदप्रकासन॥ नमो।
विमलीप्रधमधुनिहिवाहन॥ जयेह
रिनामतारेजिहपाहन॥ गउरीपतिवा
सीकैलास॥ रामनामनिधिपुराणा।
म॥ नमोश्रकामीपूरनकाम॥ जाकी
मालाजपतिजेराम॥ नमोश्रवोङीवं
काभूरनि॥ दुहदैतदुःखदारिदचा
ष॥ सभुवरदाईकपामजधार॥ नमोवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धरकैलासपहार। नमो तिरासी पुरन गा
स। एमनामसिउ हरि विस्राम। जो प्रभ
प्र मिन धनेन तप्र पारि। नो को महिमा
महा उदारि। जै जै प्रस सनानन नापा।
तिहूपरमारि प्रबिउ परनाप। रामउपा
सक रामपराई ए। नमो नाथ नाथीनं
राईन। जैजै नरराज पतनगारी स। सति
सनानन तिविसेवीस। जै गनिवसउप
निभगवान। जै तिरूनागजपननाएए
प्रसानं दिमगनपदिनरीपा॥ शिवडी
रिमांनि सेवरपुरीपा॥ प्रभु बलएपरम
जरामधिगंगा। नमो जगावनवलीप्र
नेगा। नमो गाहिरारी भीरप्रबाहु॥ सभ
सुलदाई कसदाप्रबाहु॥ जपासकि
सेवकगुनिगावे। महादेवको गामि
नावे॥ सभिजनसंकाभवे प्रमन॥ सद
हूदै तिरहीप्र संनि॥ विपगामिको
शंकरवाले। सवसघराईपकवनप्र
भोले॥ कर्कुवामागारूसेनसजान। रा
धोसभैनमानानामान। गामिकहिमा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

थैसावहदीजै ॥ करनासागरकरना
कीजै ॥ सोथैसावेदाहमपावहि ॥ जा
केभैजोरवभजिजावहि ॥ नवग्रामस
सेकरनेकाहिंजे ॥ यहिंवहगरमिपरे
हतिलहिंजो ॥ वरदेणकारमहामहानि
भवेगरगनिनेथ्रेनहीं ध्यानि ॥ गरमिपवे
हेनयहिंवहपाया ॥ नजेगुसाईकाव
लेग्रापा ॥ कावलकाईकणाग्रधिका
री ॥ नवनमलेछवडावलिभारी ॥ लिन
प्रोहतिडकोवटीदइ ॥ गरमिविप्रकी
पननीभवे ॥ कोइकहिनतहेंवमेगुसा
ई ॥ तिइसमत्रतीजवाइनिग्राइ ॥ जवे
गरमिकेबालकुजाईया ॥ कालजमन
ईहनामरघाया ॥ सतनउपजाईगरमि
उठिगईया ॥ कालजमनईजेउनपत
भईया ॥ कालजममनानेकैथाम ॥ वड
भवेग्रामसघसिजेविग्राम ॥ जवनाक
नानामगिगईया ॥ कालजमननवल
मभईया । सोप्रभग्रानिउपाकैलाई
भस्मकराईउग्रिमवनराई ॥ क्रिगीपनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीगति श्री भगवान ॥ सुकति कासौ सम
श्रुजान ईद्रुप्रसंग हरि बीसगुरान ॥ बि
श्यास देव सभकौ शावधान ॥ कलसदास
वाते सनि पाईया ॥ ईसठा हरि महि व
न सखाया ॥ जाते सं निसन निस धपाव
हि ॥ प्रेम मगन हरि के गुन गावहि ॥ श्रव
काल जमन की वाति ॥ वरनी विश्यास
परामरनाति ॥ आगे वहरि भाग वभग
ई ॥ श्री सुकदेव की रनि निगाई ॥ बोले
श्री सुकदेव महान ॥ सनि परीछति निध
जान ॥ सचुकै दभगति हरि दर्शन पाई
या ॥ सो सकि जोपहि वरन सनाईया ॥
काल जमन की कहि उचारि च ॥ श्रेसा १
स्यच नैनकामिच ॥ नाहि उमाधव जन
मच कें ॥ जपश्रै हरिजदकुल कौ वंद
पहि लीला - ॥ कमलनैन - ॥ १२२ ॥ श्रीधी
कालजमन कौ कहउं कम भमाहि उफ नि
भगवान ॥ श्रमित पराक्रम सवल प्रभ
सरन गुरष गुणानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ फुनि धर
नीधरि क्रिपा धीरी ॥ कालजमन की

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सैनामारी॥ सभसैनाकासभधनहरिजे
ईहमलापनिकउनङुकरिजे॥ सभधं
नथोरहमाहिवेधाईया॥ पुरीडुआरि
कामकलपद्वागईया॥ रामकसफुनि
ईकवेभवे॥ जरासंधकेसनमखिगवे
बोनेभागदरमदिखाई॥ शंकरारवरणाश्र
हकेशवराई॥ भोहभंगतेउरपेकाल
जरासिंधनेभगेगोपाल॥ जबबोनेभा
गेगोपाल॥ जबबोनेभागेभगवानि॥
हरसभभवेराजाकेप्रानि॥ जाकोभउह
भभतेकाल॥ उरैसदाग्रैसागोपाल।
जरासंधनेनेभगाणवे॥ पुरषपुराननि
नितप्रनभव॥ जरासिंधकोहाजिन।
मारद॥ कहिग्रापाश्रतिविमलविमार
द॥ भागाहिगेनमतेभगवंन॥ कस्मकु
पानिधिकमलाकंन॥ सनिवचनना
रदिकाकननि॥ ईसनमिनभागेइपर
रनि॥ सभविधिभगतिपनिसटाराव।
न॥ मैनविमोहनमाणनथाघन॥ अप
सिंधप्रभपाछेपरिजे॥ नष्ठसिघपम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सेनेदहरिभगिजे॥ भलाभयाहरिभागेजा
हिश्यान॥ श्रवनभईश्चाहमारावकाज हरि
मधुसूदनभागेजाहि॥ मेरिभयाव।
लिरामहाई॥ ऐकुपापरवनहरिकोसे
ने॥ नामसैलकाथाणोमेंन॥ येकुसिं
नाकाथ्याउवा॥ न्याहिजेजनसंदास
वा॥ तिसपरवनपरिवरषाहोई॥ गिरि
कोसैलउतारेयोई॥ हरेलागहिगेहरि
चरन॥ लागामेचुरहलनिनिकरन॥
रूपरिसिंतप्रभजीचरे॥ संतिबलि
मसनेहरिभरे॥ नानासंपपनिकोपरि
भगिजे॥ बहुरनकाहूवेकठाकरि॥ रुकि
सैलकोआगिलगाई॥ महादुखदेवी
दुःखदाई॥ तिनजानिउहरिभोनरिज
रिया॥ गिरिकोलागीयगनिथ्यपारि॥ वा
नीपलमोसंदरापारि॥ केसिबकोवोले
बलिसम॥ बिनतीमनोप्रभुवनश्याम॥
पावनसदनकरेदुःखिमरिउ॥ प्रबल
अगिनिसिउसभतनजारिउ॥ जोजना
जैपेनमारजाप॥ नाकोकोउनलाजेनो

भा॰
दशं॰
स॰
२२३

223

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग॥सावधानईहपरमेस्वरन॥यद्गिरि
गिरधरितनमतीसरन॥विपतिनिविना
सनविरदुसमारु॥ईसअधीनकौ
नपतिनिवारु॥ईउजविहलधरवि
ननीकरी॥कपालीपेअहप्रेमहिभरी
प्रतिकपालंहृदेभगवान॥समउष
मोचनभिपानिधान॥पतुप्रेगुरुषि
उभीमोपाल॥धमिउप्रवनबीरि
वनाल॥कमड्हरीकाहिउदीनदि
माल॥काहरीकाहिउअगनतुजाई
अमितनपक्रामप्रभहरिगाई॥पाव
ननेकहेदेभगवान॥कृष्णहलधरउ
रषउरान॥उरीउअगरकादेनौगवे
उहषउरातनप्रभनिनवे॥उरीउ
भारिकाहराषहिभरी॥अजहुडमपि
वैकुंठहिरही॥मक्तिपालागेहरीके
शरन॥नीषमेमषनिविदुःखहर
न॥उरीउभारिकाहरिगुनगावे॥श्रं
गिश्रंगिआनंदसमावे॥जउकुलकु
लिजेकमलसमान॥जाविटपैबलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रहभगवान॥ मतासिंधसिउलीला।
करी॥ सभइ:खमोचन श्रीनरहरी॥
प्रीतउआतिकाआई विराजे॥ यहराज
त्रिभवनकेराजे॥ यहिलीला॥ कम
लनैन॥ २२२॥ साखी॥ हलधरकोकेनि
आरइबवनपरमनजानं॥ वहीकपाके
रिकपानिधिहलधरप्रभुविज्ञान॥ १॥
चौपाई॥ ईकराजेकोरवननाम॥ निन
आईपरसेश्रीवलिराम॥ नाकोकेनि
आपामउराति॥ नाम्रेवनीश्रनिम
कुमारि॥ ननदीयाकापरमरमाल
विनवनिभईश्रनिमेविरकाल॥ पि
नारुकमकेआगेधरी॥ हाथिजोरि
करविनतीकरी॥ दीनहोइपरसेप्रभ
चरन॥ पिआरीसनानमारीसरन॥ ह
लधरिमननमहिकीओविचार॥ हमको
देईहिवओकुमारि॥ हलनाकेगलमे
लिओराम॥ प्रभअविनासीपूरनपूरन
काम॥ सिंधीनलेकोप्रघप्रान॥ की
लीनीप्रभआपिसमान॥ भईजेविवा

द॰ग॰
म॰
२२४

224

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिग्रनेरहिसाषि ॥ हलद्रुबपेहलाइय
नाषि ॥ जैसेंकरषणाएकेपीर ॥ बसदे
बकेबलनभबीर ॥ हलधरजीकोका
हिउविवाहि ॥ जपीग्रहिग्रचुनग्रलष
ग्रघाह ॥ ईहलीला ॥ कमलनैन ॥ २२४
साषी ॥ चौसैपदाईरुकमनीकेपावजी
केपाहि ॥ हरीकेगुणाग्रसग्राबलिवडी
चरनकमलकोचाहि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ भी
षणाग्रलिनरज्ञान ॥ पंविपूलिनके
बलिवालि ॥ तिनमेरुकमबडेपरधान
वडेबलीमनग्रतिग्रभिमान ॥ तिनकी
रुक्मीरुकमनिभैनि ॥ ग्रनिसंदरनै
निपंकजनैन ॥ ननिनेबलैकमलको
बास ॥ समनेसेंदरीवदनिप्रकाश ॥ सो
नकालनाकाननगारम ॥ ग्रीवमहति
हीनलग्रतिनरम ॥ परमजेनिमैपिट
उदारि ॥ रुकमनिजीलछमीग्रवतारि ॥
हरिकोगुणपसरेजगकेमांहि ॥ गुनजे
नरसहरिसगाईसनाहि ॥ सनिगुणि
रुकमनिकोमनिहरिउ ॥ कमलंबरकेप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिमहि धरी जो । सुजन पिनाकी नाबी बा
ह ॥ हमरी के विश्वा प्रमउदारि ॥ वामदे
व भरना ई सजोग ॥ जिनन निमन नारे नीनो
लोग ॥ सडरपति जी को हे सो विवाह ॥ व
हुन बड़ी हमरे मन विचाहि ॥ वैरी दमिर्दस
कुं दन तुरुषान ॥ आवहि इहां सिरी भग
वान ॥ देस हमारा होई उजीन ॥ हरि गुन
हरी उहमारा चीन ॥ भलो कहि उबोले म
न चारि ॥ हरषे भराजा की नारि ॥ के पाव
हमारे होई जमान ॥ जडुनंदन बुधमर्द व
हिलान ॥ जगम कहि हमरे भाग सुपारि ॥
ऊ बोली राजा की नारि ॥ हरषे सभे वजीर
सजान ॥ नीको कही प्रभु राजान ॥ हरषे
सभे वजीर सजान हरषे सभो नारि के
को का [illegible] हरि पगिरे दधि मिरहि गेमो के ॥
हकम को धित्र व डोग नारि ॥ केशव जीमि
उरि है न पियारि ॥ भाग हीन मुख्य मति
मेर ॥ कबे नारि द त्रिभवन वंद ॥ रूपजाद
वकं वैरी दहि ॥ हम को देवो न उनले हि
महाबली राजा दामिपाल ॥ तां के बैरो

र॰ का॰
स॰
२२५

225

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

किशोगोपाल॥रुकमनीवरमहिव
ऽेष्ठधानि॥कोईनतांकोमेरेमानि
वऽेश्नचरिमहिवलिवान॥ज्ञान
हीनमतिहीनअज्ञान॥वुपकारि
रऐसमेपिनमान॥जवईउरुकमा।
मीवोलीवानि॥नांकोसमहीरहेनि
वारि॥नैकुनमानीवऽेगवारि॥ली।
कापहिउवंदरीरेसि॥रुकमीसभ।
हीलिषेसेदेसि॥अपनीवहनीमो।
मेऽौरई॥भावरूसंगिलैसेनानई॥।
रुकमीजन्नूसशिपालवलाईया॥ब
सवंउनिसहदेनभाईया॥रुकमनी
मीमनिकुरैविचारि॥हमएकेनअ
वेनश्रपाद्रि॥महाराजलसीनाराय
न॥मीरघमेपरिपरमसपाईए॥म
मसुघदायकमसमितुःखमोचन॥प
रमपुमेनपरमपदलोचन॥केदाप
कोटिलावनिविभंग॥नघकविमो
हनकोटिश्रनेगि॥जउनंदनकेमव
कस्समसाइ॥कामदेवहमरेभानारि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जन्मजन्मउउतिकोचेरी॥ हरिपति
तिनेयतिहिरमतिमेरो॥ रुक्मीमह
मूरकियाकरे॥ हमरामननहितिबा
नाजे॥ हमहीकोउउपाउवनावे॥ म
हाप्रभपहिउनपराबे॥ हमरीबिनेल
नावैआई॥ क्रपाकरहिमकिपरिजन
उराई॥ रुक्मनीजीईकविधुलाई
पा॥ गहजउजेहत्रसनवराईपा॥
विपत्रुलाई आपुदयनवेन॥ नोसि
जेरुक्मनिकीनेमन॥ रुक्मनीपाती
पालिषीसजानि॥ दीनीप्रसनको
सहजानि॥ मनैवोलेष्रंमनवोल॥
प्रेमभरीसंदरितिरमोल॥ नमोपति
हतिपतीआलीजे॥ बातदेवजीकै
परीरीजे॥ प्रीउआरिकाप्रभपहि
जावऊ॥ तिपरिहमारीविनेलनाव
ऊ॥ प्रघोनमपतीआपारेरू॥ कीजे
कानहमारावेरू॥ गुपनजाउनहीकि
सीसनाई॥ भाउवेधुनजानेमाई॥ वरु
नुभमतानिनवसलालकरो॥ नमरोमी

रु.शा.
म.
२२९

228

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जातिनसही॥ जावोजतुपतिजीकेप
सि॥ सरनकरहिनुमारीयास॥ लेपा
नीयारिजनचलिउमहंत॥ हरिनाराय
णमखिमहिमहंत॥ ब्रसनिमनिमैा
कैरेविचार॥ परसोमावमदेवकुमा
सरनब्रसम्रनेनम्रपार॥ देवोयाग

रुकलनीपरसादि॥ मनमहिविनवैह
रिकोसंतनवरूपसंत॥ गुरीउयारिका
गईउमहंत॥ ईहलीला॥ कमलनैन-
२२५॥ साखी॥ ब्रसणायावोउयारिका
हरिजनपरममहंत॥ कमलनैनके
समकसदेखिउकमलाकंत॥ २॥ बो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाई ॥ रुकमनि दीना विप्र पठाई ॥ पु
री द्वारिका तुरत सो जाई ॥ कंचन की ।
सभ पुरि प्रवीन ॥ नहां वसहि कम
नी के भौन ॥ धाम धाम के जगमगा ।
करै ॥ रमो हरि सा केन मन को हरै ॥ द्वा
रपरि वैठे रखवान ॥ महावली प्र
प्रम समान ॥ ब्रमन द्वारि केमंदी
नकै ॥ धाम द्रभीन दिपे रन सकै ॥
चकति होई ब्रतिब्रमन रहिउ ॥ द
रदान द्वन वहि सको कहिउ ॥ है ल
स्यामी मन संका करै ॥ मन न कछु भ
वनै भीन निधरै ॥ इम को प्रभ की प्रा
गि प्राचे तु ॥ जो ब्रमन सो आवन दे
केशव जी के धाम मझारि ॥ ब्रमन ।
सो आवन दे द्रुकुल को सम का नहि
ब्रमन देव लक्ष्मी नारान ॥ ब्रमन दि
श्रो स्री भगवान ॥ भीन ति वल मन
सो चो परइ व ॥ केशव करे हि जन की शा
व ॥ द्वारपाल भी नति लेगाये ॥ वैभा
गिनि महरि जन के भेवे ॥ आदि द्वार व

द.भा.
म.
२२

227

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बिनासीस्याम॥ सिंघासनरामतितिहु।
काम॥ शरनसिंघासनजगिमगिकै
परै ध्याननजनमनकोहरै॥ षचनिम।
णीनासिउबऋभोति॥ कोउसरकोउस
सिकीरीति॥ नापरिराजनश्रीभगवान
माननषचूपोठराषठुरान॥ पीनवसनउ
रभगवंतै॥ कमलनैनकमलकेके
नषछविमोहनकोरकिकाम॥ चरन
कमलसमनीरषधाम॥ दिजवरहरी।
कोदर्शनकरिजे॥ देषिदर्शनआनंद
हिभरिजे॥ नवब्रसनदेषिजेभगवान
उरेविपरकोहरिनाराति॥ ब्रसनको
आईपरमेचरन॥ ब्रसनदेवमषनिषि
रः खिहरन॥ दरश्रमीलाविपरमहान
मषीहोहूकेशवभगवान॥ बिरंजीव
बैननमरूप॥ जुगनजगधारनरूपश्रन
प॥ कोरमैनमोहनभगवान॥ छबमो
राजनिठुराषठुरान॥ उठेकृपानिधर
रिभ्रस्नान॥ हरिसीरदईआनदीसति
यान॥ नमस्कारकीनोभगवान॥ रई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रीसोंविप्रमहान॥ सिंघासनपरि
विप्रमहानि॥ बैसाइउग्रभक्रपानिधा
न॥ द्विजकेकमलपखारेपाइ॥ पुनिजल
लीनासीसचढाइ॥ पीरषंउभंचापेना
थ॥ पानखलापेअपनेहाथ॥ मलन
लगेहरिद्विजकेपाइ॥ ब्रह्मनदेवलि
त्रिभवकेराइ॥ निउब्राह्हरिकोपूजा
करै॥ ब्रह्मपदपदमहिरिदेमहिधरै॥ नि
तद्विजकोपूजनहिभगवान॥ केशवके
ब्रह्मननमान॥ परमकृपालहैकेशो
महान॥ ब्रह्मनकोबोलेभगवान॥ शी
लधर्मचितहैसंतोष॥ जिननैतिनसबै
पाइयेमोष॥ त्रिहुकोकिरनभलीक
रिबलै॥ इउकहिद्विजकेपगिहरिमिले
कृमलनमोहैसभदेषि॥ नमसेजनदा
कारहिपरवेषि॥ अपनीनकाजनकमा
ई॥ जोंनेपरमाअनिसुषपाइ॥ रामाहै
किउहैविप्रअधीन॥ वेदपंथमहिहैचा
लेप्रवीन॥ कहुसग्रामीकिउग्राहेउन्रे
न॥ सुदनकरौनमास्कार॥ द्विजबो

द.पा.
म.
२२८

228

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लिउसनीशैभगवान॥ हकनिप
ठिउवडीसज्ञान॥ सीलवेनस्वहम
हाउदस॥ नोकेवडेप्रभसिउपिश्रा
र॥ ंहपनीश्रालीजेमनस्नाम॥ ग्रन
करहृच्वीश्राकेकाम॥ प्रभजीपनी।
श्रालीनीहाथ॥ जोगभोगपतिवि
भवननाथ॥ हकनिजीकोघाली।
छाप॥ श्रादिपरषसभिनासोश्राप
सरहछापप्रेमरसिभरी॥ हिनसिउ
देषीश्रीनरहरी॥ दिजकोबोलेश्रीभ
गवान॥ नमहीपरिपरिकरोवषान
पनीश्रापभवसनकोदनी॥ श्रीति
सहतीदिजपतिश्रालीनी॥ पतिप
नीपादिजकारनिवषान॥ सनहिश्री
निकारिपुरषपराम॥ हेसंदरहेदीन
दयाल॥ हेसमुनहेश्रीगोपाल॥ हे
श्रविनासीहेभगवानि॥ नमसिउप
चेहमारेप्रानि॥ नमोरोगनषवनकु
मदिपरे॥ निनोहमारेननिमनिहरे॥
तिननीसनोप्रभपरवीन॥ हउनम।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रीझ्हो नरदइ आलन ॥ सो प्रभु कि कीनारैं
इयान ॥ कृपवा श्रीनीरप्पइ सनान
जवनप्रसंजनम्रसे वापरम्नु ॥ जनम
जनमकीनामतिकारम्नु ॥ समै सम
रथिजेकम्मणीन ॥ श्रवरनवोह्नाम
रीन ॥ रिषरावरप्रभूपकजवरन
मुकिदासी कौ राप इसरनिमनिर
लजपल्लानहमोहि ॥ विनती श्रवा
सनावहमोहि ॥ पिनधाम के निस्ता।
कुमारी ॥ जिनके निश्राइ रवा नवि
वारी ॥ श्रसनभरनापासि पठाया ॥
जिनके न्याइ इकरमकमाया ॥ जि
नकन्या इ इलाजउमारी ॥ कौनाश्र
माकमकुमारी ॥ श्रेमाकमैनकेन्या
कौ ॥ मदामोनसभु केन्या धौरै ॥ मान
पिता मोकौ सहोइ ॥ केन्याकुउवो।
लनकोइ ॥ सोवोलेमोलजापाहि
सोप्रभुजी कौ विनैसनाहि ॥ प्रभुकेगु
णपसरजगमाहि ॥ गुणजनदेसोगा
इसनाइ ॥ सोगुणपरेहमारेकान ॥ श्रै

र॰ श॰
म॰
२२९

229

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

साहेब भगवान ॥ तुमरे गुणसमाल
आगाई ॥ सनि गुण हउ अनिदासी भई
लजाधीमाई आअज्ञान ॥ भागिगइगु
णसगि भगवान ॥ गुण हूं तुमरे लजा
वोइ ॥ सनगुन हूं अनिदासी होइ ॥ प
तीयालिखपढी ई हे कारण ॥ तुमो ना
धननकष्ट निवारण ॥ तीजे दिन भैं
वनिमसपाल ॥ हउ जानन हो मेराका
ल ॥ हउ तुमरी होली जे पाई ॥ सभ ही रा
गारे हूं भगाई ॥ सिचरूकी वलि लेऊं
खिपाल ॥ ऐसे सनरूप प्रभ किरपाल
मोनही आवहिगे भगवान ॥ हउ तुम
रुपरिनिआगमे प्रान ॥ निआगप्रान व
महीपहिजाउ ॥ सदा अंगीनी तुमपाना
उ ॥ वरूतेजनमकानन तुरुकरौ ॥ तुमरे
पतिहटेमहिपते ॥ विनतीमन रूप्रभ
तेरुपि ॥ तुमविन तूमरी ज्ञवरानठउरि
मोमनकेहावरे किहिभीति ॥ समिधा
ले कोदीनी भाते ॥ विनप्रभ मूल हन रूम
गवान ॥ कमला वलम भक्रपा निधानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हमरीकुलकीऐसीरीत॥ सोसजीऐप्र
भहाग्रजीति॥ वाहरिदेवीप्रजननहारि
कुलकीरीतिनमकिमनमाहि॥ हक
प्रजौगीनमेरेवारन॥ मैकेशवईकनग
रीसरन॥ जावोगीदेवीकेथान॥ गहि
लेजावोमत्रिभगवान॥ सुनीऐद्विज
वरपरमसुजान॥ हकमिनीवरमा
रेशालि॥ सुनिवचनसुकिकरेवषानि॥
रिवमैरिविनवतहीरहै॥ कवऐसी
संदेशकोलहै॥ कवचकोरवड्डराजा
वेने॥ विणसमानसुकिसभकरिगते
समभूपनकोसैनामथो॥ जोवरिस्नावे
ऊपरिरषो॥ वलोप्रभातिविलंवुनलै
उ॥ सेनउधावनमेरोनाउ॥ वेमिकुलमा
रषोकुलाईया॥ ताकोईकुकहिवचन
सुनाईया॥ वडेप्रभातरथदौरिपरलि
याउ॥ वहुरनमलातिनवेधेयाउ॥ व्रम
नकोवोलेभगवान॥ सेनकरकुहेलि
पमहोन॥ सषसिहनापरिविप्रसवारै
या॥ होप्रभातरदिजग्रनिसुषपाईया॥

रु॰मी॰
म॰
स॰

238

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुषसिंउसभै विहानी रैनि ॥ उठे प्रात
हीपंकजनैनि ॥ दारकिलियाइंउ
रघहिवनाई ॥ रघपरिवैसेत्रिभवन
राई ॥ बहुरिजरघपरिलौ श्रावराई ॥
कारणामगारकेपावराई ॥ दारकिहो
केश्रमसजान ॥ उमडिवलेजलसिंधु
समान ॥ ग्रीवापकुष्ठवनकारिवरे ॥ च
तिसंरहीननवलिसिउमे ॥ हरिगु
गरजितिमेवमणि ॥ होरफुकेग्रा
तिवलिवानि ॥ कुंदनपराकोवलेप्र
नेन ॥ कमलनैनकमलाकेकंत ॥ न
ववलिरामसिश्यामकेधाम ॥ श्रावेप्र
रनप्रघश्रकाम ॥ नवईहिवानितनी
वलिवीर ॥ नयेईकेलेश्यामशरीर ॥ हा
नधरिजीकीनावीवारकुंदनपराको
गयेमणारि ॥ जोधेचनेजरेसिहषान ॥
गराससिंधमेश्रनिवलिवान ॥ समौरह
तिकेशवश्रावार कलसवरकोमल।
सकुमार ॥ हलभाकाविनविहवल
भया ॥ तननमनप्रानकाहलापइंया ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रानहमारेहरिचितवनस्याम ॥ सखिकिउनही
धीरजधरेंबलिराम ॥ रघुपतिबोरघुप
बलिदेव ॥ करनिसकलसराजाकोसे
व ॥ कछुनउकुलकोसैनामाथ ॥ ल
इरामजोजागिकेनाथ ॥ हलधरश्रेसी
धाइंकरी ॥ सभुसैनाहरिजोपहिवरी
मिलेस्यामकउश्रीबलिराम ॥ पुरनय
देभपाकेकाम ॥ वडीप्रानिककूजानि
नकही ॥ नेत्रप्रेमजलधारावही ॥ केश
वकोबोलेबलिराम ॥ सखिकोकिउन
सिखापेस्याम ॥ बिनतीसुनकेपियारे।
बीर ॥ जीवनमेमहिभिंनसरीर ॥ नसदे
देसवमउधगाईया ॥ हरषहमाराानन
मनभईया ॥ मिलेबीरबहिरहेनैनर
कुंरनसरकउबलेमुकुंद ॥ रुक्मनिलि
नीप्रनिविहवलभई ॥ कैसाकाम्नर
मारारउ ॥ कृपानकोनीश्रीचितवनस्याम
हमारेतनिनेभयेप्रकाम ॥ जानीहेनि
रलजगवाणि ॥ कृपानकरीमकुंदसगा
पि ॥ लीनपदहाराश्रेनीजाइरहिउ ॥ हमरा

द.ना.
म.
सा.

221

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेनमनदुषसिउरहिउ॥ पूजेषेमकि
संकरदेव॥ तिनहूनदईआहमेंपरिक
सेसेव॥ देवीकोमुकितुजाकरी॥ तिन
हूंनदईआहमूपरिकरी॥ भोभोमा
रंगकनिनैन॥ कहेनेनाहिकिसीपहि
चैन॥ चारिकेलोकसबाहिकाज॥ ई
नउनकिरहिबनावहिसाज॥ हकनी
तिनकोदेषतिनाहि॥ प्रानबसेउंषो
नमनाहि॥ नीचेदृष्टिकरिहीविचारी॥
पावनदेइआचारिभौननिधारी॥ क्रोध
दृष्टकाहूपरिपरै॥ मनकोदबीरुमनी
गाजै॥ द्विजकापंथनिहारैपरै॥ हरि
मूरतिचारितिहबलधरी॥ वावेअंग
फूरेतिहकाल॥ हकनिकैरमिलहि
गोपाल॥ आवेहोहिप्रभूचनसाम॥ प
रनकरहिहमारेकाम॥ कुंदनपूरिपावे
भगवाव॥ नगरिनिकरिउनेनाहनि
प्रसनकोप्रभुआसाकरी॥ सभदुलेमो
चनध्रीनारहरी॥ जाइंसदेसाकहोमहा
न॥ हरिषकरोरुकमनिकेप्रान॥ प्रसन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आइ उहाँ षहि मीते॥ रुकमनि निना कार
हैन कीनो॥ द्विज के बारन पर बलि हैउ॥
उँ॥ बडभागी लिख्याइ उजडु कउ॥ रुक
मिनी अनि हीसर ध्यान॥ जाके पतिके
सब भगवान॥ द्विज हरिखिउ किरियां ति
पियारी॥ सो बिधि पिश्री सुक देब उचारी
नैन कॅ सिमेशुखिउ करि हैन॥ द्विज नैन
कॅ सिउ रे नैन बैन॥ आवे नृप कोलै नगा
र॥ नेनिम निकास भमो कनिवारि॥ रुक
न हाथन सावन संग॥ आवे भगवान सर
अमंग नमस्कार ब्रसन को करिउ॥ पव
सिउ ब्रसन कस बहु भीतिउ॥ जब रुकमनि
कीना नित सख्कार॥ द्विज थहिलसी पारि
अपार॥ रुकमनिके ब्रसन सरध्यान॥ १
कॅरत नगुरगाने भगवान॥ यहि लीला
कमनैन ॥२२॥ साखी॥ रुकमनि को ग्रउ
नै पिता सभ कीनि कलेरीति॥ प्रान ग्र
नै पिआरे सत माये भीनासिउ चीति॥१॥
चौपाई॥ रुकमनि जीके पिन ग्रह माई॥ कु
लकी रीन करी चिन लाई॥ होनो पारस

र॰ भा॰
स॰
२३१

232

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेहहिमाथि ॥ किरनमयूरहिमगुनै
हाथि ॥ चउकपूरकरवाईंशांति ॥ बे
रकहीसोकोनीभांति ॥ शृंगेग्रमन
मंगेदेव ॥ फुनिकोनीपिनरेकोबे
व ॥ विघ्रुलायेमनिकेसार ॥ निनोवे
दुनिकरोउचारि ॥ रिगजुमसाम ।
अथरवणचारि ॥ परहिमपग्रिहबि
प्रोहारि ॥ ग्रेसामवदेवदकाभंइया
अवामवदसनेनेगाइया ॥ जेसेमध
वराहिनिसाबन ॥ गानिगरजेवाध
हिजलुपावन ॥ निउहीउमडिउमडि
मेघाई ॥ वेदउवाहिग्रेमवदाईं ॥ मा
नोवाधिउरुकमनिहाथ ॥ रिवजुवा
हमाकेमाथि ॥ कोरेवसुलगापेग्रं
मि ॥ मंदरिचिनीमहेलोसेग ॥ रकानि
कीकुलगेनिवशनी ॥ जाकेपनिषी
धरीगपानी ॥ विनाग्रापनेग्रिहमसि
पाल ॥ निनपहिरापेग्रपनेवाल ॥ सि
लग्रापेषशिपालवरान ॥ संगिता
नीसमग्रगुनीजान ॥ निपरमसोमर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गेवलिवान॥ ताकेतनसिसिपालसु
जान॥ अग्रनैमतिकोविग्राहनआई
या॥ ईउकहिश्रीसुकदेवसनाईया
सैनाआनीसंगिअपार॥ समसेनाप
हिसमहर्षोआति॥ गजिमतिवारेक
ईहजाति॥ तिनसिउचेटेवजहिंअपा
रि॥ रासिपालसंगिजोराजेआपे॥ श्री
सुकतिनिकेनामसनाये॥ जरासिंध
आईउवलिवान॥ तितिपरसिउवक्र
वाहिनागान॥ दैतवकउवैद्रुपआ
ये॥ हरिगुनईउसुकदेवसनाये॥ आ
येनपवसदेवश्रिगाल॥ तिनसंगसै
नामहाविकराल॥ रथसभिकंचनके
नगजरे॥ जोधासनेभमहांवलिभये॥
कवचिसकलजोधाकेअंगि॥ जरे।
जराईतिनरूकैसंगि॥ चढेरथोपरिक
उहगाजाति॥ असरूप्रसरुआपारि॥ औ
सीवनीकरटककीपोति॥ मिचचराउ
मडीमीभाति॥ यहिवानीरासिपाला
वरान॥ श्रीसुकव्यासदेवकेनाति॥

द॰भा॰
प॰
२३२

233

लोकतिनोकैसनमुषिगाईआ॥ तिक
रिनगरकैउराभईआ॥ यहलीला॰॥
कमलनैन॰॥ २२८॥ साषी॥ पिनाकक्व
निकोवलीआईउरहरिकीसरनि॥ प
रमवरदनलोचननपरमपासेपंकजा

चरन॥ १॥ चौपाई॥ पिनाकक्वनिकोस्र
रान॥ सोम्राईजोसनमुषिभगवान
चोहनसेत्रिलोकवउफरे॥ लोकऊ
राजालीनाचेरि॥ सदानराछैनावा
सै॥ मरदमेरिबीनाश्रुनिगावै॥ वऊते
सेवकराजाजाप॥ वेरालीनेश्रनेरा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

य॥ नषसिषभूपथ्रनेरहिभरिओ॥ श्री
ईकुसमकारसोनकरिओ॥ नवतिनरे
षेसीभगवान॥ द्वारभमधेपानाकेआन
वैठोआईकमकेपासि॥ हासिनम्रा
षमनभईजेविनासि॥ कमलनेनर
रिकेपावनाई॥ नाकानन्नुमनलीश्रा
पुराई॥ धोपेभूपकमकेपाई॥ पनि
जलनलीनासीसचराई॥ फुनिमधुपा
कमसापनकरिओ॥ वडभागीभूपा
निनिसतनरिओ॥ आपेसंदरावस्रपा
र॥ नालजवाहरमुकनाहारि॥ वंद
नेलाईउहरिकेधेगि॥ अंगरिलगा
ईजेप्रेमहिसेगि॥ फुनिसंगिनलसी
आरफुल॥ कमहमारीजोवनमल
नारजमनाकोलेचलिओ॥ परेमभ
गमतैकेमानहिलिओ॥ हरिलोकनकैं
आदिभोग॥ सकलश्रचानेप्रभकेलो
ग॥ आरतसहिनगालेआपे॥ हरि
जनसकोरिसकरेवसनाईपे॥ सेरधिव
रिमहिउनारईपा॥ पामहाबाराजाकी

द.भा.
स.
२२५

234

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भईया ॥ मेचाबेलचीपकार ॥ मीरेषा
रेसस्या हिय्यपार ॥ कलश्यचाने बिंन
मणाई ॥ श्रवरश्रचाने श्रीवलिराई ॥ वर
रै भूपसमर्पेपालि ॥ श्रवेरामजीश्री
भगवानि ॥ हरिकेशवकमकलश्र
हीग्रुइ उपकरेवमनाई ॥ श्रतिप्रसं
नकीनेगोपाल ॥ संतसहाईदीनदं
पाल ॥ केरदनप्रकेसभिनलोक ॥ नि
नेरषेप्रानभगवंति ॥ कमलनैना
कमलाकेकंति ॥ तिनलोकोहरिद
रसनकाहिंउ ॥ जन्मजन्मकापानकर
तेउ ॥ लोकउचारहिश्रापसमाहि ॥
पहिसंसारनात्रिभवननाहि ॥ हक्क
तिकोउपकुमिलेतकेन ॥ सघतिपि
संसारश्रीभगवंत ॥ इसीजोगहेहा
कमतिनाहि ॥ पकुहकलनिकोजोगा
कुमाहि ॥ रेवहिलोकश्रीमापरे ॥
प्रभपारमारिसभेतिमरे ॥ वउश्रागे
मेलोकसंश्रांन ॥ श्रापकृदेषेश्रीभग
वान ॥ जंकोध्यावहिजोगध्यान ॥ ति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बसन कारि कपर मन महान॥ तिनके
गाव हि बिरद ग्यान॥ राम बकल पुरान ब
र भगवान॥ सेष गरि कै रन श्री
मारि॥ तिनके भागि नव रा लेजा हि। ब
हिली ला॰॥ कमल नैन॰॥ २२९॥ साषी
देषीकौ मजन बालि कवम नि पराम
कलानि॥ कबि देवै भरता कमलै नबे
ही मन हि ध्यान॥ २॥ चौपाई॥ हकम निता।
निजी सरा नि ध्यानि॥ चली भवो नीजी
के धानि॥ से गिव हरि प्रो हन सकोनारि
सदरि ब नी सम बी सकुमारि॥ गांव
हि मंगल सब हरि मालि॥ सभ नोके
ध नि सं दरि भाल॥ ईक जी ध्यागा ईउ
पाधिपाल॥ हक बनि जानी श्रपुना कै
ल॥ मा हि ना के का ढ मोना रि॥ ध्रति उ
घदा ईक बजी गमारि॥ आगै चलि बे।
सिवा जाहि॥ के पावकै मंगल तुलगी
बहि॥ जानहि मंद रा उ लौति माल॥ क्षु
बिश्रनपल नो नि हरा लि॥ जा लिंध
के लोक अपार॥ सदरि मदा ढकोर

रा॰
म॰
२२५

226

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रजाए॥ देवीकेमंदरमिलउसबो॥ नारना
समस्हापखुसमहिपरे॥ ड्हउतरादेव
लिवान॥ पंकलिवांपीभीनसमान
देवीकेमंदरालउसरे॥ जगसिंघको
रावकउरे॥ पडेशहेमनरागहिलो
गोई॥ महावलीहैकेरावरगई॥ भामो
हेश्रमतेवड्कवार॥ श्रवहनसमग
हिवडोगवार॥ महासरदोषीस्रसा
न॥ सकेपखुननषीभगवान॥ को
रवकवीविकीरककनिगई॥ न
गरनरहीकारनभए॥ वानरखलि
श्राईसकुमार॥ जाकेकंनसकुंदस
रार॥ देवीजीकेमंदरिगई॥ कसदर
सकोश्रानकमई॥ दीपेहारपपधारे
वान॥ श्राचमनकोमथाकुः विहान
श्रापेकरनदेवीपास॥ कलसिता
नकीवडीध्याम॥ नमलनलसिउ
उमोनालर॥ उजलवसकुसिउप
हिरगई॥ चंदनश्रगरचारपेहार॥ धूप
धुपाईडोगंधश्रपारि॥ भोगपाचम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रम्यारासाल॥ ग्रहदेहक्वलिंप
मउरा॥ यह्वनिपारलेगामेयरे॥ य
रवेपानसागंयनिदिभरे॥ सिनपरि
तषिउसनसरागा॥ रुकानजीका।
उवेभाग॥ कुजाविपवनिकरीसा।
वारु॥ रुक्तनमुषनेकजेवार॥ साग
गरत्ननिपारदेवीकेनाम॥ विनहीस
भनेमहाप्रकाम॥ हेदेवीप्रवेकूमा
ल रुहाणीहेमहादिव्याल॥ गिरजाउ
मापिप्रारीदेव॥ हित्तकरीकरीनम
रीसेव॥ समकाफलभांगनहीपेरि॥
कमलनेनसकिभातादेहि॥ नया
प्रसन्नप्रोहनानीकहिउ॥ पहिवरु।
रुक्यनिरानीसहिउ॥ वाहरिनिका।
सीउमामनाहे॥ रुक्यनिलगीसवी
प्रनसिउवाति॥ मेरमेरमषिपंकने
हास॥ प्रभसिउप्रतिवउरिहोविप्रा
स॥ प्रवदिसजोनिकमेचंद॥ तीन
भवनवउवउरहिउप्रमेरु॥ तिसरु
कानकौवरनप्रकाप॥ हुदैरिकल

२.शा.
म.
२२९

231

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मिलनकोआस ॥ ससिनेऊजलल
षकोकांतिले ॥ कुंडलमकलभल
नभोति ॥ ईकसखीकोगहिउराष ॥
कनकमइकाकरकैसाथ ॥ इंसबै
लनचलैरमाल ॥ इदेवीचिवसैगो
पाल ॥ वारनइनूपतिहमउलको
तीनभवनकेदुःखकोहरै ॥ कुटके
ममोभविपतिभाल ॥ नैनमिटैमलो
रानिकैनिवाल ॥ जवकरसिवकचो
मिउपरिधरै ॥ समहीसेनादर्शनक
रै ॥ तववनिकैनैनडववहिप्रान ॥ रेत
उनरेखश्रीभगवान ॥ जवहीसेना
दर्शनकेलिडो ॥ सभसेनाकाननम
हलिडो ॥ मासीसेनामूरछनभइ ॥ स
वनिमकलषिदमिलइ ॥ उनती
मीसमैसेनाभइ ॥ ननमनकोसभ
सधिमलिताइ ॥ गिगिपरेसभैव
लिवान ॥ भयेलोकसभविसमान
आवेननैवकसभगवान ॥ मानुषर
पीउरखगुनन ॥ सभसविनासीरीन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दयाल॥ पंकजलोचनसदाकृपाल
हृदयननगह्रीभजातेस्याम॥ श्रवनभ
रहीस्याकेकाम॥ रघुपतिप्रभजील
देखाई॥ हृदयनिहदेश्रनेदमनाई
प्रेमहराघसिउहृदयनिभरी॥ प्रथ
नाथसप्रानकरी॥ जैसेसिंचमा
गीगहिलेहि॥ तिमैवलीनकिमही
देहि॥ तिउहृदयनिकोहृहिलेवले॥
गोकोईकेसकेमीमरलले॥ तिउह
मनिचविनीनिसरहई॥ तिउहृदय
निसंगिकेमवाई॥ हृदयनिकोले
चलेश्रलेव॥ भारिनिजनवालके
मेघ॥ सेनासननसवराहेगम॥ सवरि
धिमिननाथश्रकाम॥ तनाबोले
परिहासाभईया॥ हमरीधीनाटव
गेगईया॥ सकेपकानानिकरूप
रहाप॥ तिनकेननमनलागानाप
नपाश्रमानलागाहीरहो॥ हरितेव
मुपकाननरेहो॥ हृदयनिसिलीगो।
पलहिसंगि॥ बहिउप्रेमननमावेयं

ह.श्रा.
प.
२२२

237

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

संग रहे संतन रहे हरि सो सानाहि ॥ हरि
को भजे सो हरि ही पाहि ॥ तिउ हक
निपावे भगवानि ॥ हरि ब भवे ति।
आरी के ध्यावि ॥ घहि लिला। कमल
नैन। ॥ साखी ॥ कोयेगा सकल ति।
लिजानन देव हि स्याम ॥ वरइयती

ती कमल मुख कैसे नैन घे काम ॥ १
चौपाई ॥ मन ताना अति को मद्दि भे
अभिमानी पाउ दिक मको ॥ हम।
होने जा दव लेगवे ॥ मंद्र डेखा मह
मारे भई ॥ हरि के पाछे सम आवे ध
ई ॥ गावे ध्याम प्रभव लिगई ॥ महा ल
पति हद्यवस रमया ॥ अंधकाया पि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परि हो गई था ॥ जदुकुल ले नी भप
ऊ बैरि ॥ आद रव बी बिभूप बडु फेरि ॥
बाल द्रकौ मिलि बरषा करी ॥ मेव
बृद कौ बरषा करी ॥ द्रुपद होगई ख
सभे नदुबंस ॥ जदुकुल मकलि
कुल कौ बंस ॥ रुक्मनिजी खलि वि
हवल भइ ॥ किपा जो नो बमा हो वै
दई ॥ आप मैं सबाख नि बलि बान ॥ प
नि ग्रंलि को मल खो भगवान ॥ जी
कौ जानी श्री नोमन ॥ रुक्मनि जी के
उर प रानि ॥ कदुकु निरभै बचना
सना बरि ॥ पि खारी के मनि सब उप
ना बरि ॥ बोले मधु निधि कसम प
रि ॥ रि पिख्रारी सभ मोह कुनि बारि ॥
जीन हि मे नेरे बलि बानि ॥ कबन
कौ रस परु भूप अमान ॥ तो ब कौ ख
रुक्मनि कौ स्याम ॥ ख्रभ ख बिन्ती
सुन काम न रिस्त्र कहु लप हरि
केबीर महाबुली दो नौ रण धीर ॥
सभ भूपन कै मन मुखि भये ॥ मानो
सिंघ बिना ग रुपनि न गये ॥ जीन लीपल

द०का०
प०
२२१

238

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भृगनाचीन तरियग्रहहलधावलप्र
वीन ॥ गवेभानिसभकहकुमाई म
हावलिपरिग्रहवलिनाई उगवेस
भेधमानि ॥ मिटेसभेनिनकेअभिमा
नि ॥ डलकूकूवेवेसमिपाल ॥ नीगा
हीहरिभयाविहाल ॥ लजनिहोई
सकमघगईया ॥ महाम्रउमिनक
साभईया ॥ गजानिसेसनावहिमा
नि ॥ हेशशिपालमहावलिवानि
कछुविनामननमहिकौ ॥ लेधा
भागहिमाहिमरे ॥ ज्यासंधवेलि
इनिहकाल ॥ महावलिहै श्रीगोपा
ल ॥ हउजीनिउनिनखसहिबार
मारीसेनामारीझारि ॥ हनीहमारीसे
नाअपारि ॥ महावलीहैतमगति
वेकवारिसुकिनेभगगवे ॥ पामहा
पहमनवकेभवे ॥ हानिहारिईकरै
हभीहोइ ॥ मनिमहिमोकुननकीजै
काज ॥ मनकामभहीमोकुनिवारि
हमतीमनिलेहिरदेधारि ॥ भूपकरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गई अविचाराहीन ॥ महावली इव
वलिहीन ॥ लजति हिये वैराजै यथीन
परिहिलिला ॥ कमलनैन ॥ साषी ॥
वेलि उरक मह्रां वलि हिन इस भेव
रमान ॥ हरजाई जीनो कसकै वर
ननरे वेजान ॥ चौपाई ॥ आई उरक
मवइ उश्रवान ॥ भूपरूप हिलिन को
वषाति ॥ सनरु भपान मसभेसजा
न ॥ हरजाई जीनो श्री भगवान ॥ जा
ननि दे वोपकसै नैन ॥ फेरि लि आउ
आउनी भैन ॥ परिहिसे कल पउगाहि
हिये करो ॥ जीनो कुसन नगर पनिथरे
गो हरउ उदुम निजीनो नाहि ॥ वान
न थरे नगर के माहि ॥ सभ भूपरु को
वचन सनाई ॥ प्रभ कै पाछे आई अंध
ई ॥ पेकपार हनी मै नामाषि ॥ सभहो
पहि मैना के हाषि ॥ हरी कै पाछे आ
ई उधाई ॥ सकै पछान न चिभवना
ई ॥ आई ई कैला ही परिहिलाया ॥ कोध
लाषिरा लुसम भई या ॥ कोई नजाया

र.मा.
म.
२३९

239

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लीनो साथि ॥ आई है कारे त्रिभवननना
थि ॥ रस दानु है ग्वै सिरी भगवानि ॥ प
पनी वर है तिन देव हे जानि ॥ हरीको
मीन लगा पेवानि ॥ माधव आने फूल
समानि ॥ पुर वर बला पेवान प्रजान
श्रा गै पूरन पुरष पुरान ॥ माधव धा
नम पुरसूदन भये ॥ पुरष पुरातन नि
ननये ॥ कारि उना काथ न वगोपाल
रघु कारि उधु जसह तिकुपाल ॥ मा
हेश्र म सारथी साथ ॥ लीला करी प्रभ
मेरे नाथ ॥ हरूपनि श्रादाह कसप्रभ
ने ॥ नैकुन कुंडै तेर श्रभिमान ॥ प्रव
रधनष फुनि लीना हाथ ॥ वडु भी
कारि उ त्रिभवननाथ ॥ वडी पगाय
फुनिल इउ राई ॥ वडु भी कारी के श
वराई मदागही फुनि हाथ गवार ॥
वडु भी कारी कस मुरार ॥ वडी सका
निफुनि कारम ही परी ॥ वडु कोभी
कारी श्रीन रहरी ॥ वडु ती निसूल हा
थम हिमपरि उ ॥ वहि भी टोरे धंद प्रभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीउ॥रहिओननापुछिकोइहथीआ
रि॥अबिनासीसिउलागोवारि॥पंड
सिपीफ्रुनिकरिगहिओ॥भिकरि
माईहरिकोईउकहिओ॥मानुकै
फेरोगमैन॥कह्लनाकुरोपंकजनैन
पंडिसिपरिनाकेहाथ॥निलनिला
कीनाउभवननाथ॥फुनिगुहकम
लीआउठाई॥रघभीकारिउकेसव
राई॥रघनेउनेश्रीभगवंत॥नाको
मारिनिलगेअनंत॥नबिहरकानि
अनिबिहबलभई॥देबिबीरआनी
देईगई॥घाईगाइकेपावकेपाई॥प
भकेबानरहीलपराई॥उरनीअभ
पहिबिननीकरै॥घरुघरुकांपैमन
अनिउरै॥हुजोगोसरहेभगवानि॥है
जगदीसराहेनाराइन॥अभिनपाक्रे
मजगकेप्रान॥आदिनिंजनअभै
अलेष॥मतिपमनातबिमानुषभेष
मकिकेपहिअतिपिआराबीर॥कु
उरुपाकाआनुपाहीर॥जोसेनमक्र

र॰गा॰
म॰
२४॰

240

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लिष्योतप॥ नउम्मकिउंगेहै हेवनसां
म। मानकूविनेहमातीपेकू॥ माईहान
कपाकरि देकू॥ जवहककानिईहवि।
नतीकरि॥ देनहोईश्रनिश्रेमेभरि॥
उपेक्षपालक्षपाभेंउार॥ जोवनमा।
तिउेहवक्ष्मराति॥ सालाम्नसकोवे
षिउेसांम॥ गारवप्रहारीनापश्रका
म॥ मेहिउमेंकासिरुजउनाषि॥ मो
खनघातिमनेंदनसाषि॥ मेंउीदारे
कोउविहाल॥ गवेप्रहारीयेनदईश्रा
ले। कहूंकहूंराखेहरिवाल॥ सिरीप
तिमिरीगनिश्रीगोपाल॥ कउनको
कोहिश्रनुषेलाल॥ हीनदईश्रानि
षिसपकुपाल॥ नाकीपेकशह्नी
मैन॥ श्राइधीहक्मनकोलैन॥ नार
वैनोपाश्रनिव्रालिवानि॥ तिनको
सिरपरश्रीभगवान॥ नारदवमोको
मैनामारे॥ गाघाईउश्रदेवउवारी॥
लिउगनिनीकेवनमहिपरे॥ वान
हेसिउनरच्चरनकौ॥ तिउश्रीहकम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीसैनारहली॥सकलजगतिमहि
मारबबली॥हृतिपहियाषेरहला
धरबीर॥हिनमिउपाभेकिम्रामप
तीर॥हकारैविउनिधरितिहाल॥
हलधपोलिरीउननकाल॥के
शबकोबोलेबलिराम॥किमको
नोसंधराचेनिमाम॥समधीमिउधे
सीकोउरकी॥वंनेकोउविनाहनधे
कनिहकमोकोबोलेराम॥प्रभध्रा
विनासीइरनकाम॥षिमाकरोह
मकोकुरामैरे॥हेहकासमधीकेवे
पहिवैसहीकरमकमावृति॥महउं।
नमीसननेकुलनावन॥कियाको
नैबालककेसाथ॥शनहमारेपेज
उनाथ॥हकनिरेविउवीरविहाल
केकुविनाकोनीतिहिकाल॥हक
निजौकोश्रीवलिराम॥श्रघेश्वव
श्रनेनश्रकाम॥समफाईउग्नानव
लसान॥होवनहारकरहिभगवान
मनहकानिजोबोलनहार॥नाका।

रा॰ म॰ २४२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ठकुनपाहरुता॥ बान्ननविहननना
मनजार्य॥ नाकाहकोपिनानमाना
नाकरकोकुननबेग॥ समहीसिउना
कासनबेग॥ जैसेवास्नउतननउार
नेईश्रापहिरीश्रेवांरवार॥ तिउहीश्रा
नमबोलनहार॥ देहिलेसिफुनिदेव
निउार॥ सदासनिहैश्रीभगवान॥ केश
वकसनमारेकेन॥ बोलनहारकरम
कोश्रेम॥ सभुजगुवासदेवकोवस॥ क
सवानहिरदैलेधार॥ श्रवघानमन
नेसभउार॥ कैसेहैकेशवभगवान॥
किहिमुखिईनकाकरोवषान॥ श्री
किश्नजिनेरहलिनिरंजन॥ श्रीभगवा
नमहाभैभंजन॥ याहूनेसंसारग्रपा
र॥ निकसिसमावैवांवार॥ निहवल
सदाग्रवंउप्रताप॥ सभमहघटाईका
माकाजाप॥ नलछुमीपेहहीनाएई
ए॥ नीग्रपसेपनिपामसपाईए॥ श्री
केवानहदैलेधार॥ श्रवहमसेनश
नाकिमार॥ कसाकसेनसिग्रापिसना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न॥ येकै नमस्तुह श्री भगवान॥ रुकमनि
को सभ फाई ग्यान॥ श्री शंकर षल
प्रापतान॥ मो कू रुकमनी का सिरि
रै ग्रा॥ प्रेम कमल के पासि सिउ भई ग्रा॥ रु
कमी बलि उ मो सबु राई॥ षेल दिषा
के शब राई॥ कै उन प्रभ हि चरनन थ
रि उ॥ श्रब रतनागर तनाको हिग करिउ॥
सभ गुना हो इगा पे बिराम॥ सभनै भली
कमल को दास॥ पहलि ला॥ कमल नैन
२३२॥ साषी॥ रुकमनि को लिश्रा पे प्रभ
के सब कल प्रघा हि॥ बी बुरी द्वारी
का माधब की श्रा बिबाहि॥२॥ चौपाई॥
रुकमनि को ले चले प्रभनंन॥ कमल को
पानि षि कमला कैन॥ द्वारिका का कै
शब श्राये॥ नौ बिलेक मिलि मंगल गा
वे॥ सभ नारद ब सन मुषि उठि धावे॥
श्राई प्रभ के पगि लपटावे॥ कमला ब
लन भके शब राई॥ मात पिता के ला
गे पाई॥ ब मरे ब रहे ब की २३ श्रसी ष॥ कै
शब जी बोला ष बरी स॥ पाति श्रर रुण॥

द्वा० म० २४२

242

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हकमनमोकस्स॥कीनासरवविप्रपा
केविस्स॥हकमनिनीतिहाकोप्रापे
मानपिनाकैनैनमिनलापे॥पानि
गहनकीनेगोपाल॥बीविहारि
काउनमकाल॥भईउविवाहहारि
कोमाहि॥ईउकहिश्रीमुकदेवसु
नाहि॥दिववसग्रवसदेवलेप्रापे के
गवहकमनिकेपहिरापे॥नावदसमै
नेबोललिप्रापे॥हरिकेपीनवसनम
हिपापे॥प्रापेकेरवपंउवसंत॥को
नेविवाकुश्रीभगवंत॥लिप्रापेहर
षहिसमविनमोल॥हीरेमाणकला
लेश्रमोल॥श्रवहमीनप्रापेतिरका
ल॥जिनेपिप्रारेश्रीगोपाल॥तिन
हरहिकोमेराटहु॥पामहुाषसमा
कीमतिमइ॥हरिगुप्रसेजगकेमा
हि॥होसदेसकेगुनजेनजाहि॥केश
वकेमंगलगुणगावै॥सनिमगुनि
लोकविसमहोइजावै॥श्रेसेकेपाव
हकमनिहरी॥कैउनगुनमहिलीलाक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

री॥सनमहिकलमगुनकेनिधाकान॥दे
रिगुनदरेतिनजूकेप्रान॥मनमहि
बिनवैराजकुमार॥हरिमोहोवैभर
तार॥श्रेसाकेनहमाराहोई॥ननिमति
कोइघरोपोई॥राजाकहहनजमाता
होई॥नउहमउधनविथापैकोई॥उ
रीहहीकोमंगलभये॥कसनामभि
लिसमनोलये॥बजहिनगारेढोल।
मरंग॥नरनारीनाकेरउपंगा॥उरी
हहीकाघरीसहानी॥नानेसारकोउ
रीलनानी॥हकानिजोकोकहिउबलि
उ॥त्रिभवनिकोपतिपाइउमित्र॥हेह
कनिबिनतीसुनवेहि॥नमरेपति
सिउनगोसनेहि॥सिउनमगथावैउर
घपुरान॥सिउहमनेलइसिरीभग
वान॥बिरिहिबिकलसिउनमहोई
राउ॥सकलभोगतेनिग्रोमइ॥भर
हरघजवपावैभाम॥सभहोपुरेनमो
काम॥हरिविद्धानकेमाननहूव॥भि
सकोनीरटनारिनकोमउघ॥हमउःघ।

रा.प.
प.
१४३

243

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पावहिविगोपाल ॥ नंनमानाजी
परमदुईग्वाल ॥ अपनीपनिकोवि
ननीकरो ॥ ननमनहमरेकाइवे
हेरो ॥ सिंधुमनाहेमनहउदार ॥ नम
कोपूझेदेवअपार ॥ कउअतिहीन
अधिनगवार ॥ लागेहरिकेपाणि
सिउपिआर ॥ विनतीकरीअधीन
तिहाल ॥ मेलकपाकरिश्रीगोपा
ल ॥ ईहलीला ॥ कमलनैन ॥ ३१ ॥
साषी ॥ बालकुहकमनिकेमईउको
मवहीसिउस्याम ॥ अतिसंदरि प्र
उमनजीमूरतिधारेकाम ॥ २ ॥ चौ
पाई ॥ हकमनिजाईउमंदरीबालि
पंकमलोचनघमरसालि ॥ हरि
हीमोचवमहरस्याम ॥ करीप्रनमा
निधारीउपहिनाम ॥ उपजैमनम
पकोमननार ॥ मभककुजानहि
कमनमरार ॥ हमहिनकाजबबाल
कुमईया ॥ मेवरिदेनतिमेलेगाईया
किसीननानिउघारिआगुराई ॥ स

भक्तकुनानहिकेणबताई ॥ बालकु
गोतिउबीचमसुदू ॥ बेउमुरमनिसंब
रक्षिंदू ॥ बालकुनिगलिउमीननबिम
ल ॥ मीननपकमाईउोबीधकुबाल ॥ ले
बंधक्रुसंबहकैगईया ॥ सबहदेव
रायथनिभईया ॥ मिलिउसोइप
इकोबइमीन ॥ जिनकोमनिथी
महाप्रवीन ॥ फीरउोउदासोपोजबै
तिसनेबालकुतिकमिउनबै ॥ ना
कैइकुबसेयीनारि ॥ भलाकरेघी
भानगेदारि ॥ संबरिताथीयोकरि
पिग्राह ॥ टालिभानकरिमुकेघबा
रि ॥ नामप्रगारियामाईग्राबेनी ॥ ना
रिकामकीग्रमिसनिबंमी ॥ नाको
बालरसोपहिंदईया ॥ माईग्राबेनीह
रथमिउलईया ॥ नारदजीआयेमि
हथानि ॥ कामविद्यापहिकरेबखा
नि ॥ पहिबालकुहैनेताकन ॥ मिना
बालिकाथीभगवाबेन ॥ हबलि
मीकेउपजिउकाम ॥ मीप्रदुमनन

ह॰ वा॰
म॰
२४४

244

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गतिमहिनाम॥ नुहुरेतिमतिईस।
कीनाति॥ हिनकरिभरनाकोप्रति
पाति॥ जबई हनारदबचनसनाई
पा॥ सतिरिनमंनप्रानेदनमाईपा
कहिविरनेनसिधारेसेन॥ नारि
केशेनकिकरहिप्रनेनि॥ भरनावें
प्रतिपालेनाति॥ बप्रारिधिलावे
करेविप्राति॥ घोरेदिनमहिवडिहि
गईया॥ हरषितिपाकेमतिमनिभ
ईपा॥ दिष्प्रावहमोलागीकरनि
धाराबचीकेनिकोवरनि॥ भावप्र
हसेहबजबे॥ बसदेवसनबोलेत
बै॥ पुरीरिष्टकिउटेघतिमाति॥ हे।
मतोलगतितमरोनाति॥ नवहीबो
लीमाईयावेति॥ नेरीनातिप्रद्रुसति
वनी॥ नंप्रद्रुमननकसकोवाल॥ उ
रीहारिकाबसेगोपालि॥ हक्कानि।
सनीनमारीमाई॥ प्रानिउसंबेरीद
निकुपाई॥ नईनिउरितेमागरिवी
वि॥ प्रप्रमिकरमईनकीनानीवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भक्तु जानन हि के पवत्ताइ ॥ बालक
रहि उबीच समुंदु ॥ बेउ सुरमनिं सब
रखि इ ॥ बालकु निम लिउ मीन बिस
ल ॥ मीन पकराई जे बीच कुमाल ॥ लै
वे धक्रु सेव हरू कै गई या ॥ सबहु देउ
हाथ अनि भई या ॥ मिलि उ सो इप
इ कोव इ मीन ॥ जिनकी मति थी
महाप्रवीन ॥ फरी जे उदरा सो पोजै
तिस ने बालकु निकसि उन वै ॥ ना
कै इ कुवसे घीनारि ॥ भला करे घी
मान उरदारि ॥ सेव रिता घी घोकरि
पियाह ॥ दालि भान करि मु कै घबा
रि ॥ नाम प्रगरि घामा ई आवे नी ॥ ना
रि काम की अनि सनि वं नी ॥ ना को
बालर सो पहिर दई या ॥ माई आवे नी ह
रख सिउ लई या ॥ नारद जी आइ पि
ह घानि ॥ काम विद्या पढि करे वषा
नि ॥ पढि बालकु है ते ए कन ॥ विना
बालिका श्री भगवावेन ॥ ह घनि
मी के उपजिउ काम ॥ श्री प्रदुमन न

ह.गा.
स.
२४५

244

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गतिमहिनामन ॥ नृहैरनिमतिईस।
कीनारि ॥ हिनकरि भरनाकोप्रति
पारि ॥ जबईहनारदबचनसनाई
या ॥ सतिनिरिनमंनभ्यानेदनमाईपा
करिविरनेनसिधारेसेन ॥ नारिरि
करोनकिकरहिम्रनेनि ॥ भरनाकें
प्रतिपालेनारि ॥ बुभ्रारिषिलाये
करेविभ्रारि ॥ घोरेदिनमहिवडिहो
गईया ॥ रषिचीयाकेमतिमनिभ
ईया ॥ रिषभ्रावहमीलागीकरनि
भ्रारावचीकेनिकोबरनि ॥ भावभ
हमेदषनबे ॥ बसदेवमनबोलेन
बे ॥ सुनोरिषकिउदेषतिमानि ॥ हा
मनोलगतितमरेतानि ॥ नवहीबो
लीमाईयावेनि ॥ तेरीनारिप्रभुसति
बनी ॥ नंप्रभुमनकसकोवाल ॥ उ
रहारिकावसेगोपालि ॥ हकरनि।
सनीनमारीमाई ॥ भ्रानिउसंवरीदं
निछपाई ॥ नईनिउरिरोसागरिबो
वि ॥ प्रप्रमिकरमईनकीनानीवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पेक्रमीननैलीनाषाई॥ वैधकिमी।
नैनरनिकेलिग्राईघा॥ रैनरालेउ
पासिपरुईपा॥ नवैतेसोपेफारि
मीति॥ मानेनिकमेनमपरवीति॥ ई
मेननैननकिकोरदईया॥ परमिक्रो।
पालनाराईलभईपा॥ नारदिनीक
निमकिपहिग्राईया॥ कहिवनेना।
निनिप्रगरिसनाईपा॥ नहैभना।
हेउहैनारि॥ प्रवरुभाननभानारिवि।
सारि॥ नमनापरवजननमसनावो॥ हे
रिपगिहरेमाहिग्नावो॥ महावली
पावप्रभुकामु॥ नमराव्रहेलाषिउ
नामु॥ रेकरकेउनमलापेवान॥ उ
लोभपेसंकराकेप्रान॥ कोपरहनव
पंकराकरी॥ नमरेननकेउपरिवी
नवनेजरहग्राभसमेन॥ महावली
मनसैममहेन॥ हउभीनमरीवि।
प्रारीनारि॥ नामहमारारिसैसार॥ न
वरहउपरोहकोसरानि॥ लागीवि
कीसेवाकरानि॥ मफिपरिपाकीभ

रू.रा.
म.
२४५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

245

ऐकवालि ॥ समसलदाईकदीनदे
माल ॥ तुरामोमाक्रमफिकउसिवक
हिउ ॥ समराकहलजावनसाहिउ ॥
मकिनवसिउपहिविननकरी ॥ हा
पिजोसिग्रनिप्रेमहिमरी ॥ नवम।
फिकीनवचनउवारि ॥ मेरिनहउ
मनमषकीनारि ॥ नमऊक्रपक
कामजराईग्रा ॥ किपाजानोकि।
हरउरसिधाईग्रा ॥ नवहउग्राइन।
मरीसानि ॥ समउषमोचनिहेवकि
चरनि ॥ सेवाकीनीकेननिमिति।
भवरनवाछामेरेचिन ॥ हेसिवश्रे
मीकरनाकीजे ॥ कानुझमारामरना
दीजे ॥ सिवकहिग्राजोषोजीमेमा
न ॥ षोजनिपावैगीभरताह ॥ पेहा।
षोजनिषोजनिझहाग्राइ ॥ हेउसेव
कीमनिमहिभाइ ॥ हालभावकरनि
मेलिग्रावो ॥ संवरकेमनपरमहिना
वो ॥ हमसनसनीनमारीमाई ॥ जब।
काईनलषरिउत्तुराई ॥ नवहीहमन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रसितु षषाई ॥ हरी लीनी जितु प्रतिनि
ल लाई ॥ जितु बसुधा को करेगाई ॥ वि
न देषे प्रति हीवि समाई ॥ बलि मानै
के प्रति निमषे रहु ॥ नमिसितु करनी ब
नामने रहु ॥ मारहु सेभ ह रंन प्रजाति
पिनाजमा ते श्रीभगवान ॥ सउ माई
याकौ जानन नपे हि ॥ मारहु वेगितु ह
कैर हि ॥ हउ माई प्रासिषरा बो घनी
मारहै निते हमरे प नी ॥ माई याबनी
सिघारी नारि ॥ भपे प्रदुमति नवै रहु ।
सी प्यारि ॥ पति को रिन माई या सिष
र ॥ प्रतिव विउस तिगुरको लिषाउ ।
हरि को प्रतन पिकउ भई या ॥ रंति
तई को धरि परिग ई या ॥ मारी हाक
करु के प्रन ॥ जिन जीने सिव से प्रव
प्रन ॥ बा हरि निकल्परे रंन प्रजाति
वेग प्रहारीते ने प्राति ॥ बचनि का रि
कै है निरिकालि ॥ क्रोधितु रंन भवि
डोजउ विद्यालि ॥ बाहरि निकसि जो ।
क्रोधरि माथि ॥ बरीग दाग हिली नी

र.गा.
म.
२४६

246

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नीहाथि ॥ कानलगेदोनोसेकाम
देनश्रहरलषीचनस्याम ॥ कारि
मधुहोनोवलिवान ॥ कोऊनहा
है उऊसमानि ॥ दउरिदेनवविचा
उश्रकासि ॥ माईयाकोकोनाथनि
मिथासि ॥ नभनेपाथीश्रषाकरी
वासहेवसनिसभपरहरी ॥ कोनी
नाईपाश्रवकश्रपारि ॥ सभमोरी।
हेरिहोनिउहारि ॥ धरनीकुनिश्राईउ
सानि ॥ कोहहेमहिवनगुमानि ॥ ह
रिकैश्रनिबरगुणाहिल ईया ॥ संवरि
केसिहिउपारिदईया ॥ उछुटेनिकी।
काहिउसीसि ॥ कवनकोहहावनि
कीरेसि ॥ मारिउदेनवउग्रज्ञान ॥ क
वनकोहीपुनसमान ॥ चेवपुरु।
पकीवरषाकरी ॥ जेहरिकेसनिश्र
पदाहरी ॥ माईश्रावेनीचीलितनव
रिहे ॥ हीसनिनाकेऊपरिवरिहे।
उरीकेनपेषकूपरिवारि ॥ माईयाव
नीसीलिकुलनारि ॥ हकनिकेय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सबै सषी यहि भरमानाहि ॥ केतनकै
हे भवर को उसषी ॥ पइलाषीगति।
हमोनलषी ॥ आइ निकरिवझरिह
रिनाहि ॥ हिनसिउ देषहि नैनि निहारि
बोलै हकवनि सबउ दसाहि ॥ येनि।
ऊनिय यहि जाका वालि ॥ धंनि भाग
मनिये माजानि जे ॥ बाका रूप मजा
बनि मानि जे ॥ मैसी हीय हिनाहि यश
उ ॥ यहि जो तेय्रनि परमसरूप ॥ मे
माही धामे ताहन ॥ लेहीत इं धाउ इ
कोइहनु ॥ जोकहै जी वैमु इं धानहे
है ॥ याश्रकवा महि मेडन कोइं ॥ यही
होइ नेमी नाताति ॥ हमतपन हमा
रे ग्याति ॥ जेमडिउ प्रेमु नितो कि उजा
है ॥ उमडि यति वाल कि कीमा है ॥ ये
सा धाम महोवे इं इ ॥ हमत याति
उ विडि उसने इ ॥ तिमी कालि श्राय।
भगवाति ॥ श्रादि निरंजनु गुरु विउ
ताति ॥ श्री वसुदेवदेव की साषि ॥
मात पिता संगि आवै साषि ॥ रहे मो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिमिरि कलमलतारि ॥ सभ कछो जान
रिउराखिसपारि ॥ आपेनारदनवे
महाति ॥ कीनोसभुविरनेनवषा
नि ॥ नारदकहिआनमोनाराति ॥ स
भकछुनानउपरषगुरातु ॥ सोच
उकहाटवकोनेद ॥ नमरोहीरतन।
परिमुघिकेरि ॥ हरीगुनिकोना।
लीलाभउ ॥ सभैसनिनारीकहि।
हउ ॥ हरधीरकनिरुप्रेगिनमाई ॥ ले
लेषनिकउकेडिलगाई ॥ नहिके
मीसउमैहूलास ॥ रकननिजीमन।
वहिउविगास ॥ सभह्रीआवहिहरि
कीनारि ॥ निसजोरीकउकरहिपि।
आरि ॥ चुघहिपहलेकेढिलगाहि ॥
उमउप्रेमिनमें गिसमाहि ॥ लोगके
हनिमिलिपैसीवोनि ॥ हकनिपा
वेमपुनेनाकि ॥ रघहूइनकोभाति
गणारि ॥ नावेमनलेआवेनारि ॥ भले
टिनमिकेयाहिपरकारि ॥ नावमुखि।
दवहिकारनारि ॥ वेउकामकेसबके

द॰ भा॰
स॰
२४८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भवे॥ मनै सो किछु नि रेवेगवे॥ ह
रिसे लोमि पछुतान निनाहि॥ सुष
लभवनि हैहेमकुमाहि॥ हरिसनि
कोपहि लीलाभइ॥ हकनिजीकी
पीउगइ॥ वासदेवपुरनिभगवंनि
गते निहालिवलिकमलाकंनि॥ १३४

साषी॥ सहजिकीसेवाकरीसतिनि
वलिवान॥ करिकिपाविमलिदई
उनलि आपिसमानि॥१॥ चौपाई॥ सा
जिनिकावलिवानि॥ कोनीभग
निमनापेमानि॥ सहजिनापरिभवे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पीकिपालि ॥ प्रभुनेजलिपरिम
पेहिग्रालि ॥ मणिईकनाकोलरा
जिरह ॥ हरषिहोइ ल्याजिनलई ॥
नामलषुकनमणकाकहे ॥ नही
होइदुःखदारिद्रदहे ॥ लरानिको
मीमणिजगामैगे ॥ ग्रेसामणिका
चोरनलगे ॥ ल्याजिनिलैमिलीग
ये ॥ दसोरिमाकोनमकोहरे ॥ गाई
उपुरीउपारकाजवे ॥ हरिपुरीबा
सीरबिउनवे ॥ ग्रेसामणिकाने
सुरमपारि ॥ कोउनलागेनेनपसा
रि ॥ निरहेवेकोजनहिहोभालि ॥ प
रमनिग्राईउग्नीभगवानि ॥ जारद
बहनेग्रापेपाई ॥ जहाबिराजहरिके
पावन ॥ महाराजनामित्रिभवनिता
नि ॥ शंखिचक्रकोधारनिहारि ॥
नमोनमःमनेकलमुरारि ॥ सोइन
पतिकीसंपरिअंशनि ॥ सनोनापञ्जी
मभाग्रमेकि ॥ दूरनिकिरेनकैस

र॰ पा॰
म॰
१५८
249

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भैरव॥ करहकपालभिखलखग्रभैव॥
तमकैहढतिसभवरदीति॥ श्रैसे
प्रभततमिपरमप्रवीति॥ हैगोविंद
सत्नगादोस॥ सतिगुरखिनमिषिस्रे
वीसि॥ जनडकुलप्रगरेभगवानि॥
देवकृसतिउहैनाएनि॥ तमरेपति
महिमापेसति॥ श्रैसेतनोप्रभुभ
पी॥ हरिमिकरिवोलेकेशवराइं॥ स
नेसघरडकहेसनाइं॥ स्वाजितन
देवहैपहू॥ स्वामितिउईनकीजेस
नेहु॥ विकीकिरपाभगवंतिपति
भउ॥ पहिमतिनाकोसरतिरउ॥ ति
हिमताकोप्रतिजोनप्रपारि॥ प्रग
टिभरसारेसंसारि॥ तिनकाभरमुमि
टाइंजेस्याम॥ पूरनिगुरविप्रनेति
प्रकासि॥ स्वाजितिईकुमेत्रकरिउ
महावलीप्रतिहाथेभरिगे॥ ताम
हिएवीमगोसमिधानि॥ विपुरुल
वेभउसजानि॥ वेदिउवारेतिनाल
लि॥ ममपापीलेउनमकालि॥ लि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिवसिमनकीरुजाकरै॥वहुमणि
नाकोरदलिउद्दरै॥आठिभारकेवद
मणिहेई॥हरिविद्दोईलानिनसोई
वेद्दसमलमणिमणिकैमांहि॥स
मसीकहिसुकरैवसनांहि॥सरवि
कोवहुमणिनिहुरैसि॥नहंनमां
तिकरनिपरवेसि॥कद्धनदेसिथै
कैनाह॥मणिकीमहिमावरोअप
रु॥महामणेयवहोउपाहि॥नहंन
विद्यावेकोइविद्यारि॥नाकोवोले
श्रीभगवानि॥सवज्ञानिनिवीरि
सज्ञानि॥ज्ञानिनकोश्रीपतिवोले
सनोभयाईकवनाइवचून॥इस
पारसिंधकेजवईहिसारोवोवव
मेननमेनमेराजाप्यपिउनामैअव
नानेसुपरिउ॥प्रजापालप्रनविप्र
धर्मीपरप्रभपरमीशाप्रपकरिउ
उत्तमेननरकुलकेराजाराजराज
राजैसराहै॥ताकेरपरश्रुतिश्राका
रोनिनहरमसेपरमीसराहै॥सवदेव

र॰ ग॰
म॰
२५॰

260

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मयमपथकलेवरहंइउकहि वेदवला
वनहै॥ इहिमलालाजीकौदीजेम
ननवारकरो॥ सनिनृपहमारीध्यानि
ध्यानेममाधनमजीइंधरो॥ यहिमा
निलाजीकौदेहि॥ सोसिवचनहम
ानमिलेहि॥ जेयसैनहमरैसिना
म॥ वडेमहिमलिरिहेउमानि॥ त्रुपि
कोरिरहेसिरीमगवानि॥ प्रथमप्र
सदनपुत्रसिपुत्रानि॥ नोकोवीनधसे
नउदारि॥ वोरेउपरिमइंजेमधारि॥
वहमालिपुहरिविरिउइंसकारि॥ व
लिमहिलाइंउरानकुमारि॥ सोइंउ
सिंत्रुमहावलिवानि॥ तिनप्रथैनि
केरनेशानि॥ चोरेसहतिविजोरीउस
ह॥ रउसिंचनेकोनेवल॥ मलालेच
लिउसिंचवलिवान॥ जगामलानिम
लोमहिमसमानि॥ जोववनप्राइंउलि
हिकालि॥ वुहोरीकुवलधरेविमा
लि॥ पकुचधनेसिवकउदरा॥ निक
मिनिंउलिनधनिकीमध॥ मलालो

वलिउअसिंबवलिवान॥जगमगानि
मसिमनिसमानि॥आसवंनपाइउ
निहिकालि॥वशेगिछुवललपोबिस
लि॥पकुचपोरिसिंघकेउदइ॥निक
सिंसिंडसिनवतिको भइ॥मालिले
गइउनमकोसंद्य॥बिरकमीवेघाति
वलिवंन॥वडुमतिानिनिवालकिक
उदई॥वालडुवोसिथेलिमो भइ॥ब
निनबीहनआइउजवे॥इउसानिति
बोलेनवे॥कसविशतिइमेरवीरु॥
मनिहरिलीनीमारिशरिह॥चली।
थानिनविलोकेउमाहि॥मिलिवेस
हिपहिवचनिमनाहि॥कसनक
नीघोपहिमानि॥वालकिकउकिउ
कीनेचानि॥वलीवानिकेपवपहि
गइ॥हाजीकउवदिनाचीभई॥सोहि
नमाधवकुरीवानि॥वडुमेगिलीनी
शपनीजानि॥वलवालकिकउदिउ
निजाहि॥किमीदउरिमनवालकप
हि॥दुदनिआपेउतहोघानि॥समा

इ.का.
स.
१११

251

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कछुनामहिसिरीभगवानि॥देषिउ
वलकुग्रकसमसमेति॥सिंघमारिएक
गषेषन॥मलिानहीपाईविसमैभए॥सिं
घबोजलेआगेगए॥आगेसिंघुपरिउ
मरिपरनि॥देषिकरिरिछुकेचरनि
रिछुबोजलेआगेगए॥केशवषेलिरिष
वरिनवे॥गुदारिछुकीमहाग्रंथाह॥ति
सुग्रसारिकाकछुनिपीग्राह॥नामहि
पैठिनमाकेकोई॥कवनपैठिआपुनात
नषोई॥केउसकीउरिपैठोजाई॥नैकुन
इमतारदाउलई॥गवेगुढामहिश्रीभग
वानि॥अषैआगेचरिपुरषिउतनि॥आ
गैदाढेवलिमणीकेमाथि॥नहागवेल
उकुलिकेनाथि॥नवुहीधाईकरीउ
कामि॥जांववंतनहेवलीउदारि॥कोम
नमधाईउमणिकोहरी॥तिमैषपन
नफनेहरे॥धाईउरिछुवडेवलिवान
रामषेहकउसंतसमाने॥लागाजयुक
रनिहरिसाथि॥नहीपछुानेग्रपुनोना
षि॥पाछुरिवलहिपकोश्रनिमारि॥दे
कोमारिरिससिउढाहि॥हैनचपपुना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पायरुकोई॥ जपुसंतिग्रहपमुकाहेई
महाजोपुमुकोकीमारि॥ जावबेनेसिउ
केमुराग॥ बीसिग्राहिदिनहूग्राजपु॥ जा
ववेनिकैपिमिरिउनकुपु॥ ब्रुरनुभवेटेरि
कैथेगि॥ लगिलगिकेशवजीकैसंगि॥ जा
मवंनकेषकेप्रान॥ प्रागेमाधवप्रहष
प्राग॥ जोमवंनमनिकिउबीयाह॥ मन
पुहोईनहैकरमाह॥ ऐसामूरनूनिभव
निमाहि॥ एमवंरहैसेमानारि॥ २३५ साखि
जामवेनिपरिहानिउग्रमुनाप्रभनि।
हेकाम॥ प्राषिजोरिकोरनिकरेनमोव
मोश्रीराम॥ १॥ चौपाई॥ जामवेंनेपरि।
हानिजेराम॥ जानेअनेप्रभश्रीराम
हाषिजोरलागागुणगानि॥ नमोनम।
मतेपुराषिपुराननि॥ नमोनमोअबगति
अलेषि॥ आदिनिरंजनमानविभेषि
बिसतिविआपकिसभकेमाहि॥ सभ
नेविआरेपेनिरिषाहि॥ सतिअपअ।
विनासीदेव॥ सकलिदेवचारनकेके
शव॥ वेदिवषाननिजाजसिकोउपाहि॥
सेष्ठहरेजनेवदनिहजाहि॥ शाकारहे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पावैचरा तिं ॥ तिखिनु निसभै नमारीशार
ति ॥ गावैनारउवीनिवजाईं ॥ वासुदेव
चरि ध्यानु लगाई ॥ अवरीकगावैश।
हलारि ॥ रामचंद्रु सभुलरिकी आरि
सकलि लोके नेसदाउदासि ॥ नरी।
पापरि मतिहितेरेवासि ॥ महाप्रभुसेभ
भगवान ॥ हुजाकोउनन कै समानि ॥
सभु चमि के नमिहीपिनमानि ॥ मिउ
कीउदरी विराजनिलाति ॥ नमोना।
पसीना पानिराम ॥ पउनि पूनि जिनो
कीउकाम ॥ मारिउवालपेकुसारमावि
प्रमिनि परक्रमरावन नाथि ॥ सिंधु
नीरिनमिठाउजाईं ॥ मूरखि सिंधुनप
रमे पाईं ॥ मारतुमारिउनमरुसनाईं
रामचंद्र नमिखिमवनिराईं ॥ सागरि।
नविकीनोमुहंकाल ॥ प्रभुनपकुा।
नेमईउगवाह ॥ नैकोपदिहनम।
करी ॥ सागरिके जलिलक्षमनको।
नीर ॥ प्रउदिजालिजउवैठाकंदाकुं
निरमांगारिकउलागोदाहु ॥ जीवजं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निसभक्तुलिमलिभवे भ्रगतिनी
रिकैभीनारिपुपे चरनहूलागासिंध
मथीन रंघिनेजग्रतिह्मारीन षिम
कीउनाकामपराग्र नमनेबोमत्रुने।
उग्रलायुसेडुवंग्र सेडुवंधवांधिउग्री।
राम अमितपराक्रमसदाप्रकामि ली
लामाइ्रबलापेवाति रावनजीकेहने
पराति रामकृपालरिसाधरि मवे॥ दा
सोरिसाकोटसिसिरावे॥ लेकोजराउ
राकसिहने॥ रघुपतिकेगनजानिनग
वे॥ पाईउराजवभावुनिसति॥ रीउकि
पाकरिश्रीमगवेति॥ सीतापेग्रजो।
पापावे॥ तीनिलोककेनापमिदाये
वीरीसहनिसज्ञानिचंउलि॥ संगरमे
लेराम उदारि॥ किपाउनिबरनउंसेंदी
सराम॥ नमिसीतापतिमेराम॥ षिमाके
रेमुउनरगुनाषि॥ प्रभुकैमनमुषि।
कीवेहाषि॥ मउने प्रभपछानेनाषि॥
किरपातीहमरैपतिसिउषिपाल॥ त्रेना
नगकेविक्रुटिमाइराम॥ मुवकीटवर्षी

र.ग.
म.
२५३

253

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वनिस्याम ॥ चरनिसरनिआईउजन
पाई ॥ महिउदीनहोईपतिलषराई
परिलीला ॥ कमलनैन ॥ १३६ ॥ सा
षी ॥ भयेक्रिपालेरिश्रालिहरिहाथ
लगाईसीसि ॥ केशवकसमनकुंदहरि
प्रभईसनकेउसि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ क्रपासिं
धुप्रभकरुणाकरी ॥ क्रिपादिष्टजनि
उपरिधरी ॥ नाकउहाषलगाईउस्याम
रतिब्रसमनेनिष्काम ॥ परसिहा
थजनिसोंतनिभईया ॥ सभैनाथुन ।
निमनिकागईघा ॥ जनिकोबोले ।
थीभगवानि ॥ सुनोहमारेसंतनिसजा
नि ॥ हकुआईउईसमनिकोलेनि ॥ प
रीउजीकेजादवसेनि ॥ बोलेहरिज
निवउसजानि ॥ वकुलभलालीजेभ
गवानि ॥ हमरीवेटीसोभीहरिलेउ
प्रेमासषुकरुणामेटेकु ॥ जांमवंती
हरिलईविवाहि ॥ ब्रससनानतिग ।
निश्चपाहि ॥ मणिकेनिआकउदाज्ञा
रईया ॥ हरिकोउदासहरषित्रतिभई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पा॥ केशवजी केवं देवारति॥ हुउं छु।
नाथित्तमारी शरति॥ संनि उहारि उ हेगो
पाति॥ नइंडी आले आपेनालि॥ जेघ
जादवउफइ उस्रारि॥ बारहि दिनि नकि
केरे केगारि॥ सभै गवे डठि भवे नि रासि
हरि विनु जादव भये उदासि॥ रुकवनि
कैरे घने बिललापि॥ मातिपिता मति
लागे तापि॥ सातिनि कोगाली देहि॥ रे
नफरि अउनाली आले हि॥ उफागी वि
परे भगवानि॥ आसे किनी हमारे प्रानि
वे इहमाति दे वीनहा वसे॥ तापरि गवे
किवी हरि दसे॥ वसदेव देवी मवाकरे
जसदेवी कोमषिने परे॥ देवी दीजहि।
कुसवनाई॥ हमि सभि लागहि तमरे।
पाई॥ वीसिआठि दिनि भये वनी ति॥ वि
उवलि मये हमारी चीति॥ महासोकि विं
तामहि परे॥ दीन होई सभ जादव षरे॥
नि सीस सभै आवे गोपाति॥ संमिची आले
परिभिरिया लि॥ वसदेव देवकी आवेषा
इ॥ केशव वलिने केडि लगाई॥ मिटि उ।

ह॰पु॰
म॰
२५५

256

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सोकुअनंदहिभरे ॥ कमलिनैनिके
दर्शनिकरे ॥ सभावीविआपे भगवा
नि ॥ मणिकाठीप्रभुरषिउणलि ॥
लेजैस्वानिनवलिवानि ॥ हमिपरि
ऊरेकोपेउमानि ॥ करीऐसाउफ
टवीवारि ॥ समकिनवोलेहिनेऊ
गवानि ॥ स्वानिनअनिलजनिभईपा
महामूरमिरनकिसोभईपा ॥ लजनि
होईमधुनीचाकरीउ ॥ पामिगपेउप
रिसोकहिभरीउ ॥ प्रिउपहिउधिहमा
रीउरी ॥ अउनैचरनिप्रहारीछरी ॥ हरि
कोफरिउलहनारदईपा ॥ अपजसव
उाहमाराभईपा ॥ कीनेस्रीमिरिभगवा
न ॥ पमिनिपराक्रमिउरषिउणनि ॥ म
णिनेकहासै पाकाज ॥ निरुवलके
पावजीकोराज ॥ दरविलोभिकहिलो
भीभईपा ॥ केपावकोमनिबोलनिल
ईउ ॥ कहाकरोअभिकवनउपाउ ॥ वि
माकैमुकिजादवराउ ॥ मंदरीवीरेदे
ईमनाउ ॥ समिउषिमोवनिहरिकोनाउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वठी कउमणि द्वारा देव ॥ अभै तजहरी।
जीनै लेउ ॥ वैरी है ईमनाई स्याम ॥ संटरी
कौसनि भामानाम ॥ द्वाम मणि जवि।
लगा देनि ॥ नविग्र रघोन मिउ वैरैवेनि
यहि मणि हमिन फही कउ टउ ॥ रवको
भगनि को पैनेल ई ॥ नमरे है सो हमरे था
मि ॥ नमे हमारे नमरै थामि ॥ स्याजिनम
णि चीलेगई आ ॥ ग्रैसाम मणि काकउन
क्रुमई या ॥ २२० ॥ साषी ॥ हमनना उरिमा
धवगये पांडव को मन्हकानि ॥ ग्रैनिक
माव निलोग को हार मरनि भगवानि
चौपाई ॥ पांडव मो ग्राम निउगो पालि ॥ स
भ कछु जान हि दीन दई पालि ॥ चलो।
कल निदेव निमन्ह कानि ॥ संगि चले व
लि एम ग्रुनि ॥ कैरव कै यह्नि तप ग्रुवंनि
शंकर घणि ग्रुरुष्वी मनवंनि ॥ ग्रामै वैठ स
भ वलि वानि । करन उरजोधन द्रोन म।
हानि ॥ भीषम विदर कग्रव वल वंकुलो किं ॥
मनि महि हाघ दिमाव हिमोत्र ॥ जन्हा जा
ईदीनो मन्हकानि ॥ शंकर घणि ग्रुरुष्वीम

२ पा.
म.
२५५

255

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गवानि ॥ सभकक्तुजानहिप्रभस्का
मि ॥ षेलिहिषावहिमेंदासामि ॥ पा
ङ्कैभपेवडेउनपानि ॥ हरिनेवेमष
मणिकीवानि ॥ सनिधनेवाकनिव
रम्मारले ॥ स्वाजिनिपष्रमिभषेपेकले
सेमिहीरलेसंनिश्चकुरि ॥ जडकलि
महिपेलीनोस्पृनि ॥ डुनवेयेनहीहा।
मरीकोदर्द्दु ॥ कलनिवंदिकोनिरीश्रा
भई ॥ मारहिप्रभिमनिलेहिछनाई
पाकेनिकटिनकेसाउ ॥ मेकरीप्र
वरकुनिवरमाषरे ॥ सनिधंनवाजा
ईभीनारिवरे ॥ कादिउस्वाजिनका।
सीसि ॥ सभकक्तुजानहिहरिजग
दीस ॥ प्रुनिनारिसभरहेनिवारि ॥ नि
नकीनेश्रपनापुश्रपारि ॥ मीस्वका।
रिमसालेहीगईउ ॥ यहिमपुरापुरी
महिभईउ ॥ सनिभामाजीकरेविप्र
लापि ॥ हासाषिदाईकमेरेवाधि ॥ ने।
लिपाविमहिमेलिउश्रापि ॥ भरना
माहिसिधारीश्रापि ॥ प्रपुनेपनिमहि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

करीउकाहि॥ हेइरिहमराता उनिवारि
रामकलनविमारीढाहि॥ षेलरिषा
वहिपेपरवाहि॥ सनिभामकोकेपाव।
केहे॥ पजउवमेरारि दानसहै॥ मारो।
मारिनिवारोनाथु॥ जिनिजरीहनिउ।
निहारोबाउ॥ मिलेनकेरवकोभगवं
ति॥ रामकलनिउठिवलेअनंति॥ सति
धनवापहिपकुचीवाति॥ कलकरमि
हैहमरोचाति॥ कनिपवरमाजादव
पहिगईया॥ हमपरिक्रोधुकलजीभ
ईया॥ नेमहाउहमराजोकरै॥ दलसन
मथुदोनोजारलरै॥ मैमारिग्रावहुतन
रेकेहै॥ वलविलवंवंननमारारहै॥ ना
विक्रनवरमावोलीवाति॥ मनमाउहे
हमरेभोति॥ केपावसिउहउकहूनल
ते॥ दोउहाथिलेकुमैपरो॥ वडेवलीहै
श्रीभगवान॥ किनमहिमिटैसमअ
भिमान॥ महावलीयाराजाकंस॥ जि
निपीरियापापमभजउवंस॥ सोहरिमा
रिउसीलामाहि॥ कहुषुमलतोनपा।

द॰श॰
म॰
३५६

356

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भकैगाधि॥ जरासिंधुराजावलिवान
नाकाकुलसिराईउमानु॥ नेईसि
घहतिसैनेमपाति॥ लेलेमाईउव
हुतीवाति॥ सभहीमारहिश्रीभगवा
नि॥ जरासिंधकेहाउहिप्राति॥ मारे
मुहकिमनहचेडुरि॥ कवलहाथीकी
उहसिचुरि॥ वेकिमकुतीमकिपहिसे
न॥ हिनिमहिमारहिपंकजिनेन॥ स
नैभयावकुप्रभुपरवीने॥ हमिनोना
सिउलगेनदीनी॥ कुनिवरमानवि
उनकहईया॥ कुनिप्रंकुरेकैयहि
गईया॥ सनिप्रेकुरिवउवलिवानि
हैमकउमारनिसिरीभगवानि॥ तेजो
समिहमारकरै॥ वलसनमुउजा
ईद्येनोलरै॥ प्रंकुरिकहिउतेवउश्र
मान॥ मानुपजानिउश्रीभगवानि
वउभमंनकेशवृहनिथाम॥ समि
प्रखिमोचननाकोनाथ॥ जिनिगो
वरधनधारिउहाथि॥ उहपओनि
प्रभुजाटवनाथि॥ मेरिउसीपतिको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अभिमान ॥ मनसावली हरि अग्रअग्रजन
हरिकै मनमुख हाथिनकरो ॥ चारनि
कमलनि हिरदै मंहि धरो ॥ सनि धंनिवा
उरि औ अग्यान ॥ निकुचै मारै गोभगवा
नि ॥ मणिलै श्रेकौ कोटदइ ॥ वहमणि
जनि श्रेकरहिलइ ॥ सनि धनवाले
नाठा श्रानि ॥ पाछै परेराम भगवान
नाकी वारीषरीमनानि ॥ सउजोजा।
सवजो जनि दवैरै वलिवानि ॥ रामक
सनि हिपाछै पवे ॥ रखिपरि वैठे दाउअ
भगवे ॥ उनरिरिसिकोनाठाजाई ॥ पा
छै हलधरि अगुरहरिराई ॥ बोरीषकी
मिरआदारदगोरि ॥ रहै वलनिनेनाके
पउरि ॥ सनिधनवापै कोहोइगया ॥
अनि भै श्यानि हरिकै भै भउया ॥ रषि।
नै उनरे श्री वनस्याम ॥ वैठेहरे श्रीव
लिराम ॥ गहिउजाइ वकुसिरिभगव
नि ॥ वैगिविउरे नाकि श्यानि ॥ मणिना।
हीपाई रहिउरहोलि ॥ हलधरिको हा।
रि वोलै वोलि ॥ मणिन हीपाउसनवा।

द·भा·
स·
२५५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लिञ्ज़ीति ॥ कितरह मम्यारेवेध शरीर ॥ मति
मह्रिज्ञानी इंड्रवलिराइ ॥ मणिह हरिहम
नेयपीपछाराई ॥ मतिभामासिडवक्षन
पियाह ॥ हमिसिडशीतिनकरैमृशरि
केशवकोबोलेवलिराइ ॥ मनोघाति
मेंदरिचनिस्याइ ॥ मिष्ठलानगरिमि
धारैप्राज्ञ ॥ हमरासिडकरैहैराज्ञ ॥ मि
ष्ठलामेहिश्यावेवलिराम ॥ यष्ठनेजनि
केपूरेकाम ॥ मनमष्ठआईओभष्ठविदे
ह ॥ हलिंघरिज्ञीसिडकीउकीउमलेह
वरनिलागिउंउउताकरी ॥ प्रभुप्रसादि
मभुयपदाइरी ॥ सिंघासनिवैठेवलि
राम ॥ सभविधिपुरतिप्रभूप्रकाम ॥ रा
जापरजैहेनवठाई ॥ माणकिमोतीचीर
घराई ॥ वतुवमसिरहिश्राविरिहियानि
मनीमज्ञोयनियरहिविधिकाति ॥ वो
करघणिपहिराईउघाई ॥ परेसमैति
निज्ञधिउघाई ॥ कनिवरमोनाठालेघ्र
नि ॥ नादेजनमत्रंकूरमहानि ॥ जनिश्रं
कोरिवनारस्त्रिगपे ॥ नामदानपनिना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कैसे भयै ॥ मारि भालु कंचन मनि देई ॥ बक्र
षेक्रौ हरषि हाइ लेई ॥ बक्रतुदान केब
नकारे देई ॥ जस अपार जग भीतर लेई
जादव बोले बडे सजानि ॥ जरे केगपत्र
क्रीरि महानि ॥ नविकामे गरुड़ पैठेनभ
ईश्चाउ ॥ केशव ने उर नान ठिगाई या ॥
जो बक्र आवै सो वै शांति ॥ किमाकी जै
मावे कि हिभी ति ॥ हरि आग्र नाजनु पाि
उड़लाई ॥ प्रभु पहिसे बक्र आइ उपाई ॥
जिनि पारमे प्रभु जी के पाई ॥ तो को बोलि
केशव राई ॥ मणि लेआउ अंक्रूरि सजा
नि ॥ सो मरमारे बचन हिमानि ॥ तबिग
पै है श्री बलिराम ॥ तिन जानि उमणि
लेपे स्याम ॥ घरु सति भामा रीसा बेघरे ॥
बड़ जाने बलिराम हि घरी ॥ नरुहीपा हि
है मनो महानि ॥ नउ कासी मंहि को बो
रानि ॥ आनि रिषि रिसभा के मा ह्रि ॥ फि
रि है बो गासे मानाहि ॥ मणि आनी अंक्र
रि सजानि ॥ बानि प्रभु की लीनी मानि ॥ द
बी सभा प्रगट रि मणि ते नै नि ॥ जनि को बोले

ह॰ पा॰
म॰
२५८

258

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पंकजनैन ॥ नष्टीराघद्रुहमारेनिजरापि
नेमपरिहिभइसद्रमेरेपासि ॥ रविनेम
लिसाज्ञितिलई ॥ श्रेसीकिरपाभान
कीभई ॥ मागीकुसलनरदुगवारि ॥ सभ
सभलछुनिभयेविकारि ॥ हरिकोसं
निसमरपीजवै ॥ सभिसभलछुनिपा।
पतवै ॥ भलीरसोइहोवैधाम ॥ पहला
गैवहिस्त्रीचनिस्नान ॥ हरिकोअर्पि
ग्रथैजोभोगि ॥ तेसद्रुपावहिहरिके
लोगि ॥ बिनासमरपोभोजनकरै ॥ स
रपरसूरिनरकमहिपरै ॥ मलिको
कीयावरित्रुवषानि ॥ जतिनिहालि
केप्रमभगवानि ॥ ९८ ॥ साषी ॥ दिलो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गर्भप्रहारी हरे निपतनि प्रभ सूरनि भगवं
ति ॥१॥ चौपाई ॥ दिलीआये श्री भगवं
ति ॥ देषनि अवनै पांडव संतनि ॥ शास्त्र
कि आव दव सभ कै साथि ॥ प्रभ आवि
नी सी जा दवनाथि ॥ संतन्ह देषे जवि ।
गोपालि ॥ ठाढे भये सभै निहकालि
बिहुरे देही पावै प्रानि ॥ नैसे तिनो मि
ले भगवानि ॥ हरि राजा के लागे पाइ
राजा लीने कंठि लगाइ ॥ भीमसेन ह
रि लागे पाइ ॥ लीये भीम हरि कंठि लगा
इ ॥ अर्जुन के गलि मले अवनेनि ॥ अति
स्नेही नो सिरि भगवंतन ॥ नकुलि अरु वर
माद्रसु सहदेव ॥ कीनी तिनो चरनि लगि
सेव ॥ परमेति नो सीस मिठ पाई ॥ दोउ
कुसल जी लीये उठाई ॥ संतन्ह वां विश
हाने स्याम ॥ प्रानि भये जिनो के काम
पांडव देषहि नैन निहारि ॥ नन्दमन हा ।
रि परि डार हि वारि ॥ द्रुपति सता आइ ह
रि संति ॥ अति निहपाप अमोलि कुलि वं
ति ॥ तिन परमे माधव की चरनि ॥ भये ।
कृपालि प्रभ उधरनि ॥ कुंती परि हिआ

ह्रा. म. १५२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पेभगवाति ॥ चानकुलागेउरषिपुरा।
ति ॥ फूठीलेगलिलापेस्याम ॥ पाव
नभपेहूमारे धाम ॥ कुंतीदेषैस्री भग
वाति ॥ नैनिपंकमलुकरनीपाति ॥
गरिगरिकेंठिनैनिजलवहै ॥ कुमल
कमलकउकुंतीकरै ॥ सषीहमारेसभपि
नमाति ॥ सषीवसैसभुजादवजाति ॥।
हैमरीकुसलभई धीनवे ॥ जउपतिव
मोबिनारिजवे ॥ जविपठिओग्रंकुरि।
गोपालि ॥ इउसनाथिभइतिरकालि
थतिकपालिकरुणामैभपे ॥ सभैसो
कसंनकुकेगपे ॥ कुंतीसभउषिकीपे
वषाति ॥ जोउरजोधनिदीपेग्रजाति
शंतिस्यामकुंतीकीकरी ॥ तिनकोपी
उासभपरिहरी ॥ वाटिमासिरिदलीमा
हिवसे ॥ शंतकुकेरंगीकेसरवासे ॥ बे
रुप्रस्थकेजेतेलोकि ॥ हरिकौदेषिमि
रेसभसोकि ॥ वासदेवकेदर्शनकरे
सभैलोगिग्रनंदहिभरे ॥ हरियुरुस्रा
येनुचरेसिकाटि ॥ लीलाकोमकुंरिम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रहि॥ बनि महि मिरगि विडारे स्याम॥ म्रा
कनि कौ श्रेय प्रभु सदा प्रकासि॥ मारे सिं
घ विआघ्र पपाति॥ महि षाहर खिगो
कोउगि॥ गोनो मिरग विडारे कल॥ श्री
धर म्रोपति विआपक विस॥ सम्भ हो मि
रगचन रम्भ निभये॥ जमना कूलि मह
प्रभु गये॥ अर्जुन कहि उत्तनो भगवा
नि॥ विषा हमारे जारे प्रानि। जल अब बो
लमि ठाढ़े रहो॥ अबो नीरु जो मुषतेक
हो॥ हरि कहि आजाइ पानी पीउ॥ तब
रे वी बिहमाय जीउ॥ अर्जुन अबे कालि
ह्रीनी रि॥ वकुरि अचाने स्याम परी रि।
केनि आपे कुबसे जलि नीरि॥ हे षी के
शाव स्याम परी रि। बोले अर्जुनि को भ
गवान॥ याके उत्तर कछु सम विरतंत॥ अ
र्जुन आपे आज्ञा मानि॥ नित्तके नि आ
पहि कीउ वषानि। कहतं तो नि तक व
न सजानि॥ किस की कि उइतिवै ठा
नि। मरनाकी आसा मनि धरी। कहउब
नेन सम्भ हो से दरी। बोल्ली के निआल

द॰ पा॰
म॰
२६॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुनरे बीरे ॥ दूजे न प्रकारे कै नीरि ॥ रा
खिकौ सुनाका लिंटी नामु ॥ बिनाका
स्हु हउम हे सुकामु ॥ हरि कै अरथिन
पसिआ करे ॥ कसनामु सबि पागि ब
रि धरे ॥ बिस नि बिआपकि सी भगा
बानि ॥ प्रभु अभिनासी पूरबि उराति
भरना चाहे सोगा पालि ॥ भउ हमी
गंते उरपे काल ॥ अतिश्र नाथि हउब
सोई कोनि ॥ बासदेव बिनल होन प्रा
नि ॥ कवहू कि पाका हि भगवंति ॥
दीनि बंधु है नाथि अनंति ॥ प्रगंत हरि
पहि कीये बखानि ॥ तुम कोलि मैरे है
भगवानि ॥ केसव बिपरिल इचाई ॥
रिली आपे जादवाई ॥ संति जो पिह
रविन लीकरी ॥ सनोम हा प्रभ केनार
री ॥ जैसी पुरी त मारी बनी ॥ तैसी बाह्रे
त्रिभवनि धनी ॥ बिसकरामा सिउ बोले
स्याम ॥ करहु संति जनाके काम ॥ जैसे
कीये हमारे धामि ॥ तैसे ही करहु बोले ।
स्याम ॥ आज्ञा करी सिरि भगवंत ॥ पि
ली पुरी बनाई संति ॥ पाबो बीरि हाथि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रुति भये ॥ सभै सो कि तनि मनि के गये
फूलि उर षोत नम श्री नरहरी ॥ मयदा
नव को आज्ञा करी ॥ सुंदरि सभा बुना
ई सुजानी ॥ पांडव पांच हमारे प्रानी ॥ दे
नि व ना इ आज्ञा मानि ॥ जलिय लिदी
न्हि पेक समानि ॥ ऐसे सी सभा रे नि ने
करी ॥ जलिय लकी कहु षवारन परी
कानि कि मास विदिआ प्रमल ई ॥ ली
लाकरि हरि दिनो रि, नवलई ॥ अब सुनी उरी
सिधारे नाथि ॥ नारि कालिंदी के शाबा
साथि ॥ पानि यहरनमारगि महि का उ
कालिंदी का ड: विहरि जी हरि उ ॥ व उ
था केशव को उ विवाह ॥ अभै अमोव
रिअषे अथा कुं ॥ कालिंदी पति श्री भ
गवानि ॥ जिनि निजालि के जीव नि
प्रानि ॥ २१९ ॥ साखी ॥ हरि मधुसूदन क
उनकी नउत निकर तनि विवाकुं ॥ आ
पि अकानि अनंत प्रभ कं नि आकर
नी चाकु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ उरी अवनी पर
मि उनी नि ॥ आ केरा जाव उमनी नि ॥
तिन की वहनि महा अकुमारि ॥ मिचि

ह०ग०
म०
२६१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विंदायह्विनामुझेहारि ॥ ताकाविनोस
ग्रंवरिकरिउ ॥ डरजोमनग्रहेकार।
ह्रिमरिउ ॥ उसीउरीडरजोयनगईग्र
केनिग्रालिग्रावोउेादमुभईग्रा ॥ ग
पेग्रवंनीसिरीगोपालि ॥ कालिग्रनी।
नेकालिकेकालि ॥ रजासभैमपेज
गहीस ॥ कवनुकरेकेसवरीकीहीस
जैसेगारुडुमुरारिमहिजाई ॥ ववान
रुनेलईकुनाई ॥ निउकेनिग्राकेस
वेनीहरी ॥ उरीग्रवंतीलीलाकरी ॥ क
मलनेनिजिग्रायेधाई ॥ पांवविवाहि
कीयेचनिस्याम ॥ मितिविंदाकेपति
करनारि ॥ जानिनिहालिवलिकस
मुरारि ॥ ४५ ॥ साखी ॥ उरीग्रजधामस्
प्रभग्रापेपरविग्रनेति ॥ निनिनउना।
निलीलाकरहिसिंधुसुनाकेकेनि ॥ १
चैापाई ॥ उरीग्रजोधाग्रायेस्याम ॥ ।
सेनजनाकेपूरिकाम ॥ सेनाचनीक
लकेसाथि ॥ ग्रर्जुनसहनिजगानि।
केनाथि ॥ नगनिजितनिराजावलिवानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गपेश्रनिसिरीभगवानि॥ हरिकेसन
मुखु आई उपाई॥ हिन्नसिउवेदेहरिके
पाई॥ अभकोसेनत्निआईउपामि॥ सिं
घासनिवैसपेस्याम॥ विधिवनिहरि
कीमज्ञाकरी॥ हरिमूरतिहदेमहिय
री॥ पहलाहरिकेपोपेपाई॥ पगिजल
लीनेसीसिचढाई॥ चंदनितिलसोउर
पमिलाई॥ हरिपगिमूजेप्रेमवढाई॥
तिलकुलगाईउवारेहारि॥ माए
कमोतीलालअपारि॥ वीरपटंबरि
घरेरसालि॥ तिनिसिउपूजेश्रीगोपा
लि॥ हरिकोपूजेवारंवारि॥ तनधन
मनसभडारेवारि॥ देखेसेनवनाईव
नाई॥ पेमसाधिनहीनेकुअघाई॥ हा
थिजोरिलागागुनगानि॥ नमोनम
स्तेउरधिमरानि॥ कवनुकोतूकिआव
वाकरो॥ कवनुमहिमतेआगेधरो॥ सग
विधिप्रभितमिभगवानि॥ हमकि
आन्यानहिदीनअज्ञानि॥ वचनिरेण
प्रसादिसिरिधरे॥ निहिप्रसादिसभिकलि

२.श्री.
म.
५६२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मलिहरै ॥ सेतुसहेतुबिपारनपाई ॥ म
हादेवचरितमाहिध्याई ॥ लक्ष्मीसलैन
मरेचरनि ॥ सनिकिसनेरतनसरीसा
रन ॥ पगिजलशंकरसिरपरधरिउ ॥ नि
हप्रसादिअमंगलहरिउ ॥ गुनगावै ।
नारदसुरज्ञानि ॥ बारणअरपैबउमहा
नि ॥ बसुदेवध्रुवअरुहनूमानि ॥ अंबरी
कप्रहिलादसुजानि ॥ अवरअनेकसभै
नरज्ञानि ॥ समकेपूजिहिश्रीभगवानि
समतउपूजैतसरेचरन ॥ तीनलोकर
रितसरीसरन ॥ सोपगिनकिपूजैतसष
रासि ॥ पगनिमरुहमारीआसि ॥ बलिब
लिजाउप्रभूहरिराई ॥ जिहजिहठउर
लगावैपाई ॥ सनिआवरीफरोषेआई ॥
हिनकारिदेषकेपावराई ॥ देषिचरपत्रति
बिकलभई ॥ पेमरतोहउपावोदरु ॥ जो
कछुमुकिकीनाहैधर्म ॥ जपतपनेमु
अवरसतिकर्म ॥ जोलीनाहैहरिकोना
उ ॥ सकलधर्मतेपहिपतिपाउ ॥ सषा
सिउसभाविहानीराति ॥ भइउजीतिजवै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परभाने॥ सवामनीश्रतिपरमरसालि।
वीथिविराजहिश्रीगोपाल॥ नविराजा
यहिविनतीकरी॥ रहसिकरोकिपा
श्रीनारहरि॥ आदिनिरंजनपूरषपुर
ति॥ संभप्रभूरनभगवान॥ धरमसेन
केराषनहारि॥ जदुकुलमहिलीनोअव
तारि॥ बडेभागिहैमेरेआजु॥ सभसंश्र
नहूआकाजु॥ सभमसरवेसहमारोदेहु॥।
भगतिदानकीकिरपादेहु॥ हसिकरि
वोलेश्रीभगवानि॥ सुनीश्रेराजापर
मसुजान॥ षड्भागनिसोभनिनाहि
कछुवाछामनिमेरेमाहि॥ अपनीस
नाकिरपाकरिदेहि॥ हमरानामसिउव
उिमनेहि॥ वरुनभनाराजाजीकही
उवेभागिहमारेसही॥ जागेवडेहमारे
भागि॥ उधरिउकुलसिउहपांनलागि॥
ऐकविनेसुनीश्रीगोपालि॥ कालअनी
नकालकेकालि॥ ऐकमनकैपरनतिश्रा
करी॥ सनोकथाकरिश्रीनारहरी॥ सा
निवैलिलाउडेवलिवानि॥ ऐनकोनचैन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोउ कफसाई॥ तिन कीन्ह कै पतीविश्वाक
री॥ किनी नजी न सकेन रिझी॥ नमजी
न झगो ग्री भगवानि॥ हमलोपरम्र रहिउ
नारानि॥ स्तनीवानिज वना थ थपार॥ ह
है भयेमकुंदमुरारि॥ पीनवसनकसिउ
केरसाथ॥ पागिसवारी त्रिभवननाथ
मेदरि त्रंबुचरी आरेवारि॥ दोयेपागिमे
कसमुरारि॥ सानितूपकेशवजी भये
सनिवेलछिनमहिगहिलये॥ नाका
नाथिपायेचूनमाम॥ लीयेफिरेप्रभ
निहकाम॥ वैलकाउकेफेरेवाल॥ ली
येफेरेति उहीगोपाल॥ त्रिननाथीस
भिजीयाजोनि॥ छिनमहिसाजेचउद
सभउनि॥ कउनिवैलिविष्णुरेवलहीनि
हरिआगेब्रह्मपारिकहीनि॥ निपरिह
रवराजाजी भईया॥ होत्प्रसादिसभउ
गुमिटिगईया॥ विषवनिकेसवसनि
आवरी॥ न्वपकेनिमायुतिप्रेमहिभी
कछुवेरीसंगिदाजारइया॥ समतीनेके
पावजीन्तरईया॥ हमसहेस्नुनपदीनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गाई॥ तबरानसिंगारूपकैपाई॥ कंचना
कीमालागहिराई॥ बुंदपटबांधिओपी
पाई॥ तैसङ्दासीपहिराई॥ मोतीमा
णिकंचनगजराई। केनिमाकोसेवाकों
दरमतिउदारराजामतिभई॥ नउरर
दीनेगजिराजि। कीवेराजिरतिउवेका
जि॥ रथदीनेनउलाषिवनाई॥ तिनकी
छविकहुकहीनजाई॥ दीनेनउहीको
रितरंग। हेमसमथ्रीसमनोसंगि॥ नउम
रवरपाईकनवपरदे। सबरेनेकेपाव
नीलवे॥ जोधचवनेदीयप्रमनालि॥ ल
प्रतनिनिपकोवेगेपालि॥ हाथिजो
रिनपठाकामईया॥ तेकिकेरिबधनि
प्रेमहिलईया। केशवजीपहिविनती
करै॥ प्रेममगनिलोचनजलढरै॥ वि
नतीसुनकुमसकंदरमुरारि। केनिमामे
प्रानसुधारि नमकोदासीदईमनंत
नमनकेरकमलाकेकेति॥ हेउकद
सीदउसुनंनतीभगवानि। सरतिनिहा
रीपुरखरउतानि। बोलेकलमसुकुंदमुरारी

द.भा.
म.
२८४

264

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रहिपरिरानीमेरेद्वारि॥ हरिनैराज्ञावि
रिश्राभईश्रा॥ हरषहोईग्रिहअपनैग
ईया॥ मारगिमिलेभूपवलिवान॥ आ
ननदेवहरिश्रीभगवान॥ वेलकुंदनेद
मारेअंग॥ केनिश्रावलीकलकैसंगि
वाणहूकोमिलिवारषाकरी॥ सूरष
मनिलेदूहैधरी॥ पञ्जेनवोलेहेभग
वानि॥ हरजीलोपहिमपअज्ञानि॥
लेशैलाहरिश्रागैगये॥ गुणकेमनिन
मननषभये॥ सिंधुदेषिसभुभ्रिगभा
गिजाहि॥ सवदमात्रसनिरहननपारि
निउनपभागेसमैअज्ञान॥ पञ्जेनक
छुकवलावेवान॥ मतिश्राहरिकाछु
रोविवसहि॥ कउनकिकरैअनंतश्रा
पाह॥ वकुरीलसंवतिगयेमुरारि॥ केण
वश्रानीभद्रनारि॥ लक्षणश्रानीश्री
भगवंति॥ सवंवरीजीतेप्रभुअनंत
श्रष्टनाईकावरीमुरारि॥ कउनकिक
रैअनंतअपारि॥ परमानंदमुकुंदरम
रणि॥ जननिह्राकीजीवनिप्राणि॥ २४१२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इंद्रकीअस्तुतिवेननीकेषग्रवजीकेद्वा
रि॥ भ्रमासमदुःखवेदेवननेइकरिकिरा
पानिसनारि॥ १॥ चौपाई॥ श्रीहरिकें
मरपतिन्याईउ कमलनैनकोदरस
नपाईउ सोभनिमकरिइंद्रकैमीत
मनभुषिमाईउ श्रीजगदीस॥ कुहे
मकरिसिउहरिकेचरन॥ महाप्रभ
जीतुमसीमरन॥ कामदेवकमलाको
केनि॥ कमलनाभप्रभुश्रीभगवंति
नतिजगदीसरिवितेहमारी॥ हमकु
निश्चनकसरनतिनमारी॥ भ्रमासमहमा
रेदुःखदेई॥ भलीवस्तुछीनसभले
ई॥ मानाकेकुंउलिछिनलये॥ याडुःख
नेहमविरुवलभये॥ छत्रवरुणका
लीयाछिनाई॥ दुःखनिवारहिकेपाव
रोई॥ देवदेवदेवरुकीपालि॥ गरबप्र
हारीदीनदईयालि॥ रषिश्राकरोश्री
भगवाति॥ मेषसैनिललछीनाललि
वोलेकेषावकपानिधानि॥ दुःखविनिवं
रनसिरीभगवान॥ जाकुइंद्रकछुसो

द०प्रा०
प०
२६४

265

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऊनकरी ॥ हमरे पगिले हृदैपरी ॥ धा
मिमिधार द्रुसो कुनि बारि ॥ हउआवें
भूमा सुरमारि ॥ सुरपनि गई उचरन।
सिउ लागि ॥ हरि पांगि परमे ऊदाभा
गि ॥ गरुड़ चढे प्रभु श्री गोपाल ॥ सलि
भा ह्रिली नी नालि ॥ प्रागिजो निपष
रमे प्रनेति ॥ गरुडागामी श्री भगवंति
षट कोरना केवलि बानि ॥ नानाविधि
केर चेस जानि ॥ येक कोउ पाषलका
करिउ ॥ आगे कोइ सस्त्र काधरिउ ॥ ये
ककोइ जल कारी भीर ॥ सम्रहीनारहि
गे बलि बीरि ॥ घणनि कोइ इक कोरि।
विआरि ॥ आपे नहीं मक्रुरम्रुरारि ॥ फा
सिकोरि आगे बलबोनि ॥ गपे नहीं हृ
रिपूरषपुरानि ॥ पंचजन पूरिउगोपा
ल ॥ मह्रांशांषधुनि तुहनि काल ॥ सैल
कौरि नीरिउ भगवान ॥ गदासाध हरि
प्रभुनारान ॥ प्रबल चक्र सिउ दीउ विउ
रि ॥ चक्र मंदरसनने जम्रपारि ॥ नामि
उदेन बली मुरनामु ॥ जलही भोनरि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नाकोपान॥ देषगहरि तेरै भगवानि॥
क्रोधकीउपानि वडे अग्यानि॥ देक्षिक
मकाज्ञमिमगिकरै॥ दिष्टैदैनकीपी
रिनधरै॥ देषिउगहरिन वैवलिवान
ईसैविडारोकेहे अग्यान॥ षगपतिको
दिष्टउत्रिसूल॥ हरिपाइनिकीग्यानि
उफूल॥ गदाउठाईलइ अग्यानि॥ सन
मुषिग्राईउ श्रीभगवानि॥ उारीगदाक
सकेउरी॥ महाप्रभुउग्रतिमनिकोचोरि
गहसाषिगहीहरिनदा॥ सोप्रभुणागे
पाछैसदा॥ सवडदैनकुनिमुषलेक
रिउ॥ सवदसाघनभमंडलभीरिजे॥
ग्राईउपांचोवदनपसारि॥ आनिकयु
वउविकराल॥ निपटिकसकैग्राईउ
जवे॥ कारिनिसीमसिग्रामजीनवै॥ पा
रिउदैनगिरिनीरगंभीर॥ कउनकिका
हिहलाईउधवीरि॥ मरकेसाधिमुनिवा
लिवान॥ हरिकेसनमुषिगयेअग्यान
वउनकरउकुनिनसमकैसाधि॥ पीछि
नामुहेसेनानाथि॥ हरिकोनिनाचलाये

द॰ग॰
म॰
१११

266

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वानि॥ मानेमारे श्री भगवानि॥ सारेसै
माइनीनारान॥ प्रमम्प्रभिनामीउराष।
उरान॥ प्राणिमपभूमासत्प्राईया॥ ग
स्मउभजरकालिमूमाईया॥ हाथी।
प्राने प्रनिबलिबानि॥ फेलनिप्रापे
मेंदिगललनानि॥ जदिकेजनमेरूलि
गेंकैरे॥ सभकोवलछिनभीतरिहरे
वकुनीसैनारात्रामाथि॥ सभैसलस।
भूसैनाहाथि॥ भूमासरहारदर्शनके।
रिगे॥ के रजनमकापानकुंजरिगे॥
केसरेष श्रीभगवान॥ तिह ध्यानको
होनवषान॥ विननामतनहैमानसमा
न॥ प्रनिकीभांति श्रीभगवाने॥ विज
लीसमानकुसकीनारि॥ श्रेसैरेषप्र
भूतरानि॥ स्यामघटारविउपरिवनी॥।
श्रेसैसाभतित्रिभवनिधनी॥ उरेसैना
सभहथीप्रारि॥ कुटीकटारीवाण।
धपारि॥ जमधरवछेषरागवमान॥ नि
ल तिलकीने सिरिभगवान॥ लागेज
प्रकारनिगेपाल॥ कालप्रनीनकाल।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कैकाल॥ जोधेइनेसिरीभगवंतनि॥ क
ईहजातिश्रपारिश्रनेनि॥ जांकीविनव
निमाधवकौ॥ विननामनहमनीगहि
लेई॥ नेकिपेकपग्विकेरेई॥ गजिकेमा
लकिजावहिफहि॥ ग्रंगिग्रगिहिनजा
वहितहि॥ मारिलइसेनागेपालि॥ जो
घीसेनाघरीकराति॥ हसनीकेननि।
विश्रापेपीरि॥ चलेनगरकोकाडीधारि
ईकिमारेईकिभागेसरि॥ सांरगिधरिस
भकीनेचरि॥ रहिइईकेलारजाबर॥
अंगश्रगाश्रनिक्रोधहिभरा॥ हरेशाह
प्रभुकोडरि॥ घमममघुमदनउरेनारि
सकतिगहीफुनिकरश्रजानि॥ सनन
घडारीश्रीभगवानि॥ वड़केणवकी
नीत्रेषंउ॥ भलेनाघचउदहश्रसंउ॥
फुनिविसललीनावलिवानि॥ श्रागे
माधवपुरषउगनि॥ मांरगधरिसरी।
माधेहाथ॥ जमातिउघेकेमारमाधि
वड़विम्लकाहीरहिगइपा॥ सीसदे
हतेनिश्रागाभंइपा॥ परिउभूमिसिरजे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिमतिरिकरै ॥ दसोदिसाकेनमकोकरै
मकरसीसधरहेउलिकानि ॥ पाव
नकीउश्रीभगवानि ॥ हाहाकारहन।
गरमहिपईउ ॥ महावलीरजामतिग
ईउ ॥ ग्रावेदेवसनेदहिसाथि ॥ हितमि
उपरोसेधउनेनाथि ॥ वरषहिकुसमा
उघानहिनाम ॥ जेउरवमोचनहदी
साम ॥ जेउहवोनमचपदाहरी ॥ को
पानिंधुजीकरुणाकरी ॥ भ्रमासरको
थाईमाई ॥ केशवजीकेपरसेपाई ॥ कु
उनकुंतुलेथाईमेटि ॥ मनतेममता
दीनीमेटि ॥ वकुनरतनुदरियागेधरे ॥
समैसोधधरकेपतिहरे ॥ हाथिजोरि
लागीगुनिगानि ॥ नमोनमस्तेपुरुषपु
रानि ॥ २४२ ॥ साषी ॥ परनिकरतिलागी
सउमसनपुषिश्रीभगवानि ॥ नमो
प्रविनप्रलेपपुमप्रभिगतिपुरष
पुरानि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ वलदेवउवाच ॥ व
लदाहरिकोकीरतिकरै ॥ गुनगावैस
भिदुःखकोनासै ॥ देवीजोरदोनोहाथि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रारिपुध्वानेअग्रनेनाथि ॥ नमोनमस्ते
श्रीभगवानि ॥ आदिनअंतनअंतनेनना
रानि ॥ वासुदेवदेवकुकेदेव ॥ सकलदे
वअभनमतीसेव ॥ रिषीकेशसरवेस
अलेषि ॥ सचराचरसभुनदीअलेवि
समिवरिवासीसदाअलेप ॥ अषेअ
गोचरिअभेअभेप ॥ समतेभिनवसे
गोपाल ॥ कालअनिनकालकेकाल
कमलनाभकमलसेवारन ॥ समअदें
दिकनमतीसरन ॥ कमलनाभसभज
गकेमल ॥ अनिलंदरीकारिपंकजि
फल ॥ कमलमालगोपालरिमालि
कमलनैनसभमहारमालि ॥ सवे
नषगपनिअमसवार ॥ जैश्रीकृष्णमकुं
दमुरार ॥ रचित्रुणीसाअसभसमार ॥
मानकपालैनमसधारि ॥ जलअकी
प्रिअवीनेद्धविस्तारि ॥ नभमनमाईं ।
पामअकल्पहंकारि ॥ दसइंद्रीकेदसही
देव ॥ सभननमसाजेअलषअभेव ॥ वे
मिलिसकलजगतिकोकरै ॥ नमस्तेव

द॰शा॰
म॰
२५२

268

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तेहूँदैषै॥कपाटेखिनमतैजविपा
हि॥नउघहिसमसुंसैसाकउपाहि॥नूति
रलैपसदानिरवैद॥प्रभअविनासी
नाघअभेद॥सदानहअरुहुसदहि।
भरे॥कोऊनमारेपारिनपरे॥कलव
दसूरतिसानेद॥जैजगजीवनसव
केकेर॥नमपरमानमधानअपार॥नि
वेलकोवलकोवलदेवनकार॥समके
साषीपरमऊनीति॥जोजननअपरिमि
तोकेमीति॥जोजननमहिउकैसा।
वैहि॥निहिनिमितिप्रगरावउदेहि॥
मगतिहेतिहरिनतिकोषैपै॥प्रभअ
विनासीजनमनमरै॥देषिदासव
परहिध्यान॥जसिकोगावहिवेदपु।
रान॥जोजोकारमकहिगोपालि॥है
रिजनगावहिपरमरसालि॥जोकछु
करहुसंतनमित॥सदाअनेउतमा
रैचिन॥सिवप्रकासिसंभमगवानि॥
परतेपरेअलेषगुरान॥नमकोसिम
रहिनानामोति॥विनहरिभजननका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैशोति ॥ नमो निरंजननगकेइस ॥ स
निसनाननिविसवैवीसि ॥ किश्रगुन
जगकेइस ॥ सनिसनाननिविसवै
वीसि ॥ किश्रगुननगाउपाहननपाऊ
हदैजपोनमारानातु ॥ इसवासकि
पारिकिरपाकरो ॥ मारोपरिश्रगुना
करूपरो ॥ हमराखामहाराजानु ॥ नि
नमपक्षानिउश्रीभगवान ॥ पाहिभग
वंननमारासेन ॥ पाकाप्रभुनश्रीभग
वंन ॥ भपेकपालकृपानिधिनाथ ॥ बी
लकेसिरिलाइउहाथ ॥ अतिकपाल
हरिलापरिभइपा ॥ राजपिताकोतार्के
दइया ॥ भीनरिनगरिगये भगवानि ॥
अंतरिजामीप्रभुपुरानि ॥ केनादल
बरूपप्रजारि ॥ इकमहेकपारिसखो
ऊपार ॥ भसचाजबहभगवेचीरि ॥
अलेकरउरवल भपेशरीरि ॥ हरिऊपरि
बूढेरावानि ॥ रोकिपरीधीनिनरजा
नि ॥ जोधीमंदहितीलोलोकि ॥ तेकृनि
आनिउराधीतेकि ॥ जवकोवहिणीवीस

ए.शा.
प.
२६९

269

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हेजारि॥ सवैव रोगापैकैवारि॥ सोलड़
कैशावउारिउमारि॥ वक्कगदायरिकि
समुतारि॥ कन्यासभैवसेजिहिथान
नहेगपैसेदरावनस्याम॥ समनोक्वरि
कादर्शनकरिउो॥ साधवसमनोका
मनहरिउो॥ समनोकैचरित्रसेवसी
हरिदेवहरिरसमकिरसो॥ जोपक्कि
नहमारारोउई॥ नउदुःखदोवेनलागै
कोई॥ अंतरिजामीजादववराई॥ सभि
लिनीवउओलिवराई॥ पुहारिकाव
दोग्रनेन॥ कउनककरैसिरीभगवं
त॥ वउसदिमानेगजवलिवानि॥ से
नवालिननउजलकाभि॥ समचउ
दनिअपद्विभरे॥ निहिपुरितेमधम
रनहरे॥ लउरतनअमोलअपारि॥
कैशावकसमक्कंरमपारि॥ अपनेत्र
हियहिपदिउमाज॥ पुरीहारिकाह
रिकोराज॥ स्वागगपेफुनिपभमुा
रि॥ सरपनिकीनीवरनजुकारि॥ ईद
रउरिग्राउडेहहरिसरन॥ हितकरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परमेप्रभकेचरन॥ विषवतिहरिकोउ
जाकरी॥ हरिमूर्तिलेहिरेदएरी॥ कुंड
लदीनेकेशवराइ॥ हरषीप्राप्तिसम
नंदनमाइ॥ यहिनिकसकीप्रजाकरी
दर्शनदेषिप्रतिप्रेमहिंभरी॥ पाति
निप्रभलीउठपारी॥ यहिसोमैगोहम
रैहारि॥ गरुडपीठिकैऊपरिपरिउ॥
कमलनैनहरिकऊनककरिउ॥ दंद
हिमालेवछेगवारि॥ नैकुनकीजोहरै
वीचारि॥ मनमुखिहरिमिउमाईउना
नि॥ निरुपतिकीप्रसादिकसरनि॥
छिनमहिजीतिउश्रीभगावन॥ गरव
प्रहारीकमलाकेन॥ आठोलोकपाल
मानान॥ सभहीजीतेश्रीभगवान॥
वेडमाइहरिकरदेव॥ पाहिलाकरहि
कलकीसेव॥ प्रघोनसकीध्यावहि
सरनि॥ हरिकोपूजाहिएकजिवरनि॥
प्रभप्रतिनिसमैदुलेवनरै॥ माधवनिन
कोप्रभितुलवहरै॥ कुनिहरिमनमुखि
लनिमिसिपाहि॥ कीयानैकुपक्वानहिला

द.श.
म.
२२.

270

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रि॥ जब कछु सुधि लगी हिमगिरि॥
नव हौ सम के हिव उंगवारि॥ पारि
जाते लेन आये स्याम॥ अति न परत्रक्रम
भरन काम॥ पारि जाते संगि आये भ
रि॥ ना विन तिनकी अवर न ठउरि
सति भामा के लाई उधाम॥ कपाक
री वन संदरि स्याम॥ सोलह सहे पके
सउनारि॥ सबै वरि हरि पके वारि॥
मेली सीव रूनारि अनूप॥ ते न अउ
ने करे सरूप॥ पानि अरुण पके छि
ने करि डे॥ भले नाथ आने दहिमरि
रे॥ भिंन भिंन करे सभ नाके धाम॥
सभ नाबी चि वसे घन स्याम॥ किधी
धामते भिंन न होई॥ हरि विन रेकन
मंद लको ई॥ सभ ही हरिकी सबाके
रे॥ हरि म्ब निहृदे मरि धरै॥ कपालि
प्रभु माम्ब रमारे॥ संत जनाके कानि
सकारे॥ गरव प्रहारी दीन दिपाल॥
सन निस्हाल खन लि हरि गोपाल
स हिलीला कोई सनै स नाई॥ ४५

ममक्रिमापवकिपाई॥ कमलनैन।
ऊरुभंडार। कमलदासपतिपरिवलि।
हार॥२४२॥ साषी॥ सम्भुतिरीश्राहरि।
कीसतुरुसंहरीपरमसज्ञानि।धनि
नमतिसजहिकमलकोनाकोहोति।
वपालि॥२४३॥ चौपाई॥ हरिकौतिरी।

श्रमसैउदारि॥ श्रतिसंहरीननिरूप
श्रपारि॥ नितप्रतिसजहि श्रीभगवा
नि॥ निहप्रजाकोहोतिवषानि॥ यहि
यहिहरिकौसेवाकरै॥ हरिमूरतिले
हृदैधरै॥ राननितिलिश्रावहिपानहि।

द॰ग्रा॰
म॰
२२१

271

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कालि॥ पारथी आगे धरै रसालि॥ जलि
कालै लेश्रम न हाथि॥ हरि निरी श्राम
नि प्रेम हिसाथि॥ सहजिसाथि हरी दे
न निकरै॥ समै श्री आ को न नमनहरै
पे कि पे कि को लो उी मनी॥ भूष निची
रि पहरि मुनि वनी॥ नउ फ नि के शव।
मी को नारी॥ आप हाथि पूज हि करना
री॥ को मलि दर नि पषार हि आपि॥ प
गि जल सिरि धरि मे टहि नापि॥ मरर
न कर हि क मल कै अंगि॥ हरि न षि मोहै
कोर अनंगि॥ कं वं कर हि कम के सो सि
के व हू पति की कर नि न री सि॥ व ऊरी।
नला व हि निर मल नी री॥ धोनी पहर।
हि श्याम शरीरि॥ संदरी अंगी अंगोको
दे हि॥ वे पा वा ऊ म हा प्रम ले हि॥ सं द
रि पड वे आगे धरै॥ कं च न के न गि जग
मगि करै॥ निन पहि रावा हि जगनि के।
नाथि॥ नारी गह नि प्रभ के हाथि॥ वल
र सो व कपा नि धानि॥ जो गि भोगि प
नि प्रश्चि प्रगानि॥ पउ पे कार हि म धुरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रेकारह॥मनिवइपावैसभसंमारह॥पउ
ववाजहिमजहियाम॥मोरिवकोरिले
निहहिमम॥कोमलिमासननपरिग्रम
वैहे॥देपिपीपाविसमैहोइरहे॥कंवा
निकोपालोनगिजसे॥श्रीयापुमकैम
मैपरी॥विजनिपरोसेबरेरमालि॥ला
गेजीवनिश्रीनोपालि॥वीरूयंउपक
वावउनीति॥मोरिपरोमनिपुनिकरी
प्रीति॥ररीरपुमपुमावनवने॥कि
माकियारहिकेविजनगने॥सरहमा
निप्रहसप्रादिप्रनेति॥प्रवैरूपाति
पिश्रीभगवेति॥वमेकउरेपालीपा
रापहिनिरेग्राहुदैविगामि॥हरीप्रवा
वनिवरुवोकलाहि॥हितमिउहरि।
हिनकारीपाहि॥कमग्रवानेविंजनभा
इ॥नीनिलोकिपनिकेपावरइं॥कुनि
पारिची हरिश्रागेयरे॥मामिउनगिमा
जतिमगिकरै॥पुलीकारहिकेप्रवमा
वाति॥हिंगिरेरहिकुनिजीयासननान॥
वलीहिंगिकोरउरमुकेरि॥विपनिनि

द॰ शा॰
म॰
१११

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नामसनिमित्याभवतिनेवेरि॥ उडेजीवाक
ल्याणेमैकरै॥ सूथेकरिफुनिपउपेथै
हेरुपेहूलपेवलैमृतारि॥ हरिषहाषि
परिपरैउदारि॥ निरीआकाज्ञिविक्का।
वकैरै॥ सभप्रजेकिपरिमाधवूवरै॥
वक्रूरूचीयालिस्प्रावहिपानि॥ निकप
रिवनावहिचीयामजानि॥ निनमहि
लोगकप्रीतिमिलाई॥ देहिकेनिम्रवि
पानिवनाई॥ चावहिकसप्रनेरहिभ
रै॥ निरीश्राकोहरितनिमनिहरै॥ हरिर्पै
रहिवकुदावहिबाई॥ भागितिनोका
कोहिश्रानजाई॥ श्राठजामहरिसेवाक
रै॥ पगिकोछाडिनईतिउतिटरै॥ नउन
वसिकुवेभगवान॥ सप्रुशानकोहरि
नागान॥ सभनितिश्राकरिरहीजेपाई
जीनिनमाकेकेषवरा॥ नहूश्रावा।
मीज्ञामिमहिकरै॥ करिपंथुउजगिको
मचहरै॥ श्रापिनमूलैवाजीदेषि॥ व
रुविधिकाढिरिणवहिभेषि॥ निउ।
समझाईश्राकेपावकरी॥ निसैनमोरै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जोरसिभरी ॥ सभलिरीश्याकरिरहीउ।
पाई ॥ मोहिनमाकैजगतिकैराई ॥ थै
सीमंदरीहरिकीनारि ॥ मंदरीनाकोक
हूनपारि ॥ एकदिनसिसंकरुयतिज
नी ॥ वावैथमिजोकेपीच्छीपारवनी।
हरिमंदरिउपरिकरिराईपा ॥ श्रीयादे।
विश्वनिविसैभभईपा ॥ एकश्रीश्यामर
कोपैनैति ॥ जरदिसंमजगपैमैलि ॥ दे
वीकेपावजीकीनारि ॥ रहीनिशंकरि
देहिसमारि ॥ करिनेपनघुगिरिउति।
हिकाली ॥ थनिहीमरखभईउवहा।
लि ॥ थैसीमंदरीहरिकीनारि ॥ मोहि
माकैमउंरिमनारि ॥ इंदिलीला० ॥ कर
लैनैन० ॥ किश्यायुनिवरनोश्रीभगव
ति ॥ जनतिहालिकोजीवतिप्राति ॥ १८
साखी ॥ रुकमीकेमंदरीश्रभवसेमवां
कीरासि। रुकमनिसिउहांसीकरीवूंवे
वबनिउदारि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रुकमनीके
मंदरिभगवानि ॥ नविसिउराजनिउ।
खिडरानि। तिहमंदरिकोवरनोध्यान

र.शा.
पृ.
१२३

223

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निउकरहनासकिदेवमहान ॥ केवनी
केमंदरिरसिभरिउ ॥ रतनिधमोल।
कौहीरेजरिउ ॥ अतिसरंगसमिथाने
नेने ॥ वदरदिसिमुकमालरकहिवने
पातिजातिफूलदुकेहारि ॥ नेलरकै।
मंदरिकैदुआरि ॥ आगरिधूपअतिभू
परिमलवास ॥ सनमुषिकौनोचंदिअ
कास ॥ सोमकलाथहिमीनरिगपे ॥
परमीरिपासमहिसदरभपे ॥ मीनलि
मंररिसमीधिआरि ॥ कलसदेवकेआ।
वैउआरि ॥ पारिजातनकेफूलहिहारि
अतिसंगधनाअरीअपारि ॥ महारा।
सिकैआवैउआरि ॥ सागरिकौजल
धरसिविआरि ॥ परसिफूलिमंदरी
महिधरे ॥ अतिसगंधसिउमंदरमौ
तिकेसपूरुजरौवैफारि ॥ ताकोपर
सेमंदविआरि ॥ धूपकिरमंदावउ
पिरि ॥ मंघुरिधूपहिलीनावेरि
मंदरिउपरिवैरमोरि ॥ काहिदिहरे
सेकोउरि ॥ हाथिहोतिअतितिनके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शति ॥ प्रभुपछानहि मेच ससमानि ॥ १२
हि मेरा हरि पंचिर स्निवीसि ॥ नासुलेनि
भविहरिजगिरीसि ॥ जैसेरे हरि मोरि।
रमालि ॥ जैसे मंदरिगि जैवि सालि ॥ नि
सुमंदरि मेहि कलस प्रजैकि ॥ लिषसे।
गिनि हनानाग्रेमि ॥ रथुफेनि सोउजलि
वरनि ॥ धरै ध्यानि सभुपान किहरनि ॥
नैसे सुवेनि वृक्षा वैनेपरे ॥ ध्रापि राधि
मोरुकानिकरै ॥ नाऊपरि वैसे भगवानि
सुषतिधान निरमलनारान ॥ चहिरि
ध्रालि लाकोकहे ध्याव ॥ जेसे करना
मरहाप्रान ॥ सबनिसुविकनिसिधा
मिसरीरि ॥ सभसुचदाईकप्रभुवलि
वीरि ॥ मंदिमेरिमषिपंकेजिहासि ॥।
कमलैनेनसभसुखकोरासि ॥ लो
सिमुकरिधनिजगामगकरै ॥ दस्रो
रिसाकेनमकोहरै ॥ जगामगानिग्र
निंकुडलिकानि ॥ जिनिनेनिकरि।
लग्नाने भानि ॥ पीनवसनिऊपरिफ
हराई ॥ निउदामनिषतिनी विसराई

ह.प्रा.
म.
१०४

274

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कौरतिमरकेंढिबनिमालि ॥ पमिलउ
उरजीपरमिरमालि ॥ केंढिकसकैरख
महानी ॥ हारिमदनिबारिरैमानी ॥ म
णिझ्लानीपरिजगिमगिकरै ॥ षषलि
भवनिकेनमकोहरै ॥ संदरिचुबरीखा
रेकेसि ॥ त्रिभवनिनाइंकिमानविभे
सि ॥ मिगुलनाहरिहृदै महानी ॥ स
मशानेमिलवेडवषानी ॥ संदरभ
नारमालविमाल ॥ पंकजकेसरिमउ
नमेपाल ॥ नाभसिंधुश्रावरनिसमा
न ॥ कोमलजंघनेश्रीभगवान ॥ संद
रगुलफकमलकेचरन ॥ जिनकी ।
समुबरमादिकसरन ॥ दसनषम
णिधमिजगमगिकरै ॥ नीननापच
रिमीपरहरै ॥ नषसिषसोमशेमासि
भरे ॥ जगतिनाषज्ञगिपानकिरे
श्रीगेहकमनिपरमसुजान ॥ सष
कीज्ञमालाचंदसमानि ॥ जगमगा
निकेंडलद्विकानि ॥ बुनेबसपति ।
षकसमानि ॥ कमलनेनसभिजग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

को मा नि ॥ खरची श्रनि सगे घ स भग
ति उजल श्रेभरि मुक्ता हारि ॥ कुश्किमी
रही कुचो के भारि ॥ हाघकु के कनवरे
अनूप ॥ श्री हकमनि जपि पर मस रूप
वरन कुनू घनि हल एकु जनकै रै ॥ धरै या
न सभितुः खिको हरै ॥ श्री सी हकमनि
पर मर सालि ॥ सन मुषि वाडी सिरी
गोपालि ॥ एक हाथ सि उवी जनिक
रै ॥ हरि मूरति हरदै म हि धरै ॥ दुजै हाथ
कुल्ला वे व उरि ॥ के श्याम कमल फूलन
नि भउरि ॥ कव हू आपै पाछै न्याउ ॥
घनि श्रेभि नि तिसुख उपजाई ॥ सग
गजिके रीवाल रखालि ॥ नूपरि वाज
हि वरको नालि ॥ सुखलि धान वोले
भगवानि ॥ अंतरिजामी वनस्वना
नि ॥ सतिरूप आने हरि भरे ॥ जाकी
माई पाकउन ककरे ॥ सदा ज्ञान मे
अमृत पारि ॥ के श्याव कस मकुंदन
रारि ॥ रुकमनि को वोले भगवानि ॥
वनुर सतो म घाकपानि पानि ॥ सन

ह॰ श्रा॰
म॰
२०५

275

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रुक्मनीवब्रूपअपारि ॥ अनीउनीति।
अरुवडीउदारि ॥ नजसमानिकोत्रि
भवननाहि ॥ सम्रुअनेंदनुमरेनवि
माहि ॥ भलोइरूपपूरिवोरीउय ॥ परि
लोकरीननमनमहिनय ॥ नफकरु
हेउकिपाकीनोकेंन ॥ किनिनक
कोयहिदीनामेंत ॥ सनहुउअउना
करोवषान ॥ तीनलोकनहीमकेस
मानि ॥ राजेहीननेहमरोवंस ॥ कै।
कवदीउराजकोअंस ॥ गुणविमीति
रउनिरगुलसदा ॥ किसीसमैकरि
भावोमदा ॥ कोऊनसकनञ्जगिम।
हिकरिउ ॥ राजुछवनहीमाथेधरिउ
सडैनेनाठाअनिदीन ॥ मघराचक।
छारिउवलिहीन ॥ जलमहिथरुव
नाईछिपिपरिउ ॥ धर्मेनेमकोऊज
उनकीउ ॥ अरुनिहकेंचनसदाउ
दास ॥ निहकेंचनसिउधरोपिआस
गुरुअपंथमेरेहैनाहि ॥ पिआरेवम
नलवउेपरचाहि ॥ जोकोहमरेधनिधाई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इं: लिखपाति निसिवासरु पाइं ॥ कोऊन
संगीपैकैरको ॥ करकूपेनकोहाथिन।
कुहो ॥ किसीजीवलिउरैननलाउ ॥ कि
सीरैसननहीमेरोगाउ ॥ कुलिखाकिरेव
गतिनेउरो ॥ प्रगटिनकवलपकोधरो
किखापक्षानिहरउवखिआनकै ॥ विस
मैसीलागनिहेसकै ॥ पैकेवकननकै
सनाउ ॥ कछुकभीवखगलेरीपाउ ॥
संगनिजनखावैघेधाम ॥ लेहिउआरि
परिसेएनाउ ॥ दोऊहाथिमारिदेउअना
व ॥ ईननाहीकीनाउमकाज्ञु ॥ अधि
किसीखिजवमिकु किलहै ॥ लोभीर
मेरेजसिकोकरै ॥ तिनरुनिहमरेकु
वधानि ॥ सोरुनिपरहमारेकावि ॥ ति
ननममोहीतिरीआज्ञानि ॥ समैनल।
मक्रौमेरीवानि ॥ जगसंपूकोडिउल
पाति ॥ निकोतिआगिमरिउगोपाद
ंदनवकचमेप्रनिवलिवान ॥ निआगे
सवरिवलीसरज्ञानि ॥ हरउनोगकथ
रुकाचरवारु । रजनीपोसिउपरौवि

द्रा॰
म॰
२२८

276

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्राह॥ वढि उदे कुजमु धाकें धांलि॥ नि
नहकी विहमारे प्रानि॥ लांबी रिछन
संदरि करी॥ बोरी मति लेहदे धरी॥ ।
ग्रजहगई उनकछु मरज्ञाति॥ ग्रवरु
केनको बरोमजानि॥ करसलहे गीमे
रेमाथि॥ ग्रनि उदसहमब रेग्रनाथि
यहि ग्रलापहकमनिजबसने॥ निप
रिमोकुकरिमत्तकिधने॥ कुनीध
रिपगई ग्रतिउरी॥ दिहमोकुकरि
नीबीकरी॥ नेनमोककोग्रासबरी
पावकिकिबिहिदेहिसमदरी॥ बढि
उमोकु अनंदपारिहरे॥ भजकेकन
रेयक्रपरिढरे॥ बोदेमूमचरनकेमा
थि॥ मोकुलगाई ग्रगुनेनाथि॥ बी
ननकमरदोकगिरिपरे॥ समैग्रगि
मिरनकीसभये॥ गिरेकुबलगग्रव
लबिग्रानि॥ जातिसमेतिउमयेकेवारि
नैसेहेरुकानिगिरपउ॥ ग्रतिविरदा
रिमिरनक्किसीमउ॥ भयेक्रपालिमि
रीनाथनि॥ नालिकालिउनरेमगवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नि॥ चरि भजा धारे गो पालि॥ जबि देषी
सेव कि वेहा लि॥ वे थि कसजी लइउ
ठाई॥ केशव ता बी दूहल गाई॥ वे कि
हा थि सिउ पो कै नै नि॥ मुषि ने बो ले
मी न लै वे नि॥ हजे हा थिस वारे वा नि
नी जै मा धव कै रै वि आरि॥ क्रानी मवे
हे ये कि करि सा थि॥ प्रभ ख बिना सी
त्रिभ वन नाथि॥ हम ना था पि आरी ल
रजा नि॥ नतो पी आरी हम रे प्रानि॥ स
ग्रु करि जा नी उपि आरी नाथि॥ म हा लो
क को वे गि वि सारि॥ क्रो धि सा थि देषी
था नो हि॥ हम रे वा रनि लइन मोहि॥ भी
रज्ञु धते पि आरी नाथि॥ तम सी ची ग्रा
न को उ ब्र रि॥ सा व नि म ई क म्र की ब
रि॥ ध नि ड नी नि न नि म इ म सा लि॥ दे
क रि जो रि व षा नि ना म॥ न मो न म ले
प्रभ थ नि सा म॥ ४५४॥ श्रीकृष्णनी य उ
वो च॥ साषी॥ जो प्रभु ने प्रभ बसु निके
है के शव कृपा नि धा नि॥ ने गु नि क
रि न र ल नि कै रे ह कम नि गुनि सि हा ले न

२-रा-
म-
२००

277

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चौपाई ॥ जेप्रभुप्रगुनेप्रवगुनेकहे
रुकमनीजीकोजानिनसहे ॥ नेसुभ
गुनिवरनैसुरज्ञानी ॥ सनमुखिवेहे
श्रीभगवानी ॥ प्रभुजीनेसैसमभ्रव
रुनकोई ॥ पाछेभईआनप्रागेहोई ॥
कसदीनिरुउवरीप्रथीनि ॥ कहा
नाथिनमप्रभपरवीनि ॥ नमिश्रवं
दिनाईकवलंडि ॥ नभदेवउपरिन
मरोइंडि ॥ जोजनिनमिसिउपरने।
पिआरि ॥ विगसमानिमुकिदेवरि
गरि ॥ गुक्षिविहीनिनभिनरीप्राव
प ॥ कोहिमैनमैमहाप्रवप ॥ नमि
विनमप्रामीउउरिनकोई ॥ नवि
वउरामीपरीपरोई ॥ प्रगमप्रगोव
रिपरमसमालि ॥ कालिप्रनिनिका
लिकेकालि ॥ परमिगुरिसुनि
विमानि ॥ नकैप्रगपनिवेउमहा
नि ॥ मिवविरंमिरेवउकेदेव ॥ सभ
हीकरनिनमारीमेव ॥ मिनिकान
मिमिवलगनिनिमिप्रारि ॥ निप्राग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिरानिदेसिमेंडारि॥ अवरिकुवारद
यहलाउ॥ लागोनमरेपतिकोसपा
उ॥ रानिउारिनिमेंलरासरासे॥ निक
रितमारेपतिमेवसे॥ पतिप्रसादि
अभिनासीभये॥ अभेदानितिनको
नमिटवे॥ भगुमईअनन्तरूपतरिभर
पु॥ सकलजगतिकेलिआगितउअर
पु॥ रामिछाडिवनिकौपेअवेसि॥ पि
रहिगोपिलीकेनेतिजिमेसि॥ तिन
कीपदवीलषीनजाई॥ जोजनतिसि
मरहितमरेपाई॥ नमिअनेतिअह
सागरिगति॥ तकैनजानहिनेपति
सुति॥ नंमकिकेतिजानिकरिवरिउ
नमिकेसेहेरेभगवानि॥ सेनहरउ
नमरेकरौवषानि॥ जविनमिमैं
लअंवरिगवे॥ तपिजोगुसभगतो
भये॥ मारेगितनमिकीनेटेकारहत॥ ति
नसनिकेपिउसभुसमारु॥ भागेभ
पसभेगातिप्पाति॥ अभेसेतमरेधना
धिकरामि॥ सिवविरंविरविससल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उदैव ॥ बाणइंदुजमग्रलबिग्रभेव
मभैदेवपलिवउकहाहि ॥ ंनसमा
निकोउजनिमहिनाहि ॥ मउरमा
निग्रमनमरोकाल ॥ निहिसमानि
नहीकोउकराल ॥ नेककिकालप
राक्रमकरै ॥ सकलिदेवद्धिनिभीन
निहरै ॥ सोग्रमकालनमोनेउरै ॥ को
पदमनमाधवकरै ॥ निहवलके
नबरिजेनमोहि ॥ कोउदोखनविर्थे
पेमोहि ॥ सनित्रपग्रविनासीस्वामि
पारि निखंनसदाग्रकामि ॥ भूनि
भविभवनाथिग्रनाथि ॥ नमकोभ
गहिनिमोकेसाथि ॥ ग्रनिपविग्रनि
हपापग्रदाथि ॥ नमहीनेजनिपावा
निमोहि ॥ नीरथिपाहिकमलिसपा
हि ॥ मुक्तिपाहिपहिग्रमनस्वाहि ॥
सग्राइवरनिकाजानिउमोहि ॥
निमषपेकनहीक्काउनोहि ॥ किर
पाकरोहीदीनानाथि ॥ राघुमकेप्र
भवरनकुसाथि ॥ परमिकिरपाल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भवेगोपालि ॥ संतिसह्याउरहीनरहैशा
षालि ॥ धंनिधंनिहकवनीह्वांलाति
भलेपक्षानेसिरीभगवानि ॥ हकवनि
सिउषेलेजगदीसि ॥ श्यामरामघने
मष्रनीसि ॥ जोकछुईछ्यासोकछुक
रै ॥ दीनदियालगरविकोहरै ॥ केशव
हकमनिक्रामेवाउ ॥ मननेउपजैमा
निघरस्राउ ॥ कोरुसंतजोकरैवधाति
कोउसनैघरिहरैघ्यानि ॥ किरपाक
रहिनाकोहरिताई ॥ प्रेमिभगतिमाय
कोपाई ॥ जैहकमनिपतिश्रीरगोक्षा
उ ॥ देषहकुपाकरिहमरीउरि ॥ कब
लिनैनिहारिकेशवराई ॥ जनिनिहा
लिकोहमरिपाई ॥ २५८ ॥ साखी ॥ हसि

द॰शा॰
म॰
२५६

229

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दसिखवतिईककेनिग्रामभजापेहरि
कोनारि॥ हरिह्रीसेमंदरिसभैकेश।
वकेपरवारि॥२॥ चौपाई॥ वधेकलके
घनिपरवारि॥ दसिदसिघ्रतेजनेइक
नारि॥ हरिह्रीसेननिमंदरिसामि॥ पि
नाप्रमारि संपूरनिकामि॥ पेकलापि
षहवेकिहजारि॥ श्रामीहरूपरिहरि
केवारि॥ तिनकेपनघनेकिघनेनि॥
तिनसिउबेलरिष्योभगवेमि॥ ईकि।
ईकिकेमासभनोजनी॥ पितातिने
कोचिभवनिधनी॥ सतारुकननीकी
घनिरसभरी॥ सत्रंवरिनेघनिरुप।
सिहरी॥ पोनामायवकाघनिरुपु॥ घ
निउदारिमतिमंदरिसघु॥ रुकनलि।
नाकोलगनुपठाईया॥ लेनानीमद्य
सेत्रुसियाईया॥ साधिरुकननीग्रहा।
वलिराम॥ कउबकिकरहिप्रभनिद
काम॥ भईउविवाहघनेदहिसाधि
वीविविनानहिंचिभवलिनाषि॥ हरि
वैवमलिखावेमपप॥ उपिहीनत्रिउव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उेकरूप ॥ रुकमनसंगिमिलिमेनरका
रेउ ॥ बालमेबिलैहिरदेघरिउ ॥ कनरु
रुकमनजादवबलिबानि ॥ नधिनजी
नेपेसिरीभगवानि ॥ नृपेबेलहिह।
लघरिमाथि ॥ बेलनजानहिजादव।
नाथि ॥ जीनीसबडरमराजगिहोई ॥ दे
नसिउग्रबरउपावनकोई ॥ जोकछु।
भूपऊबानिबषानी ॥ बडुनभलाहक
पहिमानी ॥ रुकमनीकहिउसनीपेबा
लिबीति ॥ पासेबेलहिहरगिधीरि ॥ ब
ऊनभलाबोलेबलिबलिराम ॥ बेल।
निलागेप्रभप्रकाम ॥ समझहीराजाघरे
प्रजानि ॥ समझिकिनरेषहिमनिप्रभि
मानि ॥ हलधरिजीनेजोनहिदाउ ॥ उ
सीभपेसमझीजेरिगाई ॥ बऊरिदाउजी
तिउबलिराम ॥ प्रभप्रभिनासीसदा।
प्रकाम ॥ जीतिउभ्रुकैरुकमनबिकरि
उ ॥ कपटुकालुलेहिरिदैगहिउ ॥ बोले
राजासभैप्रमानि ॥ जीतिउदाउरुकमी
बलिबानि ॥ प्रबडुमहिरिपरीबलिरा

र.श्रा.
प.
२८

280

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मि ॥ मिरैसकलिस्रविजाकैनामि ॥ वरु
भीजीतितुवलिवलिवानि ॥ वरूरोवे
लैलकवयस्रानानि ॥ मकितीतितुसभूरे
वरिभूप ॥ वउभूरिकपटउकेरूप ॥ के
रिसाखिमिलिसमनोदउ ॥ कालिबुधि
हरैगहिलउ ॥ नभनैसवउभईउतिकि
कालि ॥ जीतिउदाउभयागोपालि ॥ न
भर्वेलीनहीमनहिगवारि ॥ कोऊरे ।
हीकैउवारि ॥ मउपमारिहलधरि
कोहसै ॥ हमिआपमिमहिरसिमहिर
से ॥ हलधरिजीकोहासीकरै ॥ महाप्र
भनेनेकेनउरै ॥ तमकिआगानउषे
लगवारि ॥ मज्ञारिगऊपरकेवरकारि
नेपवेलिहमराजाकरे ॥ राजकुविपि
रिउपरिधरै ॥ हसैमकोवदलिपमारि
कालमभावेवउगवारि ॥ कछुकौ
भसकरवलिभईउ ॥ परविरामजीक
रहिलईउ ॥ दीउमरिलक्मकोसीसि ॥
भईउसीसदुकरेदसिवीसि ॥ यमजे
फारलीयोवलिराम ॥ एकवारसमनो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिरहइ॥ तिकसजिंदरसभइकोराइ॥ म
रेराजासभैगवारि॥ ग्रभहलयरिजोपे
केवारि॥ रामकहकीकैभीतरिराइउ॥ पे
नासहतिउलहनीलइउ॥ रषिचाई
उठवलेग्रनेति॥ पाछैआपेश्रीभगवं
ति॥ उपकरिरहैग्रभचतिस्णाम॥ उए
कैमेवलषैवलिराम॥ भलाकहैरु
कतिविलषाई॥ इउगुरिकीनीकेश
वराई॥ चरिमहिआपेसिरीभगवंति॥
मातविरूपीकमलाकेति॥ अतिरु
पैकाकहिउविवाहु॥ भलीश्रेजउकु
लिकोपतिमाहु॥ जोउरबोतमसि
रीभगवाति॥ जनितिकालिकीजीव
निग्राति॥ १४॥ साषी॥ श्रोणतिउ
रिराजावसेवाणसरुवलिवालि॥
सहंग्रभनाधारेवलिमलीमहिपति
अभिमाति॥ १॥ चौपाई॥ राजाश्रोणति
उरिकोपनी॥ वडेवलीचरिभीतरिमा
नी॥ सहंग्रभजावाणसरिनामु॥ सिव
कोप्रनैरिदासकाम॥ सहंग्रभजावाण

२.श.
म.
१११

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

करिनाम ॥ शिवकोम्रजैहृदासकाम
मनें षभ्रजाई उधेकैवारि ॥ नालिव
गावैपरमरसालि ॥ शिवसनम्रश्रा
दिषरावैनालि ॥ रीकेसंकोमहामरा
नि ॥ भगतिसुधीनमयेमहादेव ॥ श्र
श्रनेजनिकोदेषीसेव ॥ बोलेशंकरि
कृपानिधानि ॥ कछुवरहमोगऊसंन
मनानि ॥ बोलेबाणासरिवलिवावि
विनतीसुणोप्रभभगवानि ॥ हमरे
श्रीरहोयेकुटवालि ॥ महाप्रभनमपर
मिरिदयालि ॥ शंकरिजीश्रेसीहीकरी
भगतिप्रीतिहृदेमहिधरी ॥ शंकरि
बसेनगरिमहिआई ॥ बाणासरुनि।
तिमसेवाई ॥ शिवपरसादिनरीराजा
उरे ॥ सभसुरिनाकोसेवाकरै ॥ एकदि
नश्रीराजावलिवानि ॥ प्रभपहिकीनी
विनेवषानि ॥ सहंसभुजाहमरीवलि
भरी ॥ तिननेकिरतिनश्रापीसरी ॥ जा
पहमोसिउकोऊनकरै ॥ भुजनिकंडू
धनोहमरेहरे ॥ हाथीसनेवलीदिक।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पालि॥ सनिहउ दउरीउ निस हीकालि
पखैन्न्रकीपभनिसाषि॥ नैकि
मुकैलगावेहाषि॥ नविहउनिकरि
निनैकोगइया॥ दरलहमारालिना
काभईया॥ नवेभागगनिलिनहीका
लि॥ देखीमेरीभुनाकरालि॥ मकिन
मानिछिमवनिमहिनाहि॥ नोयामुके
नदरलहिखाहि॥ नमविनसनोप्रभो
वलिवानि॥ कोउनदेखोयापिसमानि
हेसयामीयहिकरुणाकरो॥ वेगहमा
रीपीरहरो॥ कैरनपुकोऊहमारेसा
षि॥ देखैप्रगटहिमारेहाथि॥ कोपिउ
संभुसनीयहिवाति॥ सनुरेमुनिश्रुत
रिकीजाति॥ नमरेयामप्रजामेवरी॥
मवनदेखहिमानिरपरी॥ उपजैमान
किनैवलिवानि॥ समुभरेगोनेतमान
वीकोपाईहाथिश्रुतिमइउो॥ यहिव
हप्रांकतिजीनेलइउ॥ देखेदेनप्रजाहि
नैरवि॥ सनिहौहिकविकेवनि॥ कवि
यहियुनाबरीमितिपरे॥ कोउप्रवि

द॰पा॰
म॰
२८२

282

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाइंमुक्तिमिउलसै॥ कृषनाकीलनाग्र
नेग्र॥ श्रमिसंदरिननिवरीसरूप॥ मंद
रिमिनिवसैसकुमारि॥ बउदेनिशिरि
सेवहिउमारि॥ कुरुषनकोउजानापाइं
पालाकरीवाणासराइं॥ नामिउरमेश
भूश्रनिहरि॥ सपनेंश्रीमहिमसाप्रभुपि
नवहिजानीराजकुमारी॥ केनकेनक
हिउरीपुकारि॥ हाहेकेनिहमारीप्रानि
कैउनदेषीनकैसमानि॥ सभविसमै
हीरंबोलीसषी॥ तमरीगतिकहुमा
निनलषी॥ कुपकाहिजाहिनश्रैसेकहै
बैसिलानिलेहहैगहा॥ बोलीउषास
नैश्रजानि॥ हूउश्रविमाहीपरषिमना
नि॥ वकिसषीबोलीसहेलानि॥ चित्र
लेषामविचरीसजानि॥ कहउप्रतिमा
काकचनुसरूप॥ जितिनजोहीघरेश्र
नेप॥ सभग्रामकेहउनकरो॥ सभकि
पिजकेहउननकरो॥ सभलिषितमरे
ग्रंगेगपसे॥ श्रीनारदिहमरेत्रादेव॥ स
कलीप्रिकैसमभूकैसेव॥ सभहउषाको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लिखिरिषगाई ॥ कुषामसुकोटेनिमिराई
नामिरेटवटानोगमपरवि ॥ मानविलिखोर
षुगपेमरवि ॥ जेउकलिलिखिजेपरमप
नीत ॥ लिखकोमनाइंकुपयरुञ्जनमोन ॥
श्रीवसुदेवलिखेमरिजानि ॥ वडुरलि
खेप्रमुश्रीभगवानि ॥ फुनिप्रडुमनिलि
खेहरिहरनि ॥ सम्पुहोजीनेजिनिमवयु॥
लि ॥ नविप्रभिहपिलिखेवलिवानि ॥
उषालजनतिमइत्सजानि ॥ लिखिप्रनिरु
धसवीनविचरिजे ॥ नविउषामुषनी ।
वाकरिजे । पेहोसबीहैरुमरोकेनि ॥ इं
सेलिखाउपरिकोऊमन्तु ॥ सखीकहि
उपहिखिषरीहउरि ॥ प्रीहारिकाजा
दवकउरि ॥ नहांविराजहिश्रीभगवा
नि ॥ ताविनेजिमेमहाउगलि ॥ हरिउ
रिमहिनआनापाउ ॥ कपटिविनासनि
हरिकोनाउ ॥ उरमुकरेनमारेमागि ॥
रुपसोयाकेरसनिलागि ॥ चीलिउप
खिजलेषामई ॥ प्रीहारिकावेवलगई
आगेचककमटकोनमरु ॥ नेत्रिमायिष

ह.श्री.
प.
२२२

283

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिहीभरपूरहु॥ किमतनिध्रुरीकोरविध्रा
करै॥ हितिमहितेजुमभूकोरहै॥ ऐति
तमकैपुरीकेमाहि॥ तिनिकोहरिके
चक्रजलाई॥ नारदिआपेवउमहानि॥
पछीलिषीमनेमुरिजानि॥ किउआ
च्छेशवकेधामि॥ मभेवषानउअपने
कामि॥ मभुनारदिपहिकहेवषानि
किरपाकरीगुरदेवमहानि॥ मेचरीउ
गुरदेवउदारि॥ वीरलिभइचक्रकी
धारि॥ मइलजुभीतरिपेठीजाई॥ ह
रिकोनामीदेषिउआई॥ ऊधाहीनिउ
करैउकारि॥ कहोगइहैपिआरीनारि
नापहिवोलीवउमहरिजानी॥ मभुऊ
धाकेकीवेवषानि॥ जैमेनुवाकोवि
लनाहि॥ नाकेध्रानितमारेमाहि॥ वि
लउकिकोनापहिलेजाउ॥ केनित
रिलेहोउमिलाउ॥ नारिपंचिपरिउ
चीमनजानि॥ आनिउवेगिप्रभुलिहि
वानि॥ ऊधासेगिमिलेआनिहुचि॥ म
हावलीआनिमंदरविउचि॥ आपिकीजे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धनिहषिविविवाइ॥ इषाकोसषमेरि
उवाइ॥ कोरहिकेलिमंदरहिकैमारि॥
रूपनिनेकेकरैनजाहि॥ येकदिनसि
मंदरिषिरिषो॥ देनदृतिनकेदर्शनक
रे॥ दउरिदेनिराजापरिश्राये॥ सभद्रते
नकहिप्रनामरिसनाये॥ कैमाकलउन
हेराजि॥ धनहीनिरदनिकोनकाजि॥ कैं
इगइवैठनाकेकेसेमि॥ मानोमूरतिधरै
धनेमि॥ वाएगासरूपनिक्रोधहिभीरि
रो॥ नगनधरउलैकरिमहिपरिउ॥
क्रोधमाधिजाईमंदरिचरिउ॥ रेनो
कोजाइदर्शनकरिउ॥ केसेदेषेश्री
निहरि॥ सवनिस्माभिस्रमिलेरहितवि
कमलनैनसुरूलोवीवाद्रो॥ माकेरूप
निवृनेजाहि॥ पीनउपनस्रमितिश्रं
मि॥ श्रुताजाइउप्रनमनेमि॥ पासेषे
लहिपविस्रनाटि॥ कहिकहिहम
हिवलावडीमाति॥ वालतिप्रभस्रति
हषिमजानि॥ दोहोनु कैकमभगवा
नि॥ यहिमासीहृइदउनजानि॥ वङोक

द॰ग॰
म॰
२२४

284

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

याकरैवयानि ॥ बाणास्तुरिकीदोह्री
करो ॥ यहिसारीहडग्रविग्रेसेग्रो ॥ ति
सीसमैवाणस्तुरगहेग्रा ॥ देषिउन।
षिको विसमे भइग्रा ॥ वउवेसकावे
इमहान ॥ ग्रनिहोसुदरमहासनाव
हेदिभइउराना सुरिज्ञानु ॥ भइउन
मानावउसमहान ॥ उनरिउवेगिवि
लेउन करिउ ॥ कढुककोयुकक्ष
महिमरिउ ॥ सेनाकोकहिग्रावलि
वानि ॥ वालकुवांधहूहनोनग्राति
वांधनिकोजविसैनावरी ॥ नवेसध
ग्रनिकधहिकरी ॥ पाधिलादीगहि
ग्रसवलिवानि ॥ जाकेदानाग्रीभग
वानि ॥ सभुसेनाग्रारीक्षिनिमाहि
सिग्रा लिमिसिनेसिउभगिजाहि ॥ ना
गिफांसिवाणस्तुरिकरी ॥ ग्रनिकवै
केग्रागेधरी ॥ वहुफांसीग्रनहीबलि
वानि ॥ वांधिलीयेग्रनिकधसुमानि
वांधिवांधिमहिडाविउमेलि ॥ दिष
तवडगेकेग्रावधेलि ॥ २४८ ॥ साषी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गपेउरीश्रीद्वारिकानारदिपरमसना
न।वाणानुरगमिलहपेजी वांचेश्री
भगवान॥२॥चौपाई॥श्रीनारदिजीव
डेसुजानी।अतिनिरमलजनमपुषि
महानि॥वारिमासिमनिलहथहिगवे
नादवसभविनातलभधे॥नारदिजी
हरिदर्शनकरिउ।रोमरोमआनंदहि
भरिउ॥बोलेनारदिहेभगवानि॥वि
नैसुनोजीउरुलिउलानि॥वाणासुरि
वांचेमनिलहथि॥महाप्रसिद्धिदेषीउर।
उथि॥वनैचयुनिको श्रीभगवंनि॥अ
वेअगोचरअभेअननि॥वाणब्रह्म न
मैनासाथि॥समसेनाकेसमउरिह
थि॥श्रोणतिपुरिआपेजगदीसि॥
मनिसनातनविनवेवीसि॥ढाहेगा
उरिकोगिरीराहि॥गिरहिअरासी
रहननपाहि॥कारहिदुमेजादवव
लिवानि॥जिनकेनाउकश्रीभगवा
नि॥वाणासरिकछुविलमनकरिउ
निकसिनगरीनेवाहरिपरिउ॥वार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्रिउरहनिसैनामोस्ते ॥ आईधिरहथ
ञेवषनरिश्रूंनि ॥ निकसिउशंका
सनमुषिस्याम ॥ धरैसमाधश्रावै
राम ॥ नषिभूनिसमीवैनालि ॥ राव
सिजोगनिमहाकालि ॥ कृषिमं
ञेपिमाविश्रनेनि ॥ सनमुषिश्रा
पश्रीभगवैनि ॥ शंकरश्रहलागेभ
गवानि ॥ जीनहिगेहरिपुरविपुल
नि ॥ वाणामहिकेदेईवजीरि ॥ निवि
सिउन्नेरामरनिधीरि ॥ स्यामका
नकिश्रनिवलिवानि ॥ नासिउन्नो
मउमनिमहानि ॥ वाणासेश्रह
मात्रिकलरे ॥ महाजधिनिहश्रउस
रपरे ॥ शंकरहरिकोकाउवाणा ॥ सम
हीकारेश्रीभगवाणा ॥ शंकरवालि
पनषमहिपरै ॥ देनोकुकिमहाश।
भकै ॥ शंभूकरावनित्रिमवनिद।
मी ॥ महाश्रभूसिवकैसीरीसि ॥ क
सउवासिमारिउवाणा ॥ हरिमप
सरनिपरापिउराणा ॥ शंकरुपरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ये उत्तामीलेउं॥ विश्वाकलकीनोअल
ख्रिश्रमेईं॥ शंकुरिसतनमठोनिहिका
लि॥ वेगिनठाउंउमतनगोपालि॥ सम
शंकरिकेभागेलोकि॥ हरिकेवाणि
लगायेमोकि॥ हलधरमारेदोऊवा
गीरि॥ ममलिलाथिविडाेवीरि॥ वा
णासरिकुनिश्चतिवलिवानि॥ सन
मत्तुश्राउंउं श्रीभगवानि॥ पंविसे
धनखिवजामहिकरे॥ होहेवाणमे
भद्दमहियरे॥ केशवमीकोलगोव
लानि॥ मत्ममहश्रविबउेश्रजानि॥
पेकैवाणिवलाउंउ्त्थाम॥ प्रभुश्रवि
नाशीष्ठरनिकामि॥ कारेवाणिसम
दीनहिश्राल॥ कारेथनषसमैगोपा
ल॥ मोरेश्रमरसारथीमाथि॥ कारीगु
गाश्रभनउनथि॥ रथहकारिउंश्रीभ
गवंति॥ हरिकहणमैश्रभेश्रनेनि॥
पेकाकीउवाणमसहणाम॥ गरुश्र
हारीहरिनिरकाम॥ वाणसरकीश्रा
उमाउं॥ करीनगानिनिनश्रुतुनीकाउं

ह॰ग्रा॰
म॰
२२६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मधुसूदन निकैसनन मुपुषरी॥ गोची
दिहम म्रा प्र मुकरी॥ गवे भागिराजा
प्रताती॥ सकेपद्मानिनसिरी भग
वानी॥ फनि शिवकी नोको पुप्रणा
म॥ प्रागैना पुत्र नेन मुरारि॥ शंकरि
कमाडिउ नानानाथु॥ कन्तुदिषराईउ
मथुना प्राथु॥ सीतनाथु छाडिउ भ
गवानि॥ नीनि लोकिपति गनिना
थनि॥ निपदिउ षी भई उशिवको
नाथु॥ हरिको नाथु जगवैष्प्राथु॥ श्री
ईशो भाईकसकी सरनि॥ गहे दउरि
हरिजी के चरनि॥ हाथि जोरि हरि को
रनि करै॥ हरिजुरिने शंकसिजगाउरै
रे भगवंत नम्र नंतमरनादि॥ भवनन
मारे विमसमनादि॥ ह्रषीकेषासर
वैसमले षि॥ आदि निरंजन मानु षि
भेषि॥ वामदेव निरमल भगवानि
सनिसनातननि हरिनारानि॥ कमल
नैनि कमलाकेकंति॥ नमो नमस्ते
श्रीभगवंति॥ सरनि सरनि क्षेदीनदि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मालि ॥ आहि आहि हे प्रभ कपालि ॥ व
मरानाथ प्रजराव तिमाहि ॥ शरनितमा
रीलजानो हि ॥ तुमरी सरनि परै जो दी
नि ॥ ग्रनि वतपावै जो वलि हैनि ॥ भ
याकृपालि कृपा भंडार ॥ जातिको बोले।
कृस मुरारि ॥ सनो संनि हमि की नीर्दई
या ॥ हमि प्रमादि तनिर भै उइया ॥ परि
तमा हम मही कीर निकरी ॥ तिह प्रमादि
संभु ग्रपदार टरी ॥ जो पहिली लार है स
जान ॥ भाहि नलागो तमरा थान ॥ न
पतनाप वंदेहरि पाई ॥ हरिमो रुमूदनि
लीआ छडाई ॥ फनि वाणमर आउ
धाई ॥ सभ हा पड्म हि समस त्रिउठाई ॥
वक्र रमथ मूदनि के सन मत्र गई या ॥
हरि नप छानि वक्र राभई या ॥ केशव ग
के सुदरासनि हाथि ॥ लीला मात्रि जग
नि के नाथि ॥ कार टेस समस भै भगवंति
मान घरु पीनाथ मनेति ॥ कार टेमजाम
भै भगवानि ॥ कारेशी वुर विपुरानि
नविषी शंकर मई उपाई ॥ विनेगा

ह.ग्रं.
मं.
११०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लिवं पेहरिपाई ॥ हाथिजोरिलागुन
गानि । नमोनमस्ते पुरषपुरानि ॥ २४९
साषी ॥ शंकरहरिजसिकोकहै गरबुमि
टाईओसिष्रामि ॥ नमोनमस्ते नाथिजीश
रनिपुरषिपुकामि । १ चौपाई ॥ जोको।
शंकरहाथिमहानि ॥ हरिगुणिलाग
करनिवषानि ॥ नमोनमस्ते श्रीभगवा
नि । सनिसनातनिपुरषिपुएनि । पार
ब्रह्मपरमेश्वुरस्वामि ॥ शिवप्रकाशिसे।
भूनिरहकामि । प्रभूपरमात्मसभकेमाहि
नमोरेषालिनवरनेजाहि । कउतमाए
रपुविलातु । तीनिलोकिमहितमरोहा
ठु । नमिहेनाभुद्दिमाहेकानि । कुषि।
समुद्रसिगवानि ॥ वसुधापाईजगत
कोताई ॥ मनिकेभीतरिचंदसहाई ॥ सि
हस्पकामसुषिपावकिवसे ॥ कालभउ
डिमहिजगतिक्तिग्रसे ॥ सुरजिनेत्रहट्य
रेकारि ॥ रोमसुतरुवघीप्रभूत्रपारि ॥ ब्र
ह्मात्रुपितमारीदेव । सभेदेवप्रभनम
तेसेव ॥ विलिसिप्रजापतिधनिहरिकेसि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नहीअनारीनानाभेसि ॥ नभूमिअम्बा
सभैनविमलि ॥ मनिनारदेलउनमरी।
मैलि ॥ वालीवेरिभजासेरीनाथि ॥ अ
नरिवाहरिसभकेसाथि ॥ रीकिनमारी
सभहीराति ॥ नेऊपछानहिजिनकेभा
ति । कछूनपारहेदेवपपारि ॥ हउअ
तिविसमैविसमिवीचारि ॥ तेमरोम।
केनेअसंडि ॥ नमोनमलेनाथिअषंडि
पेऊंपेक्रुऐसाअसेउ ॥ सभकेऊपरिन
मराउ ॥ कोपेकानहीपायेपारि ॥ स।
कलिजगतिकोतकरनाह ॥ तुमरे।
अंतुकहाकोउलहे ॥ सोऊनरेजोपगि
उमिगहे ॥ तुमरीसरनिपकेसोनरे ॥।
तुमनेसरनिपकेसोनरे ॥ तुमनेवेभ
वुजनमैभरे ॥ तेविलागितुमरीकरेन
ध्रास ॥ तेविलागिरहेनभुमकोफा।
सि ॥ सतिरूपिकसमवनाह ॥ हरि।
कीऊधरनीकोभार ॥ धरमिसेतिकी
रपियाकरी ॥ तीनलोक्रेकीअपसर
रो ॥ कीरतिसतिप्रभमपेकिरपालि।

ह.प्रा.
म.
२८८

288

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मभुडखमोचनिदीनिदिखालि ॥ ज्ञा
विक्रिरपालज्ञानेभगवानि ॥ नविक
लुसंकरिकोपेवषानि ॥ विननीशक
रुकैरेखुधीन ॥ मपेउमाएमिरिश्रनि
वलिहीन ॥ विननीसनामहातुरदेव ॥
इनिमेरीश्रनिकीनीसेव ॥ यहिया
एमसुरमेरसोन ॥ वकुनुजपिश्राषा
मेरामन ॥ कालिरहलिकीनाषामके
करोश्रभैज्ञोभावेनुफे ॥ मुक्तिकीश्रा
लोपभून करै ॥ नमरेवरीविनतिहवे
मरे ॥ भपेक्रपालिसिरीभगवानि ॥ मुषि
नेबोलेपुरषिपुरानि ॥ सनीश्रेसंलिह
रिमारीबानि ॥ नीनिभवनिकेहमहे
नानि ॥ दारईस्वाहमरासत ॥ ध्यान
हदेमुषिहमरोमत ॥ जनुप्रहलाडव
जेमरिजानि ॥ सभुसंतमहिमुषिमा
हानि ॥ जनिसिउबचननवैमुक्तिकी
उ ॥ श्रविहीलउधरिभीनरिधरिउ ॥ वेष
नमाएहनेनसेति ॥ ईउमुक्तिकहीश्रा
श्रीभगवंति ॥ मुक्तिकहीश्रामनजनश

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिलारि ॥ नमरान्नु किसिउ ग्रनिय्रहला
रि ॥ हमरादैन विजरान्न भाइ ॥ होस्रीपनि
श्रिमवनिकोराइ ॥ नमरावेसिन हेनोमर
नि ॥ वेहमेग्राणोकेग्रनि ॥ इसेनमार।
हिसनीश्रेदेव ॥ ननग्रहलाइहमारोसे
व ॥ भजाकारिमेरिउ ग्रभिमानि ॥ गरउ
प्रारो होभगवान ॥ शंकारिलाइउ हरि
कैवरानि ॥ यहिवाणामकनमरोसरानि
हरिग्रुरुषोनमकोनीरइया ॥ सभुमा।
जिकारिचनरुमजिरइया ॥ मविनेवो
लेश्रीभगवांन ॥ मणवाणामरिसिव
कैसंनि ॥ ग्रभेरानन किकोइमिरइंग्रा
नभिरुपारिहमकोनीमइया ॥ वाणाम
सिग्रानिउग्रनिरुपु ॥ हरिपारिसेमनिउ
पनीमग्र ॥ रुपाचेरीरइंमजानि ॥ मपु
मेनिजनिकोपेनाणनि ॥ पेकग्रहनीसे
नारान्न ॥ रइमनाकोग्रारिउकान्न ॥ ग्रा।
कोगिपारिमेहरीकेवरानि ॥ किरपासिंपु
नौनमरोसरानि ॥ विरिग्रामवेग्रभ श्रीगो
पालि ॥ ग्ररीहरिकारमेरुपालि ॥ ग्ररी।

ह.ग्रा.
म.
२२९

289

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वासीश्रानंदरहिभरे ॥ वासदेवकेदर्शनिक
रे ॥ श्रीहरिकापरमिरमालि ॥ श्रापेनाम
लिरीलिरिश्रालि ॥ मारगिछिटकेवंद।
निमाषि ॥ श्रापेजीलिगुरीकेनाथि ॥ प्रनं
मानिउजीलिगोपालि ॥ प्रभुश्रनेनिकाल
रेकेकालि ॥ कृष्णजीकाकहिउवीरिशु ॥ भ
गीचैवंजीसलिकेमित्रु ॥ जोयहिपैरसुने
विनवाई ॥ प्रेमभगतिमाधवकीपाई ॥

गर्भंप्रशादीदीनदिश्रालि ॥ जनतिहामि
वलिश्रीगोपालि ॥ १५ ॥ साखी ॥ नया
रनाथाकूपमहिकिरलासेलसमालि
केरिकरपाकीनोमाडिकेशवकरपालि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धानि ॥१॥ चौपाई ॥ जदुकुल के सब बाल
कुमारि ॥ बेलनि निकसी बीचि उज्यारि ॥
संग हि आवे श्री भगवानि । मानुष अपी
ग्रह ग्रहनि ॥ त्रिषा निश्रावे गालि कु
मारि ॥ छूटनि ग्रावे बीचि उज्यारि ॥ एक कृ
ष्ण के आवे नीर ॥ देषि उ किल्ला वे श्री
ह ॥ सकल कृपना के नैन भरिउ ॥ बडो दुक
वहु दिन को परिउ ॥ देषिउ उषी कृपम
रिपइंया ॥ सभनो के मनि उपजी दयांइ
का ठेस षा विलम न करै ॥ इस अधीना
कौपी उ रहे ॥ बांधे मो वो करे उपाइ ॥ बा
का न न न ही सकिउ उठाइ ॥ कसल वंद
प हि आवे पाई ॥ बिनती सनो प्रभु हरि
राई ॥ ये कुंजन कूप पहि परिउ ॥ हम ओन
न न मिल सभ नो करिउ ॥ याकि पके
हम सभ बलहीन ॥ कृपा करो प्रभ मह
प्रवीन ॥ भये कृपाल कृपा मे डारि ॥ क
मल नैनन अवलेषु अपारि ॥ कृप नीर आवे
करनाहि ॥ किरला देषिउ नैनन निहारि ॥
कंवे कर किउ श्री भगवानि ॥ कि[illegible]ला ।

द॰ पा॰
म॰
२६॰

290

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोटिउफ्रलिसमानि ॥ हरिकरिला
गिरेदुकगिरपईया ॥ संदरिवपवद्दी
लिपभईया ॥ मुलिमकरिमीसिमुक
डेउलकानि ॥ निकीसोभादेवसमा
नि ॥ दउरिआईपासेहरिपाई ॥ भपे
कुपालिप्रभहरिराई ॥ नाकोवोले ।
श्रीभगवानि ॥ कहोभईआनमकव
नमल्यानि ॥ नविलिनप्रभुपाहिविना
नीकरी ॥ मनोअनंतप्रभनरिहरी ॥ स
भकक्रजानतहेभगवानि ॥ अंतरि ।
जामीकहिअनोनदेनोउरानि ॥ नमम
भगानतहेनारानि ॥ लेआगिपाहउ
कुसोवषानि ॥ दुगरजाष्यामेरेनाम
रेनेहीसिउमोरोकामु ॥ रसिकोकण
कासकजनलघानि ॥ नभमहिनारेषपेषु
पाहि ॥ कोमजानउंकुमषिआकरे ॥ उं
नेकेपानिकुमलसिउपरे ॥ पतीगाईक
रीमकिदानि ॥ ब्रतिअशुपिसनीओभ
गवानि ॥ केस्रीगाईकरीमकिदानि ॥
अनिसप्रगतिहलसमान ॥ हपिभगी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रेंभपहिराई ॥ कंचनमालागलैपा
हिराई ॥ सवरनसिंदूरवेषुरजरी ॥ स
नौश्रेमाधवजीनरिहरे । पदमसाधि
श्रुतकपलावरनी ॥ सनौश्रेहेश्रग्र
कदविकरनी ॥ श्रनिसंनोषीविपरख
लाई ॥ दइश्रसंषिलिनेकोगाई ॥ विप्र
ऊकेवाणसनरचे ॥ दिजनुह्सालिरा
गसेभये ॥ कूपवाईनलाइंश्रपारि ॥
कीवेकेमांरेंसमारि ॥ गजरथिहेकी
नेमुकिदानि ॥ दानदेईकुनरावाम
नि ॥ दीनीकंनिश्रायनीलिवाइ ॥ श्रलि
कोसमकौचाहि ॥ सवरनिपलिश्रक
सिहजादान ॥ वस्त्रदानश्रस्जलकेद
नि ॥ श्रंनदानश्ररुमंदरिदान ॥ नगरद
नश्ररुग्रामकेदान ॥ कीनेदानसुश्रंवश्र
पारि ॥ दानिपानकरीउंसमारि ॥ सुबर्ह
श्रगरोनउवारि ॥ जेसहूमालहेभगवा
नि ॥ वीउहाईगेननमौकानि ॥ पक्वौवि
प्रकोदीनीगाई ॥ दइवस्त्रविधिविसमैवा
नाई वक लिनेमेदिवकौरली ॥ सुपीवी

ह.ग.
म.
२११

291

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कछुरीनभली॥ लेनिहारिलेचलि

उगाई॥ पेकिबिपरपहिचानीग्राई॥

मनोभपायपहिमेरीगाई॥ तिनिकरि

धानहीदउचुराई॥ राजाकरीहमोक

उदान॥ दानदेईग्रतिलषिउमान॥

दोऊबिप्रनबिप्रकिपहिग्रावे॥ कहि

बेनानदोमोहसमकावे॥ हमबिना

कौपहिबिनतीकरी॥ लाषगाईलेग्रा

गेधरि॥ ग्रंगीकारुनकोद्विजकरै॥ ब

सननेहमरोमनउरै॥ मकिपहिछा

उमिपारेगाई॥ ब्रप्रकुकीगतिलषीन

गाई॥ कालिपाईमकिनतिउशरीर

कालसमभूनेग्रागीधीर॥ धर्मराईको

सेवकग्रावे॥ ग्रादरिसिउलेमुफेमि

धावे॥ धर्मराईग्रतिग्रादरुदईया॥

हमग्रागेउठिठाढाभईया॥ धर्मक

हिउसनीग्रेराजान॥ ग्रतिग्रगोषहै

नेरोदान॥ कबेनघुरैषरेग्रपारि॥ मो

गरुमोगुरीपेकरनारि॥ पेकपापरुउ

कहोसनाई॥ सुमनकीनेराषीगाई

केचुहुः त्विसहनाहैरतजानि ५ कोउवात
लेपहल्लमानि ॥ नष्ठेमृष्किज्ञमलिउक
हिआपेहि । पहलाउँउपापकेदहि ।
पउहुधरमिकहिआतिहिकालि ॥ भवो
देहिपहिमहाकरालि ॥ नादिनकाउ
पेमहिपापा ॥ आज्ञनमातदर्शनुमड़
या ॥ सातिनगाइथमैपरसादि ॥ सुउनी
सभैपक्षानोआदि ॥ नमरेपगसिउहदे
पिआसि ॥ करमाघातिसवासरआति
आमाआजुसंपरनभइ ॥ नमप्रसादि
सभअपदागइ ॥ अवहुउनमरोसंतम्र
वेति ॥ किरपाकरोहेकमलाकंत ॥ ह
मरेचरिमहिवानवसाउ ॥ सभैसूउम
निमोहमियहु ॥ कलङ्कपाजनउपम
र ॥ सुउनैभगतिमहाप्रभटइ ॥ नभतो
उतरिउपेकिविवादि ॥ जगभगति ।
आदिनसमानि ॥ हरिकोनीनिपरक्ष ।
माकरी ॥ हदैसमानेस्रीनरहरी ॥ मई ।
उसवरगनिस्ताहिउस्नाम ॥ जैस्रीकस
मकंरस्मकामि ॥ जारहकोवोलेभगा ।

र॰ प्रा॰
म॰
[illegible]

292

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वानि । कवनकीजै विश्रममानि ॥ ब्रह्म
नमवदेवहूकेदेव ॥ कीजैईवकैपग
कीसेव ॥ द्विजहमरेप्रानहूकेप्रानि ॥
द्विजप्रमादिहमरेश्रीभगवानि ॥ कव
ऊनहरीथैद्विजकीश्रेम ॥ हरैभयाल
भक्तैवेवंम ॥ विषहूनहीनेब्रह्मनसभ
थान ॥ ब्रह्मनिदेहमरेनारान ॥ ब्रह्म
ब्रह्मनेजप्रभउे प्रधान ॥ प्रभब्रह्मनि
श्रीभगवानि ॥ दिगराजाकाकहि३३
धार ॥ थेसाजधीथेप्रभमुरारि ॥ घहि
नीकिश्राकिपावरनोवेलनमारि ॥
बननिहालिहरीदासनमारि ॥ २५ ॥
साखी ॥ गोकलिआपेसामजीब्रजसि
उवदीपिआस ॥ ब्रजवासीदर्शना
बिनाविहवलिपासिउदासि ॥ १ ॥
चौपाई ॥ शंकरध्यानजीगोकलिआये
ब्रजकाभागुनकहिआजावे ॥ नंदि
पिताकेवंदैपाउं ॥ लीउनंदिजीकंठल
गाई ॥ फुनिजसुधाकेवंधेचरनि ॥ ज
सधालागीअसमझाउरनि ॥ हलधरजी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मघाकेठिलगाइआ॥ चलिसनेहुकरि
गोदवैसाईआ॥ नैनहुतेउमडीजलधा
रि॥ घ्रुवनेसलसिउवचुउपिआरि॥ कइसेस
नितमैकलिआनि॥ तमभिनुदेषीद
मारेप्रानि॥ कवुचिनारदिस्रुतिगोपालि
वरसुषिंवकनुपरमरसालि॥ उग्रारकी
नाथभयेनेदिनेदि॥ सवदुःखमोचन
ब्रजकैचेरि॥ कवहुवेणविनारदिभि
श्राम॥ कवुसघाकोलेवननाम॥ आवेद
उतिभैव्रजितुआरि॥ हलधरतिनसि
उकेरपिआरि॥ केंदलगावेश्रीवलि
राम॥ सववमयेसघाकेकाम॥ वेणस
वालेआगेधरी॥ रामववावरूपमहिम
री॥ विसरीहैकेहेदमनिरही॥ सवैवे
णस्वपावहिमही॥ वेणवजाइराम
रसालि॥ गुआरीकापेप्रमुकिरपालि
विसरीनाहिप्रभहरिवीरि॥ कहुभइ
उजसोपेसरीरि॥ वडीकिरपाकीनीव
लिराइ॥ हमजीवापेवेणवजाइ॥ कृवि
हलधरजीमनपेडकीनि॥ लीनेनामवछ

द॰पु॰
म॰
२९३

293

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैसांनि ॥ गोपी आइ हलधर पाहि ॥ ब
रनि कमल को निसदिन चाहि ॥ सि
लीराम को सखी प्रवीन ॥ हाथि जोरि
होइ राढी दीनि ॥ कहै सषा बालरा
म रिझालि ॥ बखी बस है वसु कमल गो
पाल ॥ अति निरदै जसधा को नंदि
रिदा ऋराबै कारा बंडु ॥ बाहरी हैं नो
काराने नाहि ॥ अति कारा है हूदै मांहि ॥
हरि लैगाइ उह मारा प्रानि ॥ अनिका
होर है श्री भगवानि ॥ रोइ सभै धुका
रि प्रकारि ॥ हरि के निमकेदम्र तारि ॥
मो पै हलधर परमि रिझालि ॥ क
हि कहि वाने परम रसालि ॥ षेलन
रामि लंगे बलिराम ॥ गोपी सिउ प्रेम
मरा प्रकाम ॥ बिंद्रावन माहि हलध
र राषै ॥ बन को टेषि हरष अनिम षे ॥
फूले मंदम्प्रीधि धि विश्राति ॥ षेलन हर
लधरि परम उदाति ॥ गोपी सोभ ति ॥
राम की संग सि ॥ भूषन बीरि विराजन संप्र
सि ॥ हलधर जी को बरनो ध्यानि ॥ मान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

षट्पीडरषड्रानि॥ गोगारेहिनीलांब
रश्रेगि॥ गिडग्रहिबाबनबेदनिसंगि॥
लेदरिबेदनग्रसेनरमालि॥ केठिबनी
बैजेनीमालि॥ फेंडलिपेकिविराजना
कानि॥ नगममगानिमधुबेदममानि॥
बरुणीपक्कानीग्रभकीबानि॥ षेलहि
रासिजगनकेमानि॥ बेगबारुणीदर
पठाई॥ हलधरिजीकोसषडेपसाई॥
बिंद्राबनमहिआरषाई॥ दमनेषरार
रबहाई॥ प्रनिसगंधिबनिमीनरिम
ई॥ प्राणषिदलनधरजीलई॥ निसीठ
उरिश्रापेबलिराम॥ प्रभुश्रविनासित
दस्प्रकाम॥ करीरामधारावरूपानि॥ बे
रपठारबरुणीमहानि॥ प्रभुउनमति
मपेबनमाहि॥ संदरिगोपीसंगिसहाई
षेलहिराबिभ्रनेदरिभरे॥ बिंद्राबना
महिकउनकिकरे॥ जमुनाकोप्रभश्रा
गिश्राकरी॥ इहश्राउकिजह्वाषरी॥ बे
लोनमरेमलकेमाहि॥ हमरीसबी
मकेसषपाहि॥ आज्ञाकीनीरामधुरा

द.शा.
म.
२२४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नि॥ सोजमुनाल्लइनमालि॥ कम्बुक
कोधहलधरजीकरोड॥ लैहलनाके
जलमहिधरिउ॥ लक्ष्मोफाकिप्रभु
वलराम॥ किइकोजमनादेवग्रका
म॥ रागवारनुग्रसीभइ॥ हमरीश्रावा
मानिनलई॥ सहग्रग्रवाहनमारेकरे
छिनमहिसभेगर्वधरिहरी॥ कोपी
जमुनानिपरिग्रधीनि॥ हाथिजोरि
होईठाढीदीन॥ बोलीजमुनामान
निवारि॥ नमोनमलेगवेप्रहारि॥ हेप्र
नेनिसिहजाभगवानि॥ जैहलक्षा
इगुरुपुरानि॥ यहिबसाउप्रभु
वलवानि॥ धरोसीसिपरिफलमा
मानि॥ सीसीनमारेपेक्तहजारि॥ पक
सीसपरिसभूसंसाई॥ नमनपक्काने
भकिग्रझानि॥ घिमाकरोभाइभग
वानि॥ वरनिलागिउँउनाकरे॥ दी
नहोईपमिग्रागेपरे॥ भपेक्रपालक
सकीवीरि॥ सरनिपरेकीमेघनपीरि
क्राउदइजमुनावलिहीन॥ श्रीवलरा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मग्रभुपरवीनि ॥ जलमछिषलेनलागे
राम ॥ सभगोपीकेपूरहिकाम ॥ निउ
गजिषेलेहूषनीमाय ॥ निउगोपीस
गिषेलननाय ॥ जलनेनिकसेहरि
केचीरि ॥ प्रेमसुपावसिउभरेशरीर ॥ प
ठेवरनिप्रभजीकेचीरि ॥ नीलवसन
प्रभधरेशरीर ॥ आदरवसनिउनाराम
नगनघराइकपूरनिकाम ॥ केठिमि
लायेमुकाहारि ॥ गोरसैलिजिउरोगा
धारि ॥ वैवग्रवरवैसाबउनील ॥ पिया
रेलागेप्रभकैवीन ॥ उइमासिप्रभु
वसेप्रनेनि ॥ प्रावउरानप्रभुभग
वंत ॥ ब्रजनेचलेप्रभवलिराम ॥ गो
पीजनकेपूरेकाम ॥ मातिपिताकेला
गेपाइ ॥ फिरिचरिआपेगोवलिराइ
पूरिहाकाआपेराम ॥ मिलेरामषि
उसंदरधाम ॥ दोनोवीरश्रनेदहिभरे
रामश्यामनमिलकउनकिकरे ॥ जैसेक
रषगाउरविदुरान ॥ जननिहालिव
लिश्रीभगवान ॥ २५२ ॥ माघो ॥ रतनपद

र॰ प्र॰
म॰
२२४

२९९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ईउकमलपद्महिपौडरीकप्रमानि॥ वास
देवहमनमनज्ञीसुनजेउपतिभग
वान॥ १॥ चौपाई॥ सभाबीचिबैठेगो
पाल॥ हनपद्महिउपौडरीकश्रिगालि
निनवउभागीचरसनकरिउ॥ कोटि
जन्मकापापनकटरिउ॥ आईउहन
कमलकीशरनि॥ सषनिधपरमेह
रिकेचरनि॥ बोलिउहनसनोभगवा
न॥ वासदेवकहिउबलवान॥ हम
तेहैवासदेवश्रिगालि॥ हमकोकरि
गानेगोपालि॥ भेषउतारहूहमको
कहै॥ वासदेवउईभूमनमहै॥ जोन
सिभेषउतारहूनाहि॥ हउआवोपरी
तैरेमाहि॥ गरउनमानदेउमिठाई॥ भे
षआपनलेउहकूनाहि॥ आपिछाउबा
हैकलिआनि॥ सबउइहमानलीजैमा
नि॥ नारदवहसेसभाकेमाहि॥ पासो
मुउजगतिमहिनाहि॥ यहिअविना
सीउपछिउतानि॥ किआकहिपठिउव
डेमजानि॥ कालभुमाईउबडेगावारि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यद्दिहमकेयश्रामिरत्रिमिशिह्वारि ॥ वैले
कुसमकेयत्रवंदि ॥ कमलिनाभपूर
तिभगवंति ॥ समनोरहसिसंदमोपेहि ॥
जाहिमरिकोयवह्रीदेहि ॥ लाह्रोतेरा
गवेमिराई ॥ त्रावेवोमिविलंबनिला
ई ॥ त्रिहिमखिनेरैवोलेवोलि ॥ वीलि
कैरगीषाइंकलोलि ॥ कुकरिसकरि
कामिसिषालि ॥ यहिषवेहिगेनेरवा
लि ॥ देरुरुलैगोरत्रिकैवीखि ॥ श्रेसे
सनेमहाजरनीचि ॥ रुनसंदसेदीने
नाई ॥ वडूसिमालुरहिश्राविसमाई
रषिपरिचरेषीभगवानि ॥ वेकाये
कीइरषिगुरानि ॥ नाकैदेसिसिषारे
साम ॥ जोगिभोगिपतिप्रभयुकामि
पंचजनप्रीतेउभगवानि ॥ परिपरिम
वेसभकेप्रानि ॥ तितिजानितेउश्रावे
भगवानि ॥ सनमुखिजाईचलाउवा
नि ॥ वाहरिलिकसेभूखिश्रिगालि ॥ दे
उद्ववूरुनीमैनानालि ॥ काषीकेराजा
नेसेगि ॥ परमिमीनयासमदाप्रभंगि

र॰षा॰
म॰
२२८

296

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पेकुशहनीनाकीसाथि॥ आगेप्रभुअ
विनासीनाथि॥ सैन्याउतारेसत्रीअपारि
केशवजीकोपेकैवारि॥ चक्रसुदरस
निसिउकरनारि॥ तिनिकेकारेसभु।
हृषीअरि॥ सभुसैनाहरिउतारीमारि
महाप्रभुकौलगीनवारि॥ जिउचूम
गरैप्रवालिविआरि॥ तिउहीसेनार
नीमुरारि॥ स्याएसैनाहोईगई॥ उ
नमिगतिसभनाकीभई॥ जन्मभर
गनेरहेविचारि॥ सभेस्यामकेधाम।
सिधारे॥ देषिउग्रभुफनिमुनिश्चि
गालि॥ चारिभुजाअरुहरिसेवालि
शंषिचक्रगदिपरमिअनूप॥ सारे।
गसोकरिधनुभुमहरूप॥ पीतवसनि
वैजंतीमालि॥ हृदेभिगुकीलनारला
लि॥ सीसिमुकटिअरुकुंडलिकानि
पौडरीकिनरनुमभगवानि॥ रषि।
परिभुजाभुहरिसीवनी॥ देषिडोएजा
त्रिभवनधनी॥ हसेकपालिधिदेषि
सनुप॥ भैचहूमाराममहाअनूप॥ भेष

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लानिरषेभगवानि॥ केरोसेनिकेश्रापस
माति॥ प्रभजीचक्रसमालेहाथि॥ करी
दरश्राथनिविभवनिनाथि॥ मारेबारे
ग्रसतुपालि॥ पुकारिउग्रहपुजावि
सालि॥ फुनिकमलापतिप्रभजगदी
सि॥ कारिजेतारिउनाकासीसि॥ भेउ
बनावेथानिनग्रेमि॥ दूदेरहैथाकेश
वंसेमि॥ कमलनूपहीभंउश्रिगालि॥
मारगिराही श्रीगोपालि॥ किसीभा
तिहरिसनमुखिजाई॥ नाकोकेशवले
नमिलाई॥ कांशीकाराजावलिवानि
सनमुखिमावेउ श्रीभगवानि॥ हरि
सिरिकारिउबाणउसाथि॥ बेलिदि
बावद्रिजादवनाथि॥ सीसजाईका
शीमहापरिश्रा॥ वहिउरषोनमके
उनकिकरिश्रा॥ जागेसभजनप्रा
नहिकालि॥ वडमिरदेषिउसकर
हिनालि॥ किसकाशीसहेकरैवीवा
रि॥ समझीदेषहिनेननिहारि॥ राजा
कापरिछ्यानिउजवै॥ मरामोकुमिल

र.ग्र.
म.
२२२

297

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कौनोनवै ॥ आयेनिकसिभूपकीनारि
नेवैउः लीउकारिउकारि ॥ रोवैवेरे।
सभैषवासि ॥ अउनेपतिविनभयेउ
दासि। दीउदाउसमकोनेकरासि ॥ जे
सेवैदिवनावतिपरासि ॥ हरिशिरि।
आपेकाजिसवारि ॥ सोनासहतिश्चि
गालहिमारि ॥ देवउहपकीवाणाक
रि ॥ हरिमूरतिलेहिरदैधरी ॥ मुषिने
गावहिहरिकेनामि ॥ जैनारायण
परायणकामि ॥ आपेजीतिमनकेरिपुगा
रि ॥ जननिहालिपगिपरिवलिहा।
रि ॥२५३॥ साषी ॥ काशीकानृपहरिरे
निउनाकामनअनामि ॥ शंकरीको
सेवाकरैचरिधारैअभिमानु ॥१॥ चौ
पाई ॥ काशीकाराजाहरिमारिउ ॥ क
रिकिरपागोपालउधारिउ ॥ ताका।
सनसुदषननामि ॥ कीउमंत्रिवलिश्र
उनेपासि ॥ मेरेपिताकामारनिहार
मारोतिसेउनारेभाइ ॥ पिनकेरिणने
नवहीउपाये ॥ पिनसमालिगतिना।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीकेरे ॥ तिनवैसनिकीप्रजाकैर ॥ पउ
मेत्रगुरूमेरायरे ॥ भेपकपालिवनार
सिलाषि ॥ सैलननानिनजाकैलाषि
वोलेशंकरिवउमहानि ॥ कछुवरमा
गऊसेनिसजानि ॥ कहिउसदाषिणा
हेमहादेव ॥ सफलीकरहुहमारीसेव
हमरेपिनकामारनिहारि ॥ करिपउने
गाईमेत्रपराई ॥ निकसेप्रतिमामहा
भईप्रानि ॥ सभसद्रुकेमारेप्रानि ॥
सनेभयापाप्रसवनहेई ॥ नाकेननिके
प्रतमाघाई ॥ जोप्रसवनसावैमारि
पडीयरूयहिविधिहरदेवीवारि ॥ ल
एसदपणिविप्रपुलाई ॥ तिननेदार
णिमेत्रपडाई ॥ निकसीप्रतमाअग
निसरूपि ॥ महाभईमानकिवडीअव
षि ॥ आपघरूनेप्रतिगिरिअंगारि ॥ अग
निरूपसभमिरिकेवारि ॥ नालिवि
रछिकीचरनिसमानि ॥ प्रतिदीरवि
ननमहाभईप्रानि ॥ हाथित्रिसूलव
लवलिवानि ॥ सकलिलोककेकेपप्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लि॥ प्रनमाजक्ष्राचरनिकोपरै॥ मह्रीवि
वसीवकरहरिकरै॥ निकरिह्रमारिका
पहरयौमाई॥ वह्रविसूलकरिलीउठो
ठाई॥ केपेजादवपीरलिपरै॥ जालिउ
प्रविछिनिभीनरिजरै॥ आपेउअरि
कललकीसरनि॥ हमगुह्मनिरषिया
करनि॥ दीनवंधुहेहमरेनाथि॥ वा
लिजिहचक्रविराजहिहाथि॥ वारि
वारिप्रभरषिआकरो॥ अगुनेकुलि
केउरिकोहरो॥ आउप्रनमावक्रव
लिवानि॥ महाप्रलेकीअगनिसा
मानि॥ जुउकुलिप्रैसेकरीउकारि
भयेकिरपालिकिरपाभंडारि॥ केप
ववोलेमुषिनेवानि॥ मनभैकरऊ
हमारीजानि॥ छिनहीमाहिभसम
हीकरौ॥ जुउकुलकेमभिउषिको
हरो॥ चक्रसुदर्शनिप्रभूकेपासि॥
महाजोतिनिजझकीरासि॥ नेत्रिला
षिहरिआज्ञाकरी॥ महाचक्रसिरि
उपरिधरी॥ अरिउचक्रप्रनिजसिमगि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कैं॥ कोरि रुष्टछिन भीनरिह्यै॥ जो
विहरनोकोआज्ञाकरो॥ चक्रसुदर्श
नसिरपरधरो॥ कोनेसुरजिकोरिष्टकें
ह॥ नेनिविआनिजेपरनिश्चकाल॥ च
क्रलइवक्रप्रनमाचेरि॥ प्रनमावीविव
क्रचउफेरि॥ लागीजललिननेजहिम्है
महाचक्रसमनविकोरहे॥ प्रनमावले
विलेवहिलिनिश्चानि॥ रइप्रानिश्चपने
लेभानि॥ चक्रप्रनमाकोंधीमहिगइ॥
क्रोधमासिप्रनिवउरीमइ॥ उसीमुठि
काकाविउसीसि॥ चलिदिषावैप्रभु
जगदीसि॥ आइउचक्रवनारसमाहि
जोकैतेजिनवरनेजाहि॥ जारीउपुरीच
क्रवलिवानि॥ छिनमहिकोनीलंक
समानि॥ जारेमंदरीजरेवजारि॥ जरी
प्रजारीजरेहारि॥ हाषीचोउमानसज
रे॥ महांचक्रजीकउनकिकरे॥ पुरि
महिकऊनरहिउधाम॥ हरिकैचक्र
सवारिउकाम॥ प्रलैभइशंकरकीउरी
कलप्रवनिश्रामसमनेपुरी॥ चक्रसिधो

द.शा.
म.
२२२

299

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वेपरवाहि ॥ आपेअप्रनेप्रभुकैपाहि
नमस्कारमाधवकोकरिओ ॥ परनि
पारलेहहृदैधरिओ ॥ कमलनैनिको ॥
हीरिखिनमोकि ॥ छिनमहिसांगैचउ
दहिलोकि ॥ शंखचक्रकेधारनिहारि
केशवकमलमकुरमुरारि ॥ जननिहा

लिमांगेयहिस्याम ॥ कोरोहिदागनि
नेनिहकामि ॥ २५५ ॥ साखी ॥ रेखमिप
रचिनितमझीवेलहि ॥ तिरीआमाधि
ईछाचारीमहाप्रभुसभुनाथाडके
नाथि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ रेचनिपावनझा
पैएम ॥ संगाश्रनितंदहिलभीमाम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रभजो करहि बाहरणो ग्रासि ॥ ग्रापपी
रुखखिषेचरहिमाति ॥ लखिसिउष
लहिउराषिउराति ॥ जाकेभाईमिरी
भगवाति ॥ बनैरिदिबरिमहाबलि
बाति ॥ दसिसहंगनिसक्रीसमाति
भूमासरथानागमीन ॥ देइभिनधी
वैकैचीत ॥ तनीभांतिमारिउभगवा
ति ॥ बउतोमीनहमारेप्राति ॥ बैरमी
नेकालेबोग्राज ॥ जाइसबारेमाज
निकाज ॥ बलिउक्रोधसिउबउग
बारि ॥ मृउछुषाइंउसभुसंसारि ॥ प
रबनबडोहाथिपरिकरै ॥ नगारिएक
कैकुपरिधरै ॥ प्रलैहोतिसभुधरिकै
लोकि ॥ बनिचारिबउलगाबैसोकि ॥
बनिबिगारिसंसारहिमारै ॥ बज्रैनोरेय
हनगारिजेनारै ॥ फुनिसमुद्रमहिपै
रेजाइ ॥ भुजापसारैढोलनलई ॥ भगा
वीबिजलईकठाकरै ॥ प्रतिग्रगाधि
नलभजिमहिधरै ॥ उरिदेहिधरती
केमाहि ॥ बनेनगारिजलिसिउबहिजा

र॰मा॰
म॰
१॰

30

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रि॥ रेवतिपरबतगईओगवारि॥ आगे
बैलैरामउदारि॥ वेकिरखीकेऊपरिब
रिओ॥ रिषिकनिमुखवाकोकरिओ॥ हा
सीकरीओआकीओरि॥ प्रभकोडारैमा
रानोरि॥ पावप्रभीकालीउऊठाई॥
फेरिउवेगाविलेवनलाई॥ पायरउ
रैप्रभकीओरि॥ महाभूरिअतिमानि।
कोचोरि॥ वक्रमभूरिसुवचाकरी॥ को
प्रदिहलधरिजीचरी॥ दउमसलि
कीसीसिप्रनेत॥ महाप्रभरेवतकेके
नि॥ पनीसीसिनेलीरूपारि॥ जिउगे
रवहिबलैफरारि॥ नैकुनजानीतिन
वलिवानि॥ रखीउफाकुलीपेप्रजा।
नि॥ औरेऋषिपहारैसेलि॥ नकुनक्षा
रैप्रभकीगोलि॥ समैरामजीचारनक
रै॥ वंनरूप्रभनेनेकुनउरै॥ पायरि
रहेनदमखोरहे॥ नृपिनदीमहिसभ
लीवहै॥ उऊठायकपलीपेउठाई॥ ब
लिउरामकोवेगलगाई॥ हलधरजी
कीवषीमहिदउ॥ जानीरामफ्लाकीपर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दोऊ हाथ गहि लीने राम ॥ पुरष पुरा
न न सदा सुकामि ॥ दोऊ सुरगुनी को राम
हि दइ ॥ निकसि सिंहु वें नर की गइ ॥
मध नै चलै हूपर की धार ॥ की धा प्रा
नल हि उगवार ॥ देव गुरु रूप कौ वरमा
की ॥ नै हलधर जी आप दाहु ही ॥ हल
धर जी कौ कहि उबलि च ॥ हरि कौ म
हहरि कौ मित्र ॥ जै शंकर वणा हलहा
धमारि ॥ न नि निकाल वल कसमा
रि ॥ २५५ ॥ साखी ॥ सो अंबर तु रजो धन
रवि उकूर पति मुरति बलि वाति ॥ ना
की वेरी लक्षमना संदर परम सुजान
चौपाई ॥ इरजो धन क्रूर पति वलि वान
वेरी ता कौ परम सुजान ॥ नाम लक्ष
मना ता कौ धरिजे ॥ बिना वली जो सो
अंवर कहिजे ॥ शांवा सुवा गाहरि का
वाल ॥ ता का पिता श्री गोपाल ॥ सब
वरि ने के निश्रा तिन हरी ॥ ढीलि न की
नी श्रा धी वरी ॥ बोले कैरव क्रोध हिम
रे ॥ कैसे काम कमसमतन करे ॥ कैनि श्रा

ह-श्री-
म-
३-१

301

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कामनुपासिउनघा ॥ क्रोधसाघसभ
वीलेकघा ॥ रमसभत्रिणसमानक
रिजाने ॥ महाबलीनहीनैक्रुपछाने
भीषमकहिआवेगगहिलेउ ॥ कम
रनकउजाननटेउ ॥ करनसजोधन
नीजासालु ॥ भूरप्रवाग्रहभूरकाल
छूटबाजगकेनबलभरिओ ॥ ईनघ
रिनापरिउटमकरिओ ॥ रघोवैसिवे
घोवेपाई ॥ पनिप्रतिआउनसहिम
नाई ॥ फिरिसांवजोप्रनिवलिवालि ॥
माकेपितासिरीभगवानि ॥ सावधा
नहोइवैठेसूर ॥ रूपवंतबलसिउभ
रपूर ॥ कैरवमारेताकउवाण ॥ घांवन
वीघनवंटसमानि ॥ सभेठेमवाण ॥
रसिउभरे ॥ सांवबलीफिरितिनसिउ
लरे ॥ सभनोकैतनिलायेवाण ॥ साव
कसबनप्रतिवलिवाण ॥ काटछै
रघचोरमारे ॥ छेहीकैरवभूमउतारे ॥
कैरवमनमहिपूजाकरी ॥ ईश्रावाल
कनेनीकीसरी ॥ कैरवताकारघुकर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रा ॥ निकरन गर के भय पापहारा ॥ बोपि
उमां ब्रिल्लमन करिउ ॥ वेयमाल मंदा
महि परिउ ॥ आये नारद मन्हा मन्हाति ॥
न्हा वैसे ये श्री भगवानि ॥ राम कम
अरु जे बहुकुल राई ॥ बहु ते नारद सम
न्हाई ॥ नारउ कहि आकरन न्हा कहा
अति दुःख मो कउजा तिन सन्हा ॥ वो
यिउ सांत्र ई केला बाल ॥ बहु ते के रव म
न्हा कराल ॥ कोध माय सनितन मन भ
रिउ ॥ सभ नारद बमि लिउ दमकरिउ ॥
बोल उठे नवि ओव लिराम ॥ हओ सब
नारे सवारे कामि ॥ भारयोलापिन को
नैवरि ॥ वान्हरि को ऊन राष जुपेरि ॥ सा
मनो आज्ञा लीने मानि ॥ कुले मन्हि ह
लधरि मन्हानि ॥ केरव के पो कर बन्हि
बले ॥ संगी लीने मनि के भले ॥ ऊप ब
लीने परम सज्ञान ॥ असमन लीने बउ म
न्हानि ॥ रय बहलाय रकाज गिसमिके ॥
बहुर पुंज आला वर बकी हुते ॥ नाप तिवे
से राम युनेनि ॥ ऊप बत्र मन से गाम इं लि ॥

द॰ पा॰
म॰
१०२

302

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारिउवीविविराजनवेउ॥ निउरषि।
उपरिवसदेवैनेउ॥ हसननाउरषा।
वेवलिराम॥ प्रेमप्रनेनसंपुरनकाम
निकरिनगरिकेउरापर्दआ॥ उपवके
रवपहिपछिदईआ॥ उपवजीनवके
वेधान॥ बामिविराजेसमउरान॥ पर
मपरष्ठसनकेरवभये॥ लेलेभेरा।
सनमुषगवे॥ ढोरेजाईचरनदिगप
रे॥ दरसदेषआनंदभरे॥ बडिअरुके।
वलसागेपाई॥ सभमोलीनेकेठलगा
ई॥ जोजानेषेसमउनाउ॥ तिनकछु
हाईउपमिसिउआउ॥ राजाकीमनि
प्रेमहिभरी॥ विधवनिप्रभकीपूजा
करी॥ चरनधोईपषालेहाथ॥ तिन
कीकउआपनेनाथ॥ मेराआनीआनि
कप्रकार॥ मानिकमोतीलालअपा
पार॥ वीरपटवरवारेअंग॥ पूजे।
हलधरप्रेमहिसंग॥ एकगऊलेमे
लापरी॥ सभमोमिलिउउमाक
री॥ सिंघासनिवैसेवलिराम॥ महाप्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भूसभभूपतिकामि॥ जैसेप्रभनानेज
प्रनाथ॥ नैसाबलप्रहप्रपनाआपु॥ तै
सेबचनहलाईधकहे॥ जाकैचिमनन
पापनरहे॥ तनेभयाबोलेबलिताम
हमोसवारेतुमरेकाम॥ उपसेनराजा
बलिबानि॥ सभभूपडुमहिमबिमई
ति॥ तुमकउनिनयहिआज्ञाकरी॥ त
मरीतनामोवजोहरी॥ बेगिसोबकोदे
हविवाह॥ हरिसिनआवेहमरेपाहि॥
मानोबेगबिलंबनकरो॥ इहआज्ञाम
थेपरिधरो॥ कोपकैरबमतिबलिबा
नि॥ ऐहकिआइक्ष्याष्पीनारान॥ जाद
बहमकउआज्ञाकरे॥ मनमूकालेवा
पापरे॥ पनीचरनकोलागेसीस॥ उ
लीकालिंगनिश्रीजगदीस॥ जादवक
बकेराजाभये॥ सभिज्ञाननितकेसिर
गये॥ पांडुअनाआनिनकाभईपा।
हसितिनिडुपरिकोनीदईपा॥ सभ
पीहमरेभोगेराज॥ हमडुसबारिउनि
नकोकाज॥ उलटीहमकोआज्ञाकरै॥

ह॰ष॰
म॰
३॰३

103

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीआनैकृनहिरदैधरै ॥ कानीगोप
भजानगवार ॥ दीजेउनकागरउभ
हारि ॥ ईनकुनछुवसीमपरियमिउ ॥
नउवनहवारनघजानाभरिउ ॥ जो
हमटैहनकेसेकरे ॥ सभहीगरवति
नकेकाहरे ॥ नहाकरनअहभीमस
मान ॥ उआकेससेअनिवलिवानि
भीषमअरुदुरजोधनराउ ॥ जोमउ
ईनसिउकरेअभाउ ॥ कैसेसषोवसेयह
माहि ॥ नगनिरलजईनोसेनाह ॥ इंद्रवि
वाराहमनेउरै ॥ हमरीआनासिरपरधरै
नादवहमहिपछानबिनाहि ॥ अनिउ
रवषिवदीमनमाहि ॥ पीछैजोईनको
नोकान ॥ फिरेनजोकछुवीतिउआन
भोगिराजनकरनापाहि ॥ वेगउनकुकै
गरउमिराहि ॥ उठैसभैहीक्रोधहिभरे
सभनौवरननगारिमहिधरे ॥ पाछैभ
येहलाउधदेव ॥ कौरसभेमूराजाको
सेव ॥ लालनेत्रकीनेवलवीर ॥ महा
वलीप्रभावित्रिभवनधीर ॥ ऐसेछेमेरा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मवलिवानि ॥ महाप्रलैकोंप्रगनिसमा
नि ॥ मत्तनैबोलैरामसुतान ॥ सनोभ
यानमसभेसजान ॥ पैकैरवमसभवउ
गवारि ॥ मानहीनलीपेग्रहंकार ॥ उग्र
सैनराजाकोकरै ॥ तोकियालसमिक
रकौभरै ॥ यरुहरिपविनसिरीभगवा
नि ॥ प्रभप्रविनासीउरावउानि ॥ सिरी
निनवरविपलोवैपरी ॥ हरिमूरतिहृ
देमहिधरी ॥ चरनधूरिसिरचूमापु
निरुप्रमादसभउरवकोनरै ॥ महार
वसिरधारेपूरि ॥ हरिध्यानिहृदाभरा
उरि ॥ हमसहलोकपालसरहानि ॥
चरनपूरिवाहेभगवान ॥ मीरपवान
कलकेचरन ॥ हमसभदीनकसको
सरन ॥ हमसभनीकोसपमकला ॥ नो
हरिकरैसोरककुभला ॥ तिनप्रभता
कोकीनोकाज ॥ उग्रसेनकोदीनोराउ
ताकी आज्ञामाननिहरी ॥ श्रेसीकपा
सेनपरकरी ॥ पैनूरकहनेपनीसमा
नि ॥ मतिकेमरापउग्रज्ञान ॥ ईनकउ

र: बा:
म:
२.६

३०६
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नानाविधिविश्रामिमानि ॥ भक्तेसुरषव
उत्रजाननु ॥ हैनकउक्षरकेउलिकहि
हृदेउमान ॥ राजाहरवभाउवलमे
तिनवललानतिनकूकेहरे ॥ जेसे
पवनसूघारहे ॥ पांवमानलाठीसि
रसैहे ॥ सूयाहोइजवघावैमार ॥ तिउ
हैहेकैरवबउेगवार ॥ उंडूदेषोकहु
विलमुनलाउ ॥ गरवुप्रहारीमेरेना
उ ॥ पेक्रुनक्षाउकेरवजाओ ॥ बोली।
जिनोभलेरीवातो ॥ पीठनगारकेहल
लेधरिउे ॥ पांकरषणाइकुकउकब
रिउे ॥ गंगाकेजलदेउवहाई ॥ सिर।
कीजाइअलाइवलाई ॥ नगरुमझ
प्रभलीघाउठाई ॥ सभोनगरवालिउ
दीजाई ॥ केरवविसमेइहकिपाभइपा
कवनउठाइनगरइहलइपा ॥ वलि
उजाइगंगाकीउरि ॥ हाइहाइकहि
कीनोसोर ॥ सभदेषहिजवनैनलि
हार ॥ नगरसामकेहलिश्रापार ॥ सभ
पावेहलधरकीसरन ॥ नाहिंतारिप्रभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धकरनकरन॥ मातुलछमनाथौक
रै॥ दीनहोइसमधावहुधरै॥ लागेसम
हीविनतीकरन॥ धमअस्रनेनिजौनम
सीसरन॥ कवनकौटवपरेहमकोन
रषिआकौजैलाषद्मनेन॥ धकसीस
धारहुअसेउ॥ त्रिणसमानहैप्रभुअ
पे॥ उजलितमरेसीसहुजारि॥ तुमरे
वलकोअंतनपारु॥ तुमहीरवेसमे
सेसार॥ तुमपालहुफुनकरहुसंघार॥
महाप्रलेमहिपेकेरहो॥ कहिईछास
भजगकोदहो॥ तुमरेषेलीसभसं
सार॥ तुमराकछुनपारावार॥ छुपदे
नाथदेवहुकेदेव॥ हमकछुनजानेतु
मरेभेव॥ हमोअवलाकरीअनाति॥ वि
माकरहुमाइभगवानि॥ जेजननत
मरीसरनीपरे॥ तातकालसभदुषके
तरे॥ करीजैक्रपाक्रपाभंडार॥ हमरी
अवगनिसभैविसार॥ गरवप्रहारीदे
नारिष्यानि॥ शारनजोगनमवदेक्रपा
नि॥ भएक्रपालिमहाप्रभरोनि॥ प्रभा

२.पा.
म.
३.५

316

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रमिनासीसदाश्चकामि॥ छाडिउनग
रुनजलिमहिदईया॥ रामकृपाल।
महाप्रभभईया॥ वेरीकैरवदईवि
वाङ॥ सावप्रभूकीपूरीचाहि॥ पिता
सोषनदाजादईश्रा॥ वेरीदेषहाष
शनिभईया॥ दोसनिऊपरिपेकहा।
मारि॥ मातहायदीवेसवारि॥ चोरे
दीनेनीसहजारि॥ छेसहेश्रापस
भेसवारि॥ दासीदीनीपकहजारि॥
भूषनचीरवनावेहारि॥ वडुनीगहू
श्रांकेचनभार॥ लालनवाहारमहा
मपारि॥ लागावडुरिवितैश्रनिकार
न॥ पिश्रारीसतानमारीशरन॥ व
लेविरिश्रालेषीवलिरामि॥ सांव
प्रभूकेपूरेकांमि॥ पूरीदारकाश्राप
नाथ॥ सोवभनीजाहलजुसाथ॥ दय
वेजादवमिलेमजान॥ सभैरामजी
कीयेवषान॥ सांविविवाहकहिउवि
नलाई॥ हलधरश्रापेषेलदिषाई॥
प्रजहनगरिरहेनिहभांति॥ हरिसि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मरणमतिउपजैसंताति ॥ कुसलदमोद
नारदबनाय ॥ समनैतिग्यानसमकेमाथ
हीसिजगदीसरघुराषघुराति ॥ जनिति
सलबलषीभगवाति ॥ पहिलीला·

१६८

माषी ॥ सोलासहस्रपैकसउसमेकल
कीनार ॥ खननारदविसमेभयेपरनी
पैकैवार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सोलासहस्रपे
कसउनारि ॥ केशवपरनीपैकैवार
वेकमहरानसमहीवरी ॥ अतिअगा
धहरिलीलाकरी ॥ मनीवातिनार
दसरलाति ॥ विसमेहुआसनकेकां
नि ॥ किआयवरजकोनोभगवाति
देषोनोहरिगुरंषगुणाति ॥ किमकि
सवातिमहिकेप्रावबसे ॥ देषोउनेकि
ससमहिरसे ॥ पुरीद्वारिकानारदआ
पे ॥ निकरपुरीकैबागलहाये ॥ बोल
हिपंषीबागहुमाहि ॥ भांतिभांतिके
कवउहसनाई ॥ सागरषाइगहरी
भीरि ॥ महाविराजहिबलिकेवीरि ॥ अ
गमहिकरहिकोरिकेहुपारि ॥ संदरि

द.श्रा.
म.
१-९.

306

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोरिनपारावारि ॥ कंचनिकीसभुद्री
रमालि ॥ जहाविराजहि श्रीगोपालि
मंदरिमेरविनेविसालि ॥ तिनकेऊ
परपुजारमाल ॥ सुंदरीवीणीहारव
नारि ॥ लोगत्रुरीकेकेविउहारि ॥ गाय
हियहियहिकेशवराई ॥ भागित्रुगे
केकहोध्यानजाई ॥ नारदस्यापेहरि
कैधांमि ॥ जहारुकमनीलिउचनिसं
मि ॥ तिसमंदरिकोकहोध्यान ॥ जहां
वसैलछमीनारान ॥ कंचनिकोथंभ
नगमगकरै ॥ परैध्यानिसभपाना
किउरै ॥ फटिकिमणीकेवनेकिवारि
लालकरोषेमरकतपारि ॥ नीलकरा
सेछजेस्यामि ॥ मणीकेदीपकिभीत
रिधामि ॥ किरनसिधरेकपोलिवनारे
कुंजेअरुऊपरिरहैसहाई ॥ तिनकेपा
सिकचनारिवहै ॥ वकुलवोलहिवकुक
छुनकहै ॥ मंदरिकेपतेभूपअपारि
निकसैभुजउकरोषेद्वारि ॥ मरकलकउ
पनिवैठेमारि ॥ मेविवरतकरिमानरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मोरे ॥ मोसि पचासि करै सिलिमोरि ॥ मो
रिरटहि यनिसवदिरसालि ॥ नैसेमंद
रिराजहि बिसालि ॥ नीलमणीकी भी
तैरची ॥ गुलीअङ्कोले सिरीआषवे
वैडूर्गजमणीलगी अपारि ॥ रंगिविं
गिअनेनिहमारि ॥ आसविसिहमाव
सनिधरे ॥ सभकेंचनि केहीरे जरे ॥ ज
रीवंदीपेऊपरि तने ॥ माधवके अति
मंदरिवने ॥ मोतीलटकहि झलिउ।
करै ॥ कोरिसरिजआलाकोहरै ॥ पा
रिजातिके फूलहि हारि ॥ तिनकोप
रसैमंदिरिविआरि ॥ पवनजाउसोदाम
हिपरे ॥ अतिसुगंधसिउमंदरभरे ॥ वं
दनकावनिआपरजंगि ॥ लालजवा
हिरहीरेसंगि ॥ हसलदंनकोबेनप्रजे
के ॥ पावनऊपरासंदराअंगा ॥ विवावि
वलागीमणीरसाल ॥ वउरिमलट
केमोतीलाल ॥ तांपरिसेतविछाव
नेपरे ॥ रूपफेनसिउसमसिउभये ॥ नं
पतिरतनजनशीभगवान ॥ मानुषरूपी

द० स्का०
अ०
६०

307

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धरधप्रतानि ॥ वेदूथ्यानुकेपावकाक
हिउ ॥ परमहापादहूदेनहिगहिउ ।
स्वामिवरासीननकोंक्रांति ॥ पीनउ
परनादामननभीन ॥ सीसमकुरचनि
नगिमगिकरै ॥ नीनभवननकेनमको
हे ॥ त्रुंचरिशारकेसरमाल ॥ घलक
हिलरकहिउपरिभाल ॥ संदीति।
लकुप्रेमरसिमरिउ ॥ किनुसंनप्रभ
मीकोदरशनकरिउ ॥ जगमगानकुं।
उलहेकान ॥ निननैलजननकोरकमां
नि ॥ कमलनैनमुखिश्रंभिनहासि ॥
प्रतिप्रसंनिमुखिसदाविमसि ॥ के
टिकमलकेमुक्ताहारि ॥ मणिकौसत
कजोनधारि ॥ कंठिवनीत्रै रेखरमा
लि ॥ सिगुलनासिउवनेगोपालि ॥ के
मलपाणिप्रभपंकनिवारलि ॥ सिन
वरनकुकोमभुजनसरलि ॥ वेपरवा
हिविराजेश्याम ॥ सनिमननिपप्रभ
धकामि ॥ श्रागोरकमनवीननकरै ॥
कलप्रेमरकेपावकोकहै ॥ सरंघरा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सेपारूकवनमाखि ॥ केवनकेकनस
भनेोहाप ॥ हकवनवनतेनैक्ठनरहै ॥
भाषिहापसभसेवाकरै ॥ नारदसंदरा
पेसेभाई ॥ छवकउरेषिहिश्राविम
मार्ई ॥ उठेकसलनीतिनहीकालि ॥ पर्म
सेनप्रभवउरहिप्रालि ॥ नारदकेहरी
परमेवरन ॥ नुकरसापप्रभुप्रकरन
करन ॥ देईश्रादरूपरजेकवेठाईपा ॥
निपरिहैनकरीक्रपादिवाईपा ॥ व
ऊरिसंनकेथोपेपाई ॥ पगजललो
नोसीसिवराई ॥ हाथिजोरिबोलेभ
गवाति ॥ सबसिउश्रापेवउमहाति
कवत्रक्रननमरीहउकरोजो ॥ कवन
भेरलेआमेपरिजे ॥ नमतोपुरनज्ञा
निविज्ञाति ॥ हमत्रमनीनहितम।
हंपांति ॥ पावनभपेश्राजुगुरदेव ॥
नमरेपगकीवीजैसेव ॥ नमरेपग
विनभागानाहि ॥ ईहनिहवाहेहद
माहि ॥ बोलेनारदवउमहान ॥ नमो।
नमसतेपुरपपुरान ॥ पासमश्राईउन

ह.ना.
म.
१०८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेरे बानि ॥ मुकुको राघो अपनी सरनि
रहि मरम सनाजि उ कूप उजार ॥ बउद्ध
उमरै सभोसे सार ॥ तुमरो चरन धार
नमो परै ॥ नानकाल कूपक उनरे ॥
समाकरो हि श्री भगवान ॥ चरन धा
लो चमु कै अज्ञानि ॥ कृपाकरो लली
नारानि ॥ भगवान अपनी देह्रो धन ॥ गा
वेहि किरो तुमारो नाम ॥ नमो नमले
प्रभु अकाम ॥ तुमरे गनसिउ जगिक
उभरउ ॥ तीन लोक की अपदा हरिउ
नारद चलि उकरि प्रणामि ॥ देखि उ
प्रवर आश्रम के धामि ॥ सति भामा के मे
दरि गई या ॥ कृष्ण भी हरि दर्शन भई पे
सति भामा ईक सषी रसान ॥ ईकरि
सउ पवअ रुगोपाल ॥ पासे बैलहि
श्री भगवंत ॥ अलख अगोचर अबे ।
अनंत ॥ नारद को हरि दर्शन करिउ
वउ भाति हमरे पग मियधरिउ ॥ कव श्री
वे नारद सर ज्ञानी ॥ हम गिरहीन सम ।
वे हमरा विजानै ॥ तुकि पठहरि भगा ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गवानि ॥ जैसे सुकहि उरुष ज्ञान ॥ द
रसदेविनी जैसे यहि गर्इया ॥ नहां कम
कारसे न भई या ॥ आगे कमलडावरि
वाल ॥ प्रभु अनेंनि श्री गोपाल ॥ अव
धामजवगपे महांति ॥ आगे हरि उदम
ईसनानि ॥ मरदन होन कमलके अंग
नघनेवारे कोरस्म नेंग ॥ अवरधामम
हिपेठे गाई ॥ आगे कमल पहूचे नाई ॥
गये उरदउ उमन वअगलेधांमि ॥ आगे
नाउ करन चलि स्यामि ॥ अवरधांमि
नारदपगधरे ॥ आगे नाथ होम कउक
रे ॥ गर्इउ सेन फ़न अगले धांमि ॥ अब
निअवेपते से स्यामि ॥ अवरधांमि ही
भोजनु करे ॥ कमल नाम दुःख हरे
अवर धांमि महि श्री भगवानि ॥ फ़ूल
पे ऐल दिश्री नारानि ॥ श्री मालि उफू
ल पहूपेललै ॥ ई प्रगवारी कउन कलौ
अवरधांमिमहिजलमोनाथ ॥ मेरदी
पीमावे लैमाथ ॥ गनि काविपरीअ
नाथ रागु ॥ सभ मेंडु विलिनके भागु ॥

र.श.
प.
१०२

309

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गुवरांममहिगंउग्रारेहि॥ह्मपहो
ंसमग्रसनिलोहि॥वेकिपाममहि
तनैप्रतेनि॥निरमलपंडितनकौव
पानि॥वेकिपंनिमहिचोरेकिरै॥प्र
निवविचग्रमवारनगिरै॥रघटीसै
ंकमेररमाहि॥ंकचरमातेहत्तकु
लाहि॥वेहिपंनिरेसहिरघीग्रार॥व
पनरतवैसमेग्रसगार॥कहैकिकेनि
ग्राहेतनिविवाइ॥कहैंनवोसिउहरि।
कीचाइ॥कहैकिसहसमाकहिसाम
तिनकरमारसमपरैकांमि॥कहैकि
गनीग्रतिकसमेंडार॥कहैकिदान
करनकरनार॥किसीपंममहिडोग्र
नेत॥तिनकउकहना श्रीभगवंत॥।
काद्दकपेवाइंतलाई॥जिनेनेपा
माग्रनिसपवाइं॥बिलेनिनोकेपं
मग्रपार॥प्रेमादानकरनेकारनार॥क
हकिपविपरीवेलिघपरै॥कहैकि
वेसहतोनेकीरि॥वलिकउवोलेस्साम
करीति॥किरलिघरमरोजनिसपवाई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हमग्रसेनमहिरंगेनहनाइ॥ कहूकिले
वपरमखिमाति॥ मातपिताकैबेहेपा
सि॥ अखिमनेहूमिउवलेवाति॥ गंना
नाथवबहूसेहेपिनमाति॥ कैसेहोइ
रमोहस्रानपूरनुकरोनमारकाज॥
संध्याकहूकरनभगवान॥ जपैगाइ
त्रीसिरीनारान॥ बिनगोबिंदनकोउ।
पाति॥ सममहिषैलेहरिचलिपामि
नारदषकेबउमहोति॥ आगेमुषेअ
षाहनाराति॥ पेकथांममहिपैठेनाइ
चरनसाषरहिआलपराइ॥ जिसअ
नेनकोतोउअंत॥ सर्वबिआपीसिरे
भगवंत॥ मननारदआतिबिसमेभइ
षा॥ सभेमानमनकामिरिगउषा॥ दे
नहोइहरिकीरनकरै॥ चरनपुलावे
मनमाहिउ॥ नमोनमोनिरमलना
ति॥ सर्वबिआपीश्रीभगवाति॥ बी
लेकेसबपुरावेपुराति॥ सुनीयेना
रदबउमहोति॥ हमरीलीलादेषनम
ले॥ सकलजगतकेहमहीमूल॥ २३

ह॰ प्र॰
म॰
३०१॰

312

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अनेननेलोरक्षिथंन ॥ सर्वविसमेह
भगवंत ॥ सनीयेपुनषेउमतिकरो ॥
हमरेपगलोहृदैधरो ॥ हमरेश्रंननर्ग
दिमहानि ॥ नामपुराधैनेकसजान
सकलजगतिकोराहूदिषाउ ॥ धरथ
हभीनरिरहूलिकमाउ ॥ जगतिगुरू
हैमेरोनाउ ॥ मुक्तिविनरिकिनकोरू
पाउ ॥ धर्मसेउहोश्रीभगवानि ॥ धर्म
करोग्रहकरोवषांन ॥ सकलधर्मकी
रषिआकरोउ ॥ पापधर्मजगतनेपरहृ
रोउ ॥ चारवरनग्रहआश्रमचार ॥ तीनर्लै
केहमकरनारि ॥ तिउहमकरैसो ।
गग्रहभोगि ॥ हमिकोदेषिकरैसभ ।
लोगि ॥ हमकउदेषनभलहूपन ॥ म
किहीकउसिमरहृग्रवहन ॥ नारदपा
सेहरिकेचरन ॥ कृपासिंधजीनमषील
रन ॥ बामदेवकुकेदेव ॥ सभहीविनव
ननमसीसेव ॥ गईउभक्तमुकलमेला
सि ॥ कृपाहरकरूहेभगवानि ॥ बहुरू
मुजैनेमाहीकरो ॥ पेपागिहमरेहृदैपते

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भयेकपालिश्रीगोपाल॥ जनक
उदीनैसानदिशाल॥ बरुस्यंदननै।
साहीभईश्रा॥ समअज्ञानहृदैनेगई
शा॥ वीनवजाईनारदसंत॥ हरिके
गायेनामअनंत॥ प्रेमपरवाजइनला
ईउपाप॥ हरिगुणगाईमिटाईउनाप
नारदमेवरनमउलागा॥ जानेअप
नेकैभागा॥ विसमैहोइरहियोमनमा
हि॥ हरिकेषेलननवानेजाहि॥ जगमहि
विचैहैहरिजनकैहै॥ तीनलोककेअ
घकाउरदेहै॥ ईरलीलाकोइसनुमैमना
ई॥ कोउलननलेहृदैवसाई॥ ताकोक्रम
केहैहरिताई॥ प्रेमिभगतिनिमायवकोप
ई॥ किमगुणवरनोकपनुनेपानि॥ ।
मनिनिज्ञालिवलिहरिमाणालि॥ ५६
सो॰॥ नितकरमकेभावकरैताकोहरि
निरवाति॥ यहृश्रिहृमहिकैसबले
रघुवाति॥ २॥ चौपाई॥ नितकरमके
भावकेकहै॥ चानकमहिहिरहृदिग
है॥ जवहीभ्रमभमहारततहोई॥ हृदैनिन

द॰ग॰
म॰
१०५१

311
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गवचरकायेई॥ नवद्वीकरकरसवड।
सनाई॥ यहिग्रहिनेजागैहरिराई॥ ह
रिकोविरहनहकमनसहै॥ ऊरकरिह
मेरेननकडरदहै॥ किउबोलिओईहवढ
गवानि॥ हूटैकंवनेहरिभरनार॥ जागेके
सवक्षपानिपानि॥ प्रभुरषोनमपीभ
गवानि॥ पंषीबोलेसवहरिमालि॥ सभै
नामम्रुषहूदैगोपालि॥ पारजानकेऊ।
लैहारि॥ केप्रावजीकोसोभहिउप्राय॥।
तिनपरिउंजहिंभवरिहजाति॥ मधुरग
गसुनिकरातिउचारि॥ मुनकूपंरेमधके
रम्रुवैनार॥ हरिजलगावहिमदाउप्रार
तिम्रलीसंभेप्रभकरनईसनानि॥ नीरपि
वाहि सिरीभगवानि॥ प्रासनधारवई
भगवंनि॥ प्रुरषिसनाननिकमलाकें।
नि॥ प्राणिप्रापनाधरैध्यान॥ जैसेघरे
वैसेमहानि॥ जउपरमानम्नजेपरिप्रा
लि॥ कोरेउंसनानिप्रभवैहेम्रकाल॥।
केवनपुरषध्यावैभगवानि॥ कछुउ
ननाकेहेनवषानि॥ उनीप्रानानलपै।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोदेव। सतिव्रतसध्रमअ्रलषश्रभेव॥ अवि
नासीनिर्मलनिर्वानि॥ नमनेपरैअवि।
नपरानि॥ ज्ञानीरूपविज्ञानहिभरे॥ गुण
अतीतहरीनिर्मलधरे॥ नमामिरतनेरह।
निअनेन॥ सिवप्रकाशसंभभगवेतनि॥।
चैरेनवैदेनिरंजननाथ॥ अनिपरीसुर
नकेसीनसाथ॥ सनिअरचिनअनेदअर्के
श॥ अतिअसंनप्रभसदाविनाश॥ अप
परैनैपरेअतीत॥ सभनेउचापरमपुनी
त॥ ऐसाशुरषध्यावैस्याम॥ रविसलिप
उनननाकेधामि॥ मनकोईसंनसनेग
मजाई॥ सोउशुरुषहैकेशवराई॥ कम
असंभूभगवानि॥ आपेआपुनाथरध्या
नि॥ निहचैजानऊसभैमहानि॥ कम
असहैउरषिपुरानि॥ वीनैरैनिप्रानि।
नविहोरै॥ रविप्रध्यानजगतिकेधोई॥
नारप्रावैमहलोमांहि॥ महाराजकेद
शनपाहि॥ केवनचउकीनगासिउसी
धकवसासिउआछीकरी॥ कांचीकर।
हिनाइवलिवान॥ सतिवउभागीवडेसहं

र॰ मा॰
म॰
३१२

312

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नि॥ चउकी पर बैसे भगवानि॥ मानुष
रूपी पुरष पुरानि॥ मारहन होनि कम
के संग॥ निर्मल नेल चेवेली संग॥ नेप
र्मी रसिउ क्रई सनान॥ प्रभु पविना
सीउ रष पुरान॥ सेवक उवकूर घंगोछा
देई॥ अपुने हाथ मह प्रभु लेई॥ नन
के पमैके श्री भगवानि॥ पुरष पुरानन
भादि नारायन॥ कोमल धोती के रमा
लि करै॥ को धे पीत उपरना धरै॥ सेवक
भंगीप ऊपे धरै॥ कंचन के नग जगमग के
रै॥ तिन पर चरहि श्री गोपाल॥ पकू वेवा
जै परम रसाल॥ नैसे गाजै मह ललि सा
ले॥ कंचन मिउ मह लोकी पाल॥ पकू
वेवा जै गाजै मोरि॥ सकसैनां मिल करते
सोरि॥ तुलसी निकट जाई प्रभु बहै॥ हरि
नमाई नमुष नै कहै॥ जपै गायत्री जाउ
नैति॥ गिरही कौ तिउ श्री भगवंति॥ दे
व पितर कौ तरपुन करै॥ हरि प्रसादि म
मे निमनरै॥ रवि कौ अरघु कराहि फुनि
स्याम॥ तिन भवन के पूरहि कांम॥ कर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

करहिकलकंकनिगञ्ञारति॥ तिनगा
षाकोहोनवषानि॥ संदेहसायहृयति
उभरी॥ स्ववरनसिंउत्रूपेभुजरी॥ केउमे
लीमुक्ताकीमालि॥ पीतपटंबरपीनर
माल॥ विपङ्कउमायवन्नीदेह॥ हरषहे
इसवब्रसनलेहि॥ नोरेहायष्ठी भगा
वानि॥ हेसआमीनिसमरूपनारानि॥ ब्रम
ननवेआसीसाकरो॥ देषीउउछुघ्यापके
दरे॥ सषीहोहिचिरजीवैस्वामि॥ सभ
हीपरहितेरकोमि॥ केनीगाउदेइंभगा
वानि॥ तिनकीमेषिआहोतिवषानि
वउहलषयतिसंदरगाउ॥ हृसारवउ
रामीकेषनवराइ॥ पेकपेकरहमहृषेनी
देह॥ मधुमदनमेव्रसनलेहि॥ वंदना
ग्रगारसंगयमपानि॥ पानिजानिफलहके
हानि॥ उहमेवकरहिआमोयरे॥ मषुने
मषुनेसेवाकरे॥ नंदनमञ्ञफलहोत
परहलाननञमनकैलाई॥ पाछैलाबहि
ब्रमषनेनि॥ ब्रसनरेवब्रमकमलाको
नि॥ फनिवाणाहरिपहहरदिग्रंग॥ नषने

ह.भा.
म.
२९३

313

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वारेको स्थिन तेग ॥ वक्रूरो सेवक लिआवे पं
न ॥ अपने हाथ लेवै भगवान ॥ कृपा लि
यअस्मनक उदेहि ॥ तआसति वोलिम।
षिअस्मन लेहि ॥ वक्रूरो भै मैम हलो भो
हि ॥ पाछे आपि कसलजी षों हि ॥ पाव ष्ठुक
हुकें चन परा ॥ दानक सतिह से नीका
पावपरा के चाउ लिआवै संत ॥ नांम हिम।
षरे षहि भगवंत ॥ दरपन लिआपे हरी
के लोकि ॥ देषे कसक्कु विवनी अलोकि
दरपन देषै स्त्रिरी भगवान ॥ उरषपुरा।
नन स्त्री भगवान ॥ वहरगउला वैराप।
अनि उनीन हरि त्रिभवननाथ ॥ कुर
हि अषभक्रुनि स्त्री भगवंत ॥ कुहे विप
को कमलाकंति ॥ वंदीजन इआरै जस
करै ॥ कसनाम सिउ मंदठ भरे ॥ तिनक
उभै नेदान दिआलि ॥ कलम उजसकी
येनि हालि ॥ षत्री आवै हरि के द्वारि ॥ ति
न की होई अभ कउमार ॥ तिनकउपा।
नप ठेच निस्पामि ॥ सभुही पूरै तिनके
कामि ॥ वैसमुद के मजरे जाई ॥ सभही

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मनेश्रमहरिराई॥ यहियहिनेतिकसेभग
वंत॥ माधवधारेरूपधनेन॥ वाहरूपाई
येकोहोईनाई॥ अतियविनकछुकहीन
जाई॥ निकसिहारिठाढेभगवानि॥ या
वीरिसमिउनकसेमानि॥ वाहरठाढेउ
रकेलोक॥ छवमाधवकोदेषलोक॥ न
रिस्पानिहूरैमहियरी॥ सभनोमिलउउ
उमारि॥ समेलकोपनेदैभरि॥ नोषसभ
केकरसिउकरे॥ दारकुलिसाईजेरमव
नाई॥ रथकीसोभाकहीनजाई॥ केंवन
कोरथुनगमनाकरे॥ दसोदिसाकोन
मकोहरे॥ लाभतनवाहररथवेप्रपार
होरिरघमोरैसप्रपार॥ संदरवीरेपर
मधुनिति॥ निसरिनजितिकेकेपावती
ति माधनजीनलगामजराई॥ केंवनलि
उनगधरीवनाई॥ महासकनिहरिप्रम
रूमाहि॥ प्रसलोकेछिनिभिनरिमाहि॥
दारकिनरेहाथनेस्याम॥ रथचारिवैठे
मरणकोम॥ रथपतीऊपवलीयेवैठाई॥
केरमनेहुजनचमरफलाई॥ सानकना

द॰ग्रा॰
म॰
२॰४

3।4

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रवरूसैमंगि।बीजनुकैरसनेहैसंगि।रू
रुपेहरूपेवलेमुरारि।सभैकरोषैप्रावै
नारि।रदैषेप्रपनाकेननिहारु॥ननसमे
नमवगरैबारु।मंदहासरूसदैषैस्यामि
सरनभयेपेवित्राकेकामि।मनहरिलिन
काहरिलैजाई।लेहीगयेनवकुरोपाई
रपपरिकमलाकेपतिचरै।वंदीजना
वसप्रायोकरै।सभावीचिप्रावैभगवं
त।प्रभप्रविनासीपुरषअनंत॥जादव
सभउउनाकरै।हरिसुरतिलेरुरैषै
कैसैसभावैसेगोपालि।प्रतिप्रनंतछ
वमहारसालि।नामसभावैसेगोपालि
प्रतिप्रनंतछवमहारसालि॥नामस
परमापरमपवित्र॥नहींवसित्रप्रजेन
कोमित्र।छैगुनसदासभाकैसाथ॥नरा
विराजैजादवनाथ।भूषनपित्रासन
सननसीन।नहाविराजैप्रजुनमीत।ज
रननमितनसभाकैम्महि।नहोविगासिद्द
रिदरसरिषाहि।जारववीचवैसभग
वंतिपि।प्रहनछत्रमधिसोमसमानि।जे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नैकरमकौ चलि स्वामि ॥ आपसभनैसर
धकानि ॥ लोगनकउदिबरावहिराउ ॥
आपमहाप्रभुवैपरवाह ॥ यहिलीला
किया गुनवरनौ श्रीभगवांनै ॥ जनलि
हालवल्लभ्रथप्रगनि ॥ १५८ ॥ साषी ॥
सिंघासनिवैसेप्रभुकमलनैनकरतार
चारिउ दिवैसेविमलजउकुलकेपरवार
चौ० ॥ सिंघासनवैसेभगवानि ॥ आदि
निरंजनप्रथपुरानि ॥ हरिसिंघासन
वैसेवने ॥ ताकेगुनसुजानिनगने ॥
सभनेठवाजगामगकरै ॥ दसोदिसाके
नमकौहरे ॥ मणीचवाहरजेउप्रपार
वैठनहारामकुंदनमुरारि ॥ जवसिंघासनि
रविमीवनी ॥ सिंघासनचराकेत्रिभवनि
धनी ॥ पीनउपरनाबीजसमान ॥ कोउ
मैनमैश्रीभगवांनि ॥ गुनजनआपेमग
रहैन ॥ सभकउनेधाहिपंकजिनैनि ॥
घरलाधरेहुमावनहार ॥ तिनपरसेउ
प्रभमनतारि ॥ रसैकपामिधिमहाउदारि
रुषदारिदसभिदीवेविडारि ॥ वंदीजन

द०शा०
म०
१८७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फुनआमेघरे॥तिनतुनाथपदिमजरेके
रे।बहुरेभाटिकविनसनाई॥विदिमा
निपरिप्रभकीकाई॥फुनिआपेकल
मोचनहारि।गणेवंसकरिदिपिआह
बहुरेपोडिनघरेमज्ञानि।निकरिवैठा
पेश्रीभगवानि॥विश्रासआसनवैठा
पेस्याम॥पुरषसनातनप्रभअकाम
९सनकपूजिउश्रीनरहरी।बहुरु।
विश्रासकीपूजाकरी॥पंडतलागा।
कहनिपुरांन॥सभासमेतसुनैभगा।
वानि॥जोजोभगतनप्रभकेभए।जिन
केउप्रभेदातिप्रभदए।ताकेपा
ग्नेभगवंत॥अरुअपनेअवतारअ
नेत।निसीपूजेकोआउडुआर॥द
रिकउसेवहिसंतहजारि।तिनोआई
विनतीउकुकरी।सुघनिधानसनी
पेनरहरी।कोउडुरूपठाठेहैपउवी
आपआवाहेहेजदकउर॥आज्ञाकी
नीश्रीनरहरी॥भीतरलिआवहुघ
पानकरी।भीतरिआइउवहुरमरछान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सघरिपदेखिउ श्रीभगवानि॥ भिनपर
सकेशवकेचरन॥ कृपासिंधुजीनम
रेशरन॥ नाकोबोले श्रीभगवान॥ क
होभयानकवनसजान॥ मनमानेरीप
रनकरउ॥ येषहूषसभनेरेहूरउ॥ हाथि
नोरिनिनविनतीकरी॥ सनेनाथजी
श्रीनरहरी॥ ग्रठसठिउपरिबीसहजारि
निनराजाभिलिकरीउकार॥ जरासंध
राकेबलवान॥ हमरीसरनिपनेभगवा
नि॥ हमकोतिनेसेदसेकहे॥ हमरेपमि
चारिभीनरिगहे॥ सरनिनमारेश्रीना
रान॥ दुष्टविडारनिकृपानिधानि॥ जो
जेनि शरनिनमारीगहेउ॥ उधीनको
ऊगमहिमरेउ॥ जरासिंधहमरेसघ
हेर॥ हमसंहेष्ट हाथीवन्नधरे॥ तिन
हमरोकेपाभयधीन॥ कोजेकृपाप्र
भूपरवीन॥ हमरेमागोसहिवारि॥ न
वेनसमकेवडोगवारि॥ पेकिवारिभागे
भगवान॥ नवकामहाभयेउ श्रभिमा
न॥ किसीनकानेश्रापसमान॥ तीपेरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देगहिवओरगुमान॥ प्रगटलीउनमषद्र।
अवतार॥ हरकरनधरनीकोभार॥ उग्र।
विडारणदीनदियाल॥ धर्मिव्रषिको।
हेप्रतिपाल॥ जरासिंधुहैहमरोकर्म॥
यहिपरिवेलम्रकरहिसोभर्म॥ जोजन
नमरौसरनीघरै॥ नानिकालिविषिग्रा
कउनरै॥ मुकंधोमहैनमरेचरन॥ कारे।
कर्मेनमारोशरन॥ कारट्टकर्मेहमारा
नाथ॥ वंधमुकसभुनमरैहाथ॥ जवल
गसभजगासिंधनभपे॥ तवलगआवरु
करुणामपे॥ होवहिभिंगीकीरसमानि
मैसेसुनोप्रभमरत्तानि॥ सभहीमागप
लेवहिजैवै॥ कारनमारनैहोइहैनवै॥
नमकेजानैनैनैनजगदीस॥ करैमुउ
मतिनमरीरीस॥ सभुककुवानरेंम
द्रिपाकहै॥ निपटकपटहमनमरेमहै
दीनवंधदुःखकारनहार॥ त्राहित्राहि
केपापककरनार॥ त्राहित्राहित्रउद्भुल
केभान॥ त्राहित्राहित्रुतमगवान॥ त्राहि
त्राहित्रिभवनिकेनाथ॥ धरेध्यानतिं।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बिनसमकेसाथ ॥ मरनजोगजगदीसकि
प्रीति ॥ दुष्टीकेषरकालदूकेकाल ॥ हम
बंधनकउजोगप्रजानि ॥ करते थेमनम
हिअभिमानि ॥ तमबिनकछुनगनेआ
प ॥ नउहमकोईदूलागैनाप्र ॥ निपटको
रककरिआपपछुताने ॥ अनिरसालिहरि
नामुवषाने ॥ नरेवेगउउजलसेसारु ॥
जाकाकछुनापारावारु ॥ अबहमनमरी
मरनमुआर ॥ प्रभुअनेजिमाधवनिसता
र ॥ मुक्तदाननमरेहीउआर ॥ हरिपछुता
नहमकरीप्रकार ॥ हमतेविनुभगवा
ननकोउ ॥ कीजैमोईजोईछाहोई ॥ सबै
संदेसेसुनेमनुगाति ॥ अतिरिआलिपीउ
षनिवारि ॥ ईसीसमेहरिसेनउजोन ॥
जिहमहानकोनिरमलचीन ॥ आवे
नारदनमकेराह ॥ हरिदेषनकीहिआरे
चाहि ॥ गंगाजलसिउभीगीजटा ॥ जिन
नेनिकसतिउजलछटा ॥ उठेसंतनक
उक्रपानिधांनि ॥ प्रभुब्रह्मनश्रीभग
वानि ॥ चारनछुहेहरिमनकिसाथि ॥

द॰ प्रा॰
म॰
३१९

317

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मैसीकृपाकरीजगुनाथि॥ सिंघासनबै
ठाइउसेन॥ आदरुकरैसिरीभगवंत
मनिकोबोलेकेशवराइं॥ कछुनारद
तीवातसुनाइं॥ तीनिलोकमहिजो
कछुवाति॥ तुमसभजानहुनीकीवा
ति॥ तुमसोमुवरुनकोउमहानु॥ तउ
सानैसानारानि॥ तीनिलोकिनोहैस
षिसाषि॥ तिनिचीनहुकेहमिहीना
थि॥ पांडवकीकछुवातिसुनाइं॥ फा
कीजाइंवंचि भाइं॥ किष्णाकीपावार
रिवहुसंति॥ कैसेकारहि हुहैमहिमंति
तिनिकीवांछासभैवृषानु॥ आनिरि
षालिनबडेमहानु॥ बोलेनारदपरम
सुजानि॥ सभुकछुनहुहेभगवानि॥ के
सोष्मेनउ जोजानहुनाहि॥ सभकछुत
मरेहृदैमाहि॥ मानुषिवपुतुमलीउमगा
रि॥ तिनिहिकारनिपछुतिकरनारि॥ वि
षिविनसभोगानपुरानपरै॥ तिनिहिति
मितिहरिकउनकिकरै॥ हेप्रनेतिगु
णिअभैसुष्याहि॥ पुरषिसनातनिबेप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रवाहि ॥ आदि निरंजन अचेष अलेषि ॥ म
हेविज्ञा पी मानुषि भेषि ॥ सम भने निआ
प्रभ निरवाणि ॥ सोघ जोगि वेदि कुकी
धाणि ॥ सानि रूप विस्तान हि मरे ॥ नाना
विधि तिनि कउन कि करे ॥ विननी लनी
पे श्री भगवानि ॥ सभ द्रुल मोचन कपा
निधानि ॥ जगुराज सी पोउ व करे ॥ तुमरे
पगलहूं रै थै ॥ धुन जग का कल परीन
धनि ध्रुनी न ध्रभ ने रे मीन ॥ तम कइ वि
न वै रि न अररे नि ॥ कवचा वजुये पंक
नै नेन ॥ ध्रुवन लने को ऊन मरा नाम
रसना जपे कल चानि स्याम ॥ हृदै चरन
को धरनि ध्यानि ॥ नैनन पावनि पद्मनि
रवाणि ॥ सावधान जहां लगा हि पाई ॥ नि
तिन को महिमा कही न जाई ॥ हिली वलो
देवकी नंद ॥ वासुदेव जदकुल चंद
मोजन तुमरो दरशनु करै ॥ भवै हीडफ
नेजन नमन मरै ॥ अभे धाम प्रभ तुमरे व
रन ॥ पांडव परे नमरी शरणा ॥ कैसे तुमरे
वरनि नाशन ॥ ककुतिन को हउ कराउव

द॰ शा॰
म॰
३९८

318

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बांन॥ निरूपगानषकोरीगाथार॥तीना
लोकयुषदेनविउार॥वरूजलतारैनी
नोलौकि॥गंगाकाहेजगतिकेसोक॥मे
टाकनीसवरसिमहिकहै॥सोरसिंगते
भूकोवहै॥गंगाधारिउस्तममहिनाम॥
निरूपासेपाइस्नाहरिधांमि॥भोगवती
कहीयमहिपाताल॥तीनलोककउकरै
निहाल॥गावहिपदकउवेदपुरानि॥
रिषमुनिध्यावैहहैध्यान॥सेषमहेस
सुषनसकोकहै॥षोडनपारूनमालन
है॥हमसेदीनप्रलापैरागै॥डोपरहि
नमरेपानिसिउलाग॥थैसेपगादिलीम
हिपरो॥सकललोककैपावनकरो॥वे
लेकेपावकपानिधांन॥कीजैकहोस।
नोसरज्ञान॥राजहतइहकरेवषान॥
पुनिइउनारदकहिउद्दोन॥कथनका
जकउपरहलेजाउ॥रषनिवारनमेतो
नाउ॥नारदवोलेनानाभाति॥वलिसि
उभरीकसकोजाति॥मांहिजतासिंप
वलिवान॥प्रेमसनतेश्रीभगवान॥येक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहतिपांडवकेजाइ ॥ तिनकेतनिका
नाउमिटाइ ॥ वूझतेवोलेश्रीभगवान ।
ऊधवसीहैमेरेप्रान ॥ दोउनेत्रहैऊधवा
मीत ॥ श्रतिहितपालमनतिवउश्रगुनीन ॥ हा
थकमलहिऊधवकेहाथ ॥ लीयेचक्रपानि
पत्रिभवननाथ ॥ कहऊधवकछुवात
वीचार ॥ ऊधवबानजीषरेउदार ॥ जोहम
कऊतमनेञवनाहि ॥ सोऊकरोगासंभा
नाहि ॥ ऊधवजोरेहाथसुजान ॥ विने
सनीहेभगवानि ॥ त्रिषमेदिलीवलेना
रान ॥ पांडवपंजनमारेप्रान ॥ तिनका
नाषसवाजेकान ॥ पांडवबीचुनमा
राकाज ॥ वूझेतेवलीयेमागधदेस ॥ न
नकउकीजेवृसनभेस ॥ श्रर्जुनभीम
सषालेसाथ ॥ चलीश्रऊजरासिंधके
नाथ ॥ महावलीजरासंधश्रजाव ॥ गा
हिरहिश्रावमनमहिश्रभिमानु ॥ दसस
हंहसतीवलधरे ॥ श्रतिश्रहंकारीने
ऊनतुरे ॥ वानेईहीजावनाकरे ॥ सेना
श्राउंकेलालते ॥ वऊवसतनलेईगाम

द॰पा॰
म॰
३०६

319

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न। ईरूविधकी जै श्री भगवानि। भीम
सैन सितु राजा लरे। नमरे आज्ञा सिरप
रधरे। मारेगो निहु भीमसज्जानी। जाके
सिरपरि श्री भगवानी। कहने कोहे भी
मसुजानी। मारेगो निहु श्रीनारानि। स
बपांडवके सरे काम। जगन मधुपावा
रि श्रीघनस्याम। जरासिंधकी बंदीरा
ने। तिनके सरे सभही काज। अवरा
नु के बिनती भगवानि। श्रीनारिना
मी पुरषपुरातनि। जोराजा बंदीमहिपरे
हे बरभये निमाने षरे। तिनके चारि
हु षनमुकुउ माहि। सुषचुमरहिलेगो
दलसाई। ते बालमको प्रेमे कहे। न
मेरे पग गहि दे लेग है। मतते बंऊ है हम
रे बालक। आवहि पिता तमाए लालक। दे
वकीने उभगानिके चेडु। आनिहि पाल
हि रिदेव मके तु। करे मक्ति प्रभ ने रेना
ति। जरासिंधको गारे गोषान। जिनि
प्रभमीनाका दुषहरिउ। लेकजराई
क उनकिकारिउ। जवगजराजसमा

रैसाम॥ प्रभपरचोनमकल्मषकामि॥
षोचपाईकृपाभेउाति॥ माधवजीकउ।
लगीनवार॥ मगमपनिम्रक्रोकीउनाए
नि॥ अपनाअपीनकैपूरेकामि॥ संषि।
गैगोपीजविहरी॥ निनीकसलकोकी
रनकरी संषचूरूनेलइक्रुउाई॥ करू।
णामागरिकेशवराई॥ जरमहिसिमर
रूवउेमहानि॥ रामकस्लहरिश्रीभगवा
नि॥ अर्हेत्रुधकउकारनविनास॥ मोष।
धंममहिपावैवास॥ ऊधवकहनिमनो
भृगवाक्रि॥ हमयहिवाक्रुहिहैनाएनि
नमरीभगतिक्रैरिदनरैन॥ ऊपनमा
रदेषहिनैनि॥ नामहिश्वंनरूनेक्रुन
पारो॥ सहमाएमोहरिजेरो॥ दिलीव
लेश्रुक्रूरमुरारि॥ लेआगिआहरिकोव
उवारि॥ ऊधवकीहरिमानीवानि॥ नी।
कीहीहमारेनानि॥ नारदकोहरिवा।
नादूईपा॥ अपनेजनिपारिकोनीमउे
पा॥ लेबागाजनसिरिपारिधरिउ॥ प्रभ
केसनमुषलोवापरिउ॥ उठिबागाले

र॰षा॰
म॰
१२॰

३२०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परिहरिउ थेगि ॥ हरिबागेमहि नानारंगि
बोलेमुषते श्रीभगवांनि ॥ सुनीयेनार
दवउमहांनि ॥ पांडवकोजाइंकरोवषान
तुमरेभावेसिरीभगवानि ॥ नारदसुहे।
कमलकेपाइं ॥ हरिमूर्तिबरनउंवसाइं ॥
हरिआज्ञानारदकउभइ ॥ तबहीसंतउ
शरीलइ ॥ दिल्लीआपेवउमवांन ॥ पांउ
वपहीसभरेवषांन ॥ कुंतीनेंदनहाथ
हिभरे ॥ वउकाजनारदजीकरे ॥ पांडवा
सिमरहिआठोजांमि ॥ कवआवहिंगे।
श्रीवनस्यामि ॥ राजहूतकोबोलेहरी
तुमरीबिनतीहूदैधरी ॥ तिनसंतउको
जाइंसुनाइं ॥ मागआवहिकेपावलांइं
मारोजनरासिंधप्रज्ञानि ॥ जितिसठित
मरोमेरिउमान ॥ तांतेमुक्तुमकोकरो
सभिदुखदेपुतमाराहरो ॥ कीरिउंउ।
नेवलिउमंज्ञानि ॥ हूदैवसाइंउश्री।
भगवानि ॥ जाइंसंदेसातिनकोदेइंया
हरषिसभकाहिरिदामइया ॥ इंकटकि
हरिसिउलागोध्यान ॥ आवहदीसेका।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विभगवानि ॥ देहिदुःखसुमभड्डीभुल्लिगं
या ॥ कसध्यानहृदेगाहिलंइया ॥ रमनाज
पहिस्रणारिमकुंडु ॥ गारदवकीपानिविभव
निपंड ॥ माधवकेसवहरिनारानि ॥ जि
निनिहालिश्रीभगवानि ॥ १५६ ॥ साखी ॥
याताकोनिकलजीचलोसकलपरवा

रि ॥ कुंभीनेयसमहाजननिनसिउवउ
पिआरि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ आज्ञाकरीमकुंदि
मुरारि ॥ हमतेसभेचलेपरिवारि ॥ चल
केवोलेमिरोचनिसपाम ॥ रहोगुरीयवहि
हवलिनामि ॥ प्रतिरहेकेपानकेवीर ॥ हरे

द. क.
पं.
१११

321

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लीयैगहिस्याम याली र । सभह रिछीयल्लो
मीनालि ॥ सभहीप्रानपिआरेवालि ॥
केचनकेडे लैनगजरे ॥ तिनपरिमहा
लिकलवे.चरे ॥ तिनसंगीदीनेचकुम
सवार । चहरिसहोनीचलैउकारि ॥ म
हलसंगिपिआरिचले ॥ नतिपनिसंद
रिचवरिभले ॥ चेडासिपरितिनिकै।
हाथि ॥ प्रसेउरषिडेलीचकुसाथि । ह
रीआहाथकुरंगिविरंगि ॥ पोलपोल।
दोईमहलकुसंगि ॥ मानेहाथीकरहा।
गारि ॥ करउपोकेचलेसवारि ॥ प्रलकु।
ऊपरिकरअनेनि । समनोकोपनिसी
भगवेनि ॥ दाकुलिआईउरपहिव
नाई ॥ रथिकीमहिमाकहीनजाई । के
चनिकोरथजगमगिकै ॥ दमोदिसा
कैनमकोहरै । लागेरतनअनेकका
र ॥ तिउनमऊउगनिकरहजारि ॥ बाले
प्रसमहाचलिवानि ॥ तिनकोमंत्रि।
सिरीभगवानि ॥ माघतिजीनलगाभि
ननाई ॥ अगमगानिहुविकरीननाई ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मंदरियीवामविग्रस्कोनि॥कमलिवैति
मेरिलालिसमानि॥मंदरिडेविनमखो
माहि॥नीनिलोकियस्सोमानाहि॥द्यो
किगहेहाथिनेस्यानि॥रथि.यरीवैठिन्न
यकानि॥रग्रहरिजीकोचंदिसमानि॥मे
घयरासे श्रीभगवानि॥पीनउपरमाद
मनिउपमैपंनि॥मेघघरासमसिङपी
वनी॥निउरथिङपरिनिमवनियनी॥दा
रिकेप्रेशमसमानन॥उमडेशससमङ
समानि॥श्रसस्यीवउचीकरी॥फेरिश्र
क्रिमिरुपरिपरी॥वलेपंथिकारिङचेकं
नि रथिपरिवैठेश्रीभगवानि॥महाल
कनीहरिश्रसरुमाहि॥श्रमलोकछिनि
मीनिजाहि॥पंथिवलावेदारकुसंन
श्रनिहरिमेवकुवशेमरंन॥श्रमलिना
गारहरिकामईया॥स्नुरुकाहिरदाश्री
गईश्रा॥श्रवलिमेरिवाजीकरनाई॥सव
उसश्रगिलगिरहिश्रामसमाई॥वलोना
यलेनमिथीवारि॥निरीश्रवालकिव
रेश्रपारि॥कोनलिचोरकेउहजारि॥श्र

रु.गु.
प.
३२२

322

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

समषबासनिषरेक्रपारि॥ संगसभउरर
वलेवजारि॥ सभनोकेपतिकसमुरारि॥
सोरठिगहिचलेभगवंतनि॥ कसक्रपा
निधिकमलाकेनि॥ मारगिसनमधुमें
वाहिलोकि॥ हरिमुखिदेखिमिटावहिसो
कि॥ मधुमुरदलिकोदरसनुकेरे॥ कोरि
नमकेपानकिररै॥ सभकोनोषहिर
रिवनिसागि॥ सभविधिसमुकेशरि
कामि॥ सभमुख्योउषरेदर्शनिलागि॥ नि
नेलोकरकेपुरनेभागि॥ दिलीआवे।
श्रीभगवानि॥ मानुषरूपीपुरविस्तानि
पांडवमनीकसकीवानि॥ आयेप्रभव
लदेवहिनानि॥ भूपेजुधिसहरहरि।
कोसन॥ हिररेभीनेरिश्रीभगवेति॥ का
नहस्मनेसिरिगोपालि॥ नगनचानरर
रिउनिहकालि॥ संगहीधापेवागवीर
आपेहमरेस्यामप्रायोर॥ संतजुधिसटी
परसेपाई॥ प्रभपुरवोनमलीउठाई॥
करुणाकरीप्रभहरिराई॥ राजाहीनोकं
ठिलगाई॥ भईउमंगतनमुलीसभदेवहि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बिहवलह्वैकमलसनेहि॥ उमगैनैनिप्रनं
सीनिर॥ देषेश्रगश्त्रिलाईपवीर॥ कबुनक
हिसाकैहरिसेन॥ फुनफुनमिलैश्रीभग
वंत॥ राजाकेहरिपरमेपाई॥ केशवकीग
तिलषीनजाई॥ फुनभीमकेपरसेचरन
हरिप्रभुसदनविश्वकरनकारन॥ केउ
मिलेअर्जुनकउसमाभि। भरनभपेसब
केकामि। नुकलसहउरभाउसहदेव। मि
ह्रकरीचरनहकीसेव॥ द्विनकरिलामि
रहेहरिचरन। कमलनैननीलमनीश्या
न॥ धेउकलजीलयेउठाई। माधवराघ
केगिनगाई राजासमिनगरकेलेक॥
हरिमुषदेषिमिटेसमसोक। समकोदेष
नैननिहारि। मषउपनावहिप्रभुमुरारि
जयानेमात्रभभ्राटरहकरै॥ हरिसमनो
कोश्रापदरहरै॥ ईकहापिमायउभहरै॥
नगरिवीथिवरैभगवानि। नगरुवनाई
डोमरगिसमानि। चंदनचारचितउराहिव
नारि। हाथिपैनावेमरुरासालि। वेदिगा
लचारिचारिद्वारि। राजनंपषकतिवलेमुरारि

द०प०
म०
१२२

323

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बगरनाइकआइयाइ ॥ पासेतिनकुकस
हीताइ ॥ श्रीपतिकरनजानापाइ ॥ हरी
भूनलेहूदेखसाइ ॥ प्रभुहिकुशलहूदे
लेस्वामि ॥ सभहीप्रहितिनकेकामि ॥ पि
कवीआजाइकुपरिचरी ॥ पुहपुहसिउ
हरिपूजाकरी ॥ कोउराहिमोतीमाल ॥
हितनकरिपूजनश्रीगोपाल ॥ धीनपेल
ईकवरपैतिनकउ ॥ सदापिआरीजोन
रहीकउ ॥ तिनकउहिहकृपानिधिक
रे ॥ तनमनकीसभपीडाहरी ॥ वहुरा
पीहरिदर्शनलाग ॥ सभनेवडेकभागे
भाग ॥ हरिविसरनिहूदेलेपरी ॥ हूदेवी
चफुनपूजाकरी ॥ आपसमहिवली ।
मिलनार ॥ देषहकेशवरूपअपारि ॥ स
नेसभीजोहरिकीनार ॥ तिनसभनेकै
भागअपार ॥ केशवमिउमिलवानाक
रे ॥ दोऊनैननैनकुमहिंहेरे ॥ मन्नापुती
मतिनरूकेभाग ॥ उधोहरीकेदर्शन
लाग ॥ आगेहोतनचलेजैकारू ॥ आपके
गावमराउदारू ॥ ब्रमननभेरजनेउदि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमस्कारकरीकेशवनेहि॥ मेयधरहिहार
केलोकि॥ हरिसुमरे षमिटे सभलोकि॥
कोलेराषेलालनराई॥ मे [illegible] भइी श्रीगो
पाल॥ सेनइकोहरिमेरालेहि॥ लेवरि।
केशवगई॥ कोजनलिमाबुहिवीरला।
लि॥ श्रमेदानकरीकुलमपारेहि॥ मरल
हवीविसिधारेसाथि॥ पावनभयेजनक
केधांमि॥ यपरठाढेदरवान॥ कवबा
वहिंगेश्रीभगवानि॥ महाराजजीभीत
रगपे॥ दरवानहरिदरशनभये॥ दरवा
नकहंउउनाकरि॥ हरिमरतिलेहदेपी
केमीपहिप्रभक्रपानिधांनि॥ आवेमाथ
वपुरछुपाव॥ उठिकेंनोनठांढोभइ॥
हरिकेंनीचीलनेहवउरीहाइगइ॥ केंनी
केसव [illegible] किसिठाई उनरिपरीपर्नेक
सिष्यन॥ [illegible] सालेकुचेमाग॥ नेसि
ष्योने [illegible]॥ नाकीप्रीतनञा
वतकहो॥ भीतनिगइकलकोनाहि॥ कें
नीरहवेनेनतिहार॥ सेनकोपनीपालव
रन॥ रईश्वासिंधुजीनमरोप्राराा॥ सिरि

दश·
म·
१२५

325

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परि हाथि धरि उनो पाल ॥ जो करि ने नि
नि उरपै काल ॥ बहुरो मिलो सभ श्री
थाई ॥ हिनसि उपरमे के सब ताई ॥ हा
थु धरि उप्रभना के सीस ॥ सनि सनान
मि द्वीनिन गदीस ॥ कलस वार द सभ भी
नर श्वावे ॥ तिन की महिमा कहीन जावे
सभ लागी झेनी के पाई ॥ सभ झेनीजो
ले ई उठाई ॥ त्रिह सहा गुन मराजगि
सदा ॥ सो भनाजा के करि गदा ॥ झेनी बो
ली को मलि वै नि ॥ कलस श्री श्याह पिटे ।
थी नैनि ॥ सनो सभ द्रावा निपुनी नि ॥
सनो द्राव नी निर्मल वीनि ॥ कलस श्री था
की प्रभा करो ॥ भाग का श्रव सभ पार है
रे ॥ मिनो श्री श्या की प्रजा करी ॥ वहुन भे
टिले श्रागे धरी ॥ तिनि प्रतिन उतनि प्र
ना करै ॥ प्रेम साथ नति मनि को भरै ।
पांउव प्रजा हि श्री भगवानि ॥ संतजना
के विग से श्रानि ॥ तिनि प्रतिन उतनि प्र
ना करै ॥ हरि मूरति लेहि हिरदै धरै ॥ कव
रूप जाहि महलन माहि ॥ तिन के मा झिन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वरमेजाईहि ॥ कुवङ्कऊपरिपूजाकरै ॥ श्री
मूरतिलैछिरदैधैरै ॥ कवङ्कप्राउतिपूजा
हिम्याम ॥ पूरनिभवेजनोकेकाम ॥ तिन
नितपूजनहितिउननिभोति ॥ हरितनके
निनदेषहिक्योति ॥ वुङनमासिवेनेई
भोति ॥ हरिकोरेषहिउपजैश्योति ॥ अं
नेकरषिकेसवचरै ॥ जाहिअइरैकउन
किकरै ॥ जगिवानिकिनइनहीकहि ॥
हरिमरतिहदैवसरही ॥ येकदिनसिषि
लिवेसंन ॥ बीचीसभाकेश्रीभगवंन
वैसेषसामिषत्रीसम्रति ॥ दरविनेजकरि
समभरपूर ॥ संतजुधिष्टिरिजोरेहाथ ॥
विनतीसुनोहमारेनाथ ॥ जगुराजसी
किउगरीहोई ॥ हरषउनमरपराकउधो
ई ॥ वाक्याप्रवहनमेरेवीति ॥ श्रेनजगा
काकपावरीति ॥ सेवानमरीकापरना
पु ॥ जगमैप्रगटिदिषावउआपु ॥ वानव
लेमारेसंमारि ॥ पाउवपूजेकसमुरारि
श्रेमाजगुतिनङ्कजगुकीरउ ॥ कुलवंद
लेहिरदैपरिउ ॥ तमसभनेसिउसमिलो

र.श्री.
म.
१२५

32८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लि॥ सेवा करै सोइ फल पावै॥ नमनने वेस्रा
षिनिह फल जाजाई॥ कल पिन रोव रिसम
को दोई॥ न लै षरो वै सो इलेई॥ चरिम
हिकि सीन दैव निजाई॥ छ्राइ न ले को
पीउ मिराई॥ नैसेन सप्रभ क्रणनिधा
नि॥ सब जीवह्र सिउ पेक समानि॥ फ
ल पावै जो सेवै चरन॥ सम्रुषदाइक
समरो सरन॥ विम्रु निम्रमारी परमउ।
मीन॥ निसकौ ऊरजो उपजी प्रीति॥ म
हाप्रभू करूणा भंडार॥ करी क्रपा इह का
समवारि॥ मंद हास ह्रसि बोले स्वामि।
सतजनना कै पूरि कामि॥ मनी श्रे राम्रा।
स्वविदार॥ कुंती नंदन महा उदार॥ प्रं
मीकार ह्रम ह्रयहि कीउ॥ ब बन तमा
ताहि र देय पीउ॥ देव पिन दई ह्रबा ह्रा क
रे॥ ईह्र श्रामा चर भीत नाधरे॥ कि उह्री
मेघ ज्रधिष्टिर करे॥ हम तो पीउ सम पा
हरे॥ मेघ की श्रा हो हम ह्रश्राचा ह्रे बी।
हम रहो नमपांच षपारी॥ हम रोनन को
वो कैवान॥ नाकी होई है मनिकसलान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुनेंन भीम महाबलि बानि ॥ समने बली
श्री भगवान ॥ तुम महम्जी ते सन सजान
तीन लोकन हीन मो समान ॥ हउ जीति
उपाके कि आर ही ॥ पार श्रीन हि हूटे लग
ही ॥ को ऊ दीन मु कि हूटे धरै ॥ ना को सम
सर को उन करै ॥ बैसमझी या चे उजल ॥ दी
न हू वरे त पेगो पाल ॥ तिन रे न हू ते सम
जेतु उरे ॥ तिन को सम सारि को ऊन करै ॥
तुम ते राजा भूति बलि बानि ॥ ता को भा
र भीम सभी ति ॥ कहा कुठ न न तुम कउ शे।
रु बीर ॥ राउ हरे कै भी नरि धीरि ॥ चारदि
सा को जीतो जाई ॥ लि आव कुरव कुनाद
रगुहि नाई ॥ भीम न कल मजे न महदेव
देष चारो क लस भ्रमे व ॥ कुपाद षके ण।
बजी करी ॥ महा सकि न के न न धरी ॥ जे
वही बोले श्री भगवानि ॥ पोरव विगमे
कम न समाति ॥ दकुन दिसा गये सह
देव ॥ रिरे कलस धर आलय भ्रमेव ॥ पछ
मन घुतल महोवलि बान ॥ हूटे राष वही
श्री भगवान ॥ पूरव दिशा भीम जी गये ॥

द॰ श्री॰
म॰
३२६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परम पार न गहि हिरदै लयै ॥ अर्जुन उन रदि
शा सिधारे ॥ चरन कमल हृदै मैं हि धारे ॥
चारि दिसा अपने वस करी ॥ सब पृथ्वी
मन हि हरी ॥ दिसा जीति आये सब वीति ॥
हरि अस्मा दिस महीरन बन धीर ॥ बड़ा
नरर खुले आये जीति ॥ कमला नाथ का
तिन को मौन ॥ भीम कहि आप नी पैर
हैर राई ॥ जरासिंध जीति उन ही गाई ॥
राजा जो अनि विनाकरी ॥ अवि भिया की
सै पृथी न रहरी ॥ न वही बोले श्री भगवा
न ॥ मो कछू रूप व की पैवपान ॥ सो ई
बात अब कीजै आज ॥ संतजना के पूरउ
काज ॥ यहि लीला • केशव कृपा म के
रखी उमरा हि ॥ जानि निहालि पग परवा
लि हारि ॥ २६ ॥ माधी ॥ अर्जुन भीम मैं गोपा
ल जी की ने ब्रह्मन भेस ॥ जरासिंध के क
स जी आये मांगन देस ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अर्जु
न भीम मत्त घर हरि लये ॥ भेष ब्रराये ब्रह्म
न भेषे ॥ जरासिंध के आये देस ॥ तीनो
धारे ब्रह्मन भेस ॥ जरासिंध की भीनती

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गये ॥ [illegible]रानतिनग्रननये ॥ नरासें
पकौदरसनभयो ॥ देषदरसविसमेहो
इरहिओ ॥ जरासिंघजरभीनरकेहिओ ॥ मं
नकारदर्शनमुकेनलहिउ ॥ वउमहांम्रा
तिग्रायेग्राजु ॥ दूतनुमपाइमारकाज
ग्रागेसिंधुरसोइमइ ॥ ग्रनपिग्रीतिरा
जागहिलइ ॥ ग्रतिविउग्रीकेरजाघुए ॥
ग्रतिषैविनानभोजनुकरा ॥ तिसीसमै
इकनीनेगये ॥ तिपरहरषराजाजीभ
ये ॥ बोलेसुत्रसनसिरीभगवानि ॥ सुनी
येराजावडेसजान ॥ प्ररघीप्रतिपर
रौंग्राये ॥ जरासिंघराजासनपाये ॥ इ
ममांगहिमोइदीजैदान ॥ राषडूभूपर
मामान ॥ तोतुकहैकिमांगहूदेहि ॥
राजसुनसिउमुकेसनेहु ॥ अमोवातन
दीनीजाइ ॥ जीग्रकीजानेकेशवराइं
मनराजाचोदानाभये ॥ राजदेसस्रुतस
भसुनगये ॥ हरौवेड हजावलिराइं ॥ स
वैसदीउतिलेजुनलाइं ॥ अवाद्यनप
तिभयेप्रकामि ॥ जिनकीनिर्मलवुधि

द॰रा॰
म॰
११॰

327

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विवेक॥ कौरनिरहीआपिवलिगइ॥ स
दश्चमरनग भीनरिमइ॥ देहिमानिन
सदाविरुनाहि॥ यहिंगनिधारकुहरे
माहि॥ जोहमभोगहिसोकरदान॥ आ
गिआवैगिहमारीमान॥ कौरनिनेराग
निमहिहोइ॥ राजानीविधिकोजैसोइ॥
जरासिंधविसमैमनिमाहि॥ यहिविवेक
नाविमहिनाहि॥ ब्रम्हनिकोमरूपपद
नाही॥ कुठौब्रम्हणजानिकहाही॥ भा
नायनवषकौचासीपरी॥ वहुतीवाले
राइकरी॥ हैनोषत्रीपरुवलहीन॥ हम
रैडआगिरैहोइदीन॥ जरासिंधबोले
वलिवान॥ मनमविठादेश्रीभगवान
मागउजोकिकछुहैपिमाह॥ अवहीदे
उनलावौवारि॥ फिरहैदउविलंवुनमा
उ॥ जरासिंधुहेमेतेनाउ॥ नवहीवोलेप्र
भनागति॥ हमहेसवाश्रीभगवानि॥ दे
हमरमैनदंडभीमसजान॥ नधपेकोसि
रसीजेदान॥ जासिंधइहबानामिडलरो
सैनाकछुविरनुधकरउकरो॥ वहुतभलारा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गानीकहौ ॥ तमरौ आज्ञाहि रहै नही ॥ व
तन उनेरतनेर भगवानि ॥ तुमनो हम।
रीनाहि समानि ॥ वानै नृपनै करउवा।
नाई ॥ नृपधर्मी विजाहो विललाई ॥ हम
रेउरनीम धुरानि आगौ ॥ उरौ हमरी कापि
आरी लागी ॥ भेटगही बागहिकी जाइ ॥
हमनेउरनै हो हरिराई ॥ तुम सिउ लरो।
नेसनजउराई ॥ कोमलनमरारि दउ
राई ॥ देउजुदोन है कोमलवाल ॥ हमर
नृपनसै है कराल ॥ भीमसेन हमरौ
तौलरै ॥ जयद्रथ पुनि उ हम सिउ क
रै ॥ वृकलमल्ला बोले नारानि ॥ कउन
किरदैव श्री भगवानि ॥ दोई गदा लिन
आगे धरी ॥ लौहि मद्रमेघतलि सिउ जरी ॥
भीमसेन को उचनि लेहि ॥ दुजी गदा र
मोकउ देहि ॥ पेक भीम ई करा जालन ॥ र
र्थ पुधिष्ठिरानौ कौ भइ ॥ ताहरि आपे समे
सजाति ॥ दोनौ जो थाप कम मानि ॥ ला
गेलकनिन कोउकरराई ॥ कउन किरदैव के
शवराई ॥ कउ गदा कुरि कर दुकौ मद

द॰ शा॰
म॰
३२९

328

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुधबीचिचारनुहोइगवे ॥ मुकोलरनिल
गेवभलिमरे ॥ महाबलीदोनोयुतिबे
दोनोबीचिनकोउहराई ॥ भमिनयराके
मकहीनजाई ॥ दिनकउजुयणिकउ
मेनि ॥ हसिहसिबोलेभीरवेनि ॥ इकके
भोजनकरेसजानि ॥ दिनकोलरेमहा
बलिबानि ॥ एकदिनसिमेपचैरनि ॥
भीमकहेकेपावकोवेनि ॥ विनतीस
नोश्रीभगवानि ॥ इउथाकाहोयहिव
लिवानि ॥ कसचंदनवकीनीदेपा
केठिलगाइभीमकोलंइपा ॥ भमित
नेचुनाकेननिपरिउ ॥ ईंजमभुसहवि
करननिकरिउ ॥ दोकुमनिजबलागे
लरनि ॥ कीपेषेलकछुप्रकारनकानि
विचितेचितलबीरिउभगवानि ॥ देषिउ
भीमबलीलरजानि ॥ युकीयुजावनिहि
हिरदेधरी ॥ कीउबिलंबुनप्राघिबरी ॥ ग
बोदीविपाइसिउठांगि ॥ देवेश्रीनाग।
यणसेगि ॥ एकरीगगहिउभिसेबीरि ॥
मनवपरनायमहलाइपिबीरि ॥ निकलिगिं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इएनाकोगइ॥ मागयमहियहिलीला
भइ। वीसमानदिनरोवोलरे॥ श्रीग्रह
चोनमकउनकिकरे॥ हमेकृपानिधि
श्रीभगवानि। मानुषरूपीग्रहचगानि
भीमसैनहरिकठिलगाइया। श्यापवी
चिवक्रनेजसमाइया। जरासिंधकोप
वुसमानु॥ महादेवनामसैश्रनिवलि।
वान। नाकउगचदीजेभगवानि॥ तिन
माघेपारीलीनेमानि। पहिलीला॥ गा

द.भा.
म.
३२९

जानगसिंधकीगाई॥ जसमनितउनिउव
रनिसनाई। वासदेवनिर्मलभगवानि॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ततिसनातननिगुरुहनुमानि ॥ दृष्टविना
मनसंतउधारि ॥ जननिहालकीजैपगि
क्वारि ॥ ८८ ॥ कावी ॥ आपेनहामहंप्रभुवे
रोष्ठोरिनाराान ॥ जहांराजावहंसेषे
खलपरमुसजान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ आपेव
इरिनहांभगवानि ॥ नेहांलकेषेभूपल
गानि ॥ गुफावीचिसिलहारेदइ ॥ दीनदे
हेसभनोकोभइ ॥ सिलाउनारीकपाति
वेदीकोरिप्रभूभगवानि ॥ सभनोहरि ।
कोदर्शनकरेउ ॥ दोषहरूषननिमनिका
रीरेउ ॥ कैसेदेषि श्रीभगवानि ॥ तिहि
धानकाहातिवषानु ॥ सेद्दरीसामप्रेम
रसिभरे ॥ भगवानिरघुकुलप्रभुपिभरे ॥ पे
विवकगदपंकनिपानि ॥ पीतउपानार
रिनाानि ॥ कमललैननमुषपंकजेसासि ।
वंदहासरसभरेविगासि ॥ मुकटसीसप
रिजमिमनिकरे ॥ दसोदिसाकेतमकोहर
रे ॥ कंउलिरहाउविपननिकानि ॥ निरमल
नलिकषितरसमानि ॥ कंठिवनीवैजंती
मालि ॥ जगमगातिमनिधीरसालि ॥ भि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गुलनाम गुनका के हारि ॥ केशव कौस्तुभ विमल
घपारि ॥ कमलनाभि हरि पंकजे चरनि ॥ द
शरि भूपथापे हरि शारनि ॥ समनो मिलिउं
उनाकरी ॥ हरि मुरानि लेहृदे धरी ॥ साधि जो
रि लागे उतिगानि ॥ नमो नमस्ते श्री भग
वानि ॥ हृषीकेश शाश्वेस अनंतनि ॥ विषा
नि विदारनि श्री भगवंतनि ॥ वासुदेव देव
कुके देव ॥ सम्भु ही देव नमामी सेव ॥ वेदोद्धा
रि भयाय विनिरामि ॥ सम विधि सम के पर
निकामि ॥ चरनि सरनि राघव द्वारिनि स्वामि
रानदेशने भरे स्वकामि ॥ त्राहि त्राहि प्रभ
रानने देरू ॥ न मरोप पापि मिस्ति उवै ठसने हू ॥
भगति दानु दीजे भगवानि ॥ राजसिंघास
नि नरकि समानि ॥ राजवी चिउ पनि उग्र
तानु ॥ हउमै मेरापउ अभिमानु ॥ ग्रंथ पत्र
धि राजा की होई ॥ तुम्ह राज नि बिनु अवर हो
नु कोई ॥ नरसिंघ हमरा गुरदेव ॥ वडहि
ननां की कीजे से व ॥ जिह प्रसादि देवे चा
नि स्वामि ॥ प्रानि भउ हमारे कामि ॥ राज
हमारी रत्नी वलाई ॥ चरन सरनि राघउ के हरि
नि

द. रा.
म.
३३.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गंधै ॥ जेह स्वभवं धन व सिग्राम भइ ॥ तिह ग्रमा
रिप्य विविस्राम गइ ॥ ग्रभिमन उरारू बोवि
येधेरि ॥ भरमि है लघ चउरासी फेरि ॥ राघ
रेशा निक पांमेडारि ॥ कमलनैन हरि
कलमनराटि ॥ जिउगजिंउ नारिउ भगवा
नि ॥ ग्रजामल नारिउ है नारानि ॥ बहुत
नदीनि नारे गोपालि ॥ भउ हम गते उर
पै काल ॥ तिन कौ बिन नीस्तिनारानि
परमकृपाल भपे भगवानि ॥ बोले माध
बकृपा निधानि ॥ सभिन मराजे भलेसा
जानि ॥ राजगरउ ग्रैसा ही ब्रुरा ॥ भलाम
पान मरा मनमुरा ॥ राजगरबकु तेवहि
गपे ॥ मानकालमराघ मिरिपये ॥ सहंस्र
यजैन ग्रहृदशा कंध ॥ महिषग्रवलनर
कासरपुग्र ॥ वे हम पथे महाग्रजानि ॥
तिनके हृदै महा ग्रभिमानि ॥ मान कीपे
नै भपे विनासि ॥ सदास्नषी है मे रादास ॥
रिउसे वा हमरी तम पाऊ ॥ हृदै हमारे द
रनि बसाऊ ॥ बहुरो बोले भूपसुजानि ॥
भगति वहस्यौ भगवानि ॥ कैसी भगति
नमाती करो ॥ कवन विधि लेहु हृदै धरो ॥ बा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लेमाधव परमदिव्या लि॥ करे नाथ सभि
सव रसा लि॥ मनो यै स्व पनो भगानि।
वना उ॥ समनाज पोह मारनाउ॥ स्व नोह
मरी कथा त्रनी ति॥ हमे रजन सिउको
री स्वरूप्री ति॥ हमे रचर निहृदै लेय रो॥
सोसमा थि उउ नाकरो॥ मिथि स्थाना
न कराज भेउा रि॥ न दोउ षस्वकी सवसं
मा रि॥ किसी वन सिउ श्री नि नला उ॥ या
नु रमा रहृदै व साउ॥ कराज गिहृ रिक
लप री नि॥ मु किही सिउ श्र टका वरुवी
नि॥ भोग हू भोगि न सेका करो॥ हृदै हम
राप गि लेय रो॥ सी श्राना षरुपो षरुवा
लि॥ कीजै रा नय मंकी वा लि॥ परना
पाल रुप निस मा नि॥ श्रस निकु लिको
दी जै दा न॥ भग निदान हृरिक हना के
री॥ समि रमा लेह्रू दै य री॥ जरा सिथ को
पूत सत्यान॥ नाकोवाले श्री भगवानि
मान दैन के श्रेगिकर ई॥ वऊ मोल के
ची योना ई॥ मर दन न न वस भनो काम
ईश्रा॥ दोष रुपस वही मि रिता ईश्रा॥ न
पननीर सिउ सभनउ लावे॥ संवरिना।

द॰पा॰
स॰
३३॰

33

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भंतिपैनाई ॥ थतिमिटेपकथानिज्तिसवाये
थतिसवंगेपहिउपानिषलाये ॥ क्रपाद्रष्ट
फ़तिमाधवकरी ॥ नैसैकोनेष्रीनरिहरी
संदरिमयेहखमितिरिगईस्रा ॥ कमलंवद
कीस्रैसीदईस्रा ॥ फुनिवोलेकेशवभगवा
नि ॥ सनेभूपनमसभैसज्ञानि ॥ नगुराज
सीपांडवकैरे ॥ हमरेपगिलेहदेधरे ॥ ईद्
प्रसथ्यावहूसमिसंति ॥ प्रकाकोनीष्री।
भगवंति ॥ तिनकानमकोनिउनादईस्रा
नेमसनोप्रेमुहमारभईया ॥ वहूतमला।
यावैगेस्वामि ॥ वंदीक्षोरिसैपूरतिकामि ॥।
सभनोकउरविदीयेत्रनेति ॥ कृपाकरिह
रिकमलाकंति ॥ सभनोहरिकेपासेवाति
कृपासिंधुजीनमरीसाति ॥ श्रपुनेप्रभते
विरिसामवे ॥ देसदेसमहिराजेगये ॥ ह
देराघेश्रीयतिस्वामि ॥ मथिनेरटेकल
उनिनामि ॥ राजभोगतेहदेउदासि ॥ ह।
रिदफेनेमपेप्रकासि ॥ दीनानाथमउ
दमरारि ॥ ननतिहालकीलागीवारि ॥ ९८
साषी ॥ इदप्रस्थयावेप्रभकाराजसमैस।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वारि॥ सेषभजावे सभसव द्विजगति भई जै
कारि॥ १ ॥ चौपाई॥ निकट दिनगति केशव जी
आवे॥ इंद्रप्रस्थ आई। खोष वजावे॥ पांडव
नसुति जे गोपालि॥ सेन सहाइ दीन दई सो
लि॥ देवदत्त अर्जुन सुखिय धरि जे॥ सबुना
द के नीस निकरि जे॥ शब्द पसउ भीमध
जाई पा॥ इंद्रप्रस्थ महि सव ढहस माई पा
सव उस नितु लोक कहु निहि कालि॥ आवे
भीनि निसिरी गोपालि॥ मिले जुधिष्ठिर कोना
रान्न॥ चरन कुलागे श्री भगवान्न॥ राजा ह
रष न मावे देहि॥ विहवल हूवा कुससने
हि॥ संन जुधिष्टिर विनती करी॥ चरन को
मल ले हृदे धरी॥ हे प्रभ सरनि कृपा निधा
नि॥ देवदेव निर्मल भगवानि॥ तुम सी आ
सामान नि द्रिडव॥ सिव विरंचि सम नेरी से
व॥ सो तुम करो हमारो काज॥ दीनन मा
रेन सही लाज॥ तुम राकछन वैठे न यै
ना तुम मारावे धन न कैष॥ देव देव देव कु वै
वेध॥ तु के षरा पैने ह न ग्रंथ॥ आवे अवसे ति
वे उमहानि॥ कौनिनाम वो कहीसमानि

दे.शा.
स.
२३२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पनीवित्रासकसपपरधाति॥गुरुवसिष्ट
मीवडेमहांति॥वामदेवकवचित्रतिमंजे
ति॥परसिरामिश्राये भगवाति॥धोमपेवे
हितभारद्वाये॥विस्वामित्रतमसतिमाये
हपपरासरगोतमसंत॥दिलीपआयेडेम
हंत॥राजाजितनकोआदरकरिउ॥चरन
सपरिलेमस्तकधरिउ॥आइपेजोअति
कीनीटईया॥आजसहीकिरतारकुभईया
आयेलोकपालसरजाति॥आयेव्रसाकुषि
महाति॥महादेवआयेहिकालि॥सभनो
परसेश्रीगोपालि॥सभधरतीकेआयेराई
धरतीमंडलल्लीनोक्काई॥धरतीराजानम
हिदेव॥हरिजसुगावीअवडेअमेव॥जिन
गाइरुत्आईउजलजुसमति॥आईउभी
सवडेसचीति॥आयेविदरुकसलकेस
ति॥हटेमीनरिश्रीभगवंति॥हसलनाप्रि
केसमहीसंति॥सभनोपरसेश्रीभगवंति
राजासभकाआदरुलईया॥हाथसभके
रहासभईया॥संतपुथिविरविनतीकरी
आताकीजेश्रीनरहरी॥आताकीनीश्री

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भगवानि । कीनैसनगुरुमारे ग्रानि ॥ उतम
कालमहूरतिलाया ॥ राजजनगकाउँदस
मईया । केचनहलसिउवोदीमही । वाली
वैरिदिजरुमुषिकही ॥ निर्मलमूसिवरा
वरिकरी ॥ उतमसमैसमिग्रीधरी ॥ लागेमं
त्रकरनिस्वरजाति ॥ पहिलाघ्रजनहिकवंन
महाति ॥ नवग्रहीवोलेजनसहदेव ॥ पहिला
काहकमलकीसेव ॥ सतिरूपभगवानदि
ग्रालि । भउहभंगतेउपैकाल ॥ ग्रभग्र
विनासीहरिनागति । लोकवेदजगाउ
केषाति ॥ सभकेप्रानसभरुकेमीति ।
संतउधारणपावगुनीति ॥ सभकिछुह
रिकाहरीकोरदेह । ग्रभेपवहरहिमेनेलोऊ
हरिउपजावेसमसंसार । प्रतिपालेकुफति
करैसंघार । जनमिमितनेरहैग्रलेवि
तिनप्रभिधारिजेमानषभेषि । दैसपै
सभिमृदैजाहि । पेसभिमहिसमयाकेमा
हि ॥ मलविराछकेपानीदईया ॥ डालपालि
साषामहिगईग्रा । वासदेवकीपूजाकी
वानकमललेहिदैपरो ॥ निरूपमिलन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीगंगाधारि॥ तीनलोकअघरेनिविडारि।
थैसेप्रभकी पूजाकरो॥ नानकालडीलै।
परहरो॥ समहीबोलेबडेमहांनि॥ भलाक
हिजेसहदेवसुजानि॥ धंनसंनमतनेरी
सारि नेतपंभ्रपरावनिहारि॥ मननीथं।
निपंतिधिनभाति॥ निर्मलमुषनेबोली
बानि॥ धर्मधनवमाराउरदेव॥ कीजैनिप
टिकलकीसेव॥ सिंघासनवैसेभगवान
कमलनैननुषिकमलसमान॥ संतगुषि
हिरापोइंद्रानि॥ पैकैजाकीहरिकीमूरति
धरननीरिमाथेपरिधरिजे॥ सफलजनम
राजाजीकरिजे॥ पगिजलसिउसिंचउपा
रिवारि॥ भोनरिवाहरिचरकोडारि॥ पीन
वसनपहिरगपेसंति॥ नीकेवनेश्रीभगवंति
देवसुरूपकीवरषाकरी॥ जैमधुसूदनि
श्रीनरहरी॥ महासबदरूपाजैकार॥ सेव
किपजउप्रभुमनारि॥ नंदरिवनेप्रभुभग
वानि॥ माधवकोटिकमैनसमानि॥ राजा
इरूलगावहिनाहि॥ शंकाकरैहृदैके।
माहि॥ मनइंद्रलागेढिषहमारी॥ नीके।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैप्रभुगिरधारी ॥ देषहिरन्याटहिषहिदे
व ॥ मैतेतिहिसोसरिपलषप्रभेव ॥ समनो
गुरुगिसिउध्यान ॥ पंनबनिपिघुरुवजेसा
मान ॥ महाराजकीप्रजाभई ॥ तीनलोक
कीआपदागई ॥ जनतिहालमागतिई
उध्यान ॥ अपनीपुजारेउनारान ॥ ९६ ॥
साषी ॥ बोलिउठिओशशिपालनवको
धीवशेनवारि ॥ अऊपहिलाकिउसलिउ
गऊस्रकाचरवारि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ठाढाभई
पामउशशिपाल ॥ बचपविहानीलागा
काल ॥ सषनेवोलिओनीछनिवानी ॥ देष
उल्लोगरुअकवकहानी ॥ बालककोस
तिसभनोमानी ॥ वडोदुधिनहीहदेआ
नी ॥ कहावालसहदेवविचारा ॥ वोविस
मानिनिवचनुउचारा ॥ कष्ककुसगोपाल
प्रतिसि ॥ ईकुकिपाकरेहमारीरीसि ॥ नह
प्राहैव रुस्वागदिषाई ॥ गतियाकीकछु
लषीनजाई ॥ वेस्मिमहामानसिनाहि ॥ लो
हकेजोहटेवाहि ॥ नाकछुपुंनकरेयूआ
पाउ जाई रुकरैचमसकोजाउ ॥ नानिव

ह.क्रु.
मं.
३३४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रनकुलगोत्रननामु॥ दानतंनतेसदाप्रा
काम्॥ नाकोजगतनतीरथकरै॥ सनकुषि
होईनकवरुलनै॥ तनरीथाइकारदृग्र
राई॥ लोभीवडाहुरुषसिउषाई॥ गईजेभा
मिनमित्रगुनाटेसि॥ पुरीहाटिकाकोजे
प्रवेसि॥ परिहेजाईसागरिकोसरनि॥।
कयामननिहोयाकेवपति॥ मधुरामेउल
लटहिलेकि॥ याकोनेकुनविश्रापैसो।
कि॥ प्रैमकोकिआपूजाकरो॥ वालिउषि
लेहौंटपरो॥ कहाजुगिलागेउलटीवालि
वरोद्धोडिभनीअहिगोपालि॥ उनमज
नोनपूजैकोई॥ नीचवरनकीपूजाहोई
केहीवदिमोटषीनैनि॥ मानेसमैवालक।
केवनि॥ वउभूपठाटेवलिवानि॥ परनी
केपनिमहासमान। वउरिषीसधिविग्रास
समानि॥ प्रविपरामतिवउमहांनि॥ ब्रह्मा
ंकरठाटेरदे॥ नकुवचनसहदेवहिकै
रादेलोकपालवलिवानि॥ वरणसरस
तिथिंहसमानि॥ ईनकोऊउहिवउप्रजा
नि॥ पूजहिगनहिपीभगवानि॥ कलक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रमकहावतानेवषानउ॥ त्रिमरविसमहोजा
वतिन्हमनउ वचनम्रउरवहूनेरकहै॥ केपाव
सैनेसभैसतिमहै॥ जोयेगेजाहहीकेसति॥
कोनमेदसभितउठेमहंति॥ क्रोधेपाउवही
कीमीति। क्रोधेग्रवरूजसेनउनीति॥ सम
रहाधिलेठाढेभये। क्रोधसाषिमूरछि।
होइगये। माधवकीइननिंदाकरी॥ मारेठौ
लिनकीजेषरी॥ षेउलेहाथ्याशापिपालि
मानेसहातिथाकोली॥ समनोकोफरिका
मीरहर॥ दीनक्रोतिसभनोकोभउ॥ उठेग्रापि
केसवभगवानि॥ इहनोहमरेदरदरवानि
मारेसभैक्रोधजोकरै॥ हमविनकउनवली
सिउलरै॥ बोलेगिरधरीप्रषिउगनि॥ वि
माकरोतमसभैसजानि॥ जोकछुकरै प्र
कहनेदेहु॥ हमरीसीषिहरेपालेहु॥ सति
वैठेहरिग्रासामानि। सतिवचनहरिश्रीमा
नानि॥ सषिपालकलकीनिंदाकरी॥ की
तिमीहरीहदेपरी॥ हरीकहिग्राइनलीला
करी॥ ग्रैहमसीहोनिहचैसही॥ प्रभवक्रो।
कोग्रासाकरी। नारभुप्रहारीश्रीनरहरी॥ ली

र.गा.
सं.
३३४

३३५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऊंकारि सिरु चक्र महांनि ॥ आग्याकारी प्रभ
नाराति ॥ तिक सिउ जो तिवै कुंठ हिगइ ॥ स
सकल लोकअनि विसमै भइ ॥ पाली देषे
हरि को धाम ॥ त्रिभवी परि सानि वनिसा
मि ॥ आई जो तिवै कुंठ हिलि आगि ॥ अउने
उवै जानी भागि ॥ देषे हिहु वीसरि षरे ॥ मह
रानि पही कउन किकरे ॥ मषअर विंदपसा
रे हरी ॥ जोति आई मषभी नर परी ॥ इहउ ।
श्रहि हू है मह्हिगइ ॥ साजनपुदवी हरिते
लइ ॥ हितसिउ जो सिमरहि भगवानि ॥ ति
नकी कोअहि कहावषानि ॥ उनअवउनि
हरि मान निनाहि ॥ ऐकनाम अचको रमि
रहि ॥ किसी भंतिजपी श्रीगोपालि ॥ ताक
उ सेवक करनि निहालि ॥ शशपाल अ।
किर्ईहु कीवषाति ॥ जन निहाल वलिश्री
भगवानि ॥ २६४ ॥ साषी ॥ जगुअरंभिउहर
षसिउ पोउ वरहूल कमाहि ॥ सैजो वाक्षु
को करै सो सोअश्री पाहि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ज
गुअरंभिउ मनि करि भाई ॥ रहूल कमाव
हि समे भगाई ॥ भीमसै निकउ मिली रसोई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मानेमभषारद्दैनकोई ॥ दोपनीपरोसेहरिके
संति ॥ माकेहृदैसदाभगवंति ॥ उरजोधन
कोदीश्राभेजाह ॥ देनेउपरिकरनउदाह ॥ भ
माकरहिनकुलसहदेव ॥ अर्जुनहरीसंना
इकीसेव ॥ विपपारथोवहिभगवानि ॥ श्र
तिब्रसेनसिरीनारानि ॥ देहिपाईलैपरीउ
कारि ॥ भोजनसबवहिकरहुजारि ॥ वश्रा
रिमपेझूरीपरकारि ॥ चेनेपरोसहिवुउ
दारि ॥ सबहीजनुतृप्तानभईपा ॥ समके
हृदैसमानीदईपा ॥ वडीरुकनाराजादई ॥
हरषहोईकरसमनोलई ॥ श्रीगंगाजोना
वतिचले ॥ आपसमहिसवसाजतिरले ॥ बा
मैडेलिलिरिंगहुजारि ॥ उडीवोसमालिव
रीश्रपारि ॥ देवसनहृपकोवरषाकरै ॥ वं
दीजनश्रागेजसकरै ॥ देवपितरगावहिं
यपवि ॥ भयेहरषतिरपुउसरसवि ॥ कुलसं
दहरिश्रीभगवंति ॥ अहसुधिष्ठिरहरिको
संत ॥ सभकैउपरिदोनोघरे ॥ गंगाजलिम
हिमावन्नेपरे ॥ राढेनलैश्रवासमिलोकि
केरिप्रेमकरिलीनोदेकि ॥ नलिमहिपर

द.ग.
भ.
३३८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

338

मकानहु हरिसि होई ॥ जागमहि इधी नरहि जे
को ई ॥ बाह हरि निकसे कहि इंसनान ॥ राजा
घर हुहरि कृपा निधानि ॥ बहुरोगजनकी
नोदानि ॥ सभपरमा हि स्त्री भगवानि ॥ दे
वि पिजर बिहिश्रो लेगये ॥ निपटि हरषरा
जापरिभये ॥ भूपजु हरि नेविदिआल
इ ॥ हरषघुथि सभनो को भइ ॥ हरिकउ
मिलि ले उतु उनाकरी ॥ हसिमरति हुइ सम
हि धरी ॥ देसदेसकउ गयेसजापनि ॥ हरि
गुणगावतिसदथा समानि ॥ पांडवकोज
सकरने जाहि ॥ इनसमको चिभयतिम
हि नाहि ॥ सभनेपांउवउ महंति ॥ जिनके
संगी स्त्री भगवंति ॥ धंनकमलकरुणा
मंडारि ॥ सतसमहाउदइ विडारि ॥ गावति
सभैसिधारे देसि ॥ हुदेसाधि हरिजी केभे
सि ॥ सभरिषते जिलानु नपभरे ॥ हरष
होइ लेविदि आसिधारे ॥ अपुने अपने मा
स्रमगये निपटी हरषराजापरिभये ॥ क
उनकरैपांउवबखरजानि ॥ जिनके सिरि
परि स्त्री भगवानि ॥ महाजगु संपूरणभई सं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केशवजीकेप्रेमीरहीया॥वासुदेवहरि।
रुक्मनुनारि॥जननिहालकउदरसुदिषा
लिरि॥२८५॥साषी॥माधववक्रतेदिनवसे
ईश्रुभगवंति॥तिनप्रतिपूतनहिकम
कोपांडवप्रीनमसंति॥१॥चौपाई॥रहेव
हुनदिनश्रीभगवानि॥मांडववषेरपिस्रा
रप्रानि॥जानित्रापनीहरिविदिसाका
री॥कृपानिधानप्रभनहरी॥जीपारषी
प्रगनैसंगि॥हरिसुषसागरसदाउमंगि
जगरहेषिहरषेतेलोकि॥दुरजोधनको
ध्रजैसोकि॥देषिजगकीलीलाकरी॥
प्राणिमजोधनकेमतिपरी॥वक्ररोदेषट
मरमालि॥प्रतिहीसंदरिषरेविसालि॥म
हलहुवीतिकसकीनारि॥ईकसउत्ररी
षटहजानारि॥तिनकीग्रदसनिसोभावनी
जिनकेश्रीउरधोनमथनी॥रूपनिमता
मंदरिहरिसंतिं॥ताकैरिदैसदाभग
वंति॥वासहितिनकैनृपरिपाई॥सवट
षोमहिरहिस्रमसाई॥सोभारेषिसजो
धननरिउ॥हरैसपनितिज्ञातापरिउ॥भय

द॰भा॰
म॰
३३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

युधिष्टिरहरिकोसत्रं ॥ सिंगासलिपरिवउ
मइंन । आगेवैसे श्रीभगवंतनि । वैरीञ
न्नसवकरहिसवंत । द्रौपदिरुजरिकरजो
पाथरे । चारोवीरहजानवलिवरे । गइंउ
जोधनतिनहीकालि । महावलिसभभा
इन्नलि । सभाभूपकीदानवरची ॥ ना
नाभांतिमणीलेखची । जलथलदीस
तिएकसमानि । भूमहिदेषिकरिवउस
मानि । नहोचानिडरयोधलिधरे ॥ थलि
महिअंवरिउचेकरे । हसेतीभीमजीकउ
किदेषि । सभावीचि थलजलिकोभेषि
आगेगइउसजोधनराउ । जलिमहिजा
नितवलिकोभाउ । जलिमहिपरिउभी
गेभ्यानि । जलकरिजानीउथलकीभां
ति । कहिकहिहसेभीमवलिवानि ॥ व
रजैराजावउमहाति । भीमनहसीओउ
पकरिरहो ॥ हसतीसीषिहूदैलेगहो ॥ मा
रीआषिसिरीभगवानि । हसीओभीमस
मसीआनि । हसैभीमसवकमलपमारि
वोलेसजोधनवीरमानारि । लजतिभइ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गेमजोपनिबीह॥ क्रोधिमात्र लिगईउ॥
शरीर॥ षंउअसिपरिमोचनिहाथि॥ वले
वीरले क्रोपहिसाथि॥ महाक्रोपसिउन
घसिषजरिउ॥ पहिषं कलपनवहीक
रिउ॥ पांडवमारोछाउनाहि॥ निहचाकी
नोहिरदेमाहि॥ हसननग्रीरिउठिगईउ
भजान॥ सतिग्रहंकारीअनिवलिवान
मोकुउरनोपनमनमहिपारिउ॥ कैसाक
रमूभीमजीकरिउ॥ ग्रीभइलोकनिमि
लिकहिउ॥ क्रपनिक्रोधुहदेमहिगईउ
केशवमूमिउनारहिमाह॥ ममहीषेलक
रेकनीरि॥ वेपरवाहग्रपाहग्रनेनि॥ कउ
नकिकमहिप्रभूभगवेनि॥ केशवकल
मरामिउकेद॥ जननिहालपालिनिभवन
वरि॥ १८८॥ साषी॥ सालिदेनुपोकरुभजे
वैठोजाइकिदारि॥ एकमालिनुषमोभ्र।
वैपेकमूठिभरिछुटि॥ २॥ चौपाई॥ माल
रेसमनिवउभजान॥ हरैरुवैनषीभग
वान॥ हमरेमीनवलीपापिपाल॥ सोमा
रिउतिनकमलगोपाल॥ मीनवैरुकेशव

८.भा.
म.
३३८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेलेउ ॥ वडरिमीनकोनरपनुदेउे ॥ महा
देवपहिंगईउेकिंदरी ॥ अमितहस्तन
उकैस्यपारि ॥ पेकिमासिकोवउेगवा।
रि ॥ पेकेसरितविषिमेलेछारि ॥ पेकेवारि
नउईहिविविधिकरिउे ॥ आनसंभुकाहू
देधरिउे ॥ भयेक्रपालिधीमहादेव ॥ की
नीसालिवरषिलगिसेव ॥ प्रगटिभये शं
करिगुरदेव ॥ सफलीकरिसेनकेसेव
बोलेशंकरदेवमहानि ॥ कहुवरमांग
रमेनकीमजानि ॥ मालिकरिउमनी।
येउरदेव ॥ कीजेसफलहमारीसेव ॥ दे
हरुपाकरिपेक्रविवान ॥ समिजउकु
लकोकहेमसेवारु ॥ पणपालमीनको
लाहेमाह ॥ नवहीशंकरिआज्ञाकरी ॥
मयारानवमाधेपपीधरी ॥ दईउेवनाई
विवानअनूप ॥ उपनिप्रगटिहैजाको
रुप ॥ लेविवानुआपेअबरिमाहि ॥ हरि
पहिनाउपखानतिनाहि ॥ वरुनकर
कुमिलिउेतिहिवि ॥ उरमतिरोषीनु
रषनीवि ॥ उरीहारिकामईउेअजानु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मृगषकैमनवसेउमान ॥ काटैवागिढ
होवैकोरि । मृगषकैमनिवसिग्राषोढ । म
हासिलाकोवरषाकै । सारीपुरीकलमकी
डौर ॥ ठाढ़ेमेदरठजेहारि । वैसकिगलीम्रा
हारिवजारि । हर्षीग्राउकीवरषाहोई ॥
वरषहिपाषिउरीसमिरोउ । लगेधंधेरी
महाभैग्राति । प्रभुमनप्रभूनविउदमुक
रिऊ । कलमधनिरषिऊपारिचारिऊ । मनमै
करहहमारेलोकि । सवैउनारोनमरेसोकि
दिववलवप्रभिवरषाकरी । तिनकोमाईम्रा
सभिप्रभिद्री । कलमधनसैनामहिगईउ ॥
सिंघहसनिपरिउदवमभईउ । नाकाप्र
निवलिवानवजीरु ॥ उमतिनामवलिम
नथ्रीभगवान । मारेमवसार थ्रीसाषि ॥
कछुकप्रभहदिषायेहाथि । नाकोलापेवंजी
हिवानि ॥ हढतिफिरहिग्रसरकेप्रानि ।
मूरछिभईउरोदंतावलिवान ॥ कछुप्रउमा
नलगाईउतान ॥ ईक्रईउवगिसमूकोला
ईग्रा ॥ हरिमतिसैप्रसाषेलारिपाईग्रा । हैग
जिसभकोयैवेवालि । लगाएँग्रीप्रउमनल

द.पा.
म.
३३८

339

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बनि ॥ सभहीसैनाबईलकरी ॥ लगीनप्रभको
अपीचरी ॥ पंनधनप्रदुमनतिमहानि ॥ सबी
मिलिमिलिकीयेवषानि ॥ सावतिभईआ
दुमनिवलिवान ॥ गहीगदाकरिधनोउमा
न ॥ हरिसुतकीछातिमहिदइ ॥ दोईघरि
होईगइ ॥ करिप्रहारुफुनिहसिउगवारु
मानोगाजिउवडोपहारु ॥ सारथीलेप्रदु
मनहिगउ ॥ जाईदुरीकैभीतरिपईउ ॥ पे
किमहूरतिवीतिओजवै ॥ हरिसुतनिसारति
समालीनवै ॥ बोलेनवैप्रदुमनतिमहांनि
औसारथीवडेअज्ञानि ॥ तुकिकोलिआई
गेमूडभगाई ॥ मरैआवहिगेकेषावराई ॥
प्रभसंकरषणप्रिपरषिदुरानि ॥ किआनि
नपहिहूऊकरोवषानि ॥ तुकिकोलजाक
रीमवारि ॥ कवूनभाग्यिजतुपरिवारि ॥
नवैसारथीविनतीकरी ॥ तुमरैहद्देगदा
कीपरी ॥ महामूरछापाइतकै ॥ वहिआता
मानीतुकै ॥ नवितुमकोलिआउदुरिमारि
प्रभमनतुककोदोषलगाई ॥ श्रीप्रदुमन
कीओईसनान ॥ हदेसमाले श्रीभगवान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रसिमहिजाइलगापेवासि॥ मारिउतुमनम
यवलिवान॥ अवरिवलिवद्धनेरहरेने॥ तिन
केनामनजावतिगने॥ नहाउरुषोतमना।
नीवाति॥ हमरोत्रुरीभइउतपाति॥ पांडवते
हरिविदिआभये॥ दुरीहारिकामाधवगये
रषिपरिवैठेश्रीभगवाति। रसिमहिआये
उरषिउरानि। हाथिगदालेनेचनिस्याम॥ ग
वप्रहारीप्रभअकाम॥ नाकाचूरनकीउपि
वान॥ जडिकामभूमिरिराईजेउमान॥ पे।
कामईयासालमिआन॥ मकउनकिकरै
श्रीभगवान। सालविडारिउकेसवराई।।
नमिकेसिरितेरलीवलाई॥ देनवकचक।
निआईउधाई। वङुभीमारिउत्रिभवनिराई
ईकभागेईकउरेमारि॥ हरिनेवृमषदंनग
वारि। नीनलोकिह्वआजैकार॥ जैश्रीकम
मकंदमुरारि। देवग्रहपकीवरमाकरि॥ जै
मधुसूदनआपरहरी। आईजेक्रुतिमैहर
यमउ। आगैनाथुअपारमतिगउ॥ वक्रमा।
थिहरिडारिजेमारि। वासदेवकोलगीनवा
रि। समहीइछहरिविमारेस्याम। संतजनाके

द. श्री.
म.
२७.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

षरिकामि ॥ देवरूपकीवरषाकरी ॥ जैनाए
घणाआपदाहरी ॥ गावहिगुनिजनिहरिके
नामि ॥ जैजगदीसरिखेंदरिसाम ॥ परनी
नामसिनभमहिदेव ॥ हरिगुनगावहिश्र
वणश्रभेव ॥ जउकलिकोलेआपेधामि ॥ प्र
भश्रविनासीहरिचविस्यामि ॥ श्रविनोक्ता
रिजेजुगुगोपालि ॥ कालअतीनकालके
कालि ॥ आदिवकीवैडुरथअंत ॥ देनविड
रिजेश्रीभगवंत ॥ भारुउनारिजेडरषडए
नि ॥ नमिउनधुश्रविश्रीभगवानि ॥ डुष्टवि
डारेनोषेसाधि ॥ तीनलोककीमिरीउपाधि

दीनानाथअनाथमहाई ॥ जीवतिहरिजन
लीलागाई ॥ दुष्टाकानाथप्रभूहरिराई ॥ न
नरिहालषरिद्रोसमाई ॥ २८ ॥ साषी ॥ ह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लधरजी तीरथ चले तीरथनि मै भगवंति ॥ पं
गुरिषाव बहि जगतिको वे परवाहु अनेति ॥ १
चौपाई ॥ तीरथ चले प्रभु बलिरामि ॥ तीरथ
मै पद मदाधु का मि ॥ लोकनि को दिषराव
निगाहि ॥ आपि सम भूने वे परवाहि ॥ प्रथमे ना
वेषेत्र प्रभासि ॥ मह्म प्रभू जी सदा विगासि ॥
वकुंने तीरथ प्रभु जी करे ॥ तीरथ के अघ ह
लधर हरी ॥ नैमिषारण्य आवे भगवंति ॥ आगे
थे सौनकादिक संति ॥ सभ ही उठे विलेउ नि
आगि ॥ ऊंचे अस्त्र ने जाने भागि ॥ आदर दी
नो आपे रामि ॥ प्रभु अभिनासी सदा सुका
मि ॥ आसन दीनो परम उनीति ॥ फूलि स
मानि विगासे चीति ॥ हाथि जोरि मुनि आ
गै षरे ॥ नमो नमस्ते प्रभु बलि भरे ॥ लोमिह
रषणि मनि की आगुमानु ॥ विदिआ काम
निमहि अभिमानु ॥ प्रभु न पछुाने भई आग
वारु ॥ हलधरि को नही पारु उराह ॥ नांउ
उउ तिन आदरि कीरिउ ॥ वडो मूढ उडरमनि
सिउ भरिउ ॥ कोपे हलधर प्रभु अपार ॥
किआ की आंई निवउ गवारि ॥ मारे कुंसे वि
लेउन लाउ ॥ गगन प्रहारी मेरो नाउ ॥ अस न

र.भा.
म.
१३२

34

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हैकुतिमनमहिकिकहिओ ॥ पहिविगाउ।
याकामैमहिओ ॥ सफुलिवेष्ठाश्रीवलि
मि ॥ सतिहोईजोचितवनिकामि ॥ देषोदे
उकक्रमाचलाई ॥ भमाचलाईप्रभुवलि
राई ॥ क्रमाचलाइप्रभुवलिराई ॥ कुशास
थिमाथागिरिपईश्रा ॥ सीसदेहिनेनिश्र
गभईश्रा ॥ विलषेनवसनकादिकसेति ॥
कहाकीओहलधरिमगवेति ॥ पहिउव
रैषाभलेपुराति ॥ जिनमहिगापहिश्रीभ
गवाति ॥ हरिजनसनिहमजीवहिदीनि
मतिईसकीधीश्रनिपरवीति ॥ बोईओव।
रहमाराकाज ॥ अनिरुद्धलागोहमको
काज ॥ हलधरबोलेसोकुनकरो ॥ धर्म।
हरुद्दिहिहृदैमहिधरो ॥ याकासनतेसोस
नपुराति ॥ हमक्रकीश्रापक्रपितासमाति
विश्रासश्रासतिवैठाईउसून ॥ हलधरि।
प्रभुनिसीकापुन ॥ वहदीनोवलभद्रम
होनि ॥ नककोश्रावहिसमेपुराति ॥ सनि
सनकादिकहरषहिमरे ॥ प्रभसेकराष
णीसमितुघिहरे ॥ हलधरिकोपहिविन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नीकरी ॥ हेप्रभभाइ मुनीनरि हरी । वे आज्ञात
मपतिनाहि ॥ हमजाने है हृदे माहि ॥ पात
किकोरि मिटावुनि हारि ॥ सभुजगुनतमरे
सामि अपारि । लोक इक कोरि घाठा वडउ
रह ॥ कछु कप्रभजी धर्मे कमाइ ॥ बोले ह
लधरप्ररषप्रानि ॥ धरिकाराजसफिकी
गेयजानि ॥ शासिविनिकछुतमकहो ॥ प
मेनीतिकामारगगहो ॥ बोलेबसनिवउे
वजानि । समनीप्रेप्रभजीप्ररवप्रानि ॥ नम
प्रतिशरवसदाप्रकाम ॥ नीरधिकेजेहेव ॥
सितामि ॥ हनधरजीनीर्थकोगहे । सवि
सनाषिनविनीर्थभवे ॥ हरिहासिलउमेनि
धानि ॥ सभहीपरसेरामप्रानि ॥ परमेवि
येकरहावारि देसि । गणनाथकोकीपेप्रदे
सि । गंगालउसभिनीरधिकरे । समहाप्रभ
भजीविधिभरे । सभुनीरधिकारि आवेलमि
नैमिषारण्यआवे निहकामि । वहुमांगउक
छुहलधरकही । वातिसमबोलहिमेसही
रिजोकहिउेसनीप्रेहरिवीरि । वललंद
नकुचीलपारीरि ॥ हमरेनगुविमाकेआइ

द० प्रा०
मं०
३६८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बहुरिमनीवाह्नमनकुउपाई ॥ ताकोमारकेक
रुणाकरहु ॥ कहोदेहुहमरेपरिहारहु ॥ ब
हुतभलाबोलेबलिराणि ॥ ताकोमारेसबे
रेकामि ॥ पुरविश्रमावलिआइजबै ॥ देत
महाराजउपाईउनबै ॥ हाथिविशूलभईपे
नकिया ॥ तिनहलधरीको दरसनकर
बलिजेभागिहलधरगहिलईउठे ॥ मूसा
लदंतकेसिरपरिदईउठे ॥ ननतिश्रागि
छितिगएधरानि ॥ जेहलधरजीपुरषेउ
रानि ॥ बहुरिजिनुकोनेबलिराणि ॥ सकल
लोककेपूरेकामि ॥ मानकिरुपारिकृपा
भई ॥ भगतिदानुतिनरिषकोदई ॥ रिजो
रामकीपूजाकरी ॥ जेपुंकरषणआपहर
हरी ॥ मेलीगलिवैजंतीमाली ॥ नीलउपर
नापरमरसालि ॥ भूषनिलालअमोलन
राई ॥ सुजरामकेवेद पाई ॥ कृपानिधानना
रेहारिकागपे ॥ चातिरामकेनगमहिन
पे ॥ जैबलिरामभयाचतिस्वामि ॥ जननि
हालकेपूरकूकामि ॥ १६८ ॥ साषी ॥ बिनै
कैसमकदेवकोभगानुपरीछनराउ ॥ कपा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रे भगवानकी वढिउ कस सितु भाउ ॥ १ ॥
चौपाई ॥ भगवन परीछत विनती करै ॥ भग
ति भाउ हिरदै महि धरै ॥ हे प्रभु देव परम गुर
देव । नमो पगनि की कीजै सेव ॥ कहन कथा
केहु परम पुनीति ॥ हिन करि हमरो चाव
नवीन ॥ हरि गुन सुनने के वनु छाई ॥ के
सव के गुनि सवकु सुनाई ॥ स्रवनन सुन हरि
कथा जेउ नाहि । रसना करैन कस वषानि
वहु रसना विष वेलि समानि ॥ हरि षिन ह
रिकी टहलिक माहि ॥ है जंजीर से संताना
हि ॥ नैनन हरि को दरसन करै ॥ मूड वदी
है वे रे चवै ॥ सीसन हरि को करहि जुहारी
से सन महि सिरि वोरि विगारि ॥ जो मन वधि
न वैन पी भगवान । प्रति करो हवडु से ल
समानि ॥ हरि मंदरि को चरनिन जाहि ॥ वे
कीपरी चरनि वज्जनाहि ॥ कहा कहो है पा
मम मानि । हितकरि हरि गुन करो ववानि ॥
वेडीपि ग्रासिम्रनि उपनि उभाउ । हमरो
हकस जडराउ । प्रतिप्रसन हुए सुकदेव
है दै विरान हरि मल सप्रमेव ॥ वोले स्री ज्ञ

द॰ प॰
प॰
३५३

343

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कवउमहातिं ॥ पतिपरीछतिसंतिसजा।
नि ॥ कथाकहोसुनरिचालगाई ॥ दीन।
दिआलभयेहरिराई ॥ ऐकुदीनपरिकि
रपाकरी ॥ सोछपाइसुकिहृदैधरी ॥ सो
हरिकथासुनावोनकै ॥ जोनहीनकरि
रछ्रीसुकै ॥ पंउरिपरमहिहरिकोसंत ॥।
हिनकरिसिमरैस्रीभगवंत ॥ श्रवन।
वरनसुदमानन्नाम ॥ विनहरिसिमर
सिरिदाप्रकाम ॥ पुंनितेहीनदरिद्रहि
भरिउ ॥ नउतनचीरिनकवहूकरिउ ॥ पर
सिकुरीकाषकुकीकरी ॥ निपरिपुरात
निछुदूकुभरी ॥ बहुविगलीकीधिंघाये
गि ॥ लगेविरंगपेनानारंगि ॥ गने षंउकी
नेउकुपीति ॥ देहिरवरेप्रनिवलिहीति
हूरीगागरिचरिमहिधरी ॥ अतिपुनीत
निरमलजलभरी ॥ नारिसुशीलानाके
संगी ॥ वसुपुरातनिजाकेअंगि ॥ अति।
मैनोषोवडोमहान ॥ हृदैभीतरिस्रीभा
गवान ॥ विनमांगेजोकछुकोउदेई ॥ वे
परवाह्रतिसीकोलेहि ॥ सीलवंतिसुष्ठ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदासि ॥ हरिसिमरनुकरिहृदाविगासि
हरषनसोकुपविनप्रवीनु ॥ हरिकोसि
मरैसदाप्रधीनु ॥ कबहूकछुभोजनिको
लैहै ॥ कबहूंनऊपासारहै ॥ वडेसाधुहरि
सिमरनकरै ॥ हरिसिमरनतेनेकुनटरै
सुपनाकरिजानैसंसारु ॥ सदासतिजानै
करतारु ॥ किसहीउमिलिवातिनकरै ॥
मगमोरिहनकबहूधरै ॥ वातिनसुनैकि
सीकीकांनि ॥ हरिचरचाबिनुऔकिसमा
नि ॥ ईहीजीतिप्रनेनउपासि ॥ प्रबकदेव
नेमहाउदासु ॥ वामदेवकोजबैमहा
नु ॥ पेकोकमलनैनैसिउध्यानु ॥ कल
कलबिनुरैनवाति ॥ हरिकोसिमरै
दिनप्रकराति ॥ सोननउमननविश्रामै
मउ ॥ हरिहिरदेमहिलागिहिनहूब ॥ पे
किरिनासिवोलीकुलनारि ॥ हाथिजोरि
किकुकीपेउचारि ॥ विमैरानोहेसंतन
ज्ञान ॥ मीननतमारेश्रीभगवान ॥ लसीन
ईकजादवगाई ॥ शरनिपरेकोपीडिमिट
ई ॥ महाडालीहमचाहिमहिरहे ॥ नउतन ।

द॰शा॰
म॰
२२५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वीरनभोजनवुलहै ॥ जाङ्कमलपद्दिउदम
करो ॥ मुनीश्रैकेतनसभैउखुइहरो ॥ मांगि।
लिआवद्दहरिनेदान ॥ एषहिगेउरूपोनम
मान ॥ जोनमकहेकिमांगनतुरा ॥ मांग
नतेहमरामनमुरा ॥ पूतपितानेमांगेदान
देवनदैवैनजावैमान ॥ ब्रमनमांगेलजा
नाहि ॥ समफुरुश्रपनेहृदेमाहि ॥ वउजउ
नेदनमहाउदारि ॥ पउपेकदेहोचरसारि ॥
श्रैसाषानमारासंन ॥ निहिहरिकउनकि
करेश्रनेन ॥ दानावउदरिद्रविउरि ॥ परम
रिश्रालमऊंदमनारि ॥ वेगिसिधारऊकेत
महानि ॥ लीजैसवदिहमारामानि ॥ सभ।
जगुभोगेउनमुभोगि ॥ देषऊसमहोकेस
लोगि ॥ किसीनजैसीहमश्रतिदीनि ॥ उ
षमिदवऊकेतप्रवीनि ॥ कसमसभकैदै
पितमानि ॥ श्रविहरिलीनीजादवजानि
वालपितानेमांगेदान ॥ देउनदेउनजा
वैमान ॥ सभकोमातपिताभगवान ॥ लि
लिश्रावऊमांगिकमलनेदान ॥ वोलेनवैस
दामासंनि ॥ कऊनलवैपिनाभगवंनि ॥ रा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गवारितेंबडरीभइ॥ नेरीमतिमाईआसुति
लइ॥ हरिपहिमायामागनिजाउ॥ मक्तिउ
पारुहैग्याकोन्माउ॥ सभविषिआकेभोग
अपारा। यहिलोकैभोनरकिहारि॥ जोह
रितेंलउमागेमाई॥ माईयादेवहिकेसव
गई॥ माईआसमेमितावैज्ञान॥ घटिनेबि
मैश्रीभगवान॥ हृदैवीविवेकअभिमा
न। ऐसीवानिनवड्डरिवषान॥ भूलीज
गिकेकउनकिरेथि॥ पराएंवनपापनके
भेथि॥ रिसेषांडुसीविशसिउभरी। नाकि
उहृदानलावैघरी॥ वड्डरोप्रेमानासुन
लेडु॥ हरिसिमरनसिउकरोसनेहु॥ माक्ष
जेतमककनिकोउश्राह॥ भजिलीजेमावा
करनाह॥ कहिमहानध्यानधरिहिडो॥
रूसनामहृदैमहिगहेडो॥ उपिकरिहो
विचारीनारि॥ वानिनमानीजनभरनारि॥
वडुरिससीताकरैवीवाह॥ माईआसाधिन
करैपिश्राह॥ उसैनविश्रापैभूषपिश्रालि॥
सकलजगनिकीस्राउीश्रासि॥ याकेहृदै
नविश्रापैसोकि। निर्मलमाघूहरीकेली

१.रा.
म.
२४५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कि॥ हउ माई या बुझि श्री आजाति। पासि उक
वनि वनावे भाति॥ प्रभ काश्रीति प्रसंगु।
चलावे॥ किसी भांति हरि पाहि पठाउ। हु
दे को जानहि भगवानि। कहु केशव देव
हि गेहानु॥ व कुरो बोली वानि वनाई। विनै
बोल्लि फुनि वंदे पाहि॥ हे भरनाथ मवे परवाउ
कि वाति कीहु है न चाउ। माई आते तीमे गैव
लाई। रहिउ सिआम के नाम अचाई। हरि जी
के दर्शनि कउ जाउ॥ पासि आउ सभ नाउ मि
टाउ॥ छिद्रि छिनि प्रउ प घटे दिन रैनि। पासि।
आउ प्रभ पंकज नैनि॥ जाको माव हि वेद पु
राति। जीवो श्रिम रहि जोग ध्यानि। जाको प्र
नहि देव महानि॥ सोइ प्रगटि है श्री भगवा।
नि॥ दरसि परसि संतरु महिरले॥ ठी लिछं
ड्रि केशव पहि चलो। छिन भंग रीय पहि फ्रेउ
सरीरि॥ देव करना ई हल्ला ई पिवीरि। वोलिउ
नवै मदा मासंत। कहिउ भला मसपी लासं
न। रहीपहि जाउ थिले भुनलाउ॥ मैजलि
नार निजा को नाउ॥ इन्न नीठउरन घालीजा
ना। ईउ कहि वेद पुरानन पाना। जे कोई जन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मतिउरपहिराई॥ मेटिदेईकुनिबंधहिपाइं
जेकोऊजावैलोनिडआरि॥ मेटिदेईकुनि।
कौनेहारि॥ जोजनहीमेटरिमहिराई॥
मेटिदेईबंधहिहरिपाई॥ कैसेहैकेशवभ
गवानि॥ सभिमतिउरनेवडेमहानि॥ महा।
राजिराजननकेराजि॥ सभिसेननकेपरनि
काजि॥ तीनिलोकिकोनाथअनेति॥ लछ
मीनाईकश्रीभगवंति॥ सभविधिपूरन।
प्रभूपरवीनि॥ हउअनाथुडावलअनिहि
न॥ कवनभेऊलेआगेपरो॥ हउअनाथु।
हिरदैमहिडरो॥ लोकिपालिसभिदेवहि
डेउ॥ हरिकोपजैसभघेसेउ॥ तिहूतनेह
रिवेपरवाउ॥ अवैअलेवअगमअथाउ॥
हउअनाथकहकिआलेजाउ॥ कउनमें।
तिकरिनानापाउ॥ केकेकहोईलेचलो।
सवारि॥ हरिकैआइउतीनडआरि॥ दीन
बंधहैश्रीभगवान॥ रिदापद्मानहिउर
धउतनि॥ जोहरिश्रीगीतामहिकहा॥ लोह
महटेभीनतिगरा॥ पविउरूपकुलिपानी।
देहे॥ जनकादीआदिनकीलेई॥ दसाथ।

द० ग्री०
मं०
३४८

348

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेंदनश्रीरघुनाथि॥ सांगधुनषविराजति
हाथि॥ वतिमहिविचरनिलछमनिसाथि
सनसहाउरूरमतिमाघ॥ करिक्रपासिव
रीकैगये॥ तापतिश्रमनिरिश्रालप्रभभये॥
तापतिश्रमनिरिश्रालप्रभूभये॥ तितिङ्हरे
फलिहीसिषिदये॥ प्रेमसहतिरघुपति।
सबलेये॥ सरदघ्रचानेमानहिभाउ॥ सोइ
कसप्रभजादवराउ॥ कछुलिश्राउहेषि
श्रारीनारि॥ परसोजाइमकूदमरारि॥ हर
षीतिपरिसपुणनारि॥ मानीकातिप्रभूभा
तारि॥ पेरीनगरमेंगीचरिचारि॥ नेंउलिश्रा
नेतिनकीनारि॥ वीलश्रानतनलीनोहावि
तामहिवाधेजननकूसाथि॥ प्रभुनेपति
कैश्रागेधरे॥ लेहरिसंतिकछमहिकरे॥ व
लिउसंतहरीश्रीकीजेरि॥ सकललोका
केवेपननोरि॥ मानीसोचेहृदैमेंकारि
वकूजसिदीसरिप्रभूमुरारि॥ सोलासंहथ
पेकसउनारि॥ प्रछनाइकामहाउदारि॥
तिनसिउषेलहिश्रीभगवानि॥ दीपी
होवहिगेदसवानि॥ लोकपालनहीश्रान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाहि॥ ताढे होवहि द्वारा ङ्ग माहि॥ जविप्रनि
तिनको आज्ञा करै॥ नविकोऊ मंदरि मदि
पगु धरै॥ मन आवहु जो केशव करै॥ दीन
ऊ आरि पारि ठाढे रहै॥ कवन को दूहू ऊष
रे अधीन॥ दारिद्र भरि ओ हवतो दीन॥ कि
हि विधि पैठो गाहू रि द्वारि॥ कछू न हृदै।
पैरवी चारि॥ दीन वे बन्धू ऊ दोदीन॥ कहै वे
ऊ हरि संत अधीन॥ दीन बंधु जो षा ने नाऊ
तऊ अनाथ हऊ पा वषाऊ॥ प्रीति ढरि का गई
ऊ मरेन॥ कस नाम हृदै गुविमेन॥ तीन
चऊ को आलेची महान॥ समक्रि कुजमन
हि श्री भगवान॥ नी निपऊ रिले विभीत
रि गई या॥ मंदर देषि वि सम्भ्रमति भई पा
कंचनि के ग्रिहि ऋनिमनि करै॥ दमोहि ला
के तम को हरै॥ घच निमणी अनिना ना भो
ति॥ को ई स्मरा को रशमि की क्रीति॥ बोलहि
मोरचकोर विहंगि॥ कोकलि मैना सक्कि
वरङ्ग रंगि॥ के पावजी के द्वारा रङ्ग माहि॥ ब
सति कुलि कौ ठाका ना हि॥ गईउ जोहक
नीजी कै धामि॥ देषि उसे व कुण्ड भूवलिला

द.श्री.
स.
१४०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

347

सि॥ उहै कृपानिधि दीन दई आलि॥ सोनउ
पान श्रीगोपालि॥ जन कै सनमुख आ
ईजो पाई॥ प्रभ मम पस्त दानि द्विभव निराई॥
केठि लगायो विपम हैति॥ कृपानिधान
प्रभ भगवंति॥ सकुचै वि पद रिद्ध हि भरि
उ॥ मद्रा प्रभ अति मार रुक कीजो॥ हाय रु
सिउ गहि लीनो हाथि॥ करुणाकरि मह
प्रभ नाथ॥ भीतरि आनि उसे नमरारि॥ वै
ठाई जो पर जे कि पारि॥ पीनव सन सिउ का
री पूरि॥ दुःख दारिद्र सभ कीने दूरि॥ चरनि
पषारे श्रीभगवानि॥ सकुचै ब्रसन न वे जो म
हान॥ पगि जल अपने सिरि पर धरिजो॥
सभ ने ऊच सदामा करिजो॥ तिरि पगि नव
की गंगा धारि॥ तीनि लोकि प्रचिद तिविस
रि॥ हरि पवित्र लिसंकरी सिरि धरिजो॥ दोष
हषत निमत निका हरिजो॥ तिरू प्रसादि पाई
जो सिवनामु॥ ऐसे हरि पगि सुषि का धा
म॥ ति नु पगि जलु प्रभ सिरि पर धरै॥ ईछा
चारी कउन किकरै॥ वापी करदि कसा।
भगवान॥ बहुत विप को कीनो मान॥ चर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नऋकाटैकटहिअनेति ॥ नीरखिवादिग्र
भूभगवंति ॥ उमद्विवलेकेशवकेनेन ॥
निहिष्ठविमैहैकोरकिमैति ॥ वंदनला
ईउतिनकेपंगि ॥ केसहलाईओप्रसहिसं
गि ॥ भगतिपपकृतिआगेधरिउ ॥ दीपद
नुकृतिमाधवकरिउ ॥ प्रपेमेगिधने
किप्रकारि ॥ मीटेधारेसधातिघपारि ॥ कु
तिजगदेसघलावेपानि ॥ संनउधारनश्री
भगवानि ॥ कृतिहरिदीनीभेटाराई ॥ क्रो
पाकीयनिविभवलेराई ॥ ठकनितिजना
कोचमरुफलाई ॥ हरिजनहरिआग्र
निविसमाई ॥ सनिमामध्याईनिरूकालि
सभिहरिपतनीलीनीनालि ॥ हमतिकं
नकोपिआरीनारि ॥ देषहरीकोमीतनि
हारि ॥ हमसिउमाधवकैठमान ॥ देषह
श्रैसामीनमहान ॥ वडेकुचीलदरिद्रि
भारिओ ॥ किननदानदीनकोकरिओ ॥ कै
सेरेमिवसतिपहिदीन ॥ मूरषहोईगेना
हिप्रचीन ॥ धनीहोईकोआवैमान ॥ वृपि
वानजमिदेवतिदान ॥ कोउनहोईगोपुन

द॰प्रा॰
म॰
३४८

348

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ईसपाहि ॥ कैसो होइ गोरि द्रग्रवाहि ॥ स
भनेऊ बाग्राजुमहान ॥ जो कोसेवै श्री
भगवान ॥ अर्जुन हलधर सिउ इउ भि
लै ॥ ईसु अधीन सिउ प्रेम सि मिलै ॥ हसहि
कै तिको पिआरो नाहि ॥ यहि नो मीत भ
ले भरता हि ॥ नंद पिता जसरानी माई ॥
गऊ जरी अ ऊकामा षनु षाई ॥ यहि तो प।
षिअ से भगवानि ॥ हमसिउ करने बना
गुमान ॥ दीनबंधु है महा दिआलि ॥ भले
देव पति प्रभ गोपालि ॥ जो धरकि रति
सोऊ बस्यपाति ॥ नमो नमस्ते कपाभंड
रि ॥ जनि को बोले श्री भगवानि ॥ परमकु
सल है वडे महान ॥ हम तनम पउपेकव
रसाहि ॥ होउ दासि कै की नीनाहि ॥ करी
ठोई गीनाहि महानि ॥ नमरे वनिग्रिहपे।
किसमानि ॥ नमसति कर्म करनि झोसं
नि ॥ हे देवी चित्रसकोमंत ॥ नमकोकरु
नकरना करम ॥ विनहीसि मिरानि सभ
ही भरम ॥ लोकऊ को दिषरावऊ राऊ ॥ आ
पिकर्म ते वेपरवाऊ ॥ जैसे हउसनि कर्मे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कमाउ॥करिइसनानुजपोहरिनाउ॥तै
सेतनमैलोविदेमहानु॥तनमधैसांचैसा
ताएनु॥जानहुसंतनुगुसाननिवानि॥व
निमहिहमनतमयाईसानि॥उरपतनी
पहिआसाकरी॥वहुआगिआहमसि
रिपरिपरी॥ईधनिकोवनिभीनरिग
पे॥हमनतमधवरसषासेगिभपे॥वर
षाचनीभइनिहिकालि॥हमनतमजा
रैकीपेविसालि॥निहिवनिथैसीवरषा
भइ॥ऊचनीचठाहरिमिरिगई॥वसेग
निउधिसहिउपरीरि॥जारैचनील
गाईपीरि॥मुकोठउरिनपावहिकोई
नभिजेगहरीवरषाहोई॥आगिमाचदे
हीमहिरहे॥थैसेउखिवनिभीनरिसहे
नवहीसभैविहानीरालि॥सतिगुरजा
गोभइप्रभाति॥संध्याकीनीपहुमहानि
मधितेउचारैनामुनाराति॥मतिमहि
भाईपडावोवालि॥शतिपुनीतिभइप्रा
नहिकालि॥वालनदेषकोग्रहिमाहि॥
कहागवेकोजपहिओनाहि॥वोलीपतनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वनमहिगावे॥ स्रुतिअपाराड्रमकैनेभपे
ईधनिकउपटुवे वनिमाहि॥ जीवति।
रहैकिजीवहिनाहि॥ जवपननीते स्रैसे
घनी॥ महामोकुकरिमूडीभुनी॥ सतिगु
रकाहिरदफुरिगईया॥ महामोककरि
वानहुभईया॥ स्रैसीदयावडीगुरमाहि॥ त
निमनिप्राननरहनापाहि॥ वनिमहिग्रा
ईडोगुन्हिग्राल॥ छुटनिफिरैपरमकि।
रपाल॥ नषिनेरहैगुकारिगुकारि॥ कम
वेदहैवालकुमारि॥ ग्ररेस्यामरेनादवनं
द॥ किहिवनिहोनमसघकेकेटि॥ कमल
नैनरेकोमललालि॥ वामदेवरेसंटरी।
वालि॥ वोलकुकरहपिग्रारेकानि॥ निका।
सिजानिहैमेरेप्रानि॥ सतिगुरुकरैमहावि
ललापि॥ ननिमनिमहाविग्रापिउनापि॥ रा
निकउरहैरुनिकुमारि॥ सतिगुरकेहैगुका
रिगुकारि॥ छुटनिग्राईउरमरैपाहि॥ सति।
गुरकैमननिहमरीचाहि॥ देषेहमनविनि।
पटिविहालि॥ कांपैदेहिघरीनिहिका।
लि॥ कंठेलगावेदउरिदिग्रालि॥ पंनिपं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिनमेरेवालि । घतिप्रसंनह्रूपेगुरदेव ॥ स
फलीकरीहमारीसेव ॥ धंनिबालितिनसबउ
महांनि । हमकोअरपेअघउनेआनि ॥ पाते ।
आगेकोउनमेउ । प्रतिकिरपालह्रूपेगु
देव ॥ गुरिकिरिपालिअसीसादइ ॥ बिधि ।
आसफलहमोकउभइ ॥ सुनामसतिगुरको
दीनादान । बहुनाराबिउगुरकोमान ॥
वानिलागिअघउनैअहिगपे । नबिनमनेह
मानिअरेभये ॥ हमनंतमभीनरिसमहमना
हि ॥ देहिभिंनमनतिआगनाहि ॥ नबिकेवि
कुरैदेषआज ॥ सुरनभईआहमाराकाज
ऐसेगुरकीकीनैसेव ॥ गरुसंदीपनहम
रेदेव ॥ ग्रिथेमगुरहैबिनसरुमानि ॥ जिन
नेपाइऐसेउतमगानि ॥ कलिजोकेठिजने
उपाइं ॥ लोकिवेदिकोपगुवनाइं ॥ सति
गुरसोजोदेवहिध्यान ॥ ऐसेसतिगुरहम
इसमान ॥ ऐसेसतिगुरकीसेवाकथै ॥ तात
कालभउसागरनरे ॥ तिहिसतिगुरकोसे
वाकरैभजीअहिमीति ॥ जिहप्रसादिको
इनिरमलचीति ॥ १६४ ॥ मदामउबाच ॥

द.श्री.
म.
अ.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

साषी ॥ संतसदासामकीकीर्तिकरैवना
ई ॥ ऐतीमतिनेनाकहैश्रुतिश्रनंतहरिग
ई ॥ चौपाई ॥ संतसदासाविनतीकरै ॥ प्रेम
भगतिलोचनिजलठरै ॥ हरिगुनिगाव
निलगामहानंद ॥ दिनकरिसनैश्रीभगा
वाव ॥ वलोविपसदासासेन ॥ विनती

तनीधैश्रीभगवंति ॥ लोकिनाथदेवऋके
देव ॥ तीनलोककेतमगुरदेव ॥ स्यामत
मारेसभद्रेवेदी ॥ प्रभपरमानंमअलषश्रा
भेव ॥ ग्यानरूपविज्ञानहिभरे ॥ अतिअशेष
जिनकहुनकिकरे ॥ पूरनब्रह्मसनातिशा
रति ॥ अधैअगोचरीश्रीभगवानि ॥ नमा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोकवलनपरावैवाति । तीनिलोककोहि
पितमात । नान्हनमाराजपैमहान्न । हि
नमहिह्नोवैपरमसुजान । नमकोगव
हिवेदगाति । मनकिसनंदनिधहि
ध्याति । लेपिसहंश्रमषिजसकोकहै ।
श्रादिनश्रंतिनमालहै । निमषमाहि
साजञ्रुश्रसंउ । नमनैसेश्रीसदाश्रबंडि ।
वंडोनवरोश्रनंदहिभरे । संतहैतिजगि
जगितनिधरे । सिवप्रकाशजगदीसि
लेषि । प्रविप्रमिलीनेमानुषमेषि । लोकि
निमितकमंकोकरै । तीनलोककोश्रा
पदाहरे । जनमिमिरननेछुतिश्रनंति । न
मोनमसेरुरूवतिकेति । श्रमितपराक्रम
श्रंमितवैति । नमोनमसेपंकजनैन ।
शंषचक्रकेधारनिहारि । नमोनमकेश्र
भुउदारि । पीनवसननवैजंतीमालि । न
मोनमसेश्रीगोपालि । गहश्रगामीत्रिभ
वतिनाथि । नमोनमसेसभकैसाथि । ना
रायणनिरलेपश्रनंत । नमोनमसेश्री
भगवंत । निरविकारनिरवाणिश्रपारि ।
नमोनमसेदेवमुरारि । कमलवंदनभगवान

द॰श्री
म॰
३५१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

351

कृपाल ॥ नमोनमस्तेपरमेश्वराल ॥ सेष
सैन वैकुंठनिवासि ॥ नमोनमस्तेसदवि
गासि ॥ पद्मनाभहरिपंकजवासि ॥ न
मोनमस्तेअमरनिसरनि ॥ आदिनिरंज
नकेप्रानि ॥ नमोनमस्तेजगिकोघाणि ॥
त्रुगतिमुक्तीकेनाथमकुंदे ॥ नमोनमस्ते
सुद्धकलिवेदि ॥ सदासनिसर्वव्यासेवि ॥
नमोनमस्तेमहाअसेषि ॥ परमेवनिहतो
लअभेव ॥ नमोनमस्तेदेवअछेव ॥ दीनबंध
प्रभहरदुविडारि ॥ नमोनमस्तेगर्वप्रहारि ॥
करुणासिंधुप्रसेनसभाई ॥ नमोनमस्ते
केशवराई ॥ नीलकवलसंदरचनसामि
नमोनमस्तेप्रभूस्वकामि ॥ अंस्वनुवैनस
वैनसरूपी ॥ नमोनमस्तेपरमअरूपी ॥ कि
पाकिअगुनिजीकोकहौ ॥ नैमनस्वंततौ ।
मारालहौ ॥ कवनकीटहमपरमअगा
नि ॥ समसुतिपुरानपुराषपुरान ॥ हमरी
हरीनबहीभइ ॥ समिअपराधादिनकी
राइ ॥ आदिनगुरुकुलईकंठभये ॥ मोहि
मडुनानमुसिरिरापे ॥ जाकोध्याननधरनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रवभक्ति ॥ सोतुमअवषरदेवहरिकेषति ॥ नकि
कोकरनाकछुनरहा ॥ पतितमाराहिदेरा
हा ॥ तमरादर्शनपाइजोआज्ञ ॥ सत्नुमइंश्रा
हमारकाज ॥ सभिसाघनिकेफलिकाश्रं
श्रापकदीसैश्रीभगवंत ॥ भगतिदानदीजै
भगवान ॥ अतिउदारिमेरेजजमान ॥ कृपा
ऊहकेणवजीकरी ॥ यनीलक्ष्मीजनिकै
त्रिह्रिपरी ॥ २० ॥ साखी ॥ हसिकरीबोलेकम
लीजनकोकृपानिधानि ॥ दीजैमेरिअनं
सिउसंकामेरिमहानि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ हसिक
रिबोलेश्रीभगवान ॥ सुनीप्रेमीहमारेप्रा
ति ॥ जोतुमुकिकेमानीमेरि ॥ दीजैमनिके
शंकामेरि ॥ मुकिकोनेकुमसरपैसंति ॥ हि
नुकरीलैहोश्रीभगवंति ॥ प्रीतिविनाकोअ
रपैचना ॥ त्रिणसमानिगिरपतिकोगना
संतमदामालजाकौरै ॥ तेउलिदेविकछ
महिधरै ॥ देषैहरिजीकापरनाप्त ॥ कृतिज
नदैषेप्रउनाआप्त ॥ नीचामुछकरिरैम्मह
न ॥ भेरामागैश्रीभगवान ॥ फारेपटलैतं
उलिफरे ॥ कमलनैननकीदृष्टिपरे ॥ पहि

ह.पा.
म.
५५२

352

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रहै हैमेरै भीत ॥ तिनहीसिउ थीमेरी प्री
ति ॥ न्हकिकोरद्दिहिविलेहुनलाई ॥ मध
मेटिकरिहेनघलाई ॥ मेरेमनकीबूझो
नके ॥ ईनहीमिउथीअतिहविसहैऽ ॥ य
हिनहु लिखेहैदिजराई ॥ नृपिसमेतिस।
मविष्वश्रग्राई ॥ भरीनहृष्यपुनीभग
वानि ॥ नृपिमहिमेल्ली उरषिप्रणावि
वाङ्कवाङ्ककैसाहैन्हग्राउ ॥ मनिमहिउ।
यलिउअतिग्रहिलाउ ॥ माधवषावहि
हैनवग्रई ॥ अतिदिग्रालकहुकहीन
जाई ॥ मीठेतंडलिग्रानेमीनि ॥ वरेहि।
नानेमेरेचीति ॥ सहीम्रवानोयजमहा
न ॥ हैनवठावहि श्रीभगवान ॥ नहहु।
लरीकेगवभरी ॥ नवैहकानीविनती
करी ॥ हकानिजीपतिकोकहगहिउ
सीवहोईप्रभकोयहिकहिउ ॥ पेकिम
ठिनमनषिमहियरी ॥ अपहासभैसं।
नकीरसी ॥ रुनीकहाग्रचतिहोनाथि ॥
मकिग्रधीनकोएषकुमाथि ॥ हेप्रभ
हइतनश्रिवानतिज्ञाउ ॥ विनतमभेरा
सवहुनमाउ ॥ हेदिग्रालवतिकरहु।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यनंति ॥ महाप्रभूजीस्त्री भगवंतनि ॥ हमी
समरिनयचीगुपालि ॥ हकाननिविनै
करीनिहिकालि ॥ अबयहाविनैकबुव
हिगई ॥ हरिजनसिउहरिचरचाभई ॥
सैनकरोबोलेभगवान ॥ हमनोसंतनह
मारेप्रानि ॥ संतनसफाईजेचरिसानि ॥
समुहीपरेजनकेकामि ॥ सोपेनिकरि
स्त्रीभगवानि ॥ नाकउगावहिवेदपुरा
नि ॥ जबहीफेरेपानिमहान ॥ नविनैक
रैकलभगवान ॥ वासदेवहरिक्रपानि
धानि ॥ वलिवलिजाउहमरेप्रानि ॥
फुनिहरिबोलनहिवानिप्रनीति ॥ जीउ
सदामामेरमीति ॥ सघसिउभइप्रनीन
प्रभाति ॥ जनकोबोलेकेशववानि ॥ जा
गोमीनविहानीरैनि ॥ परमदिआलउप
वारकुनैनि ॥ दिजवीहमकोदरसनदे
हि ॥ नमरेपतिमिउवडिजेसनेह ॥ जा
गेसेनकुलकीमीति ॥ विनुहरिजानै
यानिनचीति ॥ केशवजीकोदरसनक
रिऊ ॥ चरनकमलपरिमनकुधरीऊ
हीजीलीलावंदिलमाई ॥ कहण

द॰प्र॰
म॰
१५३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वशीकरी हरिराइ ॥ श्रिदिश्रामामागी हरिने सं
ति ॥ वक्रुन भला कक्रिउे भगवंति ॥ बाहु
रिश्रापे जनकै साथि ॥ प्रभश्रविनासी त्रि
भवनिनाथि ॥ जनको बोले श्रीनरिहरी
वडे भागिन मकरुणाकरी ॥ श्राजुसना
कभये है मीति ॥ तुमरो दर्शनु देषितुनीत
हमको मानिने हरिनकरो ॥ मधुसूतिले
हरदे धरो ॥ मीतमीतको करी जुहारि ॥ जे
श्रीकमलमुकुंदमुरारि ॥ महाराजजी भीत
रिगये ॥ संतसुदामाविदिश्राभये ॥ १०२ ॥ सा
संतसुदामापंधिमहि सो चे हरदेमंझारि ॥
किउ हरिदानुनकिछु दिउ केपावपरमउ
दारि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ लेविदिश्रा हरिते जनुगई
मा ॥ परमहरषहरदेमहि भईया ॥ रोमुरोमम
हिवढिउ श्रनंदु ॥ गावै हरदे देवकीनंदि ॥ म
निमहि हरिजनकरै बीचारि ॥ केशवदाना ॥
महाउदार ॥ मुकिको किउ कछुदीगे नदान
लक्ष्मीनाइक श्रीभगवान ॥ श्रतिप्रसंनभ
लेलोनाहि ॥ समसमकिन है हरदेमाहि ॥
पुरिकछुनाहिकमलकेनारि ॥ सभुही हरि
कैनलेउरारि ॥ इतितिनि हरदै कीउ वीचारि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

किऊभूलैवड्रप्रभुभूगति॥ हमकोमाई
पानैकुनदई। करुणावउीकुलकीभउ॥
माईपाइतेश्रीभगवाति॥ हुदैहोतेश्रतिअ
भिमान॥ माईश्राग्रेभुजगानिकउकरै॥ स
भैवंदनाचरितेहरै॥ किउहरिदेवहिगुरी
वलाई। विधिश्रानेहउलीश्रावचाई॥ प्रभु
नभोलहिमहापरवीन॥ जिनिहमनारेदी
नश्रधीनि। कैसेहैकेपावकेचरनि॥ रिधि
सिधिसभजाकीशरनि॥ हरिपगिकीश्री।
सेवाकरै॥ पदमपाइहिहदेमधिधरै॥ नलि
नीरषिमैहरिकेपाइ॥ सुकिनारदिम।
निजानहिसग्राइ॥ जोतेस्रवरङ्गनीतप्र
नापि। सभुपापहिजिहिपगिकेजापि॥ द
रिपगिमुकतिभगतिकोधाम॥ उधिश्रव
मोचनिहरिपगिमुक्तिभक्तिकोधाम॥ मो
हमदेषपरमीपारि। हदैराषिश्रचोहोत।
भरि॥ श्रविमुक्तिकोपाछेकिग्रारसु॥ पुर
नपउहमहरिनेलहा॥ भजीश्रकुनोश्रेमे।
गोपालि॥ भैजलितारनिदीनदश्रालि॥
गाहूवारूप्रभकृपानिधानि॥ भजवेनीरि
मिरीभगवानि॥ हरीगुनगावनिप्रिहिनहि

स्मा. म. १५५४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गईया ॥ रचनादेषिविसम्रअतिभईया ॥ जम
मगातिकेचनकेपासि ॥ चहुंदिसिसंदरिव
नेअरासि ॥ पिपलअंबकदंबिअनारि ॥ ना
निविरषकीगईहजारि ॥ तिनपरिबोलहि
मोरचकोरि ॥ सुकिईकिसारकिकरनेमोरि
मैनाकोकलिउडिउडिबहै ॥ नहीकसमवि
मोनीकहै ॥ जानेपंषीसमहारिरहै ॥ ततति
नाउदुःखदूरमतिकरै ॥ छोरीनालीवडेतर्ले
ई ॥ पूरनिनिरमलिनीहसहाई ॥ कमलफू
लफलेअतिघने ॥ अतिसगंधसोभाकिउवने
तिनपरिगुंजहिभवरहजारि ॥ समभुहीगावा
हिकसमरारि ॥ चकवीचकवहिकेशरसा
लि ॥ समिमबिनावहिनामगोपालि ॥ चहु
दिसअंदरिफिरैविवाति ॥ तिनकीजअवला
सहिसमाति ॥ ऊचाघरधामजगमगे ॥ विस
धामसीसोमात्रगे ॥ भीतरिवाहरिपुरषि ।
सिधारि ॥ समभुहीसेवकिरहलिकमाहि ॥
समिपुरषकेदेवषरीति ॥ भषनिअंगनिस
हावेचीरि ॥ बनीचेरीआमिगसैनेन ॥ ति ।
नकउदेषिलजानेमेन ॥ औसीसषीटहुलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

किऊ भूलै वहु प्रभु भुगति ॥ हम को माई
या ने ऊन दई । कारण वडौ कल्ल को भऊ ॥
माई या रै दने श्री भगवानि ॥ हूं दै श्रो ते श्रुति अ
भिमान ॥ माई श्रापे भजगति कउ करै ॥ ल
भै वांदना चरि ने हरै ॥ किउ हरि दे व हि उरी
वलाई । विषि श्रा ने हउली श्राव वाई ॥ प्रभ
न भोल हि महा परवीन ॥ जिनि हम मना रे दी
न प्रीति । कैसै हे केशव के चरनि ॥ रिषि
सिधि सभ जा की शरनि ॥ हरि पगि की स्त्री।
सेवा करै ॥ पदम पारि हृदै मधि हि धरै ॥ नलि
नीर खि मै हरि के पादि । त्व कि नारदि मु।
नि जानहि मत श्रादि ॥ जे नै श्रव वरु ग्रनीन प्र
नापि ॥ सभ पाप हि जिहि पगि के जापि ॥ ह
रि पगि मुकति भगति को धामु ॥ उ षि अब
मोचनि हरि पगि मुक्ति भक्ति को धामु ॥ सो
हम रे षेप रामी वारि ॥ हृदै गाबि प्रवोहोल।
श्रारि ॥ श्रविमुक्ति को पाछै कि श्रारह्यु ॥ घर
न पउ हम हरि ने लस्ला । भनी श्रक्तु नो श्रे स
गोपालि ॥ मै जलि नारनि दीन दश्रालि ॥
वा हू वा ऊ प्रभ कृपा निधानि ॥ भज वे ज्ञो गि
नि श्री भगवानि ॥ हरि गुन गावति ग्रिहि मदि

ह्या. म. २५५४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

354

गईया ॥ एचना देषि विसमय अति भईया ॥ जम
मगति के चनके धामि ॥ चहु दिसि संदरिव
ने अराम ॥ पिपल अंब कदं विश्रनारि ॥ जा
ति विरष की गई हजारि ॥ तिन परि बोलहि
मोर चकोरि ॥ सकिई किसार किकर ने सोरि
मैना कोकलि उडि उडि बैहै ॥ नहीं कसमषि
मोनी कहै ॥ जाते पंषी सम्भ हरि रहै ॥ ततति
ना उडः खदुर मतिक है ॥ छोटी नाली बडे नलें
ई ॥ पूरति निरमलि नीर सहाई ॥ कमल फू
ल फले अति घने ॥ अतिसं धसो भा किउ बने
तिन परि गुंजहि भवर हजारि ॥ सभु ही गाव।
हि कसमगारि ॥ चकवी चकव हि केशरसा
लि ॥ समिसषि गावहि नाम गोपालि ॥ चउ
दिस अंटारि फिरै विवाति ॥ तिनकी जुआला
सहि समाति ॥ ऊचा बराधाम जगमगै ॥ विस
पाम सीसो भा लगै ॥ भीतरि वा हरि पुरषि।
सिपाहि ॥ सभु ही सेवा कि टहलि कमाहि ॥
समि पुरष के देव धारी ति ॥ मषति अंगिस
हा वेची रि ॥ धनी चेरी आम्रिग सैनैन ॥ ति।
नकउ देषि लजाने मैन ॥ ओसी सषी टहलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोकरै ॥ दाम्हरे छिनतिमनि कोहूरै ॥ लाल।
जवाहरीलागेप्रेमि ॥ चीन्हिप्रमोलकिनाना
रंगि ॥ रचनादेषीसंतन्रप्रपारि ॥ विसमैहूम्रा
कैरैवीचारु ॥ कवनभूपयहिमंदरिकरे ॥ ऊ
वैषनिप्रकासिलतिषरे ॥ म्राजुकालिम।
हियहिकिम्रामइेउ ॥ कैधोम्रउरिढउरिम्र।
लिगईउ ॥ पुतलिकुरीनहिवहूघौनारि ॥
किहिंदिसिरहीपावनिनपारि ॥ भूलिवरि
उकिहूम्रहरिम्राउ ॥ पुतलिकुरीकैसेपरिपा
उ ॥ कवहूपिरिहिकैपाछैजाइ ॥ कवहूम्रागैम्रा
वैधाइ ॥ मतिमहिहउरैवउयहिवोकि ॥ पु।
तिकुरीकैलीनोमोकि ॥ देषिउलोकरूउर
वलहीन ॥ इहिहांइगोसंतप्रवीन ॥ कहिता।
षिम्राघापिम्रारोनारि ॥ ऐसेहैहमरेभाना
रि ॥ तिनैपछानिउठीलिनकरी ॥ वहूनमे
रिलेम्रागैधरी ॥ प्रषिनारिहूपेवउफरि ॥ सं
तसदामालीनोछेरि ॥ मारगिवेकिविछाईके
रै ॥ वेकिस्राषिहापद्मपतीधरै ॥ बीजनिवेकि
फलाविचउरि ॥ ऐकिवनावहिनीकीउरि
सलिउसमीलाम्रापेकेलि ॥ कोपेमिहालि

ह॰ ग्रा॰
सं॰
३५५५

355

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीभगवंतनि ॥ धाइं सभि लेसषी आसेगि ॥ जिन
नेलजनि हो लिग्रं नेगि ॥ संगिसषी लासबीर
मारि । तिन ने सुंदरि रूप अपारि । तिन सिख्या
हीरे निकसी नारि । सनमुषि आपे धाइं पगि
लगी ॥ कसलकु पाने आप दाभगी । आपे के
निहमारे प्रानि ॥ आप दमेरी श्रीभगवानि
चले धाम लेपनि कोनारि ॥ कीपेदा निशि
हि प्रभूनारि ॥ के मेदिजके मंदरि बने ॥ ऊ
जलि मणिके षंभे चने ॥ कंचनि के ग्रिहि के
जगिमगि कै ॥ दसो दिसा के नमको है ॥ बा
दरि छुनि चंदो पनने ॥ मंदरि के गो जानि
नगने ॥ मोती लटके हि दुआर ऊमाहि ॥ पा
हिछु विपटन रिहजीना हि ॥ धुष हि धामम
हि पुत्र अपारि ॥ निकसे धूप फरो षे फारि ॥
कंजनि ऊपरि बैसे मोरि ॥ कराहि दिष्ट पपे की
ओरि ॥ मे चचराक रिजानहि मोरि ॥ वीसपवा
सकर हि मिलि सोरि ॥ आसनि सिहजा वास
मनि धरे । सभि कंचन के हीरे जरे ॥ दासिदा
सी धाम महा समजानि । जन को दीनो दानन ना
रानि ॥ बो ढोजा इं प्रजे कि महा नु ॥ सिहजा मो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रसिद्दीसमानि॥सनन्नविषरीसषीलाना
रि॥संगिरासीभ्याकइहज्जानि॥ग्रउनेपुनि।
कीपूज्जाकरी।भ्रीउरबोनमभ्रपराहरी॥नउ
ननिचीरीलगायेसंगि।भ्रगास्त्रिमोलकि।
जिनकैसंगि॥रोमरोमभ्यानेदहिमरे॥भ्रेस
रानमहाभ्रभिकरे।दिजवरह्हरिकोसिमरा
नकरै॥परमपाद्दिहहैमहियरै॥कपाद्दष।
नवकीनीस्याम॥नवहीहमरेकीनीथाम
भलेकपानिधिमहाउदारि॥भज्जीग्रहिनो
भ्रेसेकरनारि॥किग्राकरनेथेभ्रेसेधामि॥सम
नेदिजवरभयेग्रकामि॥किग्रालेकरेवि
नाभगवानि॥हमरैमाटीहेमसमानि॥का
लिषेपनाकरनीपरी॥ग्रउधिविहावैकिनि
पलघरी॥समिझरीयहिरचनावनी॥भज्जी
ग्रहिकेशवत्रिभवनिधनी॥मानुषजनमब
नवारंवार।तातेभजीयोहरिकरतार॥ध्या
ग्रानलगाईउरिहैमहानन्द॥चरिमहिराषे।
भ्रीभगवान॥रहीमोनिजानन्दचुपिकरिगई
या।महाभगवानहरिजीमहिमईया।नारिस
सीषीलाविसमैमईया।कैसाकेतहमारदइ

र॰षा॰
म॰
१५८

३५६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

३॥ केशवकी नाऊं चादानु ॥ पहिवैरागुनतजै
महानु ॥ किहि विधि केरोपनि को चीनु ॥ पा
हि हरिको जनवडो प्रवीनु ॥ हरि चरचा विन
वानिन करै ॥ कै हरिचरनि हृदे मंहि धरै ॥ क
हुकेशवजी पहुंचे वानि ॥ मिले केनको कैसी
भांति ॥ तबु बोलेगो केन महानु ॥ अउर प्रका
रि न तजै ध्यानु ॥ सकुो हरि की वाति वनाइ
कैसे मिले प्रभु जउराई ॥ गोली नारि सनो।
भरतारि ॥ कैसे मिले मउंदमुरारि ॥ सभै सो।
नाव कउ हरिकी वाति ॥ जिनि हरि हमको कीो।
नी दाति छाडिउ ध्यानु सदा मासंति ॥ तेमरे
ममहि श्री भगवंतु ॥ सभ रही लीना करी वषा
नि ॥ जिउ जिउ मिले श्री भगवानि ॥ अर्जुनक
उईउ मिले अनेनि ॥ ऐसे मिलि आ श्री भगवं
नु ॥ कैहलधरिको ऐसे मिलै ॥ आपने भाउ मि
उमिलि षिलै ॥ कियागुनिना के कतो वषानि
प्रतिव्रहमं नसिरी भगवानि ॥ हमरे चरनि
दरिद्रहि भरे ॥ कोमलकरसिउ निर्मलकरे
हमको पगि जलु सिरि परि धरिउ ॥ हमनो
अपमु कामु पहि करिउ ॥ जोकिछु ईछा।
सो किछु करै ॥ हरि के सिमरनु आपदा हरै ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भोगैभोगिसदामासेन ॥ नैकुनविसरै श्रीभग
वन ॥ क्रमिक्रमिसभक्तिछुनजिनाजाई ॥ सद
ध्यावैप्रभुहरिराई ॥ देहिछुडाइहरिपदमहिग
ईया ॥ हरिसेवानेहरिहीभईया ॥ यहिलीला·
कियात्रनिवरनोश्रीभगवानि ॥ प्रनिउदारह
रिनाथनारानि ॥ जननिहमलमागतियहिदा
नु ॥ भगतिदानदेहिश्रीभगवान ॥ १९२ ॥ श्रा

सुरतिश्रिहरिश्रभगपेकरिकिरपाकृरबे
श्रि ॥ जिनोजिनोदेषेकलसफलितिनोकेन
वि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुरतिश्रिरणजगतिमहि
आईया ॥ जोनकीत्रहकहिप्रगटिमनाईया
हरिकहिआक्रूरथेनरिजाधि ॥ कहिदान
सतिकर्मकमाहि ॥ चलेषेत्रिकोश्रीभगवा

ह·श्रु·
सं·
१५०

357

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न॥ चलेरामजीगुरगुरुनि॥ चलेपिनावग्र।
देवमहान्॥ हरिकेपूतिचलेसरञानि॥ चले
सभैहीजारदवजानि॥ तिनसिउसैनानानाभां
ति॥ कसमयाम्रहसभैविमानि॥ चलीउो।
लिचरिपरमसुजानि॥ रुक्मनिजीलउहरि
कीनारि॥ सभैचलाईहरिभरतारि॥ मरिग
जिम्रागैकुलहिचलै॥ प्रिथवीमेंउलम्रनि
रलुमलै॥ हसतीनेमरिचलैप्रगाङ्ग॥ हरि
कीसैनाकरीम्रघाङ्ग॥ चणहिनाउचेरेम्र
निकरै॥ उछनकेहरम्रानिउरै॥ गजिरथिघो
रेहोलीडोल॥ वहलिसघासनिघरेम्रमोल
सैनाचलेसमुद्रसमान॥ मेरुसिषामणि।
स्रीभगवान॥ रथिपरिचरेकसमगवंनि॥
रथिकीसोभापरमम्रनंनि॥ कंचनिकोरथु
नगीमणिकरै॥ दसोदिसाकेतमकोहरै॥।
लालजवाहरलगेम्रपारि॥ तिनतेलगा।
तिमरहजारि॥ हरिकेम्रखपरमसुजानि
चलेउमहिजलसिंधुसमानि॥ संदरीथीवा
उजीकरी॥ पूछिफेरिसिरिऊपरिधरी॥ चितै
म्रसवयहिहरैमारि॥ ब्रस्मीकछिनभीत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तेरिजाई। दासकुंभोभिवलावै मंत्र॥ रषिपरि।
लोभतिश्री भगवेति॥ रषिकोक्षुविगिहमेरु
सभाति॥ सामवयसे श्रीभगवाति॥ पीतउप
रनादम्भनिभांति॥ धरैध्यानउपजावै शांति
पांविजनपरिउभगवाति॥ अमितिक्षेमोव
रिझरषिझराति॥ प्रबलनगारहरिकाभई
या॥ घ्वरगिलोकिलगिसोप्रविगईया॥ प्रव
लिवजेवोजीकारनाई॥ धुनिअकासिलगि
रहिआसमाई॥ बलेषेविकोपावनिकरनि
कमलनैनहरिपंकजिचरनि॥ आपेषेत्रवरि
उगरदईया॥ रुपउनलैवासकरिलीया॥ अ
तिधुनीतिक्षरुषे त्रिसजाति॥ पहिसुधानेहै
वेडधुराति। सगलपापकोकारनिहारि। श्वे
रदीपेकैअपारि। आपेनहाकरुवनीकंतु।
नीरषिमैपरिश्रीभगवंत॥ चरनकमलके
शवजीधरिजे। अतिधुनीतिक्षरुषेतरिके
रिजे। मतउक्षलिसभैआनंदहिभरिजे। कंव
लिगाईकीयेवक्षदाति। सभहीप्रीतिश्रीभग
वाति। भरष्यिंषडिकेमायेभुपि। श्रीषमरु।
तिकीलागेधुप। नादवसभकेसनमुषिना

रु॰गी॰
म॰
३५८

35 8

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आहि ॥ देहि हलके पीरि मिराहिं ॥ जगति
दिषावहि अप्रुना आउ ॥ हरिपरसादि
अनंतप्रनाम् ॥ राजा विसमेजप कुलि
देषि ॥ देवदूसे जनउ ऋलिके भेषि ॥ समि
राजा हरि दर्शन करै ॥ दोषदूषन तिमति
को हरै ॥ चरनि लागि समि कर हि जुहारि ॥
जैसी कलस मकुंद मुरारि ॥ राजा लगे सोभा
करनि ॥ जादव बंनि कलस की सरनि ॥ कैसे
है केशव भगवंत ॥ ऊरधि सनातन निकम
ला कंत ॥ जाको नाम सनै को कोनि ॥ कोऊ
धरै जनन हरै ध्यानि ॥ कोऊ वषानै मुषिते
नाम ॥ यहि पुरषोत्तम सुंदर स्याम ॥ नात
कालि निरमल जन होई ॥ दोषदूषन तिर
है न कोई ॥ जाके नष की गंगाधारि ॥ तीन लो
कि अघ टरति निवारि ॥ सभु ही धामु जाकी
बाति ॥ जाकी कथा करै उतपाति ॥ अति नि
आल संभु भगवानि ॥ अधे अगोचर पुराण
रानि ॥ जाको ध्याव हि सिव सनकादि ॥ रिषम
नि गावहि नारद आदि ॥ जगति नाथ आनंद
हि भरि जे ॥ प्रगटि रूप तिन कारन करि जे ॥
वसुदा हरषी हरि प गि लागि ॥ ऊँचे अप्रु नेत्रा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नैभागि॥ धरनीहमकोसभिमिसदैति॥ कल
वंदकैपगिकैहैति। कउनकोटहमबउग
वारि॥ इरमतिदोषीमतिग्रहंकारि॥ भज्ञ
गइषीहमरैपापि। हमपरजाकोलावहि
नापि। जबिकेवासुदेवपगिधरे॥ वसुधा
प्रगटिसभैरसिभरे॥ हमकोराजकसपर
सारि। आपिअनादिसभकीआदि॥ भजरे
जैग देवकीनेदि। चक्रपानिहरित्रिभवनि
वंदि। आजुभएपरसभपेनिहालि॥ आषढु
देषश्रीगोपाल॥ जउकुलकेकिआवरने
हिभागि। जोधरेहरिकैदरसनिलागि॥
इकटेभोजनहरिसिउकरै॥ मंदरिमहिइ
कटेपगिधरै। बोलहिहरिसिउमिठेबेनि
मधुमुरनितिनिरषहिनैन। सिहजावेसा
हिहरिकेसंगि। पूजहिकेशवजीकेअंगि।
बोकीरजानहिअपुनावेपु॥ जउकुलसिउ
हरिकोसनवंधु॥ पुरीद्वारिकाइकटेवसै
निसदिनिहरिकेरसिमहिरसै। धंनिभग
जउकुलकेकउरि। हरिपगिपंकजध्यावैहै
भउरि॥ सफलिजनमहमराअगुभई॥ आ
दोषरषहरदेनेगईपा। वडोपरवुसंप्रवआ

ह.पा.
म.
३५९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

359

जे ॥ कस्नदर्शनतेपरैनकाउ ॥ सभुतज्जाम
नितउपजितप्रेम ॥ कस्नभक्तिगतिकोली
नोनेम ॥ कैरवआपेवडेमहानि ॥ सुनरा
ष्टकरनसमानि ॥ गंधारीआइतिहिसा
थि ॥ वलोसजोधनकुलकेनाथि ॥ भीष्म
द्रोणविदरुहरिसेतिं ॥ जाकेहृदैसदाम
गवंन ॥ पांडवआपेकुलकेभोनि ॥ जिनके
प्रीतमुश्रीभगवानि ॥ हरिसितुमिलेपि।
आरेमिति ॥ कमलफूलजितुविगसेचीनि ॥
कुंतीमिलीहेतुमतिकरिंगे ॥ रोमरोमपआ
नंदहिंभरिंजो ॥ कुंतीनवैठोलाहनेदर ॥ स
नवसुदेवहुमकुंदुःखभइ ॥ तुमोनलीनी
मेरेमारि ॥ अबतुनेमननितदीनीडारि ॥ बोले
श्रीवसुदेवमहानि ॥ भगिनीसुनोहमारेप्रा
नि ॥ दुषसहनाहमकोपहिकहै ॥ सभैकरम
प्राणीसवलहै ॥ कंससहुभारीदुषदपे ॥ दे
सिदेसिजादवनसिगपे ॥ वालकियपहिषा
केशवराम ॥ इंनिजडकुलिकेपरेकामि ॥
मीवतिरहेहोहमारेवालि ॥ आपकरदीसहिश्री
मालि ॥ इनकोदेषिप्रनडनमाइ ॥ प्राणि।
हमारेकेसवराइ ॥ दईआसिंधुसंभुभगवानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जननिहालकेजेवनप्राति ॥ २०३ ॥ साखी ॥
ब्रजलोकनिआपेसुनेकुरूपेनगिगोपाल
विलमनकीनेसनिउजैवैसभआपेनित
काल ॥ १ ॥ चौ० ॥ ब्रजलोकनिसनिपाईबा
ति । आपेबेविजसदाताति । नेदआदिस
भिचलेप्रधाति । हदैमीतरिश्रीभगवाति
गोपीगोपचलेईसनाति । सहूतिकुरेव
चलेसरताति । तिनकाबेजुकसगोपालि
वकीविउरनिजसधालाल । गाउनिपरि
घरिचलेसजाति । आपेबेचउनीतिसघा
ति । कसउआरिजाईउतरेसेति । हदैभी
तरिश्रीभगवेति । सभहीजादवसनमुवि
गपे । देखिनंदवनिहारबहिभपे । मिलेनंद
कोहेतवधाई । सानंदउपजिउअंगिनमाई
मिलेनंदसिउश्रीवसदेव । सभैनंदकोकै
ग्रघेव । वहुनंनंदकोआदरकीजे । भग
तिभावसिउतनमनभरिजे । सभहीमिलि
पहिविनतीकरे । वातिनलैलेमनकिपरे
नमपरमारिहमारराज । केशवघाबेकीतो
काज । वेउकीपेनकिकेशावराई । नेरीमहि
माकहीनजाई । तिनहीहमरीग्रपदाहरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वसहीजपीअङ्कछिन्नपलचरी॥रामकलसङ्क
निआपेधाई॥मातपिताकोवंधेपाई॥दोनो
लीनेकेठिलगाई॥नैनिप्रवाहचलिओही
जाई॥भुजापसारीनंदमहानि॥अरुजनमम
नाहरिकेप्रानि॥भुजावीचिलकैसबरामि॥
सभहीश्रीरनिनकेकामि॥देषहिरामकस
पितमाति॥सुषितेवोलहिकछुनवाति॥ग
दिगारिकंठिनेतिजलवहे॥सपीवातिन
कोउकहै॥कविकेविछुरेदेषेआज्ञ॥सरन
भईआहमाराकाज्ञ॥हरिकीमाईयाइतहि
कालि॥सउतिरोहिलीआनीनालि॥मिली
जसोधासिउचितलाई॥हरषीनिपरिअनंउ
नमाई॥वातिजसोधासिउमिलिकहै॥हाय
हसिउकोमलकरुगहै॥तुमपरमादिहमा
रेवालि॥तुमसाभूजनवउरिआलि॥माधकु
दईआसदाचरिमाहि॥भेउनकेहिरदेमा
हि॥सभहीआपुनाजानहिसाधि॥मेरातेरा
वरीउपाधि॥माधकुकेसभिपेकसमानि॥
पोषतुमोरामभगवानि॥पलकैराषहिनै॥
निक्रुपाई॥निउतुमरारवेरेसबराई॥हमवलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हारि षद्धरि वलि ल्हाति ॥ कोरि कोटि हम करहि
न हारि ॥ जिन्ह प्रसादि न मारे बालि । राम कृष्ण
दोनो लालि ॥ कि हि म्ह षिगा व हि कहस नाहि
हम नो न मते उरन तिनाहि । न मरो सा हि वरणी
हम दीनि । तुम दिआल अति षरे प्रबीन ॥ प
म प्रेम के वले प्रवाहि । जन नि हाल को हरि
कीवाहि ॥ २४ ॥ साषी ॥ फुनि आ इ गोपी सक
ल देषे के पाव मीन ॥ चेद म्हषी वि गसति कमल
षे के नैसे विगसी चैन ॥ २ ॥ चौपाई ॥ गोपी आइ
विगसे चीती ॥ देषे अम्रत नेमो ह ति मीति ॥ देष
हि स्याम आनंद हि भरी ॥ हरी म्हरति हृदै म
हि धरी ॥ पद्मी कुसल लेहु हृदै माहि ॥ नैकु न
आरे के पाव नाहि ॥ गहि गहि के ठिने निज ल
वहि ओ ॥ पुलकति रोम परम सुष लहिओ ॥ के
सभाव मन हि आपन भइ ॥ भइ विदेहि है हिमलि
गइ ॥ जो मसु सन किस नेनि पाहि ॥ सो मसुप
ई आ हृदै माहि ॥ सभ ही के पाव परी ई कांति
तिन कै मन ति उपजाइ शांति ॥ तिन को बोले
श्री भगवानि ॥ सत्तनेस पीन्ह म सभे सुजानि ॥ न
नि मत नि है कि उकपाल न मारै ॥ सदा व सो न

द॰ग्रं॰
म॰
३६१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मरिहै हमारे। मुक्तिको सिमरै घीकिउचानि। ह
मनो व ह्रीन्न मारे मीति। मुक्तिसिउ प्रीतिकरै
जो सेन। ताको मिलो श्री भगवंत। सदाई के
नन रहतां कोइ। मिलिमिलि सभै निआरा हो
ई। जैसे सन भिने चलै विखारि। बादरि बिन मति
लगै न बारि। त्रिण रनि बूड बरै उडारि। तिउ जी
वङ्को करमु भ्रमाई। मिलि मिलि सभ ही वि।
रहिलो कि। सभ फठ सषी मिटा वकु सो कि। कै
सा हो हउ श्री भगवान। ब्रह्म समान तिष्ठुरउ
ष्ठान। वसो सभ के हिरदे माहि। किश्वव जी।
वनेति आरानाहि। वसो तमारे हिरदे मझारि। म्ना
कै प्रकासि उसभ संसार। उसुका कोई सानो ब्रा।
संडि। हउ तै साही सदा अवडि। सभ को कारण
सभ को नाथु। जगिकोरथकु मेरा हाथि। सभ
कि ज्ञान विंना को हरो। पहि विवेकु हिरदे महि।
धरो। बोली गोपी प्रेम महि भरी। विनै हमारी सुनो
श्री हरी। पदमनाभ हे श्री भगवान। मंदर लि।
धाम हमारे प्रानि। वारति तमारे हिरदे धरे। श्रंप
कृपा ग्रिहिको सेन तै। विनतु मनतरे नश्च बीप्र
कारि। हमरी जीवनि नाथ मुरारि। दिन सभ क

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नसिप्रगटैरैति ॥ प्रभविराटकोद्दैनोनैनि ॥ दै
वैवेदचकोरनिहारि ॥ साधिचेटुनिहिपरम
पिआरि ॥ वैरस्तहनविमूटैनैति ॥ तिमपी
नकेसमिद्दैमैति ॥ तिउद्दीनमरोभज्जनमारि
पेकिज्ञानिर्देकिप्रभप्रकारि ॥ हमरोप्रेमनजा
नहिज्ञान ॥ हमरामीतसिरीभगवान ॥ ज्ञान
किज्ञानहिअविलाजाति ॥ तमसिउमिलिव
निषलीराति ॥ सोलीलाहमहृदैगही ॥ ज्ञान
आवनहीजावनिसरी ॥ प्रेमिदानकिरपाक
रिदेङ ॥ तमरेपगिसिउबहैसनेङ ॥ हमरैहृदै
तमरेचरनि ॥ पैकैज्ञानहितमरीसरनि ॥ हम
रैहृदैतमारेचरनि ॥ पैकैज्ञानहितमरीस
नि कृपाकरोगिरधारीनाथि ॥ हमरैमाथैला
वहुहाथि ॥ तमकोसिमरहिआठोजामि ॥ हृ
दैध्यानतमविगावहिनाम ॥ जोजोलीलाल
ग्रनकरी तेसभगावहिप्रेमहिभरी ॥ तथा
प्रतमाधवजीकहिजै ॥ भलोप्रेमतनमरोनि
वहिये ॥ वरदेउदेमकंदमुरारि ॥ गोपीगविजै
हदैमझारि ॥ प्रभोतमजोदीजैनेम ॥ जनलि
हलनहपावहिप्रेम ॥ २५ ॥ [illegible] ॥ मदलिके

द.पा.
म.
२१२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केशवगणेशब्रह्महिक्रुमलश्रनंत॥ सभनाथ
रिककरुनाकरहिमाधवश्रीभवंत॥ २ ॥ चौ० ॥
हरिजीश्रापेभूपनिपाहि॥ वेपरवाहिश्रगे
मश्रपाहि॥ घटगमसुनेदनहरिकेपाहि॥ नी
नपिश्रारेरूपवमापि॥ वमधायपरिहरिवेश
धरे॥ समिपनालिमहिदानवउरे॥ मनघउ
श्रावैमपरिफारि॥ महावलीहैकलमुरारि॥
नपेभागिनजिश्रउनेधामि॥ भनीश्रहिनो
श्रेसेतनिस्वामि॥ सभभूपनिमरिकरपाक
री॥ समयहिजावहिश्रीनरहरी॥ ठाढेभपे॥
भूपसरनागति॥ श्रापैकेपावकपानिपानि॥
दीनवंधूरनभमवानि॥ जगतिनाथहरी॥
श्रीनारानि॥ मधुसूदनकेपरमहिपाई॥ न
मरीशरनिप्रभूहरिराई॥ पूछ्हिरूपल॥
श्रीगोपाल॥ श्रंतरिजामीदीनदयालि॥ वो
लेराजादोकरिजोरि॥ मनीकेभमकेवंध॥
निनोरि॥ कथात्वमारीसुननेकानि॥ चरा
हीमाहिवडीवलिश्रानि॥ कथात्वमारीश्र
मीश्रमालि॥ श्रमिसुघदाईकषरीश्रनोलि
लोकनहरिवनकरिउवारि॥ श्रेमादानाना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह्रिंसाति ॥ तुमरात्मसतिपानकिकरैं ॥ कं
लनामसतिरसनारहै ॥ अविनमटहेसाव
धानि ॥ ध्यानयुगोचरहूनेनाराति ॥ अविह्म
करताकछुनरह्रा ॥ चरनिनमाराहूहैंगह्रा
कीनैदईआश्रीभगवानि ॥ प्रेमभगतिको।
दीजैदानि ॥ विनतमविनवतिकउनआई
नितनउतनिमनिलागोभाउ ॥ तपाय्रसन
कहिजेभगवानि ॥ भगतिदानदईउरेनारा।
नि ॥ हेरेआपेश्रीभगवानि ॥ मानपरूपीठर
घउराति ॥ रूपतिसनाश्रुरुहरिकीनारि ॥ मि
लीआपिमहिवडीभिआरि ॥ रूपतिनाअह।
हारकीनारि ॥ मिलीआपिमहिवडीभिआरि
उपतिसानविविनतीकरी ॥ किहिविधिक
होकलतमवरी ॥ रूकानिजिलउहरिकीना
रि ॥ परमप्रेमसिउकरीउचारि ॥ नेसेजैसेव।
रिनाराति ॥ नेसेसभनेकरेवषानि ॥ दासिउर
मरतिकेचानि ॥ हमसभिपतनीहरिकीमा
नि ॥ स्वामीहैपतनीतोनाहि ॥ पहितिहचाहै
हृदैमाहि ॥ जहीकहीहमजोतिसिपाहि ॥ कै
शावकेपतिसेवापाहि ॥ तमलनाभकमला

द॰श॰
म॰
३८८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केकेति ॥ त्रिभवननाईकिश्रीभगवंति । ऐसे
प्रभकीकीजेसेव । सषनिधानदेवनके
देव ॥ हरषीहूपतिसनामनिवाति ॥ ऐसव
ढिगेनहीहूदैसमाति । कुलचंदिकोसि
मरनकरिजे ॥ तिसतेमआनंदहिभरिजे
मोपेकुचेसरगोपालि । सेवकिहेनदेहि
समालि ॥ हरिजसमाहिमगनिईउभइ ॥ क
सतुपदोपनीहोईगइ ॥ दीजैसानुगोपा।
लअथाहि ॥ जननिहालकोप्रेमप्रवाहि ॥
१२९ ॥ साषी ॥ आपेरिषकुरषेत्रिमहिसर
तिनेजेसमाति ॥ प्रतिआरूप्रभजीकरि
जेहरिब्रमनिनागन ॥ १ ॥ चौ० ॥ आपेरिष
मुनिवतेमहाति ॥ जिनकीजआलासुरि
समाति ॥ विआसदेवकसपपरधाति ॥ अ
त्रिपराशारिपूरषिविचाति । वामदेवरिष
अवरिअपारि ॥ आपेनारदिमतिकेभारि
प्रतिआवरुकीनोभगवाति । आवङ्गस
भिरिषवतेमहाति ॥ नमस्कारुसभनोकें
करिजे ॥ ब्रह्मननामपूरवहीपरिजे ॥ वो।
लेकेशावकुपातिधाति ॥ हैसआमीनमङ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पनागनितनमसेतीरथिनाहिउनीति । अति
हीनीरमलजिनकेचीति ॥ तमसभहीहमो
गुणदेव । तमरेपतिकोकीजैसेव । केसेहोत
मवउेमहाति । सीलवेरतनपसतिकोघाति
गिनकोनमेखसीसादइ । अतिकलिआति
तिनोकोभइ । यातेकहाकहेविसनाहि । तप
हेतमानहितेडगवाहि । समिरिषविसमेहि
रदेमाहि । केशवकैसेववचनसनाहि । बोले
रिषनेक्रपानिधानि । उपसरनउरधअतेनउ
राति । वहनवउाईउहमरोमान ॥ अतिसावं
गअवीनमजान ॥ तमकेपतिसथकेप्रति ।
पारि । प्रतिउदारिहरिप्रभुप्रणारि ॥ लोग
निकोदिषरावतिनाहि ॥ आपिसभनेवेपर
वाहि । कवनकीरहमकालअवोति ॥ वेरने
तेरअतिहीदीनि ॥ तमरेपतिहहरेमहियरै
निहिप्रमादिप्रविरिआनरै । क्रपाकरहुके
शव भगवाति । प्रेमभगतिकोदीजेदाति
प्रेमादानकरोहरिराई ॥ भगतितमारीह
देसमाई । उतनजनमकहामभुकहै ॥ प्रे
मभगतिविनसमहीभाष्ठ । वासदेवकी ।

द॰ प्रा॰
म॰
५९४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

261

करुणामय ॥ भगति दान तिन रिषकोदय
सभै ग्रब्र रिसु रिप्रेमी भये । भगति दान
केशव जी दये । दोक रि जोरे फुनि बस देव
वचनो ही करि कानी शेव । हे स्वामीन
मव उमहा ति । सील नेनिन पि भये जानि
कारने कर्मे मि रै सम कर्मे ॥ त्रिगुण मइ का
छुरै भरम ॥ करोक पायेसो विधि कहो ।
मान रूप सि उनम को दहो । बोले नारद प्रे
म हिमरे ॥ ऊचे हाथ सभा महि करे । सनो भ
गत मत भैस जानि ॥ सनक रिजानी श्री
भगवानि । प्रभ गुरु घोन म ब्रह्म सु अनंति ॥
त्रिगुण भिंन न री भाव दि वसे । सदा प्रना
प्रगट न रा सिरसे । अति अविनासी सभ ने प
रे । से तिन्हे तिन्ह गि ज्ञागि न तिथ रै । जन न
नीम ठन नु वि श्राये काल । सदा पेकम स्री
गोपालि ॥ हरि पर तो गुन कथ ऊचरे । से
षनाग र तनि नउ तनि रहै । सभी नी र षि मे
जाके वरनि । सिव विरंचि रिषजा की मति
सकल जगा वे दहु की षाणि । कसदेव स
भपति नि रवाणी । वेमा समत हरि पावी मत रि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रहै ॥ कैसोनरोरिबोपहिकरै ॥ गोगानीरिवैसे
मेकोई वकुउदासरीगानेहोई ॥ सुपनमिति
गेगाननिजाई ॥ वेउभूमिवकुत्रुरीवलाई ॥ ति
उहीहोनेप्रछैअजान ॥ यहिवासदेवनहो
इमहान कैसेहैवेश्रीभगवंति ॥ हरैध्यान।
धरिलिनरहिसेंनि ॥ सनकिसनंदनसनत
कुमार ॥ शिवविरंचरिषसुवरअपारि ॥ सद
कलकेध्यावहिचरनि ॥ परेप्रेमवकरिहरि।
कीशरनि ॥ हेपरमारथिनरैसंसारु ॥ जाका
कछुनापारावारु ॥ ऐसासनहरिवोसहि
रहै ॥ पाकेवरनिनहरैगहै ॥ जाकाअंतन
वेदकुलहा ॥ सनकरिजानिउकीजेकहा
ईसेदखिकुनिप्रछैकहे ॥ अजनगईओहि
दैकाभरम ॥ शानसनिवानियहरैरै ॥ निक
रिरहैनेध्यावकहतेरै ॥ पाकादेसनसनोम।
सनि ॥ राखिश्रामोहिश्रीभगवान ॥ हरिश्र
माउनाककिवुपिकरिगईया ॥ ननहिआ
लकरिसप्रविलईया ॥ धेनधनिनारहिउ
रहैव ॥ जननिरालहरिपगकोसेव ॥ १०० ॥ मा०
वीलेखिध्यानिहरैवसिउमनेसेनिवलहैव

दे०श्रा०
भ०
३३५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गनिपंषभगवानकीकरइप्रेमकरिसेव ॥ १

चौपाई ॥ बोलेमुनिरिषिमुनवसुदेव ॥ ज
गिपंषिकीजैहरिसेव ॥ करडुजगुपति
हेरगुवडाई ॥ वड्डुनदुषहरिदालगाई
ग्रेनजगिकोकमलरीति ॥ पानेहोईहैनि
मेलचीनि ॥ करडुजगिपुजडुभगवानि ॥
उनमकरमईनडुसमानि ॥ इहिविधिकर्म
करेमिरिजाहि ॥ पहिविवेकमहिसेमाना
हि ॥ सोकछुकहीरिषोनेवानि ॥ सिरिपरि
परीकमकेनानि ॥ जगिकरनिकीदोषि ।
गालइ ॥ ग्रनिउदारमनिनाकीभइ ॥ ज ।
तिकरनिकोवडेमहानि । वडीरिषीसीवडे
मथानि । समभव्रषेपरमग्यानेदहिभरे । जगि
करनिकोउदमकरे । श्रुमेहडुरुषजीहरषहि
लाषि । कंकनिवांधिउनकेहाथि । उपनिम
गकाग्रंवरुदइंया । श्रीवसुदेववउमनि
भइया । समुहोसंगिग्रठाहिनारि ॥ काठी
नावेग्रंगिउदारि ॥ लागाहोनिजगुरुहषि
देषनिसोनलिहोवनिनेचि ॥ मुनिपाहिरा
पेहरिकेनानि । केठिरननिपरेवरिगानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मिलिसबरिझोबेदधुनिकरी ॥ तिउप्रवाउ
निरमलसुरसरी ॥ दरशनिलगेसभिजादव
करनि ॥ सभहीसाकसुनिकेसरनि ॥ आवे
प्रीनमराजाअउरि ॥ निर्मलवनीजगको
रउरि ॥ तिनकोनारिपुनिपरिवारि ॥ पति
कोघरबहिवडीउदारि ॥ हरिकोपतनी
पुनिअपारि ॥ भइहरषअतिमनउदारि
पतिकोघरबहिहरखुवडाई ॥ सभैप्रीति
जनिरहेअघाई ॥ होमसभिप्रीओरमहोई
हरिपरसादिनसेसाकोई ॥ गावहिकिन
रगंधरबनाई ॥ अपसरिनाचहिनानिभि
ताई ॥ हरिगुनगावहिहोइअनंदु ॥ कल
देवत्रिभवनकोचंदु ॥ कीनेजागिअनेकि
प्रकारि ॥ हरिकेपितामहानिउदारि ॥ वड
तजगिवसदेवहिकरे ॥ दरवसाथिसभि
ब्रहमनिभरे ॥ जोजोजगमंधुपनहोई ॥ कु
सप्रेमिजनुभावैसोई ॥ सभहीजगिमे
पूरनिकरे ॥ रोमरोमआनंदहिभरे ॥ सह
नापंचकिगपेमहानि ॥ रामकंठमहिकी
उसनान ॥ वङुनरकिनारिजकोध्यान ॥ अ

द.पा.
म.
२६६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निउदारिमतिनाकीभइ॥ किआदीनोवसुदे
वमहानि॥ तिनंदानकुकाहोनिवषान
लालजवाहरिहेमयपारि॥ गऊआदीनी।
कहहुकारि॥ वहुनीकीनीकेनिग्रदानि॥
पाविदानिवकुकीपेमहानि॥ भूषनिवस
त्रिग्रनेकिपकारि॥ देनेश्रीवसुदेवउदारि
जोकोऊआपेघेनिहिकालि॥ ऊवनीवल
उजनचंडाल॥ श्रंदननसभनोकोदश्रा
हराषिजीउसभनोकामईश्रा॥ मनिसभि।
वलेसत्रुहराइं॥ वसुदेवसभकेवेदेपाई॥
हरिभगवानसुकहिचलेमहान॥ हदेवा।
साथेश्रीभगवानि॥ कैरवपांडवविदहमा।
हानि॥ देषेदर्शनिश्रीभगवानि॥ विदुर
नसकहिमनेहीलोकि। कानसिमपेविश्रा
पेसोकि॥ राइराइंविदुरहिविदुरनसकै।
मारसीचलिऊकुनिपाछैनकै॥ देषिज
उग्रनिविसैभये॥ देसिदेसिकोसाजनि।
गये गावतिगयेकसपरनाउ॥ पावनि
केआज्ञानिउआउ॥ विदिग्रामांगहिगो
पग्रयानि॥ नंदवावालउवदेसहानि॥ व
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदेवन नैवेपहि विनती करै ॥ प्रेमसमाधि लो
चन जल ढरै ॥ सनो नंदई कवा मिननी ।
[illegible]नीति ॥ तुमसिउ लगो हमारो चीति ॥ मि
लिजनिं धारिउ मानतु उरेङ ॥ फासी गरे अ
रूरि ससनेङ ॥ घोरहि फासमने छूटहि नाहि
सभनेवडी हसो तुमसमाहि ॥ जो या या को क
रिनसकै ॥ ज्ञानवान रूपानेथकै ॥ कोउसने
रूनसकै विउरि ॥ तघिउ वंधि समै सेसारि ॥
हमपरित्तुम रेखानि उपकारि ॥ ताम कुलदी
नेप्रतिपारि ॥ हमपहि सभ परमाउ तुमार
हमसमभसरव सहमार ॥ तुमो हमो सिउ
वङनी करी ॥ हमने वानिन आधी मरी ॥ के
भाउ जी जैपरमाउ ॥ तुमसिउ हमरे आति
प्रहीलाउ ॥ भोजनु करहि शंकि पतिजाई
साजनि मिलेन कोउ आवाई ॥ करहि अदं
दसैन मिलिरैनि ॥ दिन सिउ वोलहि अं
नवैनि ॥ दिन सिउ वोलहि अंमनि वैनि ॥ व
लङनंद जव होइ प्रभाति ॥ सब वसदेव
कहहीपहि वाति ॥ भोजनु करि वली औरे
इप्रभांति ॥ नविनसरे वकरहि यहि वाति

रु.पा.
म.
३६०

367

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भोजनुकरिवलीश्रेहमीति॥ तोषहोईश्रावि
श्रतिहोचीति। भोजनरहिशांकिपरिआई
परमप्रेमसिउरैनिविहाई॥ चारिमासिसा
मतिइउवसे॥ श्रुतुनेरंगिनिसिवासरिसे
निसिश्रतिजादवश्रजाकौ॥ वजनभेटिलो।
श्रागैपरै॥ त्रिउसरिषजहिश्रत्रतिदेव॥ नेसे
करहिनंदकोसेव॥ रामकलश्रापेलागेपाई
लीपेनंदिजीकेढिलगाई॥ करिपरमेजस।
धाकेचरति। जसमतिलागीपश्रटरति
वजनभेटिसभिजादविदरइ। लालिजवार
तिश्रवरिकर। चुलेत्रिहोकोगोपप्रपालि।
हेरैराषिहरिश्रीभगवानि। ननचरिश्राइया
मनवंगिगईया॥ कलदेवकीश्रेमीदईया॥
जोहुलुपाईश्राहरिकोमाई। मोउःखमनकेक
हिगेनजाई। गोकलिश्रावेगोपमहाति। घरे
पिश्रारेहरिकपाति। चलेउश्रारिकाकेपाव
काई। कुविश्रनंतकछुकहीनजाई। वंश्रेन।
गारेकरहजारि। वजेभेकोरनाईश्रपारि। ब
रैवाजहिहसनीमाश्रि। सभिसेनाकेमाथ
वनाथि। हीसहिचोरेरथिचकारि। वीकहि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उलीकउवनाघो ॥ हीसहिचोरेरषिचीकारि
चीकरीउलीकउहन्नारि ॥ पोमपोद्वमलिप
रकिकौ ॥ कमनामुमुषिपतिबहरिपरे ॥ ग्र
मेभांतिवलेभगवानि ॥ हरिमयुप्रहरनिउ
रषिउरानि ॥ पेठिआईदारिकासाम ॥ श्रमै
श्रमोचारपैषवकाम ॥ उरमहिआवेश्रीन
रिहरी ॥ देवउहपरीवरपाकरी ॥ करिप्रापेकु
रषैविरंसनान ॥ नीरषिपारिप्रभभगवान
यहिलीला ॥ नमोनमस्तेहरिविनिस्वामि ॥
जनतिहालकीजैनिहकामि ॥ १२८ ॥ साखी
मातपितानायहिरामहमिअवहिप्रानहिका
लि ॥ वारतिनागिप्रजाकरहिहोइदिषावहि
वालि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मानहिकालिकेशावग्र
हराम ॥ मातपिताकेआपेभाम ॥ दरषिवालि
तिनवंधहिपाई ॥ वालिजनावहिकेशवरा
ई ॥ अवहीलागेपरमनिचारनि ॥ रामकृस्न
प्रभश्रुकाननकरनि ॥ तिष्ठेमपेपितावसुदेव
करनिनदोनीअउनीसेव ॥ कीनेजगगुरुकु
मपरीति ॥ चरिमहिउपजीनिर्मलरीत ॥ २
उरिप्रतिकैलागाचारनि ॥ रामकृस्नजीनेरी

र॰ श्री॰
स॰
३६८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शरति ॥ हाथिजोरिलागा चरनि गानि ॥ ना
मोनमले धुरषिधुरानि ॥ कमदेवहेजगि।
केरसि ॥ सकललोकिपतिविसेवेवीसि
ढेपेकारषराने परिटिग्राली ॥ जनमिमि
रनुनेरहूनिष्णकालि ॥ सभकेमाधीसभके
माहि ॥ सभुनेनिग्रारेसेमानाहि ॥ यहिसभने
राहैसेसाह ॥ नेराकछूनपारगोरारु ॥ यहिस
भिग्रागिजलिग्राधारि ॥ सोनलनेराहैकर।
नारि ॥ सूरजिजगमहिचारनकरा ॥ नामहिने
जनमोप्रभघरा ॥ सोमग्रमीकीधारावहै ॥ स
कलिलोकिजानेमखुलहै ॥ नामहिसक
तिनमारीदउ ॥ सकलश्रिष्टनमहीनेभउ ॥
मेवजगानिमहिवरषाकरै ॥ सकलिलोक
कीपीउरहरै ॥ मेवहकोजलनमहीदेऊ ॥ त
मराहीप्रभत्रिभवनिपेऊ ॥ यहिजोजगिमहि
पवनाउसाई ॥ नेरीसकतिप्रभूहरिराई ॥ ज
गमगानिनभनारनकरिउ ॥ तिनमहिनेजि
नमोप्रभिधरिउ ॥ जगमगानिदामनिचलि।
माहि ॥ नेऊनमहूतेनिग्रारीनाहि ॥ प्रबलि
होईयहिपरवतिरहै ॥ सोवलप्रभूतमोतेलहै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अचलिहोईहियरनीघरी ॥ नामहिमकिनम
गैधरी ॥ जोमलिनामहिचलनानीरि ॥ जोम
रीअरुकोधनिमहिवीरि ॥ सातिसिंधअरुदी
रघरैसि ॥ नमहीधारेनानाभेसि ॥ रक्षीविउ
नेउपजैदेरूक । रचनावुडीनमारेपेरू । जोंकाि
समेतिउरानि ॥ स्वनिसिंमतिकीनमहूघानि
नमहूरचनारचीअसेषि ॥ कीरकीटदैषेअवा
जभेषि । अगतिजगतेजोकछुपरै । वनरानमि
समजगिकोकरै । पालैविसमंतधारैसमु । नम
रीश्रमीग्रामसमेअरंभ । नमहीरचेसभैसंसारु
समकैनीरिवसेसम्नारु । सभनेभिनरवनंनश्र
लेपि । श्रतिउराषसपंकअसेपि । जेनेकोने
नीवसधारि । किसीनजेसीकिसीश्रनारि । वे
किविश्रपकिसमकेमाहि । किसहैजेसकोग
वनाहि । माईपानीरेश्रनिवलिवानि । राषैरो
किसमकेरानि । नेश्रववेकीश्रेसेकहै ॥ माई
यामोहरिरेमहिगहै । यहिहउपहिमेरेवा
तनामिपैहैमाजनिस्वगवारि । ईकसिउवैका
ईकसिउमेलु । यहिनमरीमायाकेषेलु । नम
कोसवैपवैमान । वेमुघनाहेहअसिमान

द॰श्री॰
१०८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

३६७

नमनेवैमुषजनमैमरै ॥ नकैश्रराधैनवरी
नरै ॥ समुरुद्रुठिउतनमभगवानि ॥ श्रमिन।
पराक्रमअतिबलिवानि ॥ जंत्रुसभैजगुत्रे
गीनाथि ॥ जगुहैजंत्रुनमारेहाथि ॥ नैसा।
वउैवनावहिस्वामि ॥ जंत्रुआपनेसदाश्रका
म ॥ चरिअरुअचरिसभैपहिजंति ॥ नमही
कीनेस्रीभगवंति ॥ सवमहिसकिसभाइश्र
नेकि ॥ इकिमाषिइकिनीपेविवेकि ॥ नम
मेभिननकेसवराइ ॥ सभमहिसश्रामीरहि
श्रासमाइ ॥ कहाकरहिहमश्रतिमतिहीनि
सभविधिपुरननमपरवीनि ॥ निमषमाहि।
साजहुब्रह्मंडि ॥ सभकेरुपरिनमरोउंडु ॥ जे
विसाजहुनविवरोनश्राम ॥ पालिशंषार
श्रश्रकाम ॥ आदिअंतिमधिपुरनिहरी ॥ ईठे
सितुसमिलीलाकरी ॥ सभमांनकीजानमे
उरि ॥ श्रतिनिरवैरदइआतुरारि ॥ भगतिहे
तिलीनोश्रवतारि ॥ हरिकिरनेधरनीको।
भारु ॥ सुनीअहिमहिनमहुकहा ॥ सोईसव
इमकिहुहैरहा ॥ नमकहियावासनुवस
देव ॥ देवहुकरीहमारीसेव ॥ नमरेग्रिहिलीा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नाथवनाह ॥ पूरीकरनपरनीकोभाह ॥ सो
ईनाथनमरोनानाथ ॥ शेषचक्रगादिपंक
जिहाथि ॥ त्राहित्राहिउरघोलमराम ॥ को
विधिश्रानेमकैप्रकामि ॥ जोभोगीमेपा
छैपउ ॥ श्रनिउदारमेरीमनिमइ ॥ रावउ
श्रपनीपगिकीसरनि ॥ रामकमलहेश्रक
निकरनि ॥ विधिश्रावीविनदीजैउरि ॥ श्रग
टिवानिहउकहोउकारि ॥ श्रेमादानकरोक
नारि ॥ पूननजनोनकैमरारि ॥ श्रहंद्रधिदेही
कीजाई ॥ श्रेसीक्रपाकरोहरिराई ॥ भगति
दीनदीजैभगवानि ॥ श्रनिउदारिप्रभगु
णिउरानि । माईश्रामाहिनउरोमोहि । सपनि
नमरीलजानोहि । हमिकरिवोलेश्रीभगव
नि । माईश्रालीनीहरिनारानि । मनोपिना
वसदेवमनजानि । नमोकथेउजोश्रारेजा
नि । जोजननमसकैपहिविशिश्रानि । हमन
मश्रहवलिभइमहानि । उरीहारिकाजउ
परीवारु । वसुदेवपूछैसभसंसारु । पूनव
सनकैकिउकहो । सभैवसुहिरदैमहिरा
हो । फ्रनिवोलेवसदेवमहानि । देनैनीकालो

द॰पु॰
मं॰
३८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

38

जी श्री भगवानि ॥ सभि ग्रथीनी है नेरे लोकि
सभ हीदीनि विग्रापे सो कि ॥ जे ती सक्रौ ई।
नो महि धरी ॥ ने ती ग्रगरि सभ नै करी ॥ ग्रग
नी किरनि सभ नै होई ॥ इन्ही बानि नजा नै।
कोई ॥ सभै कालि वसि सभु हीदीनि ॥ सोऊ।
काल हरि राई ग्रभीनि ॥ जो कछु ई छा सो तब
करे पालि उपाव करु फुनि संघरै ॥ सदा नाथ
नेम पेक समान ॥ सभि विधि पूरनि ग्रभ भग
वान ॥ अविनासी आनंद हि भरे ॥ बहुत भांति
तिनि कउतकि करे ॥ कस कपाते जीनि उद
उ ॥ परम पदि सिउ लागो भाउ ॥ इन भाउ ति
आगि उ ब ब्रह्म देव ॥ हरि दे गही के पव के सेवा
सिरि उ सो फु आनंद हि भरि उ ॥ ब्रह्म जानि ह
नि हरि दे ग हि उ ॥ गही मो नि ब्रह्म देव महानि ॥
हरि देव सा पे श्री भगवानि ॥ सो तिन सरो बरि उ
बकीलउ ॥ हरि परमा दि ग्र बिदि आगई ॥ याहि
लीला कोऊ करे बखानि ॥ कोऊ सनै धरि हरिदे
ध्यानि ॥ कोऊ संत सनि हरि दै धरै ॥ नानकालि
भवसागरि तरै ॥ कि याउ निवरनो कछमुरा
रि जन निहाल गहि भजाउ धारि ॥ ९९६ ॥ साखी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सवेंदेवमैदेवकीवोलीमोऊवब्राई ॥ सन
देनागुरदेवकोमखतिकेशवराई ॥ १ ॥ जो
सवेंदेवमैहरिकीमाति ॥ नामदेवकीषी
मजाति ॥ कसवेरकोविनतीकरी ॥ हापि
नैरिकरियाबोबरी ॥ सतिगुरकोहनदीनो
मामि ॥ प्रेगुरूपतनीकेकामि ॥ मेरेहैत
निकेसिमंषारे ॥ शतिसबूपतनिमनिको
विश्वारे ॥ आनेदेऊमुकिकोभगवानि ॥ वि
नेहमारीलेजैमाति ॥ मानीकसमयाकी
वानि ॥ वङतभलाजाइंलिआवोनानि ॥
प्रतिकपालरामहरिभये ॥ सतविपना
लिदेऊप्रभिगये ॥ जहांकेवलिराजाए
ज ॥ नहगायो त्रिभवनसिरताज ॥ देषवलि
नविकेपावनानि ॥ सभसेष्टानिजानेका
मि ॥ वानिशानिजनआईजेपाई ॥ सदि
हैतसिउपमिलपराई ॥ महादीनसिउच
नकोपाई ॥ निसिदिनिरापेकेठिलगाई ॥
तिउवलिपापेकेशवराई ॥ वारिवारिपगि
सिउलपराई ॥ सिंघासननिआनिउवलिए
ई ॥ वहिउप्रेमनजेगिमभाई ॥ सिंघासनि

ह.गा
भ.
३८१

[illegible] 381

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैसेनरिहरी॥ तेतिनाथकीपूजाकरी॥ ए
मकसकेथोपेपाई॥ पगिजलल्लीनासी
सिचढाई॥ जलिलिसिउसिंचउसभपरिवा
र॥ भीनरिवारुरिचरिकोइश्याल॥ वेद।
निसिउचावेहरिपाई॥ नलसीचाडीफू
लेमिलाई॥ वहरिचढाईउकजलिचीरि
हिनकरिपूजोहोनेवीरि॥ रतनिचढा
येलालअपारि॥ घरेअमोलकिमकाहा
रि॥ चंदनिचोश्याफुलिसवास॥ धूजहि
नसिउवटिउलास॥ वैजंतीपहिराईसे
ति॥ अतिप्रसंनकेनेभगवंति॥ धूपगारि।
धूपफनिहरिकोकरिउ॥ दीपदानि।
फनिआगेधरिउ॥ आगेभोगिअनेकि
प्रकारि॥ मीठेखाटेसआदिअपारि॥ अ
चेभोगिकेपावअरहराम॥ पावनिकी।
नेजिनकेधामि॥ फनिजनहिहित।
सिउचमरुफलाई॥ वढिओप्रेमनआ।
गिसमाई॥ पुलकतिरोमसंतिकेभये
गदिगदिकंठिप्रेमहकिलये॥ हाथि
जोरिकछुविनैसुनाई॥ मननमधिवैने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्रिभवननाई ॥ कवनकीरहसबउगावारि
जैनिदंनकौमनिषइकरी ॥ रझैतमली
नेत्रुरेसभाई ॥ तिनकैआईजेत्रिभवनिना
ई ॥ बडी वडईआकौनीभगवानि ॥ धमिन।
पराक्रमपरुषत्रुराति ॥ नकैपावहिजो
गिआनि ॥ सनकिसनंदनिवडेमहानि
तमकोपावहिवेदगिआनि ॥ त्रिभवनिना
ईकश्रीभगवानि ॥ शिवविरंचिसेवहिह
रिचरनि ॥ सकलदेवहरिनमरीसारनि
हमरानाईआजनप्रहिलाउ ॥ हरिपगि
कोपहिकानिजेसखपाउ ॥ हदैकमलपग
परेवसाई ॥ मुषिमलापितनिकोरनि।
गाई ॥ माईपानरीकमलपरसादि ॥ नमोन
मलेदेवधनादि ॥ सेससहसमुषिजरि
कोकहै ॥ नउनश्रंतनमालहै ॥ माउनि
वरनैश्रीभगवानि ॥ प्रवेश्रमोवरिश्री
नारानि ॥ नवमनषनलेभेटाधरिजे ॥ समरी
धामसमरथनकरिजे ॥ सतिनारीसुकल
भिपरीवाह ॥ हैतनिश्रवंरिकोसमुफ
सवंसमसमहतिपामोपरीजे ॥ दीनहोई

ह.षा.
म.
३८२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मनुपावहिपरिठे॥ यहिसमिनकिपरि
ठे॥ यहिसमिनकिपरिठतेवारि॥ का
पासिंधकेशवकरनारि॥ यहिकरिपा
करिसबंसलेहु॥ मफिकोअपनीपमिर
जिदेहु॥ किउआपेकछुआज्ञाकरो॥ य
हिपगिहमरेमनकिधरो॥ सफलिजन
मिजगिभीनरिसोई॥ जिनकोतुमरीआ
ज्ञाहोई॥ बोलीश्रीभगवानअनेति॥ स
नराजावलिहमरेसेनि॥ मधमरीवि
केघहैवालि॥ अतिसबरूपअरुलेदहिवा
लि॥ जिनब्रह्माकोहांसीकरी॥ उहवधि
हैदमहिधरी॥ ब्रह्माजिनकोदीओशाप॥
तुममतिहीनकमाईओपाप॥ तातका
लिपाकाफलपाऊ॥ देनिजोनिमहि
समैमिपाऊ॥ हिरनिकसपकेवाल।
किभये॥ कालपाईहैहीमारिगये॥ वहुफ
निकशापकेवालकिभये॥ कालपाईहै
हीमारिगये॥ वहुफुनिजायेहमरीमाति
केसतिनोकोकीनोघनि॥ वहुसतिमा
मेहमरीमाई॥ हिकाजनिमकिधारेपाई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमौंबालककैबलराई॥अविहीलिषा
उबलेउनलाई॥पुनपरमारीअवबा
लि॥हमकौपरसहिहोइनिहालि।
अस्माकामिरिजाइसराउ।समदीनक
काउनरैनाउ।मानाकेमिरिजावहिलो
कि।बालकिदेषहिसवहीलोकि।जग
तिपतिसराहमरीरहे।ऐसेवचनक
लजीकहे॥आनेबालकिवलिनिअं
नि॥लीनहिअभजीश्रीभगवंति।लीव
बालकिहरिभगवानि।बलिनेरुपअंत
रिध्यानि॥बालकिआनेहारिकामाहि।इ
रिकेषेलनवरनेजाहि।सभयीलोकउ।
रिकेआवे।केशवकैसेषेलरिषावे।रूप
बालकिआनेस्यामि॥जननीजीकेपुरेका
मि।लैमानाकेआगेधरे॥बहुतहेतजन।
नेचीकरे॥अस्तानिउमरिचलेतिहकालि
जविमानाजीदेषेबालि।मानाचुमैतिन।
केसीसि।मोहिमाइपाहरिजगदीसि।पु
नहकैनषिषअस्थानरहैया॥हरिपालदी
पानिअविलनंथा।तिनवालकको उपज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सोन ॥ घनश्यामविशेषपरमसज्ञान ॥ हरि
प्रसादिसभुनसमिरिगइया ॥ अति
कामलिनकेचरिभईया ॥ कोनीति
नैनविदेहिसमालि ॥ हमनोनाहिन
ईनकेवालि ॥ बनिमरीविकेबसनि
जानि ॥ सभुहीसमजीयभुनोवानि ॥
कलदेवकैलागेपाई ॥ पगिलगिबक
रिमनाइमाई ॥ फुनिहलधरकेपासे
पाई ॥ उठेप्रकामिविलंबनलाई ॥ ले
किपाणुनैनघेमहानि ॥ बेलिरिषापे
श्रीभगवानि ॥ उठिवासीसभिविसमैभ
ई ॥ केषवबेलरिषावहिनई ॥ हरिकी
माइविसमहोइगइ ॥ देषहुयहिकि
पालीलाभइ ॥ आइवनलिउमहिगपे
प्रकासि ॥ निपरिदेवकीउठदासि ॥ वि
परिकुटहैसभुसंमाक ॥ फुठुपनपन
नीभरताक ॥ फुठुधामिसेवकिमंडाक ॥
कुहैदिहिलउसभैविकाक ॥ निसमपु
नेकीजगनसमानि ॥ सबुकहिजानहि
नेकुप्रजानि ॥ सदासतिहैश्रीभगवान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मानवरूपीब्रह्मषडुरान ॥ आपीआनादि
सभूकोआरि ॥ नामकलविनसभजगु
वारि ॥ माईआमोहीमिराईओमाई ॥ रही
कलकैपगिलपराई ॥ शरनिह्यामिदेव
कीभरी ॥ चरितैमाईश्यामसिपरिहरी ॥ व
लजानिहरिहितैरपरिओ ॥ सनभाउमति
नेपरिहरिओ ॥ परहिलीलाकोउसमैमना
ई ॥ कोउसमकिलेहितैवमाई ॥ कपाकर
हिनाकोहरिराई ॥ नानकालिमाईनजिना
ई ॥ विनतीसनोश्रीभगवानि ॥ प्रभुअवि
नासीपुरबिहुरानि ॥ निहकुलेकनिम
लनासनि ॥ जननिरालमोगनिपहिदानि
समैनिश्रागिमोभानिहउपेहि ॥ चरनिसे
विकिरपाकरिदेहि ॥ २८ ॥ साखी ॥ अर्जुन
नीरषिकेमगपेहरिकेमीतमहानि ॥ ह्री
समद्रापुरीतेआपेअतिबलिवानि ॥ २९ ॥
चौ० ॥ अर्जुनजीनीरषकेगवे ॥ अतिचकि
तमिनतिभीनरेभये ॥ अतिप्रभासिआये
परसानि ॥ सनीवानिबेसीनविकानि ॥
हलधरकीसमसमद्राभैनि ॥ अतिनेदरी ।

द. श्री.
भ.
३२४

384

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

घरूपंकजनैननै ॥ उन्नोधनिकोदेवहिका
म ॥ अर्जुनकहिशेसवारेकाम ॥ क्षत्रिभे
धुसंतनिप्यासीभईया ॥ घुरीहातिकाभीत
रिगईया ॥ लोकिकहनिकोउवडोमहा
न ॥ सभहीकरहिवेधनामान ॥ भेमिषा
लावैष्यारहकरै ॥ चरणकुपरिलेमसना।
कुपरै ॥ हलधरिसनीवालिपरिहिका।
नि ॥ कोघाईउहेवडोमहानि ॥ नोकोप
मनिमेंनवदईया ॥ अतिसुगमकेभो
नरिगईया ॥ देषीकेन्याहेनुवडाई ॥ प्र
निसरूपकछुकरीनजाई ॥ अतिसद
रिकैननिषिध्यायेमेनि ॥ केन्यादेषेभो
जनकरै ॥ दिष्टसंतकेन्यापीयरै ॥ के
न्यादेषेअर्जुनजोरि ॥ दोनोरहेनैनकोजो
रि ॥ दोनोकामनमिलिरहीगईया ॥ घुरी
हातिकाकउननकुभईया ॥ भोजनक
रिमुनिवाहरिगईया ॥ केन्यामनहरी।
नाकालईया ॥ जानीवानिश्रीभगवानि
येतरिजोमीधुरषपुराति ॥ निकरिधुलें
ईजोअर्जुनसंत ॥ प्रभुनेजनकोदीनेमंत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रेवतिपरवतिजादवजाहि ॥ प्रभुदेवीकीट
हलिकमाहि ॥ नहांजाईगीहमरीमैंनि ॥ गा
हिलेजाईइसनिपहिवैनि ॥ जनकीमनि
आनंदहिभरी ॥ प्रभकीआज्ञासिरिपार
धरी ॥ देवीकादिवजनवधीभईथा ॥ जइक
लिदेवीप्रजनिगईथा ॥ गईसभद्वारपवि
रिवरी ॥ वायुहीनेअर्जुनहरी ॥ अर्जुनथा
सनिआसीभईथा ॥ एमवहहनिकोलेहीग
ईथा ॥ क्रोधेजादवमारहिजाई ॥ क्रोधन
तिनकेहृदैसमाई ॥ अतिप्रनीतिक्रुंतीस
निकरी ॥ यहिअनीतिहमजानिनजरी ॥
क्रोधेहलधरप्रभुप्रतिनि ॥ क्रुधेमहाप्रभ
सिंप्रसमानि ॥ क्रुरवंसीकोक्षाजोनाहि ॥
निहचाकोनोहृदैमाहि ॥ जादवबलेहेप्र
मवानि ॥ अर्जुनेकनिआहरीअज्ञानि ॥ ई
सेप्रहारहिआज्ञाकरो ॥ छिदवंसेकोला
गाहरो ॥ हलधरिकहिजेसनेचलिआमि
अर्जुनकीनेनिरदनिकामि ॥ आज्ञादेहलो
ईकक्रुकौ ॥ नमरीआज्ञासिरिपरिधरै ॥ बो
लेप्रभुघभाकैमाहि ॥ हुनसमरप्रभुअर्जुनना

द॰पा॰
म॰
२८५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कैनाहि । अर्जुनसनमुषिजारदजाहि ॥ समै
आपनाकी आपाहि ॥ बलिकोबेलेषीभगा
वान ॥ बडौधीरजा पुरषभुगानि ॥ सनोभयाजौ
मेरीबानि ॥ हीनतिनौनेहमरीजानि ॥ भला
भईया अर्जुनु लेगईया ॥ कारनुबडाहमाभुई
या ॥ बोलेरामसनोसभिबीरि ॥ जोकिछुक
रहिबलामपारिरी ॥ समहीजाइमनावहमा
ई । जोकिछुकरहिसकेसबराई ॥ अर्जुनआ
बिजेमनिकरिवाहि ॥ दाइसभदानिसैबि
गाहि ॥ दाजाबडुननाहिकोदईया ॥ अनिप
संनि अर्जुनजीभईया ॥ चरित्राईउलेश्रु
नीनारि ॥ कपाकरीहरिप्रभुमुरारि ॥ पांडवा
कैपुत्रनिकेशावराये ॥ बडेपुरषिसंगिसमझे
लये ॥ मिलिजाईकेशवबलिराम ॥ पावनि
कीनेतिनकेधामि ॥ बहुतहेतकुंतीसनक
है ॥ महाप्रेमसुकरिहरिकोभरै ॥ समधंको
हरिमेरादइ ॥ अतिप्रसंनितिनकीमतिभइ
बहुतउपारनाचारिमहिपारा ॥ हाथिजेतिके
राजीघरा ॥ अतुनीवहुतिनमोकोदइ ॥ दीन
नमानीदासीभइ ॥ हमहूदीननमसारिकरे ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमरी आज्ञा सिरिधरि धरै ॥ नवैज्ञ विसरहु रावा
लेसंति ॥ विनतीसुनीपुनि श्रीभगवंति ॥ केनि
मापैसीत्रिविला इ ॥ दीनिकीपेजिविनिविम
वनिराइ ॥ दीननमारसमभ्रसंइ ॥ समकेउप
रिनमरोउइ ॥ कनिआदीनुमहाप्रभकरे ॥ द
मपहिरेषेसनोप्रभुनरे ॥ ऐसावहहोजेभग
वानि ॥ सनिसमानतनिपुरषिपुराति ॥ हमरै
वसिनकेमाहोइ ॥ हेहिआलिविधिकीजेसो
इ ॥ नथाप्रलकहिजेभगवंति ॥ त्रिभवतिनाइं
कहरपुत्रनेति ॥ वहरैवलेनुउंहपुराहि ॥ फि
रिधारिआवेहरिकरनाहि ॥ पुरीहारिकाति
परिसहानी ॥ नामहिआऐसारंगपानी ॥ पुरं
नजीकोकहिजेविवाह ॥ भजीपुरिहिकसपां
मधुपाह ॥ हरिमधुसूदनिप्रभनिरमानि आ
ननिहालवलिस्थामधुनोलि ॥ १११ ॥ साखि ॥
मिथुलानगरीमहिवसैसनुराजावहुलामि
थ्रविसानश्रुतिदेवजीहरिविनतिपरिजेदा
सि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मिथुलानगरीपरमपुनीसि
राजाकैमतिनिर्मलरीति ॥ नामसुपकोयावहु
लामि ॥ कैरनजेभीभीरदोउदासी ॥ गारहमिमि

द॰प्रा॰
म॰
३१८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

386

मैरे हरि चरनि ॥ पे कै वासदेव की सरनि ॥ प्रेमन
भगति निति सिवा सहरि कै ॥ हरि पगी हाहृदे भी
न रिषै ॥ सुरहदे कुवसलन धासति देव ॥ निप
रि करै सा हरिकी सेव ॥ संतो भी सुरुशिहि को
पै ॥ आरजा महरि सिसमनरन करै ॥ विनन
मैमो कछु कोई दे ई ॥ वेप रवा हरिसौ को लेई ॥
शतिप्र सेन गिहभी नरि रै ॥ कसनाम विन
सवरुन कै है ॥ ईन का आप सवी विसिला उ
हरि चरणा करि मेरहि ना उ ॥ जविराजा वस
नि कै आई ॥ प्रेमसहित पहिवानि सना ई ॥ स
नो सषेनि नय उपवि हाई ॥ चलआई देषहि ।
केशव राई ॥ असलन करै सनो रहे वीरि ॥ आप ।
नभाव हि स्याम शरीरि ॥ हेमध सूद नि भगति
सभीनि ॥ समकरु प्रेसी वानि प्रवीनि ॥ नवि
रजाआ पुने चरि आई ॥ नवि वसनि पाउ पछु
नाई ॥ किआ कहिमे सुकि वउगवारि ॥ चलहि ।
स्याम पहि वडी सवारि ॥ प्राति होइ ऊव सरज
वैरे ॥ कमंध मिस लिव सलि करै ॥ निलक भा
लि सुरमा लागलै ॥ कोपे पहिले आसनधरै ।
कुसी हाथिले चले महांत ॥ हृदे वी चिस्री भगवा उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रजापुनिहरिखिआरैसंत ॥ बलराजा देषहि भगवे
न ॥ भगति को भल करी बीवाति ॥ हरिविनविर
षाग्र उपसिराति ॥ बोले राजा सुनी यहि मीत
हरिचरणनसिउ हमरी प्रीति ॥ आपिन आव
हिकृपानिधाति ॥ संतनसहाइ स्री भगवाति
ग्रहनपिरिग पपनै चरिजाई ॥ दोनो समरहि
केशवराई ॥ हमे डीरमहिकृपानिधाति ॥ अं
नरिजामी कृपा रषराति ॥ हडु करिरहे हमारे
संति ॥ अतिरिष्या लहू पेभगवेति ॥ मिथुला न
गरी चले रिष्या लि ॥ अब महालिजनिलीने हा
लि ॥ दारकु लिआ वे जोरथ हि बनाई ॥ इस्थिकी
सोभा कही न जाई ॥ रथ कंचन को जगमगि कै
दसो दिसा के तम को हरै ॥ लाल अमोलक जै
जराई ॥ तिनते रविपसि जो तिलजाई ॥ जोरति
की कवि कही न जाई ॥ नष सिष लउ अभि संद
रिकाई ॥ साषति जी न लगामि इसालि ॥ सचि
कंचन की लगामै लालि ॥ ऐसे रथिपरि वोअं
ति ॥ कमलनैन हरि कमला कंति ॥ पाछे कोम
लिन की पेपरे ॥ रूपफेन से ऊजल धरे ॥ रिथि
रथ उपसि लीपे वराति ॥ संतमहा रद्दीन दयालि

द. का.
भ.
३८०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

387

नारदसंगिग्रवहृष्ठीआसि ॥ कसदेषिमुषि
रेहेविगासि ॥ अविचवनियहिसंगिसजालि ॥
अरुस्त लिंडमैत्रेयसरज्ञालि ॥ अवरिक्रविश्व
रहरिकेसंति ॥ रविवहालिलीनेभगवंति ॥
तकिराजापहिकरैवषालि ॥ हउक्रपानवि
सेगीभगवानि ॥ रविपरिवेसेश्रीभगवानि ॥
परिसंगिलीनेवडेमहांति ॥ बोविग्रिहेकै
मेमनिभानि ॥ तिउरविभीनरिश्रीभगवानि ॥
रषुहांकिउदारकिसरज्ञानि ॥ पहीयेगाजा
हिमेचसमानि ॥ बोरेमननमाहिप्रेसेकरै ॥ श्र
सिहीजाईरविकोरघुगहै ॥ ब्रह्मलोकमहि
षेलहिषाई ॥ भागिहमारेकेशववरे ॥ रोमरो
मआनंदहिभरे ॥ संदरिश्रीवाउचीकरी ॥ प्र
छिउठाईसीसपरधरी ॥ दारकिषांमिवला
वैसंत ॥ तिउसषपावैश्रीभगवंत ॥ पीतव
सनहरीकोफहराई ॥ तिउरामनिवनिमा
हिसहाई ॥ आवहिजिहिजिहिदेसदिसा
लि ॥ सभलोकहूकोकरैनिहालि ॥ लोकि
कसकोदर्शनुकरै ॥ हरिमूरतिहृदेमहिध
रै ॥ पुलकानितेमनेनननरै ॥ परमप्रेमसि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उनषसिउभरै॥ बउत्तमेरिदेवंदहिपाई। सभ।
कोनोषहिप्रभरहिराई। नभमहिसीजसक
रनेजाई। चनिफहारजिउफलवमाई। आगे
वेदीजननजसकरै। हरिप्रसादिभवसागरु
नरै। ऐसीभांतिकसभगवंति॥ सिपुलाश्रा
पेपरषपनेति॥ लोकिनगरिकेपानमघिगपे
दरसदेषिहरषअतिभपे। हरिजीआगेभे
टाधरै। प्रेमसाषिउउनाकरै। सभकोहरि
जीराषहिमान॥ प्रेमभगतिकोदेवउदान॥
प्रसनभपिराजाहरिसंत॥ आपेसनेप्रभु।
भगवंति॥ निपटिहरषिदोनोजवभये। लेन
टाहरिसनमघिगपे॥ केशवकेपगिआ।
पेआपे। हरिजीलीनेकंठिलगाई। बहुत
भेटिराजाजनरउ॥ अतिउदारिताकीमति
भई॥ प्रसनिदीनेजनेकुभेटि॥ निरषिसाग
उपुदीनोमेटि। हाथिपसारिकहिओदोऊसं।
ति। चलोनगरमहिश्रीभगवंति। हरिहदे
महिकरिओबीचारु। नामहमारासंतउध
रु। जोप्रिथमेप्रकानिकउआउ। हिजआ।
जीनकोचीन्हिमिराउ। राजाहिचिलपेहमरो।

दे.शा.
म.
१८८

388

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सेन ॥ द्विजकै गई जो प्रभ भगवंति ॥ षट्रीक
लकरिज्ञानी उद्दोन्नु ॥ मन्नविलषैराजाप
रवीन ॥ राजाकेजो धारेपाई ॥ नउद्दमरो
मन्नद्विजविलषाई ॥ गयेजो भूपकैष्वीभग
वानि ॥ मुक्तिअधीनकोमेरिजेमान ॥ राजा
देषिजेअतिधनवंत ॥ गयेछाडिमुनिकम
लाकंति ॥ हमरेराजंकसमानि ॥ सेनअधी
नभद्दोभगवानि ॥ दोसरूपकेशवजीभये ॥
दोनोसाथिकपानिधिगये ॥ तैसेहीरिषक
रेमुरारि ॥ प्रभअलेषकोलगीनवारि ॥ राजा
कैहरिधारेवरानि ॥ महाराजिप्रभअकरनि
करानि ॥ अद्भुतलीलाअपरअपारि ॥ जन
निद्दालपगिपरिवलिहारि ॥ २८२ ॥ साषि ॥
हरिप्रजाराजाकरैहरषैदर्शनिलागि ॥ अ
तिऊचेसभतेभयेआजहमारेभागि ॥ २८२ ॥ १
चौपाई ॥ राजाकेभीतरिहरिगये ॥ निपरिह
रषिराजाजीभये ॥ सिंघासनिआनीजेबहु
लासि ॥ रोमरोमअतिभयेविगासि ॥ नापरि
वैसेष्वीभगवानि ॥ हरिमधुसूदनद्वारपधु
रानि ॥ सभमुनिलिकेजनआनन्दभये ॥ निपरि

CC-0. Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरषराज्ञाजीभये।त्रिषमेहरिकेपोपेपाई॥
पगिझललीनोसिसीचाई।वेदनिसिउस।
जेहरिवरनि।हिनसिउलागेसेवाकरनि।
ग्रहपिग्रवीनिलसीदलिहरे।हरिपगिसे
सिसमरपनकरे।निलकलगाईजेग्रनिक
रिपिनाग्रारु।हरिकुविदोषैनैननिहारि॥
वंदनग्रहपग्रमोलकिहारि॥वीरिपदेव
रिपरेग्रपारि।मालकिमोतीलालजराई॥
वारैसेनरिदाग्रवाई।रहुग्रपावेग्रगिरि।
मालि।प्रनिग्रसेनकीनेगोलि॥दीपदान।
कुनिराजाकरे॥रोमरोमग्रानंदहिभरे॥ई
रेकुईऊविषभईकुरेकुगाई॥भेराघरी
सिपुतलाकेराई।जैसेप्रजेग्रीनरहरी।नेसे
हीग्रषपजाकरी।भोतिसमरपेसग्रादि
ग्रपारि।मीठेफारेपरमरसालि॥रिवोमने
निग्रावानेनाथि॥पानिलीपेकुनिराजा।
हाथि।ग्रापिहाथिलेपानिषलाई।हिनवि
उणावहिकेफावराई॥षावहिवग्रनिषाव
हिग्रपानि॥सभराजाकेपरेकामि।कुनिह
रिवारनिगोरिमहिलपे।निपरिहाथिमि।

द.प.
म.
३९९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

389

गुणपतिभये॥ मलैचरनि लोमसनकिलाई
नाकाभागनकहि आग्याई॥ बोलराजादे
करजोरि॥ द्विहलगाइप्रभुकी ओरि॥ हेप्र
नमष्टरनभगवेति॥ हेप्रनेनप्रनभगवे
नि॥ कमलनाभकमलाकेकेनि॥ हदैया
सिंधुप्रनतिकरुणाकरी॥ हमरीमतिप्रति
दोषकुभरी॥ हमकोदर्शनदीजेदियालि
हमअधीनप्रनतिकीरेनिहालि॥ नजैश्र
लपहिजोगीध्यानि॥ सनकिसनंदनिव
३महानि॥ सिहृपरिकीश्रीगंगाधारि॥ नी
नलोकअखिदेतनिविडारि॥ सोपगिहमरी
गोरीमाहि॥ अघुनेभागीनवरनोजाहि॥
नकैमनीधीनुमरीवानि॥ हृदेवीचि
भीदिनराति॥ इंकोनिधगतिसिउमेरहेन
अघुनेचरिकादीनेमेन॥ श्रेसावहनापि
आगनाहि॥ जेसासंनहृदैकेमाहि॥ सकक
मरुभाइवनिराम॥ सिंधुसनाजोहमरे
धामि॥ पेतुनप्रतसेतिसमानि॥ नेकुमति
कीनेभगवानि॥ वकुद्विनिवसीश्रेदेना
नानि॥ करोचारुनिजलतिसिदिविपानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सकललोककोपतिसवदेऊ ॥ मनुमेराप्रभुना
कौ लेऊ । नहोबुसेवऊरि निभगवेनि ॥ वानि
छाउहिप्रभकेसंति । सभैलोकिकिरनाखि
भयो ॥ दोषरूपहरिदेषनेभायो । भगतिप्रभीन
कपाभेउार । जननिहालमोगहिपगिछारि
॥ २८ ॥ साषी ॥ प्रसनहरिप्रजाकरैनाकोहो

निबाति ॥ धंनरिजामीजगतिपति प्रजा
बहिभगवाति ॥ १ ॥ चौपई ॥ प्रसनिकेपवि
होतिवषान ॥ जाकैप्रापेष्षीभगवान ॥ द
रसिकीलेप्रागेधरी । नृपरिवेदेष्षीनरिहरी
इकुरइकुकमासभनोकोदर ॥ हाषहोइसम
नोनेलर ॥ इकुइकुसभमतिरिषकोदर ॥ वे

द॰ प्रा॰
म॰
३१९॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रखतुधिसभनोकीभइ ॥ फिरिनेलाहिसंगो
झालइआ ॥ निपटिहरषहरिकोजनभइ
आ ॥ नाचहिसेवकोलाजउतारि ॥ भषिनेह
रितुनकैरेउचारि ॥ हमरैआपेश्रीभगवानि
रीमप्रसादनैउरषिपरानि ॥ हरिकेसंतप
धारेपाइ ॥ पगिनललीनालीसिवउपे ॥ स
थिनारिहूसेवाकरै ॥ हरिमूरतिहृदैमहिध
रै ॥ गंगमिरनकाचमीमहानि ॥ वतीसंतकै
ताससमानि ॥ मिलकुलगाइजेहरिकेभा
लि ॥ ग्रतिप्रसंनकीनेगोपालि ॥ नलसीवा
रगिवराइसेति ॥ तासिउबोलेश्रीभगवंति
पंनीजारिसिउवासिउनीरि ॥ हिनसिउलि
आइजेसेवकुधीरि ॥ महाप्रभूकेआगेधरिजे
धनिप्रसंनजगदीसहरिकरिजे ॥ विलिआ
मलीभेराधरी ॥ हितसिंउग्रचेप्रभनारिहरी
सभकोकुसारइवितलाई ॥ हरषहिदेषि
प्रभूहरिराई ॥ जोकछुधाचरिभीनरिप्र
मभहीसेलिसमारपनकरा ॥ एजेरिषोसमे
लिग्रनेति ॥ तिनपरिरीझेश्रीभगवंति ॥ दे
करिजोरेविपमहानि ॥ करुणावजीकरीभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वानि। हाथिजोरि कह्यु कराहिं वषानि॥ सुनहीं
प्रीतिकी रुअरषि गुनि॥ श्रेय कृपशिरह मीन।
रिपरिजे। परम पापादिक हरता मैं परिजे॥ क
होसारि पहिं अरु भगवानि॥ करहुं उरम वडे
भजानि॥ दीनवंध उषकार निहारि॥ अनिरि
पालहो प्रभु सुरारि। दीनवंध दुषकारनि।
हारि। अनिरिपालहो प्रभु रारि॥ भजो अरि
नोसै मे नीहरी। नेम किअ बिपहिं कुटनिजे
नाहिं॥ विरकाम समकिजे हिंदैं माहिं॥ जविरि
मकी नाक हिं संसार। तीनलोकि का भरंग
विसथार। बज्र रिउठा इजे सतायरी॥ बज्र वि
पिजग की लीलाकरी। नव हो प्रभु किय हिं।
निसवाकरा। सिरजणाहार हूहै माहिं धरा
हृदै विरोकारे बिठो आज। प्रतिभई याहमा
राकाज॥ त्रिषीन देषहिं नेरोयामि। लोमसमोह।
अरु विश्रापे कामि। दिनभि षिण्या की किरति
कमाहिं। जैसे सपनि रैनिको पाहिं। नमलेप
रवीम रितनल है॥ उरषी यालि निउफिरनेपै
तमको देषहिं जो भगवानि। तिनसैंन रुको
करो वषानि। सुनै नतु मारी कथा पुरानि॥ अनि

द॰ शा॰
स॰
३९१

391

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिग्पाल हैं संहरि स्वामि ॥ सहान समारी कृपा
करै ॥ ग्रह पग्र साहो मायै धरै ॥ हरि परसा
दी भोजन षाहि ॥ विन प्रसाद पै मुषि कछु
न पाहि ॥ रहु लिकार हि हरि की विनलाइ
सोवहि पहि लग्रय सवाइ ॥ सैनन सिउ ह
रिवरचा करै ॥ सिमरन करि समि उधि को
नैरे ॥ तिनके हृदै प्रभास हि स्वामि ॥ तेमन
हे षहि नो मरो धामि ॥ भगति विना जगुव
हि आजाई ॥ भैज लितार तिके सवराई ॥ ज
तिन ने काय है उ पाउ ॥ न मरे पणि सिउ ।
लागै भाउ ॥ ध्यान प्रगोचरि क्रु ने श्रवंनेति
हमरै ध्यापे ते भगवैति ॥ महा प्रभु कक्षु आ
ता करो ॥ आशा करि हमरे उरव हरो ॥ माधि
ने बोले श्री भगवान ॥ सनदि जसंति
हमारि प्रानि ॥ यहि मसंमि जो हमरे संति
मति उनी नहीं इन कै प्रीति ॥ मीय देवन
ई नो समानि ॥ अति दिग्पाल हि वउमहा ति
ये सन होई फ्रु तिविदिग्पापरै ॥ तपु करि
समै दोषपरि हरै ॥ ग्राति प्रसंन कीने संतो
षि ॥ मेमान सन पावै मोष ॥ यह जो हमरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भगतिकुमारई । ताकीमहिमाकहीनजाई
ऐसाभगतिजनविज्ञाननाहि । जैसाब्रह्म
नहुहेमाहि । जहांजहां देखुतिपतिपरै ।
भक्तिसमेतजगिपावनिकरै ॥ तिनकोपज
इहेनवधाभई ॥ आत्मातिविलेवनलाई
ईनसेनइकोसेवनकरै । वइअग्यानहु
देमहियरै ॥ ब्रह्मलनु अहराजाबइलासि । हो
नोसेनअनेनउपासि ॥ पहलापूजहि श्रीभ
गवानि । पाछैपूजहिसभैमहांतनि । रहेकम
तिनकोसमझाई । तिनोपरेहहेहरिराई
देखैदेऊअनेनमहांतनि । अतिप्रसंनहूपे
भगवानि । संतनकाइरिराषिजोउ । हरिकै
सिमरनिपावैसोउ । तिनकोबोलेश्रीभग
वानि । सत्तोभगवानमहेउमहांतनि ॥ जैसेवे
इवनावहिराहि । तैसेहमरीकरीअरुवा
हि । वासिनासिनहोवसेमनेतनि ॥ हरिसौंने
हअउनेसंतनि । वेहरिपंथिकहिचलेगोपा
लि । अबैअगोचरिअमभेअकालि ॥ उराउ
रिकागपेनातानि । अनहलिमोचतिकपानि
धानि । परिलिलाकोउकैरैवधानि । कोऊ

ह.भा.
भ.
१९२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुनैपरिहरैध्यानि॥ नाकोकृपाकरहिर
रिराई॥ प्रेमभगतिमाधवकीपाई॥ कल्प
कृपालभलेषुप्रभेव॥ जननिहालमांगा।
हिपानिसेव॥२९४॥साखि॥ ब्रसकिरोमुक
देवकोभगतिपरीछितिराई॥ कैसेगाव।
हिवेदहरिसतिउरदेहरुवनाई॥१॥चौपाई॥
मुनिकोप्रसनुपरीछितिकीरिओ॥ बालक
मलपरिमलकथरिओ॥ वडुश्रमलनुमह
भूपमज्ञानि॥ तिनकैगवेश्रीभगवानि॥
वेदिपेषितिनकोहरिकहिया॥ हरिक
पानिदेतोलहिया॥ तिनिनेतिकहिगा।
वहिवेदि॥ वेदकुलषेनहरिकोभेदि॥ वेद
रकोमनिदेहरुवनाई॥ हमरीप्रभूमिलान।
मिराई॥ बोलेश्रीषुकवडेमहोनि॥ तनीमै
गलाकरोवषानि॥ जैसेवेदप्रगटहिया
मि॥ हितकरिज्ञापरिप्रभकेनामि॥ सम
नेकुवेवाविमहंति॥ कुतियरेनाहरिकेसंति
पंकरहनेपहिलाभये॥ परमपुराननंदी
सहितये॥ ननिवालकसेज्ञानहिभरे।
सधुप्रांनकीसाषधरे॥ वालेसापिवमरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जिहिलोकि । जिहिपरिकोऊन छिप्राप सो।
कि । सनकोसनंदनसनतकुमारि । अब कहा
सनथनिमाईचारि । ब्रह्माकोमनसानेमई ।
तिनेज्ञानहृदैगहिलये । तिनेआपसिमहि
वरचाकरी । कैसेवेदिव्यागाधहिहरी । सोनानी
तिसनंदनकहै । जसिरिदियालकीसलनारहै
कीनैजैसेतिनेवषानि । तैसेकहतिश्रीभग
वति । नरनराईएउरवडएति । सधुश्रांत।
कीप्रभनिरवानि । वैसेप्रभजीयामकलापि
सभिअविभागहिजाकैजापि । निकरिप्रभुके
विपमहंान । तिनकोनाथवनावहिज्ञान ।
भगतिवनावहिकपानिधानि ॥ सनछिवि।
पथरिहृदैध्यानि । नारदुविवैथेजगिमा
हि । जिहिसमाविजनतुजानाहि । नारदकै
मनिवडीपिआसि । जावैनरनारायणपासि
कैसेहैमैनाराति । तीनलोकपतिसभके।
प्राति । लोकिहैतिप्रभनवकोकरै । भरथ
षंडकीआपदाहरै ॥ ऐसेप्रभकोदर्शनक
रै । भरथषंडकीआपदाहरे ॥ ऐसेप्रभको।
दर्शनकरे । परमपादिहृदैमहिधरे । ना।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रहनायेप्रभूकेपारलो ॥ नीरघमैदेषहिहरीव
रनि । प्रघमेप्रभकोदर्शनकरिऊे ॥ वहीव
पहुँदेमहिधरिऊे । पक्रीकरीडंडउतिमहो
नि । जनपरिरीकैश्रीनारानि । हरिकहिग्रावा
ऊहेमेति । जाकेचरिमहिहमरोमेन ॥ ग्रुवने
जनकोग्रादरूदईग्रा । निपरिहरासिनविना
रउभईग्रा ॥ नारदिजोरहोनोहाथि । विनेस
नोहेमेरेनाथि ॥ तुमकोवेदजपहिकिहिमे
ति ॥ नामुतमारेउपजेप्रानि ॥ नामजोरेमास
जगुनरे ॥ सोउपंनुहरिसिमरनकरे ॥ ग्रवि ।
नासिग्रविमतिग्रलेष ॥ ग्रसनाथनमसान
षभेषि ॥ विदानंदलषिकेदिदिग्रालि ॥ जन
मिमिरतनेपरेग्रकालि ॥ प्रांनिसरोवरिस
षमंउरि ॥ मूरतिकेमनिमहाउदारि ॥ सबके
मातपितामभगवेनि ॥ ग्रषैग्रगोचरग्रभेग्रनो ।
ति । कैसेतमकोवेदिग्राहि ॥ यहिमनेऊहै ।
हृदेमाहि ॥ करिकिरपाप्रभकरेवषानि ॥ ।
जोनिऊपग्रधुतनारानि ॥ जवनारदिपहि
विनतीकरी ॥ दीनहोईग्रतिप्रेमहिभरी ॥
बोलेप्रभुग्रनंतग्रभेव ॥ जगतिजोनिदेव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उकेदेव। सनत्ब्रह्माकेपुत्रनिसज्ञानि। अतिउनीव
कउकहेतेवषानि। सनकादिकमिलिबरवा
करी। तिनमहिवडोगोहुपरी। तिनोकहिया
यहिनिरनैकरै। अउनेमनिकासंसाहरै। व
सअरम्यहिकेसेवेदि। जोअविनासीनाथ।
यभेदि। कहैसनंदनहेनवडाई। तीनसनंदि
वडीदालगाई। तिनकामनलेकरोवषानि
हमरेजतिवडभलेमहानि। वोलेनारदिहे
नाथानि। अंतरिजामीपुरषपुरानि। हेप्रभ
तमरीवरवाजहो। हउअनहेठाढानहो।
तमरोजसजोकरैवषानि। कमलानाथ
हउभवरिसमानि। तिनोतमारीवरवाकी
हउयाकहाकहोहेहरी। अनकोवोलेश्री।
नाराइन। वेनदीपनहीगंईयामहानु। हमए
रुपजहांअनिरुप। तमतेपरेघ्यानकोरुप। अ
तिसनेहतैसेचरभईपा। प्रभदर्शनतेकोलषा
रगईया। तैरेपाछेवरवाभऊ। वयवप्रजेति।
जिनेअमवलउ। पेकवारपुत्रनैवेभईयाविनीत
समुझीतिनसवेदकरीति। सोत्रकहतिहोत
नीश्रुति। जोकछुकहतिवातिसवकीति। स

द.षा.
म.
३२४

394

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कलखिसहजविपरलैभइ॥पारब्रह्मसीहमा
समिग्रचीलइ॥ऊतिनामनिकारतिनारि
तिउहमनेउपजैसंसारि॥नासिउषेलवड
रिग्रिसिजाई॥काहेषेलैसहजिसभाई॥नै
सेविखहमकीनेसैति॥तषेमूंदआपनेनेति
महजिसाषितिहिग्रउसरिपरिजे॥जगिग्रा
नेकिग्रैसासभुकीउ॥लईजेसभासिनवि
उपजैवेरि॥नेऊआपहिग्रषग्रभेदि॥नि
उमोवैग्रिहिमहिनरदेव॥वंदीजनहरिलाग
हिसेउव॥राजाकेगुलिररतिरसालि॥नैसे।
गावहिवेदगोपालि॥१२५॥साषी॥हरि।
केदाठेप्रेमकरिनिर्मलवालेवेरि॥नमो।
नमोजागजुप्रभूपरनभुषग्रभेदि॥१॥चौ॰
हरिजीकेवंदीजनवेथितिनजुनेहरिग्रल
षमभेदि वोलेतिगमहेनग्रतिकरिजे॥रोम
रोमग्रनंदहिभरिजे॥कंरिजोरिलागेपुण
गाति॥ग्रतिरसालिसविसधासमाति॥जो
जैजैग्रजिमहाग्रजीति॥पुरषपुरातनपर
मपुनीति॥परमसतिग्ररूभेग्रनभेव॥ग्र
विनासीदेवजूकेदेव॥जागजुजाग्रतिरूपग्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेति । सभविषहरनप्रभुभगवेति । पारब्रह्म
विगतिअलेषि । नमपोठेसोईरहेअसेषि ने
जग्रगटिकीजैकरितारि । आदिअंतिमधिर
तिअपारि । चिदानंदसषकेंदरिआलि । जन
मिसिरनतेपरेअकालि । जैजैजेनिर्मलनिर
वाणि । जीअजोनिनिभवनिकीषाणि । जग
तिनापजगकेप्रतिपालि । जगतिवीजिप्रभ
परमदिआलि । सतिसनातनिसप्रुतिश्रुति । स
भकिहूजानहूबिलवेवीसि । वासदेवजैभग
निवासि । सभुकेसाषीपरमअलेप । अमेअ।
गोचरअषेअमेप । सधर्मानकीनिरमलधाम
प्रतिअनंतरमैसदाअकाम । उसीसमहेद्वेग
तिनेपरे । पतिअराधिजउभैजल्लनरे । हरी
करउमाईयाहैनाथि । सभलोकनिकोमारे
माथि । चिउगनिकाननिकरैसीगारु । पाप।
निमोहेसभुसंसारु । परग्रषहूकामिलगवा
ई । तैसीमाईआहेहीरगई । परिपंचनमेरउ
हेभगवानि । सषनिधानहेप्रानदानि । माई।
आवउविगाकैकाज । जगतिबुलावैअपना
राज । महाप्रभुकोपरेलपाई । जगिकोमाहैन

द.पा.
म.
३२५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उरिधाई। ऐसीकृपाकरोसुषधाम। जपहिस
कलजनतेरोनाम॥ अंसुतनामसुतिथाननाश
ति। लोकनिकोकरवावज्रुपानि। कथानुमा
नेसुषकीघानि॥ पउहिसुनहिनेपरमसु।
जानि। अतिअनेदकेनमभंडारि। निर्मलन
मरेकमेअपारि। कथानुमारीसुनहिमहान।
ऐसेहेअछुननारान। जगसुननपतीरथअ
नि। पेऊननमरीकथासमानि॥ अमृतकरु।
नेकोनारानि। सुधानतेरीकथासमान। सा
धसंगिविहिसंगतिकरै। कथासुनीमनसभ
नेहरै। नाथकथाकीऐसीरीति। नमरेपग
सिउकरोजोप्रीति। जागरूजीजागरूभमवा
नि। अमितपराक्रमपरमसुजानि। ऐषेवी
सिदेवग्रकेदेव। सकलदेवप्रभतेरीसेव। स
भनेभिनसभूकैमाहि। नमरेषेलनवरनेजा
हि। अउतीथपेकैसुषरासि। हरिसभूनेसभ
कैपासि। विनहरिभजनिनमाईआछुहै। न
मनेवेमुषनिनकोलहै। पेकिजोगिकरिपव
नेअराधहि। मननिहचलकरिइंद्रीसाधहि
हरैध्यावहिप्रानिभगवानि। सकिभयेईहि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भीतिमहोति। तुभावईकनतुमसिउकैरे। सस्त्रा
ह्रषिगहिसनतुषिलैरे। प्रातिछाडितुमरेप
गिगपे। हरिसिउवैरुकोपेहरिभपे। कामस्री
तिरंकत्रीआकैरे। तुमरीसुरतिहृदैधरै। संत
रिहरिकीभजारमालि। करहतित्रीआपासहि
किरहकालि। उसतुनजानहिजानहिमीति। ह
रिउरषोतुमपरमपुनीति। ईतीप्रेगिकनार
षिमर। तुमरेपदितेत्रीआगही। पेकिनामही
जपहिसजाति। रामकलहरिप्रभभगवानि
नाराइणगोविंदमुरारि। प्रभप्राणेसरप्राण।
अधारि। वासदेवमधुसूदनिस्वामि। प्रेम
महितिपतिहिसिमरहिनामि। नोऊजनिन
मरैपरिगपे अविनसुषेतेनकतेभपे। वेदि
करहतिसनीप्रेभगवानि। हमरैसमताहैना
गनि। समतासमजीअलषअभेदि। मुक्तिभ
पेहमतुमरेवेदि। पहिमुक्तिकोनेकरनारि॥
सदाविराजहिहरिकैद्वारि। ईनसमनऊते।
उनमसोई। तुमरेपगिकोप्रीतमहोई। तुम
रेपगिरीप्रजाकैरे। वानितुमारेहृदैधरै। अव
रिकंगिनहीईसरीसमानि। पंतितेऊनिस्रि

र॰ग॰
म॰
३५८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मरै भगवानि । तुमरे सेवकि अति सरज्ञानि । ना
मको सिमरहि प्रभ पछानि । कै सा ज्ञान हि तुम
को सेति । तिनकी मति सनी अ भगवंति । स
दा सति पूरन भगवंति । आदि अंति तिरहति
अनेति । वहु सनानि निअमित अपारि । सक
ल ध्रिम सह को साज तिहारि । जव साजै न वल
गै न षेदि । विदानंद प्रभ अलष अभेदि । पा
लै क्रति प्रभ पर लै करै । हरष सोक कछु हरै
न धरै । सदा एक सा वठै न घटै । सिमरति की
ने दुरमति कटै । औसे तम पूरन भगवंति । प्र
भ पछानि सिमरहि निज संति । तिनकी न
विधै सी गति भई । लान मिरन के सिरि पगि द
र । जग मग ति हरि जन ठगी आरे । धामित
मारे संति सिधारे । कै सा है प्रभ तुमरा धाम ।
अनि अनंद मै वैकुंठ नाम । जन सिमिरन ते प
रै अप कालि । जहां वसहि प्रभ दीन दइआलि
पंरन सूरन पवन प्रवेसि । सति जन नि धारे ह
रि सेभे सि । हरि प्रकाण सकरि नहां प्रकासि ।
तम सि उपेल हि तुमरे दासि । भगति अनेनि
करहि जो संति । मे नित विश्राम वसहि भगवंति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अवर देवको सिमरनु करै | वडे हीन मति जन
मै मरै | तुम कैसे हो कृपानिधानि | सर्व विआपी
सभ के प्रानि | सभ के अंतरिजामी नाथि | सभ
तै निआरे सभ के साथि | प्रभ कतनि सिभ वि
थिआरवी नि | सकल लोकि हरिराई अधीनि |
कैसे होत मना गय अघैडि | तिमघमाहि साजउ
अपंडे | सकल लोकन कि वेद समेति | प्रभ अ
नंत जी नमहु षेति | ऐक रोम ब्रह्मंड अनेकि |
समासि वेद ज्ञान विवेकि | कवन कीरहू मक
हासनाहि | ऐक रोम को पारु न पाहि | कहि क
हिक हि सुआमी हम कहा सनाहि | कौन की
रमति हीन विचारे | श्रपिक रिगपै बोलि कछु
वेदि | तिन हूते प्रभ अलख अभेदि | नेत नेत क
हि वेद पुकारे | हीन तु सारि वाढे अ नि हारे | अ
वाहीन को ऊ कहा सनावै | उति सम हूके |
किआ तु मणि गावै | गावो जपो भजो भगवंति
हैआ लेष प्रभ परमत्थ नेति | गावे जिनि का का
ज करै | जपै नाम भवसागर तरै | नाराय णबो
ले भगवानि | सनीआ नारदि परमसु ज्ञानि |
सनकादिकि पहि चरचा करी | चारो की मति

र॰ गा॰
म॰
३९०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रेमहिभरी। कहीसनंदनिनीनोसनी। प्रेमभग
नहोईग्रीवाधुनी। सनंदनिकोमिलिएजाक
री। हरिकीगतिहृदैमहिधरी। कैसेहैपूरनभ
गवान। कछुमरतिसतिकहतिनारान। कै
सेसवरनभगवान। कछुमरतिसतिकहति
नारान। कैसेसवरविमपंनअनेति। महाग
नेमाधवभगवेति। जाकेवसिपद्मिसभिव।
लेति। समकेउपरिहरिकोउंउ। जसिवेगमि
नेकोनाथ। अभेदानदेईजाकेहाथि। लसी
कीपतिप्रभुमगति। मोषनाथहैदेवअपारि। से
साप्रभुजपीअहैसंति। जाकेगुणिअरुनाम।
अनेति। वोलेधीसकवउमहानि। सनीसेराजा
परमसजाति। कहिनारायणहरिपरनाथ।
परमगुरुवेदहुकेनाथ। नारदमनिसेपूरन
भईया। भामुतिआगिहृदैकोगईया। नागई
ताकेपरसेपाई। विदाभईजेहरिहृदैवसाई
नविईकनारदिकहिउसलोकु। सनतेकोउ
नविआपैसोकु। कसकसमेगलभंडारे। त्रि
भवननाईकमहाउदारिसभुविधिपूर।
निस्रीभगवानि। जीवजोमिप्रानहुकेप्रानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारदनवैविश्रामसपतिश्राईया। मेरोपितारहदेस।
हिभाईया। देश्रारदहवैठाईओसेन॥ कसकस
जोपेमषमेंन। नारदियहैसारकहिदीया॥ वे
गिपितामेरेश्रविलीया। ईमयुरानिमहिथी
ओपरोई। तिहयुरानसमश्रवरनकोई। सो
मुकितोपहिकीपेवषानि। वेरभजहिजैसेभ
गवानि। मनराजायहिकैसामाह। षनेजगति
कोकरैउपाह। वेरदकीमतिमुकहिरमालि॥
मुकरइकीमणिपरमविसालि। तिनलिउवे
दश्रारतीकरी। सभकैपूजिकमलनरिहरी। पु
निषककहैमनोराजानि। कैसेहैपूरनभग
वांनि। जिनियद्विजगकीलीलाकरी। सभजी
वडमैसमतायरी। पालेपोषेदेईश्रहार। श्रै
सादानासिरजणहार। सोप्रभभजीश्रहिकर
मनाउ। श्रतिश्रनंदमैहरिकोनाउ। ध्याईमना
मीपूरनिभपे। पडेमनैसभिपानकीगये। वे
दकीयद्विचराभपे। कलुमुकिकहीवनी
रहिगइ। जेतीमतिदीनीभगवानि। सोलेहरि
गुनकीयेवषानि। हमनोसभिविधिमलनि
हारि। षिमाकरोकरुणाभंडारि। जोकछुभ।

ह.प्र.
म.
१७८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

390

लिउचारीचाति । कीजैषिमाजसोधानाति । जन।
निहामोगतिईहिदाति । नामुदानुदेहिश्रीभग
वाति । लवभरिमूलहिनकेपावराई । कलवे
दचहरिहेसमाई ॥ इतिश्रीभागवतेमहापु
राणेदशमस्कंधेशुकपरीक्षतसंवादेवेदउस्तति
नामसप्तशीमोध्यायः ॥ ८७ ॥ १२६ ॥ साखी ॥
ससनकीजेशुकदेवकोभूपपरीछतिसेति । के
शवदेहिंदरिद्रकोलक्ष्मीसभमहेति ॥ १ ॥ चौ॰
ससनपरीछतिसुकिकोकरिजे । चरनकमल
परिससनकुधरिजे । हेसुआमीशुकदेवमहा
ति । हमकोउपजीवडीमिलाति । लक्ष्मीनाई।
कस्रीभगवंति । जोजनिहूपेहरिकेसंति । लक्ष्मी
निसैनदेनिमुरारि । दिसहिदीनसेजनसंसारि
जोजनसेवहिसिवकेचाति लक्ष्मीदेवतिसि
वउघहरति । सिवकोहुपुदरिद्रहिभरिजो । जो
रामसमविष्णुभोजनकरिजे । हेडिमालिअरु
गौरेविभ्रालि लोकवेदतेउलरीचालि । शिव
केसेवकिसभिसमिलेहि । लक्ष्मीनाईकलछ
नेदेहि । पहिलेलागनउलटीचालि । केपावक
लीअजिपरमदिगालि । जिउकीतिउदीजेसमजा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ये। हमरी प्रभु मिलान मिटाई। बोले श्री सुक देव म
हामुनि। सुन राजा जी परम सुजानि। भली प्रस्न तै
नु कियो करी। सब डरु मोचनि श्री नरि हरि।
त्रिगुण देव संकर लउ आदि। ते तिनि विषि आके
सभि सुषि सुआदि। देव सीघ्र ही तो षे जाई। तिन
के सेव कि फलि को पाई। वरु ले सुरि होइ मन।
वारे। कालि वली से सउ विसारे। संकरी ने व हलो।
प्रजानि। उलि संकरि को लग हि प्रजानी। तिसे
प्रराधि विभै को लेहि। उनि तिन हू के न लिहु व
देहि। सुन कै साहै श्री भगवानि। उराराधि प्र।
तिरह दिनारानि। सो निरुपमा वे करता रि। सु।
क्रिदा न है हरि के दारि। के सावप्रभ सुरवे गउदा
रि। हरि मधुसूदन। सामसुरारि। सुनो उरानुनि
कथा प्रसंग। तो सिउ भयाहु माराणसंगु। यहै जो
पिछ्ह रहीपरीकरी। जो नकिहि रहै भीन तरि ग
ही। सभा वो बिसो भनि भगवानि। पुरषि पुरान
नि कथा तिथानि। नील कमल से स्याम सरीरि
धरै ध्यान सिरि जावै धीरि। पीत उपरना गलि।
वनिमालि। पगिल उउ रुपरम रसालि। कम
ल नैन मुष पंक जि निहारि। जो मि भो निष निस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दाविगाहि। कमलफूलसेफूलसेफूलेहा।
थि। सलषनलोककेपैकेहाथि। सभैया।
निपंकजिसेचरनि। जिनचरनकीपांउव
सरनि। यहिसरूपधारेभगवानि। सवावी
चिवैठेनारानि। नमरेदादाविनतीकरी। सष
निधानहेप्रभनरिहरी। जोजनसेवहिसिव
केपाई। वुझलषिभोगहिचनेसचाई। राजि।
ष्टनिसेवकिमंडारि। हैगजठाढ़ेरहतिद्वारि।।
भोजनसेवहिहमरेचरनि। सनोविनैहेप्र
करनिकरनि। ष्टिसहिदीनसेनमरेतेनि। प
क्रिउलटीगतिश्रीभगवंति। हेप्रभहमारासे
माहरो।। पगिरजिहमरेमाथैधरो। ज्ञानमा
नऊश्रीनारानि। नमराजनहौहेभगवानि
हसिकरिवोलेश्रीनारान। सुनीयैराजाउर
मसजान। जोऊपरिहउकलणाकरी। कुमि
कमिनमकासमधनहरो। उदमकरोसोनि
हफलपाई। हाथिपरेदहधिसिकोधाई।
कुनिसंसाफूनिरादरकरै।। सभकोदवो।
लैवैसरूपरै। चीरिप्रानतेहोवलिप्रेगि।
कोऊठवोलैनाकेसंगि। कवऊभोजनेकव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हेउपासि। होईजगतनैपरमेउहासि॥ सकलि
जगतिकर्त्तारैवुंप्र। हमनेवेमुपजराहैग्रंथ
कृतिनाकोसत्संगतिकरो। सभग्रंथपेरहिरथे
काहूरो। जवहीछिनसत्संगतिभइ। माईया
मोहरुगडरीगइ। जवहीसनेजनहूकेवेति
नवहीनाकेउचवैनेति। साधकहहतिहमतो
परताउ। सननेसभमिटिजावैपाउ। सनित
विसकिमिउलागीप्रीति। आईवसोहउला
कैवीति। साधसंगतिरेडरमतिहरो। जिनको
आपिवरावरिकरो। ऐसीहमरीदातिसजाति
करोसंतिकेआपिसमाति। अंतवंतदेवउ।
कीदाति। ऐसीहचेनसुकिकोवुताति। ऐसा
हेउनेसाहीदाव। है ऐसवरजलीनेभगवा
न। राजाकासेसामिटिगाईया। परमभगति
केशवकाभईया। पैहेकथानसामीसककै
ततिपरीदतिहरैगही। आविरदेवनजिम
जीग्रहिस्याम। सखवनिधानभाइवलिराम
केषावकलमकुंडरमुरारि। कलदामसपमि
पीवलिहारि।२८०॥ साखि॥ ग्रवरकथाप्रु।
करेवनीकहतिप्रीतिचितलाई। समनोकी

द.पा.
स.
३४८..

400

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गतिप्रानपतिकहनिप्रीतिविनलाई। स
भनेकीगतिप्रानपतिसषनिधिकेपाव।
राई॥ ९॥ चौपाई॥ अवरकथाउवरनिअ
कदेव। मधुसूदनिकीकीजैसेव। सुनोप
रीहनिमेरोमीनि॥ अवरिकथाईकिपरमउ
नीति॥ ईकृपारेतमहाअज्ञान॥ अकुनिदे
निकेपूतअजान। नामुविकासहमनिके
चोरि। नपिकोचलिउहिराकपेर। नारदि
मारगिमिलेमहानि। जाकोहरिननहरिज।
सकीषान। रंनिसंतिकोकरीजहारि। नार।
दिजीहमकोनिसतारि। हेगुरवैसोदेहुवना
ई। नानकालसमिपीडिमिटाई। सौचप्रसे।
नहोईसोकहो। यहिउपदेसनहलगिवहो।
नविनादरजोकरीउचारि। सिवकोपूजउ।
रउरिकिदारि। सौचवरहिदेवनिमहादेव
शंकरिकीजाईलागउसेव। नातिकालिव
ऊगईआकिदारि। जहांरुद्रसानिधिउदारि
अगनकेउसमधरुसिउभरिउ। सावधान
वैसंतरकरिउ। तनितेकाटिउनारैमासि।।
वरमांगनिकीहठ्यैआसि। होमैलेलेषिावके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नाम्रि । श्रीकिदारिशंकरिकेवासि । सातिदिनरि
वीते । हैयेंदंतकेंनैक्रनशांति । सभुननका ।
रिजेसिलहीरहिजे । करिइसनानफुनिसि ।
लहीगहिजे । लागाकारतिसीलग्रजाव । त
वहीप्रगधिजेसंभमहान । ग्रतिक्रेउनेतिक
सेदेव । सफलीकरहिदंनकीसेव । वकिकोदे
उभतसभिगही । तिनकीपीउजातिनसही
हाथिपरासिपरिपीउगइ । सकलदेहिसंपु
रतिभइ ॥ वोलेशंकरमरिद्यालि । संदरीवा
णीपरमरसालि । वसिकीजेभारीतपकरिजे
हमराम नककरुणाकरिभरिजे । कछुभरमां ।
गउ शंकरेकही । तमरीपीउजातिनसही
देतिकहीजेसनीजेगरदेव । कीजेसफलि
हमारीसेव । सभिवतिदाइकनमरोनाउ । इ ।
छाकावरलनमनेपाउ । जिहप्रानीपहिहउवा ।
लिनाउ । ताकैसिरिपरिहाथिलगाउ । तोका
सिरुधरतीमिरिपरौ । पहिवहरीजेपीउहहो
शंकरस्वपिकरिगपेमहान । किग्रामांकिउ
ईनवउेप्रजान । ओपहिवरलेवडोगवारि ॥
प्रलैकरोनामभसंसार । महादेवकोविनाम

द. श.
प.
५-११

401

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कटनिवानिश्राईलागीदइ ॥ वचनुकुरुकीजै
किहिभांति । ईसकोथीकैरिदेनणांति । सि
ववरुदीनाविंनासाषि । जाकैसीसिधरोगे
हाषि । नाकासीसवेगिकरिधरो । जाइधा
मिसभिपीडाहरो । जविवहपाईओदेनगवा
रि ॥ देविरेषीनैननिहारि ॥ शंकरिकैसिरि
हाथुलागाउ ॥ ईसैमारिश्रीघालेजाउ ॥ जवि
मूरषिईहिउदमकरिओ ॥ महादेवनवद्म
निहीउरिजे । मनहमरैसिरिलावैहाषि । भा
गोसैलसनालेसाषि । महादेवुनारिश्रुतिउ
रिजे ॥ देनमूउमनिपाछैपरिओ ॥ दसोदिसा
फिरिरहिओमहानु । कऊनछाडैगैलग्रजा
नु । जिसनरिकैशिवधामसिधाई । पाछैश्रा
वैश्रुतीवलाई । कोऊदेउनहीगोलेवोलि । भ
येपांभजीउावाउोलि । श्रुतिष्ममुलागोसेत
शारीरि ॥ देनलगाइप्रभुकोपीरि ॥ दउरिशं
भूहरिपारनीगईश्रा ॥ महाराज़ेकोउपजी
दईश्रा । रिदाकमलुहरिकाद्रुविगईश्रा । म
हादेवकोश्रुतिदुखुभईश्रा ॥ ब्रह्मनिकोननि
कानानाषि । कटहिमेषलाकुसलेहाषि ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परमतेजरूपरिहिवशरीर। मेटनिचलिउसंभ
कीपीति। आवैदतिकोमिलेअनंति। अति
अचरजमेकमलाकेति। आईअसीसदेति
कोदई। सकलविधिनाकीहरिलई। मषि
नेबोलेकेशवराई। कह्यादैतिजीचलिउपा
ई॥ ठाढाहोइरहेभईउशरीर। ततिहूल।
गिलनपतनीवीरि॥ तिनहूसभेअरघउप।
जावै। सोननेतेराअतिदुरलभपावै॥ ठाढाभई
आदेतबलिवान। मषिनेबोलेश्रीभगवान
कहिअनंतहमकोसमुझाई। काकेपाछेपरि
उपाई। नबितिनकहीहइवरदईया। अति
कपालहमरूपरिभईया। जाकेसीसिहाथहू
उधरो। तानकालनाकासिहरो। अवईस
हीकेसिरिपरिधरो॥ ईसैमारिजीआकोहरो।
हसिकरिबोलेश्रीभगवान। वातिहमारीस
नोसजान। शंकरीकीकियामानहुवाति। वी
रीतिकछुनजाति। नराभसमुअकविष्णु
अहाह। वसैममानिरूबीलविहाह॥ तिषपि
साचकावरनुनमान। हमरोमतिलेहदैठान
अउनेसिरिपरिहाथुलगाई। पहिलावरदेय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऋपतीआई । साचुहोई तोनीकी वाति । साधु
ज्ञानीअरु सिवकी दाति ॥ ऋठहोई तोजाई
ऋधाई । तिसजोगीको गहीअरुमाई । मति
आवै सोनाको करै । पहिउपदेसजोहरैम
हिधरै । मालीदेतिकहीजगदीस । हाथिला
गाईजेअडनेसीस । नानकालसिहगिरहिप
रिजे । श्रीपरमानंदकउनककरिजे । आदि
आहिबोलेसभिदेव । जैपुरषोत्तमअलषअ
भेव । मरिषमनिगावैहरिकेनामि ॥ जैतुए
मोचनसंदरिस्यामि । आपसरिनावहिताति ।
वनाई । सभिगंधरवसनावहिगाई । दोवउर
पकीवरषाकरी । जैकरुणामेअपदाहरी । जैमा
धववैकुंठनिवासि । सदासरवीसभिहरिकेदा
सि । अतिकपालहुपेहरिराई । शंकरलीनोकं
ठिलगाई । शिवकोबोलेश्रीभगवान । सोकु
बिमारकुसंभुमहांनि । पापीपविजेअघुनेपा
पि । संतजनाकोलावैनापि । नमसेकाजोक
रैअभिमान । किउसरुपावैवडोअजान । वो
हदीजेफुनिहदेवीवाति । किआदीनाथोकरो
ममाति । नमस्कारुसिवहरिकोकरिजे । वरन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कमलपरिमलकुपरिउे । सिवचरित्र्याइउे
मोडुनिवारि । सिवचरित्राएउेमोडुनिवा
रि । रचियाकीनीकस्समराति । यहिलीलाको
इसिनैसनाई । प्रेमभगतिमाधवकीपाई । ह
रिभगवानमडेंदयनेंन । कमलनैकप्रभा
कमलाकेन । संतनकेडःखकारनिहारि ॥
जननिहालकोरासदिषारि ॥ २८८ ॥ कवी ॥

वैठेनीरसरसनीसानोरिषसरज्ञान ॥ नीति
देवमहिकवनैहैभजवेजोगिप्रमान ॥ २ ॥
चौपाई ॥ नीरसरसनीसानिमहानि । वैठेसा
नोरिषसरज्ञानि । तिनेआपतिमहिवाचाक
री । वडेगोष्टनिनमहिपरी । तिनोकहीयहिवि

द.मा.
प.
४..३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रनैकरै। अपनेमनिकासंसाहरै॥ ब्रह्मासे।
कहुअहमसबानि। तीनदेवमहिकव।
नुमहानि। जाकोकोभुनविआपैवीरि। नी
नोभीतरिसोमनिधीरि। निरविकारनिहको
धकपालि। ब्रुगमनापेहोईदईआलि। ऐसे
प्रभुकासिमरनकरो। यहिसंसाहदेकाहरे
भिगकहिआहउतिनपहिजाउ। तीनोकेह
दैकीपाउ। वकुनभलावोलेसभिभाति।
वेगिसिधारहुतीकीवाति॥ प्रथमेब्रह्मपुरी
महिगईआ। ब्रह्माजीकोदर्शनभईया ब्रह्म
सभामहिदेवअपारि। रिषमुनिवैठेकउहरु
जारि। ब्रह्मसभामहिभ्रगुजीआईया। कीर
निकरीनसीसनिवाईआ। सिंघासनिपरि।
वैठोजाई। सभारहीसभिअतिविसमाई। ओ
प्रकीईओनविब्रह्माहेव॥ ईतिसतिकरीनह
मरीसेव। हमरीप्रभुतादइविसराई। कोभुन
मावेदेह्रीमाहि। ततकोजानिलगईओना
हि। आपिवीचिफुनिक्रोधुसमाईआ। भगु।
भागाकहुबिलमुनलाईआ। महादेवपहि
गईओकेलास। महांरुद्रजीमहाउदास। जा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जब भृगु देषि गेनैन निहारि। तब ही रोष क
रि करी सें मारह। संन ऋषि सभ मिलन को ग
ई आ। तिपहि हर षिसें करजी भई आ। सिव
को मिले न भृगु दिज राई। सिघासन तिपरि वै
ठे आई। तिकठि क्रोध में करिजी करि जो। भो
थि सा षि सभि ननि मन न भन भरि जो। लीओ
त्रिसूल सें भजी हसथि। दिज को मार निला
गे नाथि। दऊ रिगइ देवीजी पाई। महा देव जी
को भुमिराई। ब्रह्म हति आ करो न के ति। हउ
मो निपरि तमारी सेनि। गई ओ बागि भृगु क
रेनबारि। चलि ओ तिआगि कैलास पहारि।
गई ओ बकुंरि बैकुंठ सथानि। सभ ने कउ बन कि
सी समानि। चंदन मगर पवन परवेस। जिह प
दि को तभि कर तिम देसि। नग मग गानि के श
व के धामि। धरे ध्यान सभि पूरन कामि। हा
रिम का शिकरि तहां प्रकासी। संन चतर भ
जि सदा बिगासि। भांति भांति द्रुम फूले फ
ले। को ईजी वन ही मा या छले। बोल हि दि
ब बिहंगम धारि। सभ मुह ही गाव हि नाम मुरारि।
फल दुर पति गुंजार हि भउरी। कालि रहत तिमा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

र. क्षा.
म.
सु..सु

माधकोढउरि। ढउरिढउरिविंद्रफूलिरही। ता
कीसोभाजानिनकरी। अतिमहिमाकछुका
हीनजाई। तहांविराजषिविसमअतिभईषा
हरिमेंदरिअतिहीजगिमगे। कोटिमेंदरिअ
तिहीजगमगे। कोटिसूरजीजआलालगे। स
भअजेकाथिहभीतरिपरिऊे। षीरसमुद्रसा
मरअरनकीऊे। तापरिपढोश्रीभगवान
सेनकीपतिअरषअराति। लक्ष्मीकीगोदे
महिमाति। पोठेकसअनेदअकाति। अवि
नासीअविगतिअभेव। अतिअधीनसभिजा
नैदेव। जगतिवीजिसभनकोआदि। क
सध्याननिवसभहीवादि। पीतवसनउठे
भगवान। कोटिमेननमैहरिनाराति। सषनि
धानकहणाभेडारि। श्रीकीगोदीमकुंदमुरा
रि। जानेभगुकछुकहीनवाति। प्रभकेहदे
लगाइलाति। जातकालउनरेभगवाति। सि
असनामिउअरभअराति। दिजकेपगिपरि
मनकुधरिऊे। यहिमधुसूदनिकउनकि
करिऊे। मलनिलगेदिजकेहरिपाई। केष
वकीगतिलषीनजाई। प्रेमसनवचनिकहे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भगवानि। सुषसिउआपैवउ ओमहानि।। बिसा।
करोनी भिउ दिनराई। मनसुषनमकउ मिले
नराई। सनोनषीसनउ ओमहानि।। पोदे घेर
मथहिनपछानि। वजरमारुहे देहु हमार। अ
निकोमलजीवरनन माए। घानि अनुलागा।
नमरैपाई। षिमाकरहु वारनहुकेराई। लालि
हमहुकीकरुणाकरी। हेतिमाषिमनकि हदैय
री। नउननु भषनपाई ओ खेमि। वरनविहन
रजोहमसंगि। वउीकपाकीनी दिनराई। बा
नैकहैपलोवैपाई। करोउनीनिसुकैहेदेव
हिनसिउ करोनमारीसेव। लोकिसहनिस।
किपावनि करोनमा। नीरषिमैपगिवहुदि।
निधरो। दिनकेपगिनिहमंररीजाहि। सो।
गिहुलली छाउ तिनाहि। हमरेहदैलानकी
रउ। पगिप्रमादि खीनिहचलमउ। अंसनव
वनकहे भगवानि। अतिदिआलवसनता
रति। भगुकैप्रेमनमावैदेहि। ननमनपी
गेकसमनेहि। प्रनकतिरेमनेनेजलवहै
भगुमविनेकछुवचननकहै। गदिगादिकं
ठिप्रेमिहकिलरंभा। पारमभगानमाधवका

द. भा.
म.
५..५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भईया। भरिओ प्रेमउठिवलिगेमहांन्। हृदे
राषिओ श्रीभगवान्। आईउवडुरिसरस्ती
नीरि। जहांविराजै षैठेवीरि। देवदेवनीनो
भगउआईया॥ सभव्रतेन्नकहिप्रगटिसनाई
या। रिदाहरषिसभनक्रकाभईया। भरमति
आगितजितिनकोगईया॥ भापड्डकामति
उपजाप्रेम॥ विसभगतिकालीनोनेम। क
मैनिआगिहरिसिमरनिलागे। सानोरिषि
अतिहीवडिभागे। तिहचाकीनोसातिमहाति
भजीअहिनोअैसेभगवानि। यहिलीलाको॥
कीमनैसनाई। प्रेमभक्तिमाधवकीपाई
वासदेवजैश्रीभगवान। जननिहालिवा
लिकपानिधानि। १२९॥ साखी॥ अवरकथा
शुकदेवजीकहनिप्रीतिचितुलाई। अरज
नकीनातीभयतिसननिपरीदतिराई॥ १॥
चौ-॥ अवरकथासुकुकहैमहान जाकै
हिरदैसभगवान्। बोलेश्रीशुकसनराजान॥
अवरकुचरितहौंकरोवषानि। असनपेक्रउ
धारिकारहै। सतिविओगिनाकानतुदहै॥
जनभनिहीमरिजावेवालि। सभतेवलीभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ई अनकिकालि । पेवालक्रूएन्नापहिनाई ।
अलनगारीदेतिसनाई । उअसेनिरेवउगवारि
गारीदेहिदुकारिद्रकारि । पापनमारेवालक
मरै । किउअतिआउजगतिमहिकरै । धंनिक
रोरिदिनकरैवषान । सभिकिछुजानहिस्वी ।
भगवानि । चुपकरिरहेनवोलैकोई । माधव
करहिसोहककछुहोई । आठिवालेमपेहे हि ।
भांति । अलतिकेमनिवडीअशांति । गारीदे
हिसिधारेधामि । कउनकिकरहिप्रमचनिपे
मि । एकदिनअर्जुनआहरिपाहि । चलीहरेम
हिरदिकिउआरि । अलनआईउतिनहीका
लि गोरदिवीविलेमपेवालि । गारीदरदुका ।
रिदुकारि । यादववैठेकरहजारि । वोलिउअ
र्जुनगरभहिभरिउ । कउनसुआमीकेसेउपि ।
जरिउ । नवदिनवोलिउतंहैकउन । कवन
नामअरुतमराभउन । रिषीकेपानोवोलहि
नाहि । सभैवातिजाकोघरमाहि । अरुधंक
रधणाउरखअनेनि । चुपिकरिरहेभपाभगा
वंति । प्रउमनिअवरुजोधाअनिहयि । प्रले ।
करहिछिनिकेजैनधि । तंकिउवोलनिवारं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वार। सभावीचितैकरीउचारि। हमरोसुतितजन
मिनमरिजाई। कालिवलितेकवनुववाई
हैदैहमारेवसीस्रासोति। नउवालकिमूपे
रहिभोति। वोलिउअर्जुनगरभहिभीगे।।
हरिकीमाईयावउराकरिउ। कसनाहिहउनाहीं
राम्र। अर्जुनपांडवमेरोनांम्र। गांडीवधनषि
कोधारनिहारु। कुंतीकोसुतिमहाउदार। राजा
कोउराजकोकरै। असनिकोपीडानहीहरै। प
गुवहुराजाअतिमतिहीन्र। जाकेदेषिवमैदि
नदीन्र। जहांअसनिकोचिंताकरै। उभैसामि
रैनिकोभरै। इतनारियहदरविनिमिति।
कौंअसकुलचिंतानिति। इगुवहुराजादेष
हिभाउ। जिनिअसनकाउषनहरिउ। तंमा
गौहैराजावहुनाहि। यहिनिहचामेरेमनिमा
हि। राजभेषमनअतिउलेपाई। कैसेहैजउकु
लकैयाई। सुनन्रआमीईकुमेरीवाति। अना
मिनलागैतमरैनाति। मफिकोआईकहोति
हिकालि। भरतिनदेवोतमरैकालि। वोधि
मिलनेकोवहुभीलेउ। इउअधीनकोजानिन
देउ। वहुतभलाअसनिनेकही। हरिकीअवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गतिकिन्नलही ॥ द्विजग्रिहभीनरिपेठभ्राई
वातिन्हीपाकोकहहीमनाई । वीतीवरुसरिलवै
दसिमासि । वरुसरिमरकीहोईप्रासि । जवद्वी
लागीहोनिप्रसून । द्विजकहहिजे देषोमषु
नि । नवैदउरिग्रजेनपरि । आवरुग्रउसरिम
ईआग्रजेनग्राईउजेकरीनवारि । करिईमना
नुराठामपिउग्रारि । पनुषचारिकोनोटंका
रि । आनिसरिकाठाकईहजारि । पनुषचारिको
नोटंकारि । आनिसरिकाठाकइहजारि । सम
चरुलाईउेवाणरुसाथि । उेनमषनषुवि
नेहाथि ॥ ईकिसीमुपेजैछैको । ग्रपिउधि
ईकिरापैषरे । ग्रेसमंदरीलीनोलाई । जहांबि
ग्रारिनपैठनुपाई । ग्रापहारिमहिठारामग्रंग्रा
धनुषवाणगहिकरमहीलईग्रा । द्विजसना
ननिग्रेनितहीकालि । रुदनमाचिनकीनो
वालि । लषीगतिकवनरदिसिरईजे । सलनि
कैचरिकउनकुभईजे ॥ द्विजकोबोलीग्रषु
नीनारि । कवनहमारेबीविउग्रारि । विउन
किग्रानिउेसंगिग्रजान । जिनिकीनाग्रामनि
ग्रभिमान । ग्रागैजोजनमैसोवाल ॥ देषोरे

द॰ रा॰
म॰
५॰३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मैनैननिहालि। याकाहमकोदर्शनुभईश्रा
काजानोकिसहीदिसिगईश्रा॥ अस्सनिकी
मनिक्रोधहिभरी। अर्जुनकीअतिक्रोधहिभ
री। अर्जुनकीअतिनिरादरी। अर्जुनिकोलै।
आईगेजहां। हरिअरुजादववैसेनहां। सभा
वीचिदिनुकरैबषान। सभासमैनिसनतिभ
रावानि॥ ईनिजडिअर्जुननिहबाकरीगे।
वडेमूडअज्ञानहिभरिगे। रिषिनसकिउ।
हमारावाल। महावलिहैसभनेकाल॥ ला
गाउचानिबवनिकठोरि। सभहीदेषहिश्रा।
मैनिगरि। पनुरेअर्जुननैरेवाणि। पतुनि
हसुषिनेकीवेवषानि। एतुयहिपरषिनु
भुजाविसालि। रिषिनसकेहमारेवालि
रिषिनसकेहमारेवालि। जविनवलिश्रारे
सिविगरि। तविनेकरैनपुसकिठारि। ग्रैसे
नेकिश्राकारजसरै। किउअर्जुनलाजिन।
मैरै। महावलिसभहनेकाल। कालरहति
वेकैगोपाल। विनानाथिसभकोग्रसिजाई
कालुनाथिकैमाहिसमाई। कहांसकिनेरीअ।
कालुनाथिकैमाहिसमाई। कहांसकिनेरीअ(
सानि। कोमुनहंश्राकालिसमानि। अवकहवनिव
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऐसेरेकरै। अर्जुनकेचितिमातननसनैहै। लज
तिभईग्रासभाकेमाहि। यातेग्रागेकोउखना
हि। नविकिछुअर्जुनकोऐवघाति। सनसग्री
जीरूपनारानि तीनिभवनिहहूरेषोग्राई। लिषे
वैतोवालिछुडाई। कैपोदहोग्रागनिमहिग्रानि
कउकिदेषहिश्रीभगवानि। कुंतीकेसुतिक
रिईसनान। पनषहाथिग्रपलीनेवान। की
नेविदिशाकोग्रभिमान। रिहासंतिकोमहा
उदास। देषीसभहीमहीविसालि। वोजेग्रर्जु
निमानिपनालि। लोकिपालिग्राठोवलिवा
नि। तिनकेउरिघोगेसरिग्रानि। हुडेग्रर्जुन
नीनेलोकै। दिसतिविनानजावेसोकि।
दिसाविदिसादेषिकिरिग्राईया। दिनकोवा
लकिकहेनपाईया। विषावनाइग्रर्जुनवी
निहवाकीनेनतनेग्रातीर। जवहीग्रापेश्रीभ
गवानि। हाथइनेगनिलीनोसेन। संनिसहाइ।
श्रीभगवेति। जनवोलेश्रीभगवानि। सनीग्रे
सषाहमारेप्रानि। तमहमहमतमग्रंतरुना
ही। तैकुंनग्रंतरहमतममाहि। ग्राउनग्रे
हउदेवोवालि। हिमकेपतितिगामेकालि। ग्रं

द.प्र.
प.
५...८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीगतिजगमितेरीकरी । यहिपीउसमहीपरि
हरो । आज्ञाकीनीश्रीभगवानि । मनरेदास।
किपरमसज्ञानी । द्विविरथहिलेआउवाना
ई । आज्ञाकीनीकेशवराई । आनिउरथदारुकि
सरज्ञानी । रथपरिवैठेश्रीभगवानि । अर्जुन।
रथपरिलीजेवाहारि । केशवकसमझेदास
रि । पूरविदिशाचलेभगवानि । जोगभोगप
निउरथउराति । चारसिंधकेउतरेपारि । मा
हाराजकोलगीनवारि । जंबदीपतजिउम
गवान । अउदीपमहिगएनारान । सातदीप
अरुसातसमुंद्र । प्रभुआगेयहिसवहीछि
द्र । गोपरिपजिउसमकेलंघिगए । अर्जुन
मंत्रिविसमअतिभए । आपेलोकिअलो।
किपहारि । हरिकेआगेनछरवारि । लघित
नकेआगेगए । असकसकेविहवलभए
महाअंधेरनवेंद्रनसूरि । महासंतनमति
उभरपुरि । असतनआगेकोपगिधरै । अंधघो
रिकछुरिसहनपरै । नवमधुसूदनिकउ
नकिकीओ । सदानापुआनेदहिमनिओ।
कसवककोआज्ञाकरी । चक्रसमदरासन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिरिपरिधरी॥ आगैचलइकवारदनाकरो॥ ग्रंथ
कारमारगिकाहरो। सरजसहस्रप्रकाशसमा
नि॥ तेजनिकारिजेचक्रमहानि। सबकोपा
उतिचलेउसज्ञान। रथिपरिपाछैश्रीभग।
वान। नरपतिआगैचलैसमालि। चक्रनिबै
आगैगेपालि। जैसेसीतापतिकेबानि। तेज
रूपनहीकिसीसमानि। रजनीचरिकीसेनाम
थी। वालमीकहिकीरतिकथी। तिउतमच
क्रविडारतिचले। येनेसुरासेचक्रईकले॥ आ
गैगाथेकस्सभगवानि। त्रिभवननाइककरुरब।
ध्यानि। आगैआईनीतिअपारि। मानोसरूपरि
कैरिहजारि। अर्जनदिष्टनवांधेधीरि। महा
जोतिमतिलाइपीरि। नैनमूदिमषनीवाक
रिजे। महाज्ञानितेअर्जनउरिजे। आगैगयेस
मुंदमगारि। त्रिभवनिकीपतिमहाउदारि। आ
गैगईजेजलगंभीर। पैठोतहांहलाईधिवीरि
जलतेउठैतरंगअपारि। आपिवीविजकुलप
हिपहारि। हलैरेगाजहिमेघसमान। बलदि
षावहिश्रीभगवानि। रघुजलभीतरिचलि
उजाई। अर्जनरहिजेमतिविसमाई। आगैग

र.शा.
म.
४..६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पेदेवकीनंदि । नंदुकुलिकेपतित्रिभवनिवं
दि । तिन्हजलभीतरिमेंदहरहै । ताकीमहि
मणीमुकुकरै । जालिमहिंमेंदहऊचीभो
नि । कोरिहूरसीउजलकांति । नगमगा।
तिग्रतिथंभहजारि । तिसकीमहिमाषरीअ
पारि । यहिंमहिसोभतिसेषाग्रनेति । सदाह
देजाकैभगवंति । सेषनागकोवदेनोध्यान
जैसाधीमुककहैमहान । ऊपनेलगिरिकै
लासमसमानि । अनित्रविनासीनागपुराति
कोमलदेहपुनीनरमालि । नगमगानितन
परमविसालि । अनिलेंदरिसरिवनेहजारि
तिनकैऊपरिमुकरिअपारि । लहलहा।
निजहुवामुषिमाहिं । परतरिकोछविहनी
नाहिं । दोसहंस्रहैकुंडलिकालि । तिननेल।
नतिकोरकिभांति । नीलिकेछिलंदरिफणि
राजि । नीलउपरनापूरनिकासि । गोदिवीवि
वैसेभगवानि । प्रावैसभकीपूरषपुरानि ।
तिहप्रभजीकोवरनोध्यान । ऐसासाधीमुक ।
ककहैमहान । अष्टभुजाधारेभगवानि ॥
स्यामसवकतिनापवनानानि । मकुटिसीसि ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परिमणिमणिकरै । धरै ध्यान जननि मनि कोरहै
रहे चरी आरे केसर मालि । उरझि रहे नेऊपरि
मालि । कमलनै नमुषपंकज हासि । धृति
प्रसंनमुषि सदा विगासि । जगमगा तिकुं
उलि दोकानि । नुमाला कोट किंचेदि सम
ति । कीरबैचसी नासावनी । कुविश्वपारिक
कुञ्जानि नगनी । कमलकली सीरे वकिश
नूप संदरनां कोसिंधु सरूप । केठिवनी त्रे
रै षडुनीति । संनजनाके निसिदिन चीति
मनिरसालि गलि जगमगि करै । कोटिम
नुमाला कोहरै । पीनवसन ऊपरि फहरा
इ । जिउवादरिम हिवाजसहाइ । सिंधुसता
हरि हदै माहि । नाकेभाणि नवरनेजाहि । म
गुलनारा जतिसभ अंगि । हारकु विमोहे कौ
टिअनंगि । केठिवनी वैजंनीमालि । पगिलउ
उठझीपरसालि । ब्रानीप्रभकोमहाउदारि
तीन लोकपतीनाथ अपारि । नाभिसिंधुआ
वर तिससमानि । सो तिरूप निरमल भगवानि
कृष्णचंद्रकाकरिकै माथि । कमलफूल से ।
फूले हाथि । जेनामानि लि श्रमिवनेअनतप । वि

र. श्री.
म.
पं... १.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रीप्रभकीषरीसरूप ॥ नंदरीउलफकमल
लेचरनि । निरूपगिकीवरनादिकिसरनि
नषमनिगिहरिकेजगिमगिकुरै । कोरिवं
दनुमालाकोहरै । निवधुजीग्रंकसंप
कनिपादि । दनुपादिप्रभसभकीग्रादि ।
पंचिचिह्नायहिसोभहिपाई । कवूनाथ
करिकृपादिषाई । नवसिषरोमरोमरमि
भरे । आगैचारुन्यग्रपानषरे ॥ चारोआईषिमू
रनिवेनि । सनमुषिकीभगवंति । नेरसुनेर
आरियहिमीति । निननिमिनिनिनहरिति
उप्रीति । यहिनउनिकरिप्रभुकेहि । जिन
निनकोहरिपूजनिवाहि । जैग्रीउजिकोनि
वलषरे । हरिसनमुषिष्टीनीवेकरे । मह
उहषपुरषोतमरहै । अतिश्रपाइछविकि ।
हिमुषिकेहै । कमलकलरैऊठाकेआई । षेल
रिषावहिकेपावराइ । कमलकलकेदरोन
करिउे । तेमतेआनंदहिमरिउे । ममिम ।
सकाकजाइकीआमुकारि । अषभजाऊ ।
करीजहारि । आपिग्रापिकोनिवहिग्रनंनि
देनोवेकिश्रीभगवंति । अषभजावोलेभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गवानि। सबेकुसबजीमेरेप्रानि। ईकिसति
वरषिवेविग्रहस्वीस। तुमकोकुवेसनोजग
दीस। जिहिनिमितितुमसरपेमरातिः। सोनि।
मितिहुयामकुमाति। मारेतुहमघारेसाधि
तीनलोककीमिटीउपाधिषि। कइकिसु
ग्रेतुनतेमरवावे। कइकिरामकेहाथिमावे
कईकितुममारेवलिवानि। पावनिकीते
श्रीभगवानि। भाहमरीकासबुमिटिगई
श्री। हरषिरिदेमेनहुकाभईआ। जगमा
हिकीरतिवडीतुमारी। तीनलोकिप्रवि
कारतिहारी। जोतुमकीनीकमेरसालि।
गोगावहिमेसनुगोपालि। परहित्तुमाहे
गेतुमरेकरमि। सभिउतरहिगेतिनकेभर
मि ... बेरजीमुनीश्रेवानि। ब्रसनिकेम
किसुजेभगति। जिहिनिमितितुकिसानेवा
लि। सोइकहतिहोसनुगोपालि। तुमरेदर्श
निकीमतिपियासि। ब्रह्म ... भीमीरहोउग
सि। किहिविधिमिलहिमनवसिमरे। जि
निप्रभकेरभुजगतिमहिकरे ... ।। गरु
कीनाथहिवीवार। मनतहकेवसि। श्रीभग

र.गा.
स.
पृ..८१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वान ॥ कहुअर्जुनको लागो पारी ॥ आवहि
नैवहला ईषिवारि ॥ निसतिमितिनमकि।
कउनकिकारिजे ॥ नैय्यविदेषिसभेरसिभ
रिजे ॥ ईतनमितिमाकुआनवालि ॥ ऐसो।
सनोश्रीगोपालि ॥ आवउअविसंयरीचा
निस्पामि ॥ सकलजगातिकेपूरेकामि ॥ मे
दरिकैपाछेघेवालि ॥ घेलेघेसभिपरम
रसालि ॥ केशवकोग्रहषोतमिदपे ॥ चषि
चारईमधुसूदनिनपे ॥ कलकहिजेआवो
नाराति ॥ नमहीवीविहमारेप्राति ॥ आपि।
आपिकोकरीजहारि ॥ जेष्णीकसमझेदन
रारि ॥ जेसेगपेश्रीभगवान ॥ मैसेआपेफि।
रिसरान ॥ असतिकोअर्जुनिसतिदपे ॥
दसहीसतितिनअसनलपे ॥ चकतिहोई
अनिअर्जुनगहिजे ॥ कउनठउरिकादपे
बलजे ॥ अर्जुनमनमहिनिहचाकरा ॥ सम
किहदेकैभीनरिधरा ॥ जोप्रषइमहिवल
अरुज्ञान ॥ कृपाकरीहैश्रीभगवान ॥ कस
कृपाविनजानैप्राग ॥ सदासहैचरिभीना
नाप्रा ॥ जोकछुकरहिकसभगवान ॥ गरघु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहिनेवरेमजान ॥ कोतिमतिहीसिमत
कीजे । कमलपुचरिभीनरिधरिजे । यहि
लीलाकोईसनैमनाई । प्रेमभगतिमाधव
कीपाई । केशवकमलनकुंदमारि । जलनि
हालकोदरसदिषारि ॥ २९ ॥ साषी ॥ कछु
कथाप्रकरेवजीकरतिसुवकचिनलाई ॥
कमलकरमकरनेसनिगादतिकवनग्र
थाई १ ॥ चौपाई ॥ अवतिकथासकरेवत
नाई । दोनोरशकिनकोउअचाई । असमा
धीमकुवडमहोन । तैसाराजापरमसुजा
न । श्रीनाथकनापेकसमान । दोनोकीग
तिश्रीभगवान । मनराजाईकुलीलाय्र
उरि । गुरीहारिकाकेपावरउरि । जगमगा
तिहरिगुरीरसालि । सवकंचनकीपरमवि
सालि । सागरिकीषाइचउफेरि । गुरीहारि
कालीनेघेरि । चउदिसिमंदरिवनेयराम ।
फलेफलेसंपरानिकामि । जहांविराजहिक
मलाकंति । सदारहैनितिहिरउरिवसंति । फु
लकउपरिभवररुजारि । उडिउरिवैठहिवा
रंवारि । मंदरिवेषिमनेकिविहीन । सवदिउ

द.भा.
म.
४१२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

412

वारहिनानारंगि। ग्रेसेवोलहिसद्रमाल
गनुग्रनेगकीहैवरसालि। महिमानेगनि
पुरीमहिचले। सेगालितिउवोधेनीकलै
महिप्रवाहतिउवीधीकरै। ग्रनिमदोरि
मैनैकुनउरै। कोरकोटिरचिजोधेचनै।
तिनकेगुनिकछुजानिनगने। सदावीह
हरिकोपुरिकीपुरीमाहि। पकाधकोवि।
नमारगुनाहि। केशवकेमंदरिग्रनिवनो।
तिनकोगुनिकछुजानिनगनी। सोलहस
हेस्रेपेकसउग्राठि। नैकुनग्रिहिमहिलागे
काठ़ि। दीचिवगीवेउहपनिभरे। नहांकस
कनहलिकरे। चकुवचेमहिनिर्मलनीर।
तिममहि षेलैस्यामशरीरि। कमलफूल
तिनवीचिरसालि। सदाफूलतिपरमवि।
सालि। तिनपरिरहेभवरिगुंजाई। इकिक
मलहूमहिरहेसमाई। कमलफूलतिउवा
तिउनीरि। षेलैनहोहलाइ षिवीरि। वीषा
तिउजलकोउाकरै। तिनकोनानिकीपीरा
हरै। जलमहिषेलहितिरीग्रासाषि। जोगि
भोगीपतिविभवनिनाषि। कनहजलिमहि

कवरूनीति । भोगोश्रुबरिवनेसरीरि । गिरहि
जीयाकेसिरनेफूलि । कुसमसिरईबनिजलि
कैफूलि । निकरिननीतिरमोलकनाति । न
हांवैठीउनजनकीदाति । किंनरश्रुहरीधा
वसज्ञाति । केशवकेउनिकरहिवषाति ।
वाजहिनालिरवावनिदंग । होलिनमारे
मेरिउपंगि । सववजेघवाजोतिहिकालि ।
जलकीउग्रीकरहिगोपालि । जीयामग
निभउहरिमाहि । तिनकेभागिनवरनेजा
हि । केतिकेतिकैमिलीसजाति । मिलिही
गइविसारेप्राति । केठिकेतिकेमभिलपरा
नी । तिउजलिसिउमिलिजावैपानी । मिली
केठिभलीसधिदेहि । केठिमिलीहवउसने
हि । जानहिहरिहैश्रंनरीयाति । वउरीभइवि
मारेप्राति । सामीपिविरहविश्रापिउतिहिका
लि । हरिकीजीयापरमासालि । विरहिकठ
निमतिजातिनमहे । वउरेववनसिनऊमि
लिकहे । जेनीहरिकीजीयाउदारि । नेनेरुप
मुकंदमरारि । कऊपेकउवोलीसाज्ञाति । ऊ
पकहरीलोपभगवानि । निद्दासवमहिश्री ।

द.श्री.
म.
८१३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भगवंति। कमलनैनहरिहमरोकेन। वऊरिन
सुषनेसवदसनाई। सषसिउसोपेकेशवना
ई। चकवीकोकूनिवोलहिवेनि। कोठिकेनि।
नहीदीसहिनैनि। चकवीरीनंवऊीस्युनानि
देषिककंकसमभगवानि। नेननूठतिहैहरि
राई। मनमधूदनिदरसदिषाई। हरिशम
कीमालारसेभरी। षुसीनजैचरिभीनरिक
री। तिउवनुमालाहमकुपियारी। कइवार
माघेपरिधारी। तिउनंवाहनिहैसरनानि। च
तिसंदरिजेकरनिवषानि। देषिककेहमारे
केनि। कमलनाभहरिश्रीभगवंति। श्रा
उक्रेसमतिपरमसुजान। हमपहिपरिश्रा
हैभगवानि। रूपीउहेपरमधुनीनि। क
उकिश्राकहिउहमारेमीनि। कधुरीके।
किश्रापछ्हिसंदेसि। मारतिपिरैत्रीयाके
देसि। कमलानोहैवऊीगवारि। जिनकप
रीसिउधरेपिश्रारु। स्रपेचंदनंवोलतिना
हि। षहीरोगुनमरेयरिमाहि। कछुसंदेष
हरिकानंदेहि। वउरीहहिहमकमसनेहि
नेमहूनेहरीश्रुतरिश्रानि। अतिश्रनाथहै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेरेप्रानि । हमतुमदोनो ऐकसमानि । छाडिग
ऐप्रीतमभगवानि । मलीपउनरेनिकारिक
रोरि । किउप्यावनिहैहमरीउरि । छाडिगपै
स्रीभगवानि । नेकियारइनिहमारेप्रानि
स्यामसेचहेहरिकेमीतनि । नोसिउवउीनाप
कीप्रीति । मेदिमेदिगाजहिरसिभरे । केशव
केनेदर्शनिकरे । चलेऋहारिम्रनेदिसा
खि । देषेनफेहमारेनाथि । दीनिहोईहमला
गहिपाई । केनहमारादेऋवनाई । ईसीभांति
सभिवानेकहै । केठिकेनिकोमारिनहलहै
मगनकेनसिउमिलिहोईगइ । कलबृपस
भग्रीआभइ । जोजनुमिमरहिस्रीभगवान
कथासुनहिईकिपरहिध्यान । कलबृपुते
जनिहोईजाई । तिनमहिहरिवकवहरिके
माहि । चीयाकीकियाकहीस्रैवानि । हरि
सिउषेलहिरिनप्रहराति । कमरूउमभिर
कीनाति । जिनकैकेतिमुकेदमुरारि । वडुते
षेलिकसभगवानि । फुनिजीध्यानलिपावे
प्रानि । तिनिध्यापहिरेनउनिदीति । तनिमति
कीहरिसेमीती । वापवहिरउकेपावच्रंगि

र.का.
म.
४१८

© Dharmarth Trust J&K. Digitized by eGangotri

नषिनोवारेकोरिस्रनेगि । पीतवपरनाश्याम
पारीसि । ब्रनजिउवउडेहलाइपिवारी । गावे
पेजोगुनिभगवानि । वहूनदीपेहरितिन
कोदानि । हरोकोवेसवकुनवठिगइओ । स
भिकेपावकेननिनेभईउो । प्रदुमनिआदि
हेरिपूनिसजानी । तिनकेजीवनिस्त्रीभग
वानि । तिनकेपूनिअनेतिअपारि । सभनो
कीपनिकुलमुरारि । सभनोकीपनिकुल
मुरारि । जडकुलकेकछुसंषिआनाहि । इउ
कहीस्त्रीसुकरेवसनाहि । नीनोकाटिपरा
वनिहारि । असीहडऊपरिआरहजारि । ऐसे
ऊपरिविप्रसुजानि । पांपेपेमनिकेसरना
नि । जुधुकुलिकेह्वैपहिवालिपराइ ॥ वा
लहकीकछुसंषिआनाहि । अनिअंनन्दकी
नेभगवानि । सतुनिसनारिउपुरषिपुरानि
सभितेनीरषिरिगालउआदि । सभिसआदिपे
ज्ञनलउसआदि । सभिपुरिअपुनीकीरति
परी । कीरतिमइसरसतीकरी । मोहरिकी
रनिकरहिवषानि । तिनपरिरीकहिश्रीभ
गवानि ॥ ... रषिजगे ध्यानननपदानि । को

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुनहरिकीकथाअवधानि। अविरमालिसकल
हैसुलोक्ष। सुननेसकल-- परावैमोक्ष॥
प्रेमाप्रभूसुननेतनसीरहे। सनजनाकीजै।
-- करिकरे। सभिजीवहिमाहिआलेउ
शरनअसुसअने-- अमेग। कहनेमाअदेव
कीशरन॥नाचरिवारीनाअवभूत॥नादव
कीपतिउगति॥धमेसमरपिंजेजोगना।
गति॥पाउपेपनगानेपरहरिजे॥विषवति
परमसेशरनकरिजे। सबराचरकोआपदा।
हरी॥प्रगरिजगंतिमहिलीलाकरी॥मेरिम
रिमुषिपंकजहासि॥कमलफूलाजिउसदा
विगासि॥पंलरिषाईजेगोपीसोंरि॥वैठेति
नोकैअंगिअंननगि॥प्रेमाकमलसदाजैकरो॥
सननिहानिहालकैचरिपगिधरे॥हेहरिअ
लशरनभगवंति।कमलनैननीकमलाकं
कंति॥कमलदेवकरुणाभंडारि।हरिवतिसा
ममकंटमरारि॥कछुमकिवलिउवारीगति
षिमाकरोपरिपंकजिपांनि।जोकछुकहि
उसमलअनेति।षिमाकरोशूरनिभगवंति
जोममिदीनीनमभगवानि।सोलेहरिगुन

दृ॰पा॰
म॰
५१५

415

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऐसे दासनु जे श्री भगवानि ॥ सभि विधि ...
जानि ॥ दानु देहि जगु साज निहारि ॥ ता ...
... तन वहै सिंगारि ॥ जग की संगति ...
... पाक रोह के धावराई ॥ निकरि चरन
... तिन पगि ऐसे तुम मेरे दास
ऐसे सदा वनाइ वन ... गावै पढै नवै
कुयबाई ॥ दिष्ट अगोचर होउ ... श्रामि
हरन करहु हमारे काम ॥ ऐसे रिजा मोज
... करनारु ॥ मानहु सेवकि करीउका।
रि ॥ ऐसे सि कृपा ... क्रिया निधि करो ॥ स ...
... तिन निमति तेजाये ॥ अब ... वा
हरि निम ही वसे ॥ अंतिस मे हम सिउ मिलि
रमो ॥ ऐसे जे कारण भेउ हरि ॥ जनि नहाला।
पसि पसि परि वलिहारि ॥ बाढ वाढ ईढ।
तनवी ... रि ॥ आदि अंति मधि रहति निमणारि
गुण निधान त्रै गुण ते परे ॥ अकेके रैसभि
किछु नही करै ॥ अके अजे जन्म ते रहत ॥।
आवे अभेसून सभि कहति ॥ तत सार तत
दास सरूप ॥ धंन कम्मल चित वित अनूप ॥
बाढ बाढ है वे परवाढु ॥ तिस चै माहि चवेरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रजाइ॥ नवरह विधि आई संप्रति भये॥ परेखौ
समिपानकिरेहै॥ सरनिसरनिकरुणाभे
डारि॥ कृस्नराम्रुपगिपरिवलिहारि॥ ९९
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेशु
कदेवपरीक्षतसंवादे ॥ श्रीकस्नअग्रप
नमत्ततननवरहध्यायः॥ ९०॥ संपूर्णोमस्तु
शुभमस्तुसर्वजगतो॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यह श्रीभागवत दशमस्कंद भाषाका पुस्त
क श्रीमन्महाराजा साहिब रणवीरसिंह
बहादुर जी सी एस आइ इंद्र महेंद्र सि
पर सलतनत जंहू काश्मीर व तिब्बता
दिपनिके पढनेकाहै ॥

९.श्री.
भ.
४११

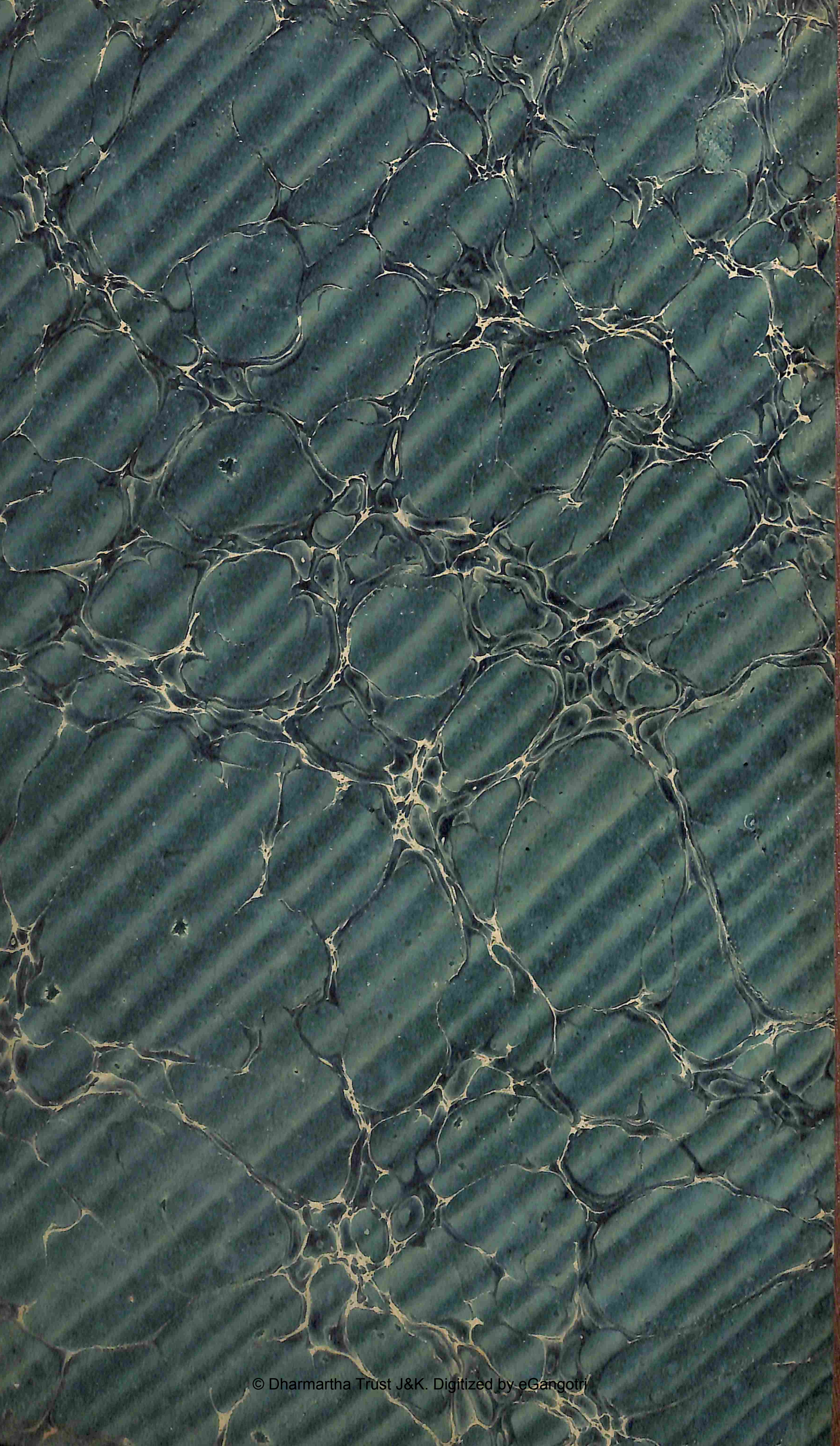
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

نمبر ۱۲
39

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri